CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृतसूक्तिसमुच्चयः

(नवमो भागः)

स्मृति खण्डः

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी

(दिल्ली सर्वकारः)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्कृतसूक्तिसमुच्चयः
(नवमो भागः)

स्मृति खण्डः

सम्पादकः
डॉ० श्रीकृष्णसेमवालः
सचिवः

सङ्कलनकर्तानुवादकश्च
डॉ० विजयपाल शास्त्री
दर्शनविभागाध्यक्षः
गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालयस्य
हरिद्वारम्, उत्तराञ्चलप्रदेशः

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी
(दिल्ली सर्वकारः)
(२००१)

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya * Bharatiya Vidya
852
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशकः

सचिवः

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी

(राष्ट्रिय-राजधानी-क्षेत्र-दिल्ली-सर्वकारः)

© दिल्ली-संस्कृत-अकादमी

प्राप्तिस्थानम्-

विक्रय-विभागः

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी

(राष्ट्रिय-राजधानी-क्षेत्र-दिल्ली-सर्वकारः)

प्लाट सं० ५ झण्डेवालानम् करोलबाग़ोपनगरम्, नवदिल्ली-११०००५

दूरभाष : ३६३५५९२, ३६८१८३५

फैक्स : ३५५५६७६

मूल्यम्-३५०/- रूप्यकाणि

मुद्रकः-

दोना प्रिंटर्सः

नेहरू-विहारः

दिल्ली-११००५४

दूरभाषः ३९४१२२५

Bhawan's Sri Sankaracharya Vidya ...
४ऽ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सम्पादकीयम्

अयिश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तज्ञानविज्ञानसमाराधन-तत्परास्तत्र भवन्तो भवत्यश्च जानन्त्येव यत् मानवीयाचार-संहितायाः निर्धारणे स्मृतिग्रन्थानां महत्त्वपूर्णं योगदानं विद्यते। तेषामेव स्मृतिशास्त्राणां सूक्तयः संस्कृतसूक्तिसमुच्चयस्य भागेऽस्मिन् संकलिताः सन्ति। अकादम्याः प्रकाशिताः संस्कृतसूक्तिसमुच्चयस्याष्टखण्डाः भवद्भिः भवतीभिश्च पूर्वमेवावलोकिताः। सम्प्रति स्मृतिखण्डनाम्ना नवमो भागः प्रस्तूयते। हरिद्वारस्थ गुरुकुलकांगड़ी विश्व-विद्यालयस्य दर्शनविभागस्याध्यक्षाः श्रीमन्तः डॉ. विजय-पालशास्त्रि महोदयाः महता परिश्रमेण खण्डस्यास्य सूक्तीः संकलितवन्तः, तान्प्रत्यहं कृतज्ञोऽस्मि। संकलितसूक्तीनां मूल्याङ्कनाय दिल्ली विश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागस्य पूर्वाचार्यान् डॉ. कृष्णलाल महोदयान्, डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार महोदयान्, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठस्य साहित्यविभागाध्यक्षान् डॉ. रमेशचन्द्रचतुर्वेदिमहोदयान्, दिल्ली शिक्षानिदेशालयस्यपूर्वातिरिक्त निदेशकान् श्रीमन्तः शब्बीर अहमदमहोदयान्, पूर्वोपप्रधानाचार्यान् श्रीमन्तः

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओम्प्रकाश ठाकुरमहोदयाञ्च प्रति कृतज्ञतां ज्ञापयामि । अकादम्याः अध्यक्षाणां माननीयानां मुख्यमन्त्रिवर्याणां श्रीमतीनां शीलादीक्षित महोदयानां, माननीयानां शिक्षामन्त्रिवर्याणां श्रीमतां डॉ. नरेन्द्रनाथ महोदयानामकादम्याः उपाध्यक्षाणां श्रीमतां कुलानन्दभारतीय महोदयानां कृपाभिः वरिष्ठतमानामधिकारिणां भाषाकलासंस्कृतिविभागस्य सचिवानामादरणीयानां नीताबाली महोदयानां शिक्षाभाषयोः संयुक्तसचिवानां श्रीमतां डी.आर. टम्टा महोदयानाञ्च स्नेहेन कार्यमिदं सम्पन्नतां गतम्, तान्प्रत्यहं हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयामि । सम्पादनादिकार्येषु सहयोगायाकादम्याः अधिकारिणः कर्मचारिणश्च प्रति मुद्रणकार्याय च 'दोनाप्रिंटर्स' इति मुद्रकं प्रत्यहं भूरिशः कार्तज्ञ्यं ज्ञापयामि । स्मृतिशास्त्राणामिमाः सूक्तयः वर्तमानजीवनपद्धतौ उपयोगिन्यः भविष्यन्तीति मे प्रत्ययः ।

विदुषाञ्चरणचञ्चरीकः
श्रीकृष्णसेमवालः
सचिवः

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आत्मकथन

शुभाशुभ के ज्ञान के लिये भारतीय वाङ्मय में दो प्रकार के ग्रन्थ प्रमाणभूत माने जाते हैं –श्रुति और स्मृति। वेद का नाम श्रुति है और धर्मशास्त्र को स्मृति कहते हैं। धर्म के विषय में इन दोनों पर संशय नहीं करना चाहिये। ऐसा मनु ने स्वयम् कहा है –

श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो
धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।
ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये
ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ ॥

संसार में जितनी भी वस्तुएँ हैं, उनका सम्बन्ध तीन भावों से है–जन्म, स्थिति और प्रलय। संसार के प्रादुर्भाव के साथ-साथ ऋषि, मुनि, देव, गन्धर्व, मनुष्य आदि बुद्धिसम्पन्न प्राणियों का आविर्भाव हुआ और इनके आविर्भाव के साथ उनकी प्रवृत्ति आचार, विचार, व्यवहार और धर्म का भी जन्म हुआ। जन्म के साथ स्थिति और प्रलय भी जुड़े हुए हैं। इस आविर्भाव, स्थिति और प्रलय को स्मृतिशास्त्र में बड़े सुन्दर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ढंग से समझाया गया है ।

स्मृति शब्द का अर्थ है–स्मरण । पुरातन ऋषियों ने अपने योगबल से आकाश मण्डल में तरंगायित अव्यक्त नाद को सुना । उस अव्यक्त नाद से जो अक्षर और शब्द बनें वे ईश्वरी अनुशासनात्मक वाक्य कहलाये । इसी वाक्यराशि को दर्शनशास्त्रों में शब्दप्रमाण या श्रुतिप्रमाण कहा जाता है । साहित्यकारों ने इसे ईश्वरीय आदेश कहकर इसकी प्रशस्ति गायी है । उस अव्यक्त नाद की स्मरणशक्ति से क्रान्तद्रष्टा ऋषियों ने इस पृथिवी पर मनुष्यों की मर्यादा का, नैतिकता का, सांस्कृतिकता एवं व्यावहारिकता का जो विस्तारपूर्वक वर्णन किया है, उसे स्मृति नाम दिया गया है ।

समस्त स्मृतियों का सार बस इतना है कि जब सत्, चित् और आनन्दरूप चैतन्य इस देह में प्रवेश करता है तो अपने नित्य-शुद्ध-बुद्ध-स्वरूप को भूल जाता है और भूलकर अधर्म, अन्याय, अनाचार और दुष्टव्यवहार में फँस जाता है । ऋषियों ने मनुष्य को विकृत आचरण एवं आसुरी प्रवृत्ति से बचाने के लिये अपने संस्मरणों को मानव-जगत् में भेजा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ताकि इसके अनुसार संसार के जीवन को शान्तिमय बनाया जा सके और अन्त में सत्य की प्राप्ति की जा सके ।

समस्त स्मृतिग्रन्थों में मुख्यरूप से तीन विषयों का निर्णय किया गया है–आचार, व्यवहार एवं प्रायश्चित्त । धर्म का सम्बन्ध इन्ही तीनों से है । आचार–प्रकरण में गर्भाधान से लेकर विवाह पर्यन्त संस्कार और उनकी शिक्षा का प्रतिपादन किया गया है । इसी के साथ वर्णाश्रम–नियम और सत्त्व, रज तथा तम इन तीनों गुणों के आधार पर मनुष्य जाति को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में विभाजित किया गया है और उसी के अनुसार उन्हें कर्म करने का अधिकार दिया गया है । जिससे सृष्टिक्रम सुचारु रूप से चले ।

दूसरा विषय व्यवहार है । व्यावहारिक जीवन में जो गतिरोध आ जाता है उसको दूर करने के लिये प्रशासन, प्रशासक और शास्त्र के नैतिक व्यवहार रूपी कर्म को भी धर्म कहकर उसका विवेचन इस व्यवहार–प्रकरण में किया गया है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तीसरा विषय है प्रायश्चित्त । इसके अन्तर्गत पापों के प्रायश्चित्त का तथा नारकीय गति का विवरण प्रस्तुत किया गया है, जिससे मनुष्य पाप से दूर रहे और सत्य का आश्रय ले सके ।

इस प्रकार समस्त स्मृतिग्रन्थों का ध्येय लगभग एक ही है कि मनुष्य सांसारिक जीवन का विकास कर नैतिक, व्यावहारिक और सामाजिक जीवन का श्रेय प्राप्त करे ।

सूक्ति समुच्चय के इस खण्ड में जितनी भी सूक्तियाँ सङ्कलित हैं, उनका विषय ये आचार-व्यवहार और प्रायश्चित ही हैं । सूक्तियाँ सार्वभौम और सार्वकालिक सत्य पर प्रतिष्ठित होती हैं । जिस वचन का आधार यह सत्य नहीं होता, उन्हें सूक्ति शब्द से परिभाषित नहीं किया जा सकता । यद्यपि स्मृतियों के वचन देश, काल और सामाजिक व्यवस्था से बँधे होते हैं फिर भी उनके कुछ विशिष्ट वचन देश और काल की सीमाओं से बँधे हुए नहीं हैं । उन्हीं वचनों का सङ्कलन प्रस्तुत सङ्ग्रह में किया गया है ।

स्मृतिशास्त्र अत्यन्त व्यापक है । इसकी ग्रन्थ-संख्या

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भी विपुल है । किन्तु सभी ग्रन्थों का सुलभ होना सम्भव नहीं हो पाया है । जो ग्रन्थ प्राप्त हो सके हैं उनके आगे दिये जा रहे हैं ।

इन सूक्तियों के अध्ययन और मनन से सहृदयों के चित्त में यदि थोड़ा-सा भी सरस स्पन्दन हो सका और लेशमात्र भी अज्ञान तिमिर का आवरण क्षीण हो सका तो सङ्कलन का प्रयास सार्थक होगा ।

विनीत–

विजयपाल शास्त्री
रीडर, दर्शन विभाग
गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराञ्चलप्रदेश

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठ सं.
सम्पादकीयम्		III
१.	अधर्मः	१
२.	अन्योक्तिः	२
३.	अहिंसा	२२
४.	आत्मा	३१
५.	आसक्तिः	३२
६.	इन्द्रियसंयमः	३३
७.	ऋषिः	३५
८.	कर्म	३५
९.	कर्मफलम्	३७
१०.	कामः	३८
११.	क्षमा	३८
१२.	गुरुः	४०
१३.	गृहस्थः	४३

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१४.	गौ	५७
१५.	जनकः	६४
१६.	जन्म	६४
१७.	जीवनोद्देश्यम्	६५
१८.	ज्ञानम्	६६
१९.	तृष्णा	७०
२०.	दण्डः	७१
२१.	दानम्	७२
२२.	देवता	१४४
२३.	देवभाषा	१४४
२४.	धनम्	१४५
२५.	धर्मः	१४५
२६.	नरः	१८१
२७.	निन्दा	१८२
२८.	निर्णयः	१८२
२९.	पर्यावरणम्	१८३
३०.	पवित्रदेशः	१८४

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३१.	पापम्	१८५
३२.	पापी	१८६
३३.	पुत्रः	१८७
३४.	पुरुषार्थः	१९४
३५.	पुष्पम्	१९५
३६.	प्राणायामः	१९६
३७.	ब्रह्मचर्यम्	१९६
३८.	ब्राह्मणः	१९७
३९.	भारतम्	२३०
४०.	मन्त्रः	२३१
४१.	महान्	२४३
४२.	मित्रम्	२४३
४३.	मोक्षः	२४४
४४.	मौनम्	२४५
४५.	योगः	२४६
४६.	राजधर्मः	२५६
४७.	राजा	२५९

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४८.	वाणी	२७६
४९.	विकल्पः	२७६
५०.	विद्या	२७७
५१.	वीरता	२७९
५२.	वेदः/ज्ञानम्	२७०
५३.	वैराग्यम्	२८३
५४.	व्यवहारः	३११
५५.	व्यवहारनीतिः	४१६
५६.	शरीरम्	४१७
५७.	श्रद्धा	४१८
५८.	सज्जनः	४१९
५९.	सत्यम्	४२२
६०.	सदाचारः	४२४
६१.	सन्तोषः	५३१
६२.	सभा/परिषद्	५३२
६३.	स्त्री	५३२

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन्दर्भस्मृतिग्रन्थाः

१. मनुस्मृतिः
२. याज्ञवल्क्यस्मृतिः
३. बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः
४. अत्रिस्मृतिः
५. अत्रिसंहिता
६. विष्णुस्मृतिः
७. लघुविष्णुस्मृतिः
८. हारीतस्मृतिः
९. लघुहारीतस्मृतिः
१०. वृद्धहारीतस्मृतिः
११. औशनसी स्मृतिः
१२. औशनसस्मृतिः
१३. आङ्गिरसस्मृतिः
१४. अंगिरः स्मृतिः
१५. यमस्मृतिः
१५. लघुयमस्मृतिः

Funding by IKS-MoE

१६. बृहद्यमस्मृतिः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१७. आपस्तम्बस्मृतिः

१८. कात्यायनस्मृतिः

१९. बृहस्पतिस्मृतिः

२०. पराशरस्मृतिः

२१. बृहत्पराशरस्मृतिः

२२. व्यासस्मृतिः

२३. शंखस्मृतिः

२४. शंखलिखितस्मृतिः

२५. लिखितस्मृतिः

२६. दक्षस्मृतिः

२७. गौतमस्मृतिः

२८. वृद्धगौतमस्मृतिः

२९. शातातपस्मृतिः

३०. लघुशातातपस्मृतिः

३१. लघुशंखस्मृतिः

३२. वशिष्ठस्मृतिः

३३. गोभिलस्मृतिः

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३४. देवलस्मृतिः

३५. प्रजापतिस्मृतिः

३६. लघ्वाश्वलायनस्मृतिः

३७. संवर्तस्मृतिः

३८. बोधायनस्मृतिः

३९. अरुणस्मृतिः

४०. पुलस्त्यस्मृतिः

४१. काश्यपस्मृतिः

४२. व्याघ्रपादस्मृतिः

४३. वीरमित्रोदयः

४४. नारदस्मृतिः

४५. मार्कण्डेयस्मृतिः

४६. लौगाक्षिस्मृतिः

४७. लघुव्याससंहिता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधर्मः

१. **अधर्मं मनसा वाचा**
कर्मणाऽपि त्यजेत्सदा ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ९/१५८)

मन, वचन और कर्म से भी सदा अधर्म का त्याग कर देना चाहिये ।

One should always give of *Adharma* (vices) from one's mind, speech and actions.

२. **नादण्ड्यो नाम राज्ञोऽस्ति**
धर्माद् विचलितः स्वकात् ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, आचाराध्यायः, श्लोकः ३५८)

अपने धर्म से विचलित कोई भी व्यक्ति राजा के लिये अदण्डनीय नहीं है ।

No one who has deviated from the path of *Dharma*, should escape punishment by the ruler.

Funding by IKS-MoE

अन्योक्तिः

१. **अनाथानां बाले किमिव**
विपरीतं न भवति ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ३४३८)

हे बालिके ! भला अनाथों के साथ क्या-क्या विपरीत नहीं होता ? अर्थात् अनाथों के साथ सब कुछ उल्टा व्यवहार ही होता है ।

Every thing is done contrary to the interests of orphans.

२. **उदितवति द्विजराजे**
कस्य न हृदये मुदः पदं दधति ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ११४१)

चन्द्रमा के उदित होने पर भला किसके हृदय में प्रसन्नता नहीं आती ?

Who is not pleased on the rising of the sun ?

३. **उद्यन्त्वमूनि-सुबहूनि महामहांसि**
चन्द्रोऽप्यलं महीमण्डलमण्डनाय ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सूर्यादृते तदुदेति न चास्तमेति
येनोदितेन दिनमस्तमितेन रात्रिः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ७४१)

महान् तेजस्वी बहुत से नक्षत्र भले ही उदित हो जायें। पृथ्वी को अलंकृत करने के लिये चन्द्रमा भी पर्याप्त है, किन्तु सूर्य के विना वह न तो उदित होता है और न अस्त होता है। सूर्य ही ऐसा है जिसके निकलने से दिन होता है और छिपने से रात होती है।

Very brilliant stars may rise in the sky and the moon may be enough to adorn the earth but it neither rises nor sets without the sun. The son is the only one which causes day by rising and night by setting.

४. **एकसार्थप्रयातानां**
सर्वेषां तत्र गामिनाम् ।
यद्येकस्त्वरितं यात-
स्तत्र का परिदेवना ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ४१३६)

एक साथ चलने वाले सभी यात्रियों में से यदि एक जल्दी चला गया अर्थात् मृत्यु को प्राप्त हो गया तो इसमें शोक कैसा ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

There should be no grief if a person leaves (dies) earlier than others who started their journey at the same moment with him.

५. एकस्य तस्य मन्ये
धन्यामभ्युन्नतिं जलधरस्य ।
विश्वं सशैलकानन-
माननमवलोकते यस्य ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ७६५)

मैं तो उस एक मेघ की ही उन्नति को धन्य मानता हूँ, जिसके मुख को पर्वत और वन के साथ यह सारा संसार देखता है ।

I consider the progress of the cloud only as the real progress who face is eagerly awaited by the mountains, the forests at the whole world.

६. एकः स एव जीवति
हृदयविहीनोऽपि सहृदयो राहुः ।
यः सकललघिमकारणमुदरं
न बिभर्ति दुष्पूरम् ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः २५८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हृदय से रहित होकर भी एक सहृदय राहु ही वास्तव में जीवित रहता है, जो समस्त नीचताओं के कारणभूत तथा कभी न भरने वाले पेट को धारण नहीं करता।

Despite having no heart, the good-hearted *Rāhu* alone is realy alive who does not satisfy the stomuch which is always empty and which is the root cause of all meanness in the world.

७. **कल्पद्रुमोऽपि कालेन**
भवेद्यदि फलप्रदः ।
को विशेषस्तदा तस्य
वन्यैरन्यैर्महीरुहैः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १८७)

यदि कल्पवृक्ष भी अन्य वृक्षों के समान समय आने पर ही फल प्रदान करे तो जंगल के अन्य वृक्षों से उसमें क्या विशेषता रह जायेगी।

If a *Kalpavṛkṣa* (wishing tree) starts giving fruit regularly like other trees, then what is it's speciality a comporst of other trees of the forest ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८. कवयः परितुष्यन्ति
नेतरे कविसूक्तिभिः ।
न ह्यकूपारवत्कूपा
वर्धन्ते विधुकान्तिभिः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १५८)

कवियों की सूक्तियों से कवि ही प्रसन्न होते हैं, अन्य नहीं । समुद्र के समान कुँवे चन्द्रमा की किरणों से नहीं बढ़ते ।

Only the poets get pleasure out of the *Sūkties* (sayings) of the poets, not others. The rays of the moon do not cause the wells to rise as they do to the oceans.

९. किं पुष्पैः किं फलैस्तस्य
करीरस्य दुरात्मनः ।
येन वृद्धिं समासाद्य
न कृतः पत्रसङ्ग्रहः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १०४९)

उस दुरात्मा करीरवृक्ष के पुष्पों और फलों से क्या लाभ ? जिसने वृद्धि को प्राप्त करके भी पत्तों का सङ्ग्रह नहीं किया ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

What is the use of the flowers and fruits of the mean tree of *Karīra* (a small tree of thorns) which, even when fully grown, did not store the leaves.

१०. तृषां धरायाः शमयत्यशेषां
यः सोऽम्बुदो गर्जति गर्जतूच्चैः ।
यस्त्वेष कस्यापि न हन्ति तृष्णां
स किं वृथा गर्जति निस्त्रपोऽब्धिः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १०८८)

जो मेघ पृथिवी की सम्पूर्ण प्यास को बुझाता है, वह बादल यदि गरजता है तो भले ही खूब जोर से गरजे, किन्तु जो किसी की भी प्यास को नहीं बुझाता ऐसा निर्लज्ज समुद्र भला क्यों गरजता है ।

If a cloud thunders very loudly, no one minds the noise because it quenches the thirst of the whole earth. but why the shameless ocean should thunders since it does not saticfy any one's thrist.

११. धिग्वारिदं परिहृतान्यजलाशयस्य
यच्चातकस्य कुरुते न तृषाप्रशान्तिम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धिक्चातकं तमपि योऽर्थतयास्तलज्ज-
स्तं तादृशं च यदुपैति पिपासितोऽपि ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ८६५)

उस मेघ को धिक्कार है जो उस चातक की प्यास तक नहीं बुझाता है जिसने अन्य जलाशयों का परित्याग कर दिया है । उस चातक को भी धिक्कार है जो याचक भाव से निर्लज्ज होकर, प्यासा होकर भी उसके पास जाता है ।

Woe to the cloud which does not quench the thrist of the *Chātaka* (a bird) which has a bandoned water reservoirs. Woe to the *Chātaka* also which unashamedly goes to it to beg water.

१२. **न कोकिलानामिव मञ्जुकूजितं**
न लब्धलास्यानि गतानि हंसवत् ।
न बर्हिणानामिव चित्रपक्षता-
गुणस्तथाप्यस्ति बके बलव्रतम् ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ८९२)

बगुले में कोकिल के समान मधुर आवाज भले ही नहीं है, हंस के समान नृत्य की कला भी उसने नहीं प्राप्त की, मोरों के समान विचित्र पंखों का गुण भी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसमें नहीं, फिर भी उसमें एक गुण अवश्य है कि वह अपने बकव्रत अर्थात् छद्म आचरण को नहीं छोड़ता ।

Thongh a crane does not have the sweet voice of cuckoo, though he did not learn the art of dancing like a swan, and though he does not have the beautiful wings of a peacock yet it has one trait which is that he never abandons his comouflage.

१३. न च गन्धवहेन चुम्बिता
न च पीता मधुपेन मल्लिका ।
पिहितैव कठोरशाखया
परिणामस्य जगाम गोचरम् ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १०१०)

किसी पवन ने इसे नहीं चूमा, किसी भौंरे ने भी इसका पान नहीं किया; फिर भी यह मल्लिका लता कठोर शाखा से बँधी होकर भी परिपक्वता को प्राप्त हो गयी, यह आश्चर्य है ।

No breeze kissed it. No bee enjoyed it's nectar. Still this *camelī* creeper, despite being tied to a rough and stout branch reached maturity. This is really surprising.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१४. न तादृक्कर्पूरे न च मलयजे नो मृगमदे
फले वा पुष्पे वा तव मिलति यादृक् परिमलः ।
परं त्वेको दोषस्त्वयि खलु रसाले यदधिकः
पिके वा काके वा लघुगुरुविशेषं न मनुषे ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १०१६)

हे आम्रवृक्ष ! तुझमें जो सुगन्ध है, वैसी सुगन्ध न तो कपूर में मिलती है न चन्दन में और न कस्तूरी में ही वह गन्ध है, किसी फल या पुष्प में भी तुझ जैसी सुगन्ध नहीं, किन्तु तुझमें एक दोष बहुत बड़ा है कि तू कोयल में और कौवे में छोटे-बड़े का भेद नहीं मानता ।

O Mango tree ! The fragrance that you poscess is neither available in comphor and sandal wood not in musk. Also no fruit or flower has a fragrance like you. But you have a great weakness that you can not make a difference between big and small in a crow and cuckoo.

१५. नद्यो नीचगता दुरापपयसः कूपाः पयोराशयः
क्षारा दुष्टबकोट संकटतटोद्देशास्तडागादयः।

....

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इत्थं भूतल आकलय्य सकलानम्भो निवेशानिति
त्वां भो मानस संस्मरन्पुनरसौ हंसः समस्यागतः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ८१४)

नदियाँ बहुत नीचे तक गयी हुई हैं, कुओं का जल प्राप्त करना बड़ा कठिन है, तालाब के तट प्रदेश दुष्ट बकोट की झाड़ियों के कारण बड़े संकटपूर्ण हैं और जल भी खारा है। इस प्रकार धरती पर सभी जलस्थानों को देखकर, हे मानस सरोवर ! यह हंस आज बड़ी समस्या में पड़ गया है।

Rivers are very deep. It is very difficult to draw water out of wells. The edges of water tanks have become hazardous owing to the bushes growing these and the water is also hard. seeing all the sources of water on the earth. O *Mānassarovara* the swan is faced with a grave problem.

१६. नयनमसि जनार्दनस्य शम्भो-
मुकुटमणिः सुदृशां त्वमादिदेवः ।
त्यजसि न मृगमात्रमेकमिन्दो
चिरमिति येन कलंकिनं वदन्ति ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ७५५)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे चन्द्रमा, तू भगवान् विष्णु का नेत्र है, भगवान् शिव का मुकुटमणि है और सुन्दर नेत्रों वाली कामिनियों के लिये आदिदेव है, किन्तु सदा अपने पास एक मृग पशु को रखता है इसलिये कलंकी कहलाता है ।

O moon, you are the eye of lord *Viṣṇu*, the crown diamond of Lord *Śiva*, and the first god for the women with beautiful eyes never the less persons call you stained because you keep the company of deer.

१७. नास्य भारग्रहे शक्ति-
र्न च वाहगुणः क्वचित् ।
देवागारे बलीवर्द-
स्तथाप्यश्नाति भोजनम् ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ९६१)

देवालय में स्थित शिववाहन बैल की न तो भार को उठाने की शक्ति है और न वाहन का ही उसमें गुण है, फिर भी वह भोजन करता है (पूजक लोग भोजन भेंट करते हैं) (भाव यह है कि भगवान् की शरण में गया हुआ व्यक्ति कुछ भी न करता हुआ सुख भोगता है ।)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The ox in a temple made of stone has no capacity to carry loads and he has no quality of a vehicle. Never the-less he eats much food. Worshippers present him with food. In other words one who has obtained the shelter of god, enjoys happiness without dowing any work.

१८. निजकरनिकरसम्मृद्ध्या धवलय
भुवनानि पार्वण शशांक ।
सुचिरं हन्त न सहते
हतविधिरिह सुस्थितं कमपि ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ७५२)

हे पूर्णिमा के चन्द्रमा ! अपने किरण समूह की सम्मृद्धि से समस्त भुवनों को धवल बना दो, क्योंकि दुष्ट विधाता यहाँ किसी को भी बहुत समय तक स्वस्थ देखना सहन नहीं करता ।

O full moon, whiten all the worlds with the glory of your bunch of rays, because the cruel fate does not tolerate happiness of any one for a long time.

१९. निमीलनाय पद्माना-
मुदयायाल्पतेजसाम् ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तमसामवकाशाय
व्रजत्यस्तमसौ रविः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ७४३)

कमलों को मुरझाने के लिये, अल्प तेज वालों के उदय के लिये तथा अन्धकारों को अवकाश देने के लिये यह सूर्य अस्तांचल को जा रहा है। (अर्थात् तेजस्वी पुरुष की मृत्यु से सज्जन निराश हो जाते हैं, अल्प तेज वाले नीच पुरुष उन्नति प्राप्ति करते हैं और तमोगुण अर्थात् पाप बढ़ते हैं)

For the withering of the lotuses, for the progress of spirit less and to provide space for darkness, this sun is going to set.

२०. **निम्ब किं बहुनोक्तेन**
निष्फलानि फलानि ते।
यानि संजातपाकानि
काका निःशेषयन्त्यमी ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १०४०)

हे नीम! अधिक कहने से क्या लाभं? तेरे फल व्यर्थ हैं। जब ये पक जाते हैं तो ये कौवे इन्हें खा जाते हैं।

O margosa ! What's the use of saying

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

much ? Thy fruits are worthless, when they ripen, they are eaten by crows.

२१. नीरसान्यपि रोचन्ते
कार्पासस्य फलानि मे ।
तेषां गुणमयं जन्म
परेषां गुह्यगुप्तये ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः २९४)

कपास के फल नीरस हैं, किन्तु फिर भी मुझे अच्छे लगते हैं, क्योंकि उनका गुणमय जन्म अर्थात् धागों के रूप में उत्पत्ति दूसरों के गुप्तांङ्गों की रक्षा के लिये होती है ।

Though the fruits of the cotton tree have no juice, yet I like them very much, because their life is useful and transformation into thread is for protection of other's private parts.

२२. नैताः स्वयमुपभोक्ष्यसि
मोक्ष्यसि जलदोषरादिषु क्वापि ।
तत्किं तत्र न मुञ्चसि
मुक्ता भुक्ता भवन्ति यत्रापः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ७८८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हे मेघ ! तू इन जलों का उपभोग स्वयम् तो करेगा नहीं। कहीं बंजर भूमि में इनको छोड़ देगा। फिर तू इन जलों को वहाँ क्यों नहीं छोड़ता, जहाँ इनका उपभोग होता है।

O cloud, you will not use this water for yourself, you will drop them any where on the barren fields, so why do you not drop this water where it is consumed.

२३. पंकजजलेषु वासः
प्रीतिर्मधुपेषु कण्टकैः संगः।
यद्यपि तदपि तवैतच्चित्रं
मित्रोदये हर्षः॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ९९)

हे कमल ! यद्यपि तेरा जल में निवास है (मूर्खों में वास है), मधुपों में प्रेम है (मद्य पीने वालों में तेरी रुचि है), कण्टकों के साथ रहता है (दुःखों में घिरा हुआ है) फिर भी यह बड़े आश्चर्य की बात है कि सूर्य के उदय होने पर तुझे हर्ष होता है। (मित्रों की उन्नति में तुझे हर्ष होता है।)

O lotus, you live in water, (with foolish persons), you love honey bees (are interested in drinkers) and you are

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

attached with the thorns (surrounded with pain) Nevertheless you feel happiness on the sunrise on the progress of friends). It is very strange.

२४. परिमल सुरभित नभसो
बहवः कनकाद्रिपरिसरे तरवः ।
तदपि सुराणां चेतसि
निवसितमिव पारिजातेन ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ९९०)

यद्यपि सुमेरु पर्वत के परिसर में अपने परिमल से आकाश को सुरभित करने वाले अनेक वृक्ष हैं; फिर भी देवों के चित्त में तो बस पारिजात ही बसा हुआ है।

Allthough, there are many trees on the golden mountain which adorn the sky with their beauty. Nevertheless only the *pārijāta* takes its place in the hearts of the gods.

२५. पिब पयः प्रसर क्षितिपान्तिकं
कलय काञ्चन काञ्चनशृंखलाम् ।
इदमवद्यतमं हि यदीहस
भषक सम्प्रति केसरिणस्तुलाम् ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १२११)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे कुत्ते ! तू भले ही दूध पी ले, राजा के पास भी चला जा, कोई सुवर्ण की जंजीर भी पहन ले, इसमें कोई बात नहीं, किन्तु यदि तू अपनी तुलना सिंह से करना चाहता है तो यह बहुत बुरी बात है ।

O dog ! you may drink milk, go near the king and bear a golden chain, but if you want to compare yourself with a lion, this is very wrong.

२६. पीतं यत्र हिमं पयः कवलिता यस्मिन् मृणालांकुरा-
स्तापार्तेन निमज्य यत्र सरसो मध्ये विमुक्तः श्रमः ।
धिक्तस्यैव जलानि पंकिलयतः पाथोजिनीं मथ्नतो
मूलान्युत्खनतः करीन्द्र भवतो लज्जापि नो जायते ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ९२१)

हे करीन्द्र ! जहाँ तूने ठंडा पानी पिया, जिसमें मृणाल के अंकुर खाये, संताप से पीड़ित तूने जिसमें डूबकर अपनी थकावट मिटायी, उसी सरोवर के जल को मलिन करते हुए, कमलिनियों को मसलते हुए तथा उनकी जड़ों को उखाड़ते हुए क्या तुझे लज्जा भी नहीं आती ।

O *Karīndra*, where you quenched your thirst with cold water, ate the sprouts of

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

mṛṇāla, when afflicted with fever, you got rid of tiredness in whole water, do you not feel any sence of shame in dirtying the water of that pool, in crusting the lotuses and in uprooting them ?

२७. प्रावृषेण्यस्य मालिन्यं
को दोषोऽभीष्टवर्षिणः ।
शारदाभ्रस्य शुभ्रत्वं
वद कुत्रोपयुज्यते ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ७६८)

अभीष्ट वर्षा करने वाले वर्षाकालीन मेघ की मलिनता में भला दोष कैसा ? जरा बताइये तो सही कि शरत्काल के मेघ की सफेदी भला कहाँ उपयोग में आती है ।

What is the defect in the blackness of the raincloud if it produces the desired rain ? Tell me, what is the use of the white cloud of the autumn season.

२८. फलं दूरतरेऽप्यास्तां
पुष्णासि कुसुमैर्जनान् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इतरे तरवो मन्ये
करीर तव किंकराः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १०४८)

फल चाहे दूर पर ही हों, किन्तु हे करीर, तुम तो फूलों से ही लोगों को पुष्ट करते हो। मैं समझता हूँ कि हे करीर, अन्य वृक्ष तो तुम्हारे नौकर-चाकर हैं।

Even though the fruits may remain for away, O *Karīra* you energise the people with your flowers. Other trees seem to me to be your servants.

२९. **फुल्लेषु यः कमलिनी कमलोदरेषु**
आम्रेषु यो विलसितः कलिकान्तरस्थः ।
पश्याद्य तस्य मधुपस्य शरद्व्यपाये
कृच्छ्रेण वेणुविवरे दिवसाः प्रयान्ति ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ८२५)

जिसने कमलिनी और खिले हुए कमलों में रहकर दिन बिताये, जिसने आम की कलियों के अन्दर विलास किया, आज देखो उसी भ्रमर के दिन शरत्काल के बीत जाने पर बड़ी कठिनता से बीत रहे हैं।

A black bee, which spent its days living inside the blossomed lotuses, and who enjoyed the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

luxury inside the buds of mango trees, today on the expiry of the autumn season is spending its days in suffering.

३०. बन्धनस्थो हि मातङ्गः
सहस्त्रभरणक्षमः ।
अपि स्वच्छन्दचारी श्वा
स्वोदरेणापि दुःखितः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १२०९)

बन्धन में स्थित हाथी हज़ारों का भरणपोषण करने में समर्थ है, किन्तु स्वच्छन्द घूमने वाला भी कुत्ता केवल अपने पेट से ही दुःखी है।

An elephant, in captivity is able to feed thousands of people, but a dog, roaming freely is not able to feed himself properly.

३१. मलोत्सर्गं गजेन्द्रस्य
मूर्ध्नि काकः करोति चेत् ।
कुलानुरूपं तत्तस्य
यो गजो गज एव सः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १२०७)

यदि हाथी के ऊपर कौवा मल छोड़ देता है तो यह

Funding by IKS-MoE

उसके कुल के अनुरूप ही है । हाथी फिर भी हाथी ही है ।

If a crow drops its excreta on the head of an elephant then it is appropriate to the trait of the specie. The elephant inspite of it remains as dignified as it was earlier.

३२. **शुकमुकुलितजिह्व : स्थीयतां किं वचोभिः**
तव वचनविनोदे नादरः पामराणाम् ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ८७८)

जिह्वा को बन्द किये हुए ओ तोते ! थोड़ा ठहर, तेरे वचनों से क्या लाभ ? क्योंकि तुच्छ व्यक्ति इन मीठे वचनों का आदर नहीं कर सकते ।

O Parrot, please keep silence. What is the use of your sweet sound ? The mean persons cannot appreciate your sweet tongue.

अहिंसा

१. **अहिंसा वैदिकं कर्म**
ब्रह्मकर्मेति तत्स्मृतम् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ५/७४)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अहिंसा वैदिक कर्म और ब्राह्मण कर्म माना गया है ।

Nonviolence has been declared to be an action sanctioned by the Vedas, ordained for the *Brāhmaṇas*.

२. **कंडनी पेषणी चुल्ली**
उदकुम्भी च मार्जनी ।
पञ्च यूना गृहस्थस्य
अहन्यहनि वर्तते ॥

(पराशरस्मृतिः, २/१३)

गृहस्थ पुरुष के पाँच सूत्र प्रतिदिन पास रहते हैं– ओखली, चक्की, चूल्हा, जलपात्र और बुहारी ।

The mortar, the grinder, the stove, the water pot and the swab, these five strings are found every day in the house of a family man.

३. **कर्मणा मनसा वाचा**
न हिंस्यात्परदारकान् ।

(जयाख्यसंहिता, १६/३२६)

मन, वचन और कर्म से दूसरों के बच्चों की हिंसा नहीं करनी चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Let one not practise violence on other's children by thought, word or deed.

४. क्रोधयुक्तो यद्यजते
यज्जुहोति यदर्चति ।
सर्वं हरति तत्तस्य
आमकुम्भ इवोदकम् ॥ (आपस्तम्बसूक्तम्)

क्रोध से युक्त पुरुष जो यज्ञ करता है, जो होम करता है और जो पूजा करता है, वह क्रोध उसका सब कुछ हर लेता है । जैसे कच्चे घड़े में जल नहीं ठहरता ।

If an enraged person does a sacrifice or an oblation or performs worship, he gets deprived of everything just as water seeps out of a raw earthen pot.

५. न तु प्राणिवधः स्वर्ग्यः ।

(मनुस्मृतिः, ५/४८)

प्राणियों की हिंसा कभी भी सुखदायक नहीं होती ।

Killing of living beings never leads to happiness.

६. न मांसभक्षणे दोषो
न मद्ये न च मैथुने ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रवृत्तिरेषा भूतानां
निवृत्तिस्तु महाफला ॥ (मनुस्मृतिः, ५/५६)

मांस भक्षण में, मदिरापान में तथा मैथुन में स्वाभाविक दोष नहीं है यह तो साधारण प्राणियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है । किन्तु इनमें निवृत्ति महान् उत्तम फल प्रदान करती है ।

There is ipso facto no sin in enjoyment of meat, wine and sex. These are the natural tendencies of all beings, but detachment from these things brings about a great result.

७. **न हिंस्यात्सर्वभूतानि ।** (वृद्धहारीतस्मृतिः, ८/१६)

सभी प्राणियों की हिंसा नहीं करनी चाहिये ।

One should not kill any being.

८. **न हिंस्याद् ब्राह्मणान् गाश्च ।**

(मनुस्मृतिः, ४/१६२)

ब्राह्मण और गौ की हिंसा नहीं करनी चाहिये ।

One should not kill *Brāhmaṇas* and cows.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

९. **नाकृत्वा प्राणिनां हिंसां**
मांसमुत्पद्यते क्वचित् ।
न च प्राणिवधः स्वर्ग्य-
स्तस्मान्मांसं विवर्जयेत् ॥

(मनुस्मृतिः, ५/४८)

कहीं भी प्राणियों की हिंसा किये बिना मांस प्राप्त नहीं होता । किन्तु प्राणियों का वध सुख देने वाला नहीं है । इसलिये मांस-भक्षण का त्याग कर देना चाहिये ।

Nowhere can meat be obtained without killing animals. But killing of animals does not lead to happiness. Meat eating, therefore should be obandoned.

१०. **नाततायिवधे दोषो**
हन्तुर्भवति कश्चन ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ९/३५०)

आततायी का वध कर देने से मारने वाले को कोई पाप नहीं लगता ।

There is no sin on the part of a person for killing a murderer.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

११. नावेदविहितां हिंसा-
मापद्यपि समाचरेत् ।

(मनुस्मृतिः ५/४३)

वेदों से निषिद्ध की गयी हिंसा को आपत्काल में नहीं करना चाहिये ।

One should not resort to the violence prohibited by the Vedas even in an emergency.

१२. मोक्षो भवेन्नित्यमहिंसकस्य ।

(आपस्तम्बस्मृतिः, १०/७)

अहिंसक पुरुष को ही सदा मोक्ष प्राप्त होता है ।

Only a non-violent person attains salvation.

१३. यावन्ति पशुरोमाणि
तावत्कृत्वो ह मारणम् ।
वृथा पशुघ्नः प्राप्नोति
प्रेत्य जन्मनि जन्मनि ॥

(मनुस्मृतिः, ५/३८)

जितने पशु के रोम हैं, उतनी ही बार पशुओं को व्यर्थ मारने वाला मनुष्य मरने के बाद जन्म-जन्म में मारा

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाता है ।

One who kill animals without any reason himself gets killed in as many births after his death as are the hair on an animal's body.

१४. या वेदविहिता हिंसा
नियताऽस्मिंश्चराचरे ।
अहिंसामेव तां विद्याद्
वेदाद् धर्मो हि निर्बभौ ॥

(मनुस्मृतिः, ५/४४)

जो वेदोक्त हिंसा इस चराचर में निर्धारित है, उसको अहिंसा ही समझना चाहिये, क्योंकि धर्म वेद से ही निकला है ।

The violent acts, which are ordained by Vedas in this world full of animate and in animate things should be considered verily non-violent acts because *Dharma* has emanated from the *Vedas*.

१५. यो बन्धनवधक्लेशान्
प्राणिनां न चिकीर्षति ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स सर्वस्य हितप्रेप्सुः
सुखमत्यन्तमश्नुते ॥ (मनुस्मृतिः, ५/४६)

जो मनुष्य किसी भी प्राणी को बन्धन, मृत्यु या क्लेश देना नहीं चाहता, सबका हित चाहने वाला वह पुरुष अत्यन्त सुख को प्राप्त करता है ।

He who does not seek bondage, death or suffering to any living creature, but desires the good of all beings, obtains exceeding bliss.

१६. **योऽहिंसकानि भूतानि**
हिनस्त्यात्मसुखेच्छया ।
स जीवंश्च मृतश्चैव
न क्वचित्सुखमेधते ॥

(मनुस्मृतिः, ५/४५)

जो अहिंसक प्राणियों को अपने सुख की इच्छा से मारता है, वह जीते हुए और मरने के बाद भी कहीं भी सुख नहीं पाता ।

He who also deliberately kills innoxious beings for his own pleasure, never finds happiness, either in this life or after death.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१७. वर्जयेन्मधु मांसं च । (मनुस्मृतिः २/१७७)

मदिरा और मांस का परित्याग कर देना चाहिये ।

One should obstain from wine and meat.

१८. शूकरे निहते चैव
दन्तुरो जायते नरः । (शातातपस्मृतिः, २/५०)

सूअर की हत्या करने वाला पुरुष ऊँचे दाँतों वाला होता है ।

Killer of a pig has long teeth.

१९. सभायां पक्षपाती यो
जायते पक्षघातवान् ।

(शातातपस्मृतिः, ३/२२)

सभा में बैठकर पक्षपात करने वाला पुरुष पक्षाघात से पीडित होता है ।

A person taking sides in a meeting of the adjudication council, gets struck by hemiplegia.

२०. हिंसारतश्च यो नित्यं
नेहासौ सुखमेधते ॥ (मनुस्मृतिः, ४/१७०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. BVRSSMV

जो पुरुष सदा हिंसा में लगा रहता है, वह इस लोक में सुख प्राप्त नहीं करता ।

A person, who is engaged in violent activities, attains no happiness in this world.

आत्मा

१. **अपि देवा न जानन्ति**
स्वात्मानं किमुतापरे ।

(नारदपाञ्चरात्रपरिशिष्टम् २/४)

आत्मा के स्वरूप को देवता भी नहीं जानते, फिर अन्य की तो बात ही क्या है ।

Even gods do not know the nature of the soul what to talk of others?

२. **आत्मैव देवताः सर्वाः**
सर्वमात्मन्यवस्थितम् ।
आत्मा हि जनयत्येषां
कर्मयोगं शरीरिणाम् ॥

(मनुस्मृतिः, १२/११९)

आत्मा ही सर्वदेवस्वरूप है । सब कुछ आत्मा में ही

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रतिष्ठित है । इन शरीरधारियों के साथ कर्मों का संयोग आत्मा ही करता है ।

The *Ātman* (soul) is all the gods. Every thing vests in the *Ātman* (soul). It is *Ātman* (soul) alone which ensures the amalgamation of being with *karma* (action).

आसक्तिः

१. असत्सङ्गाद् गुणज्ञोऽपि
विषयासक्तमानसः ।
अकस्मात् प्रलयं याति
गीतरक्तो यथा मृगाः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ४१८९)

दुष्ट पुरुषों के संग से गुणज्ञ पुरुष भी विषयों से आकृष्ट मन वाला होकर अकस्मात् ही उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जैसे गीत में अनुरक्त होकर मृग नष्ट हो जाता है ।

As a deer being absorbed in easily killed, similarly a person, even having good attributed, being attached with wordly

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

pleasures gets destroyed by keeping the company of wicked persons.

इन्द्रियसंयमः

१. इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु
न प्रसज्येत कामतः । (मनुस्मृतिः, ४/१६)

काम के वश होकर इन्द्रियों के विषय में आसक्त नहीं होना चाहिये ।

Under the unfluence of tastful passion, one should not be attached to the objects of senses.

२. इन्द्रियाणां विचरतां
विषयेष्वपहारिषु ।
संयमे यत्नमातिष्ठेद्
विद्वान् यन्तेव वाजिनाम् ॥

(मनुस्मृतिः, २/८८)

विद्वान् पुरुष, विषयों में ले जाने के स्वभाव वाली, इधर-उधर भटकती हुई इन्द्रियों को संयम में रखने का प्रयास करे, जैसे सारथि अश्वों के नियन्त्रण में यत्न करता है ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

A wise man should strivs to restrain his desires which run wild and lead to sensual pleasures, like a charioteer tries to keep his horses under control.

३. **जितेन्द्रियो हि शक्नोति**
वशे स्थापयितुं प्रजाः ॥

(मनुस्मृतिः ७/४४)

जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया है, वही प्रजाओं को वश में रख सकता है।

One, who has controlled his senseorgans, only is able to keep his people under control.

४. **लोका वशीकृतास्तेन**
येन ह्यात्मा वशीकृता । (दक्षस्मृतिः, ७/१)

जिसने अपने आपको वश में कर लिया, उसने तीनों लोक वश में कर लिये।

One who has disciplined himself, has controlled all three lokas (regions).

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऋषिः

१. **ऋषिर्गुरुत्वात् शिरसैव धार्यः ।**

(योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, नित्याचारप्रदीपः, प्रथमभागः, पृ. ६०)

ऋषि गुरुत्व के कारण गुरु होता है, सिर से धारण करने योग्य है अर्थात् आदरणीय है ।

A sage is a guru (teacher). He is fit for wearing on the head, in other words, worthy of veneration.

कर्म

१. **कर्मजा गतयो नृणा-**
मुत्तमाधममध्यमाः । **(मनुस्मृतिः, १२/३)**

मनुष्यों की उत्तम, मध्यम और अधम स्थितियों पर (जितनी भी योनियाँ हैं) वे सब कर्म से ही उत्पन्न हुई हैं ।

All the three states of human beeings i.e. exalted, average and low, are determined by their actions.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. **कर्मणां नियतानां तु**
त्यागो नैव विधीयते ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/४७)

मनुष्यों के जो नियत कर्म हैं, उनका त्याग करना उचित नहीं ।

Non-performance of the regular allotted duties is not proper.

३. **कृतस्य कर्मणो नाशो**
नास्ति जन्मशतेष्वपि ॥

(परमसंहिता, ३/२१)

किये गये कर्मों का नाश सैकड़ों जन्मों के पश्चात् भी नहीं होता ।

Results of deeds done cannot be destroyed even after a hundred births.

४. **न विनश्यति भोगेन**
विना प्रारब्ध कर्म यत् ।

(अहिर्बुध्न्यसंहिता, ४५/७)

प्रारब्ध कर्म कभी भी फलभोग के विना समाप्त नहीं होता ।

Prārabdha Karma (desting) never ceases

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

without (an individual) undergoing its result.

कर्मफलम्

१. यदि नात्मनि पुत्रेषु
न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु ।
त त्वेव तु कृतोऽधर्मः
कर्तुर्भवति निष्फलः ॥

(मनुस्मृतिः ४/१७३)

यदि अधर्म का फल कर्ता को अपने जीते जी नहीं मिला तो उसका फल पुत्रों में मिलेगा । यदि पुत्रों में भी अधर्म फलित नहीं हुआ तो नाती-पोतों के रूप में मिलेगा, किन्तु ऐसा कभी नहीं हो सकता कि कर्ता को अधर्म का फल न मिले ।

If a sin does not fructify in the during the life time of the sinner, it will be fructifued in his sons. If not in his sons, then in grandsons, but it is impossible that the sinner escapes the consequence of his sin.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कामः

१. **सङ्कल्पमूलः कामो वै ।** (मनुस्मृतिः १/१२२)

समस्त कामनाओं का मूल संकल्प है ।

Conception of ideas is the origin of all desires.

क्षमा

१. **एकः क्षमावतां दोषो**
द्वितीयो नोपपद्यते ।
यदेनं क्षमया युक्त-
मशक्तं मन्यते जनः ॥

(आपस्तम्बस्मृतिः, १०/५)

क्षमाशील पुरुष का बस एक ही दोष है दूसरा नहीं । वह दोष यह है कि क्षमा से युक्त उस पुरुष को दूसरे लोग असमर्थ समझते हैं ।

A forgiving person has only one fault and no other. The fault is that people consider him incapable and weak just because he is full of fogineness.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. क्षमा गुणो हि जन्तूनाम् ।

(आपस्तम्बस्मृतिः १०/५)

क्षमा मनुष्यों का महान् गुण है ।

Forgiveness is a great virtue of menkind.

३. क्षान्त्या शुद्धयन्ति विद्वान्सः ।

(मनुस्मृतिः, ५/१०७)

विद्वान् लोग क्षमा से शुद्ध होते हैं ।

Wise men are purified by forgiveness.

४. क्षमा जयति न क्रोधः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ८/११८)

सर्वत्र क्षमा की ही विजय होती है, क्रोध की नहीं ।

Forgiveness prevail always not anger.

५. क्षमावान् पुरुषो भवेत् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः ८/११८)

मनुष्यों को क्षमावान् होना चाहिये ।

A human beeing should always be clement.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६. क्षमा दमः क्षमा दानं
क्षमा सत्यं क्षमा तपः ।
क्षमाऽहिंसा क्षमा धर्मः
क्षमा चेन्द्रियनिग्रहः ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः २०/२०)

क्षमा दम है, क्षमा दान है, क्षमा सत्य है, क्षमा तप है, क्षमा अहिंसा है, क्षमा धर्म है तथा क्षमा इन्द्रियों का निग्रह है ।

Forgiveness is self-restraint, forgiveness is charity, forgiveness is truth, forgiveness is austerity, forgiveness is the non-violence, forgiveness is *Dharma* (virtue) and forgiveness the restraint of the sensess.

गुरुः

१. अविद्यो वा सविद्यो वा
गुरुरेव जनार्दनः ।

[स्मृतिभारसंग्रहः पृ. २९६]

गुरु चाहे अनपढ़ हो अथवा पढ़ा-लिखा, वह साक्षात् भगवान् है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The teacher is virtualy God, irrespective of whether he is educated or illitriate.

२. **आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः ।**

(मनुस्मृतिः, २/२२६)

गुरु ब्रह्मा का साक्षात् रूप होता है ।

The teacher is the image of *Brahma.*

३. **आसमाप्तेः शरीरस्य**
यस्तु शूश्रूषते गुरुम् ।
स गच्छत्यंजसा विप्रो
ब्राह्मणः सद्मशाश्वतम् ॥

(मनुस्मृतिः, २/२४४)

शरीर की समाप्ति पर्यन्त जो अपने गुरु की सेवा करता है, वह शीघ्र ही शाश्वत ब्रह्मपद को प्राप्त कर लेता है ।

One who serves his teacher till the dissolution of his body, obtains the stage of elernol *Brahma.*

४. **गुरुर्देवाद् विशिष्यते ।**

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ४०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुरु देवता से विशिष्ट होता है ।

Between the teacher and the cleity. The teacher is more respectalice.

५. **गुरुद्वारे सपिण्डे वा**
गुरुवद् वृत्तिमाचरेद् ।

(मनुस्मृतिः, २/२२२)

गुरु की पत्नी में और उसके वंश वालों में गुरु के समान ही व्यवहार करना चाहिये ।

One should behave with one's teacher's wife or his relatives as with one's own teacher.

६. **गुरोर्गुरौ सन्निहिते**
गुरुवद्वृत्तिमाचरेत् । (मनुस्मृतिः, २/१८०)

यदि गुरु का भी गुरु समीप आ जाये तो उनके साथ गुरु के समान ही आचरण करना चाहिये ।

If one's teacher's teacher comes near, one should behave with him as with one's own teacher.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गृहस्थः

१. अदृष्टपूर्वमज्ञात-
मतिथिं प्राप्तमर्चयेत् ।
स्वागतासनदानेन
प्रत्युत्थानेन चाम्बुना ॥

(लघुहारीतस्मृतिः ४/५६)

पहले कभी न देखा गया तथा न जाना गया अतिथि भी यदि घर पर आ जाये तो स्वागतपूर्वक आसन देकर, अगवानी करके और जल देकर उसकी पूजा करें ।

Let him honour a guest approached to him though unseen and unknown before by giving him seat, by going forward or by water.

२. अनुकूलकलत्रो यः
स्वर्गस्तस्य इहैव हि ॥ (दक्षस्मृतिः ४/५)

जिस पुरुष की स्त्री वश में है, उसके लिये यहीं पर स्वर्ग है ।

One whose wife is under his control, enjoys the pleasures of heaven in this very

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

world.

३. आश्रमेषु तु सर्वेषु प्रवरः सुलभो गृही ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ० ११)

समस्त आश्रमों में गृहस्थाश्रम सबसे श्रेष्ठ और सुलभ है ।

Amongst all *Aśramas Gṛhasthāśrama* is best and easy to be found.

४. गर्भिण्यातुरभृत्येषु
बालवृद्धातुरादिषु ।
बुभुक्षितेषु भुञ्जानो
गृहस्थोऽश्नाति किल्विषम् ॥

(व्यासस्मृतिः, ३/४५)

गर्भिणी स्त्री, रोगी, भृत्य, बालक और वृद्ध के भूखा रहते हुए जो गृहस्थ पुरुष भोजन करता है, वह पाप को ही खाता है ।

A house-holder who partakes of food when a pregnant woman, a diseased person, a child or an old man is hungry, only eats sin.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५. **गृहवासः सुखार्थो हि**
पत्नीमूलं च तत्सुखम् । (दक्षस्मृतिः ४/७)

गृहस्थाश्रम में निवास सुख के लिये होता है, किन्तु उस सुख का मूल पत्नी है ।

The house holding is for the purpose of marriment, and that marriment is caused by the wife.

६. **गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः**
स त्रीनेतान् बिभर्ति हि । (मनुस्मृतिः, ६/८९)

गृहस्थाश्रम सबसे श्रेष्ठ कहलाता है, क्योंकि वही इन शेष तीनों आश्रमों का पालन करता है ।

A married person is said to be the superior, because he supports all the rest three *Āśramas*.

७. **गृहस्थ एव यजते**
गहस्थस्तप्यते तपः ।
ददाति च गृहस्थश्च
तस्माच्छ्रेयो गृहाश्रमी ॥ (शंखस्मृतिः ५/६)

गृहस्थ ही यज्ञ करता है, गृहस्थ ही तप करता है । गृहस्थ ही दान करता है, इसलिये गृहस्थ ही सबसे श्रेष्ठ है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Only a house holder performs sacrifices, only he bears the austerity and he only donates wealth, hence a house holder is superior than others.

८. **गृहाश्रमात्परो धर्मो**
नास्ति नास्ति पुनः पुनः । (व्याससमृतिः ४/२)

गृहस्थाश्रम से बड़ा कोई आश्रम नहीं होता ।

There is no virtue greater than *Gṛhasthāśrama.* It is declared again and again.

९. **गृहाश्रमात्परं नास्ति**
यदि भार्या वशानुगा । (दक्षस्मृतिः ४/१)

यदि पत्नी वशवर्तिनी है तो गृहस्थाश्रम से बड़ा कोई आश्रम नहीं है ।

There is no superior than a married life if the wife remains under control.

१०. **गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किञ्चित् ।**

(बृहत्पराशरस्मृतिः ५/१०)

गौवों के समान कोई भी अन्य धन नहीं होता ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

There is no wealth like cows.

११. चतुर्णामाश्रमाणां तु
गृहस्थस्तु विशिष्यते ।

(वशिष्ठस्मृतिः श्लोकः २३१)

चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम ही सबसे विशिष्ट है ।

The *Gṛhastha* only is the superior among the four *Āśramas*.

१२. जीवतो वाक्यकरणात्
क्षयाहे भूरि भोजनात् ।
गयायां पिण्डदानाच्च
त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/१९६)

इन तीन कार्यों से ही पुत्र की पुत्रता है कि वह जीवित रहते हुए पिता का कहना मानता है, दूसरे वह पिता की मृत्यु के दिन सबको भोजन कराता है और गया में श्राद्ध करता है ।

To obey of his parents in their life, to give a rich feast on the day of death of their parents and to give oblation to manes in Gayā, these are three duties of a real son.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१३. तृणवन्मन्यते नारी
वृद्धभावे स्वकं पतिम् । (दक्षस्मृतिः ४/११)

बुढ़ापे में स्त्री अपने पति को तिनके के समान तुच्छ समझती है ।

The woman thinks her husband worthless like a bit or grass in old age.

१४. दम्पती विवदेयातां
नाज्ञातिषु न राजनि ।

(व्यवहारप्रकाशः, पृ. ५०)

पति-पत्नी को अपनी जाति से भिन्न लोगों के सामने और राजा के सामने झगड़ा नहीं करना चाहिये ।
The husband and wife should not discuss with their relatives and befor the king.

१५. द्वाविमौ पुरुषौ लोके
शिरःशूलकरावुभौ ।
गृहस्थश्च निरारम्भो
यतिश्च सपरिग्रहः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १५४९)

इस लोक में दो प्रकार के पुरुष सिर में शूल से चुभते हैं–एक तो अकर्मण्य गृहस्थ और दूसरा पत्नी के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साथ रहने वाला संन्यासी ।

Two types of man make headache in the world-an idle householder and a sage living with wife.

१६. धर्मपत्नी समाख्याता
निर्दोषा यदि सा भवेत् ।

(दक्षस्मृतिः, ४/१६)

यदि पत्नी में कोई दोष नहीं है तो वही धर्मपत्नी कहलाती है ।

A wife can be called *Dharmapatnī* if she has no defect.

१७. न गृहं गृहमित्याहु-
र्गृहिणी गृहमुच्यते ।
गृहे तिष्ठति सा यावत्
तावत्तीर्थसमं गृहम् ॥

(प्रजापतिस्मृतिः श्लोकः ५५)

घर को घर नहीं कहते, अपितु पत्नी ही घर कहलाती है । जब तक वह घर में रहती है, तब तक घर तीर्थ के समान है ।

The wise men do not tell the mansion as a

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

home. The wife only is said to be home. Whilst she lives in at home, that home is as pure as a *Tīrtha*.

१८. न गृहेण गृहस्थः स्याद्
भार्यया कथ्यते गृही ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/७१)

पुरुष घर होने से गृहस्थ नहीं कहलाता, अपितु पत्नी से ही गृहस्थ कहलाता है ।

A man is not to be known the householder by keeping a house, but he is called a householder due to only the wife.

१९. न यज्ञैर्दक्षिणावद्भि-
र्वह्नि शुश्रूषया तथा ।
गृही स्वर्गमवाप्नोति
यथा चातिथिपूजनात् ॥

(शंखस्मृतिः ५/१३)

एक गृहस्थ पुरुष दक्षिणायुक्त यज्ञों से अथवा अग्निहोत्र से उतना स्वर्ग प्राप्त नहीं करता, जितना कि अतिथिपूजन से स्वर्ग प्राप्त करता है ।

A householder does not obtain the paradise by performing the sacrifices

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

followed by the rich remuneration or the worship of fire in that way, as he finds that from the honour of the guests.

२०. **न हि भिक्षुकृतान् दोषान्**
वैश्वदेवो व्यपोहति । (लघुहारीतस्मृतिः)

यदि निराश भिक्षुक किसी गृहस्थ को शाप दे दे तो उस दोष को वैश्वदेव यज्ञ भी दूर नहीं कर सकते ।

Even a *Vaiśvadeva*, the sacrifice can not destroy the defects cursed by a begger.

२१. **प्रतिकूलकलत्रस्य**
नरको नात्र संशयः । (दक्षस्मृतिः, ४/५)

जिसकी स्त्री वश में नहीं है, उसके लिये यहीं पर नरक है । इसमें कोई सन्देह नहीं ।

No doubt, there is hell verily in this life for that person, whose wife is uncontrolled.

२२. **प्रथमा धर्मपत्नी तु**
द्वितीया रतिवर्धिनी ॥ (दक्षस्मृतिः ४/१५)

पहली विवाहित पत्नी धर्मपत्नी कहलाती है । दूसरी विवाहित पत्नी तो केवल रति बढ़ाने के लिये होती है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The first wife is real wife, and second wife is only for the fulfilment of sexual desire.

२३. पुत्रस्यापि तु पुत्रत्वं
यत्राति नरकार्णवात् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/१९०)

पुत्र का पुत्रत्व यही है कि वह पिता को नरक से बचाता है ।

This is the condition of being a son to protect his parents from the ocean like hell.

२४. ब्रह्मचारी गृहस्थो वा
वानप्रस्थो यतिस्तथा ।
आत्मज्ञानेन मुच्यन्ते
यत्र तत्राश्रमे वसन् ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/४४)

ब्रह्मचारी हो या गृहस्थ, वानप्रस्थ हो या संन्यासी किसी भी आश्रम में रहते हुए भी सभी मनुष्य आत्मज्ञान के द्वारा मुक्त हो जाते हैं ।

The celebate or the householder, or a *Vānprastha* or a *Saṁnyāsī*, all of them,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

living in any *Āśrama,* get liberated from the self realisation.

२५. **ब्रह्मचारी यतिर्भिक्षुर्जीवन्त्येते गृहाश्रमात् ।**

(विष्णुस्मृतिः अध्यायः ५९, पृ० ९७)

ब्रह्मचारी, संन्यासी और भिक्षु ये तीनों गृहस्थाश्रम से ही जीवित रहते हैं ।

A *Brahmacārī* an ascetic and a beggar live by the support of *Gṛhasthāśrama.*

२६. **भर्तुः प्रीतिकरा या तु**
भार्या सा चेतरा जरा ।

(दक्षस्मृतिः, ४/१३)

जो पति को प्रसन्न करने वाली है, वास्तव में पत्नी वही है अन्यथा तो वह बुढ़ापा है ।

She is a real wife who performs always the good of her husband, who does not do so, she is like an old age.

२७. **यन्न वेदध्वनिश्रान्तं**
न च गोभिरलंकृतम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यन्न बालैः परिवृतं
श्मशानमिव तद्गृहम् ॥

(अत्रिसंहिता, श्लोकः ३१३)

जो घर वेदमन्त्रों की ध्वनि से नहीं गूंजता, जो गायों से शोभित नहीं है और बच्चों से नहीं घिरा रहता; उस घर को श्मशान ही समझना चाहिये ।

A house, which is neither reverberated by the sound of Veda, nor adorned from the cows and nor is covered by the children, should be known as a cemetery.

२८. यथा मातरमाश्रित्य
सर्वे जीवन्ति जन्तवः ।
एवं गृहस्थमाश्रित्य
सर्वे जीवन्ति भिक्षवः ॥

(वशिष्ठस्मृतिः, श्लोकः २३३)

जिस प्रकार माता का आश्रय लेकर समस्त प्राणी जीते हैं, इसी प्रकार गृहस्थ का आश्रय लेकर ही सारे भिखारी जीते हैं ।

As all the beings live on the support of their mother, like that, all the beggars live by the support of the householder man.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२९. **यथा वायुं समाश्रित्य**
वर्तन्ते सर्वजन्तवः ।
तथा गृहस्थमाश्रित्य
वर्तन्ते सर्व आश्रमाः ॥ (वैदिकमनुस्मृतिः, ३/५३)

जैसे वायु का आश्रय लेकर समस्त प्राणी जीवित हैं वैसे ही गृहस्थाश्रम का आश्रय लेकर समस्त आश्रम जीवित हैं ।

As all the beings depend upon the air for their life, in the same way all the *Āśramas* live by the support of a householder.

३०. **शिष्यो भार्या शिशुर्भ्राता**
पुत्रो दासः समाश्रितः ।
यस्यैतानि विनीतानि
तस्य लोके हि गौरवम् ॥

(दक्षस्मृतिः, ४/१४)

जिसका शिष्य, पत्नी, पुत्र, भाई, बालक, दास और आश्रितजन वश में रहने वाले हों; उसका लोक में गौरव होता है ।

A man, whose disciple, wife, child, brother, son, servant and the dependent are courteous, finds the glory in the world.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३१. **सर्वेऽपि पात्रतां यान्ति, भक्तदानाय गेहिनः ।**

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ० ५९)

भक्त को दान देने के लिए सभी गृहस्थ पात्र हैं ।

All the householders are ability for making charity to a devotee.

३२. **सा पत्नी या विनीता स्यात्**
चित्तज्ञा वशवर्तिनी । (दक्षस्मृतिः, ४/७)

पत्नी वास्तव में वही है जो विनम्र हो, मन को जानने वाली और वश में रहने वाली हो ।

She is a good wife who is humble, who knows the thought and who remains under control of her husband.

३३. **स्वकर्मणामनुष्ठानात्**
सम्यगात्मनि दर्शनात् ।
वेदान्तानां परिज्ञानात्
गृहस्थोऽपि हि मुच्यते ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/४५)

अपने निर्धारित कर्मों का अनुष्ठान करने से, सम्यक् आत्मा के दर्शन से तथा उपनिषदों के ज्ञान से गृहस्थ पुरुष भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Through the performance of his duty, through the complete self realisation and from the discernment of *Vedāntas*, a householder also may get liberated.

३४. स्वदारे यस्य सन्तोषः
परदारनिवर्तनम् ।
अपवादोऽपि नो यस्य
तस्य तीर्थफलं गृहे ॥ (व्याससमृतिः ४/४)

अपनी पत्नी से ही जो सन्तुष्ट रहता है तथा परनारी की इच्छा नहीं करता, जिसकी निन्दा भी नहीं होती, उस गृहस्थ को घर बैठे ही तीर्थ का फल मिलता है ।

A person, who is satisfied by his wife, who is reposed from others' wives and who has no detraction, finds the result of *Tīrtha* at home.

गौ

१. अनातिथ्यं च दुःखित्वं
गोमतो न कदाचन ।

(बृहत्पराशरसंहिता, ५/१८७)

अतिथि-सत्कार का अभाव तथा दुःख की अवस्था

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके पास कभी नहीं आती, जिसके पास गाय है ।

There is no loss of hospitality and no distress of that person who has a cow.

२. **आचार्यं च प्रवक्तारं**
पितरं मातरं गुरुम् ।
न हिंस्याद् ब्राह्मणान् गांश्च
सर्वांश्चैव तपस्विनः ॥ (मनुस्मृतिः, ४/१६२)

आचार्य को, प्रवाचक को, पिता, माता और गुरु को, ब्राह्मणों और गायों को तथा समस्त तपस्वियों को नहीं मारना चाहिये ।

Let him not kill an instructor, a preceptor, father, mother, teacher, *Brāhmaṇas* 'cows and all ascetics.

३. **कुष्ठी गोवधकारी स्या-**
न्नरकान्तेऽस्य निष्कृतिः ।
(शातातपस्मृतिः, श्लोकः ४४)

गाय का वध करने वाला कुष्ठी होता है । नरक भोगने के पश्चात् ही उसकी शुद्धि होती है ।

The murderer of a cow becomes affected with leprosy. After experiencing the hell

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

he gets liberated from the same.

४. **गां न हत्यात् कदाचन ।**

(वृद्धगौतमस्मृतिः १२/१२)

कभी भी गाय की हत्या नहीं करना चाहिये।

Let him not kill always the cow.

५. **गावो लोकस्य मातरः ।**

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १२/२२)

गौवें संसार की माता के समान पालन करती हैं ।

The cows are like the mothers of the people.

६. **गवां हि तीर्थे वसतीह गंगा ।**

(विष्णुस्मृतिः, अध्यायः २४, पृ. ४५३)

गौवों के मूत्रजल में गंगा निवास करती है।

Gangā river abides in the urine of cows.

७. **गोदुग्धं गोमयं क्षीरं**
दधि तक्रं तथा घृतम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गोपुच्छं पश्चिमे भागे
एते सर्वे पवित्रकाः ॥

(आंगिरस्मृतिः, श्लोकः १५६)

गाय का दूध, गोबर, दूध, दधि, छाछ तथा घृत और गाय की पूँछ का पिछला भाग, ये सब पवित्र करने वाले माने गये हैं ।

The cow milk, cow dung, curd, butter, milk, Ghee and the front part of the cow tail, these all are the purifire.

८. **गौरवत्सा न दोग्धव्या ।**

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ५/१६)

बछड़े से रहित गाय का दोहन नहीं करना चाहिये ।

A cow without calf should not be milked.

९. **पातकानि कुतस्तेषां**
येषां गृहमलंकृतम् ।
सततं बालवत्साभिः
गोभिः श्रीभिरिव स्वयम् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः ५/२९)

जिनका घर लक्ष्मी के समान, छोटे-छोटे बछड़ों वाली गौओं से अलंकृत है, भला उन्हें पाप कैसे लग सकता

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है ।

How can the sins touch the men, whose houses are adorned from the cows like *Lakṣmīs* with their calves.

१०. **पृथिव्यां यानि तीर्थानि**
आसमुद्रं सरांसि च ।
गवां शृंगोदकस्नान-
कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ५/२८)

पृथ्वी में जितने भी तीर्थ हैं और समुद्र से लेकर जितने भी पवित्र सरोवर हैं, वे सब भी गाय के सींग पर लगे हुए जल में स्नान करने का जो फल है, उसके सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं है ।

All the holy places and the oceans and pools can not compare with the sixth part of the bath, taken in the water applied in cow horn.

११. **ब्राह्मणाश्चैव गावश्च**
कुलमेकं द्विधा कृतम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः ५/३०)

ब्राह्मण और गौ, इनका कुल एक ही है । बस उसके

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो भाग कर दिये गये हैं । अर्थात् ब्राह्मण के समान ही गौ भी उतनी ही पूजनीय है ।

The *Brāhmaṇas* and the cows are of the same race but are divided into two parts.

१२. लोकेऽस्मिन् मङ्गलान्यष्टौ
ब्राह्मणो गौर्हुताशनः ।
हिरण्यं सर्पिरादित्य
आपो राजा तथाऽष्टमः ॥

(नारदस्मृतिः, नित्याचारप्रदीपः प्रथमभागः, पृ. ४९१)

इस लोक में आठ चीजें मंगलकारी मानी गयी हैं—ब्राह्मण, गौ, अग्नि, सुवर्ण, घृत, सूर्य, जल और आठवां राजा ।

There are eight auspicious things in the world—*Brāhmaṇa*, cow, fire, gold, Ghee, the sun, water and the king.

१३. विष्णोः प्रधानतनवो
विप्रा गावश्च वैष्णवाः ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः ११/३१०)

ब्राह्मण, गाय और वैष्णव ये तीन भगवान् विष्णु के प्रधान शरीर हैं ।

The *Brāhmaṇas*, the cows and the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

worshippers of *Viśṇu*, are the chief products of the Lord *Viśṇu.*

१४. शकृन्मूत्रं हि यस्यास्तु
पीतं दहति पातकम् ।
किमपूज्यं हि तस्याः
गोरिति पाराशरोऽब्रवीत् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ५/१५)

जिस गौ का पिया गया मल मूत्र भी पाप को जला देता है, उस गाय की भला कौन-सी वस्तु अपूजनीय है? अर्थात् उसका सब कुछ पूजनीय है । ऐसा पाराशर मुनि का वचन है ।

Whose excrement and the urine drunk, destroys the sin, what may be unworshipable of that cow ? This is said by *Pārāśara.*

१५. हरन्ति स्पर्शनात् पापं
पयसा पोषयन्ति याः ।
प्रापयन्ति दिवं दत्ताः
पूज्या गावः कथं न ताः ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ५/१३)

जो गौवें स्पर्श करने से पाप को हरती हैं, दूध से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पोषण करती हैं और दान में देकर स्वर्ग को प्राप्त कराती हैं, वे गौवें भला पूजनीय क्यों नहीं होंगी ?

Why should the cows not be worthy of worship when by touching them one gets rid of sins, they feed people with their milk and if given in charity, get the donor pleasures of heaven?

जनकः

१. आचार्याणां शतं पिता ।

(मनुस्मृतिः, २/१४५)

पिता सौ आचार्यों के बराबर होता है ।

A father is a hundred times more venerable than the teacher.

जन्म

१. जन्मान्तरसहस्त्रैस्तु
मानुषत्वमवाप्यते ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः १/३४)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हजारों जन्मों के पश्चात् मनुष्य योनि प्राप्त होती है ।

After thousands of births, the soul is born as a human being.

जीवनोद्देश्यम्

१. आत्मार्थं भोजनं यस्य
सुखार्थं यस्य मैथुनम् ।
वृत्त्यर्थं यस्य चाधीतं
निष्फलं तस्य जीवितम् ॥

(लघुव्याससंहिता २/८२)

जो व्यक्ति भोजन केवल अपने उदरपूर्ति के लिये करता है तथा जो केवल सुख के लिये मैथुन करता है एवं जिसका अध्ययन केवल आजीविका के लिये है, उसका जीवन व्यर्थ है ।

The life of that person is for meaningless who takes food only for himself, who copulates with the woman only for the pleasure and who studies only for livelihood.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्ञानम्

१. **अज्ञं हि बालमित्याहुः ।**

(मनुस्मृतिः २/१२८)

अज्ञानी को ही विद्वान् लोग बालक कहते हैं ।

The sages have always called an ignorant man, a child.

२. **अज्ञो भवति वै बालः ।**

(मनुस्मृतिः २/१२८)

अज्ञानी बालक ही होता है (चाहे उसकी आयु कितनी भी बड़ी हो) ।

A person devoid of knowledge is indeed a child, regardless of his of her age.

३. **ज्ञानं तीर्थं तपस्तीर्थं**
ब्रह्मतीर्थं सनातनम् ।

क्षमा तु परमं तीर्थं
सर्वतीर्थेषु सर्वदा ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, २०/१८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ज्ञान तीर्थ है, तप तीर्थ है, ब्रह्म नित्य सनातन तीर्थ है, किन्तु क्षमा अर्थात् सहनशीलता तो सब तीर्थों में सबसे बड़ा तीर्थ है ।

Knowledge is pilgrimage. Austerity is pilgrimage. Brahma is eternal pilgrimage. but forgiveness i.e. tolerance is the greatest of all pilgrimages.

४. ज्ञानाम्बुना स्नाति च यो हि नित्यं
किन्तस्य भूयः सलिलेन कृत्यम् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः २०/२४)

जो व्यक्ति नित्य ज्ञानरूपी जल से स्नान करता है, फिर उसे अन्य जल से क्या प्रयोजन ?

What is the use of other baths for a person who takes a bath daily in the water of knowledge ?

५. ज्ञानं प्रधानं न तु कर्महीनं
कर्मप्रधानं न तु बुद्धिहीनम् ।
तस्माद् द्वयोरेव भवेत् सिद्धि-
र्न ह्येकपक्षो विहगः प्रयाति ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः ९/२९)

ज्ञान की प्रमुखता है, किन्तु कर्म रहित होकर नहीं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्म की भी प्रधानता है, किन्तु ज्ञानहीन कर्म की नहीं, इसलिये दोनों के मिलने से ही कार्यसिद्धि होती है । एक पंख से कभी पक्षी उड़ नहीं सकता ।

Knowledge is supreme, but not when devoid of action. Action also is supreme but devoid of knowledge is important. So a task is accomplished when these two action come together. A bird cannot fly with a single wings.

६. **देवशुश्रूषणं तीर्थं**
गुरुशुश्रूषणं तथा ।
द्विजशुश्रूषणं तीर्थं
तीर्थं ज्ञानस्य धारणम् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः २०/१३)

देवताओं की सेवा करना तीर्थ है । गुरु की सेवा और ब्राह्मणों की सेवा करना तीर्थ है, तथा ज्ञान प्राप्त करना भी तीर्थ है ।

The service of gods is pilgrimage, likewise the service of teachers, Brāhmaṇas (intellectuals) is a pilgrimage. Acquiring knowleges is also a pilgrimage.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७. **धरादानसमं नास्ति**
विद्यादानं ततोऽधिकम् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. ११६)

पृथ्वी के दान के सदृश कोई श्रेष्ठ दान नहीं है, किन्तु विद्या का दान उससे भी अधिक श्रेष्ठ है ।

There is no gift like the gift of land, but the gift of the knowledge is better than that.

८. **विद्यावान् सर्वकामानां**
भाजनं पुरुषो भवेत् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. ११६)

विद्यासम्पन्न पुरुष समस्त कामनाओं-ऐश्वर्यों का पात्र होता है ।

A man full of the sacred knowledge is fit for all desired things.

९. **विद्या चक्षुरनुत्तमम् ।** (मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. ११६)

विद्या एक उत्तम नेत्र है ।

The knowledge is the best eye of a man.

१०. **वेदः साक्षाद्धरिः प्रोक्तः ।**

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३६३)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वेद को साक्षात् भगवान् विष्णु कहा गया है।

The veda is declared really the Lord Hari.

११. सम्पदन्या ततो नास्ति
मनुष्याणां महात्मनाम् ।
देवानामपि सेन्द्राणां
वेदार्थज्ञानतः परा ॥ (लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३२६)

महात्माओं की, मनुष्यों की तथा इन्द्रादि देवों की वेदज्ञान से बड़ी कोई अन्य सम्पत्ति नहीं होती।

There is no other wealth for great men, greater than the knowledge of Veda, even for the gods including *Indra*.

तृष्णा

१. अपि मेरूपमं प्राज्ञ-
मपि शूरमपि स्थिरम् ।
तृणीकरोति तृष्णैका
निमेषेण नरोत्तमम् ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः ४२७)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरु के समान श्रेष्ठ विद्वान् को भी, स्थिर शूर को भी और पुरुषश्रेष्ठ को भी तृष्णा पल भर में ही तृण के समान उड़ा देती है ।

Even a wiseman as great as the golden mountain, a stable hero, and a great man, are blown away like blades of goas by desire.

दण्डः

१. **दण्डं दण्ड्येषु पातयेत् ।**

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, आचाराध्यायः, श्लोकः ३६८)

दण्डनीय पुरुषों को ही दण्ड दिया जाना चाहिये ।

Only those should be punished who deserve punishment.

२. **दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः ।** (मनुस्मृतिः ७/१८)

विद्वान् लोग दण्ड को ही धर्म कहते हैं ।

The wise consider punishment to be *Dharma*.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३. दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः ।

(मनुस्मृतिः ७/१८)

दण्ड ही समस्त प्रजाओं पर शासन करता है।

Only punishment (given by the ruler) rules over all the people.

४. सभ्या अपि हि दण्ड्या वै
शास्त्रमार्गविरोधिनः ॥

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ७/२७०)

सभ्य पुरुष भी यदि शास्त्रमार्ग का उल्लंघन करते हैं तो वे भी दण्डनीय हैं।

Even the civilised persons deserve punishment if they violate the path ordained by the *śāstras* (holy texts).

दानम्

१. अकृते वैश्वदेवे तु
ये भुञ्जन्ति द्विजातयः ।
वृथा ते तेन पाकेन
काक योनिं व्रजन्ति ते ॥

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः ३)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैश्वदेव यज्ञ (अतिथि यज्ञ) किये बिना जो ब्राह्मण भोजन करते हैं उनका वह भोजन व्यर्थ ही जाता है। उससे वे कौवे की योनि को प्राप्त करते हैं।

Those *Brāhmin,* who eat the food without performing the sacrifice of *Vaiśwadeva* (a sacrifice for universal benefit) do not get any benefit of it and they take rebirth as crows.

२. **अक्रोधनाः सत्यपरा**
धर्मनित्या दमे रताः।
तादृशाः साधवो लोके
तेभ्यो दत्तं महत्फलम्॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १२/२१)

जो लोग क्रोध नहीं करते, सत्य बोलते हैं, धर्म में लगे रहते हैं तथा इन्द्रियों का दमन करते हैं वे ही संसार में साधु कहलाते हैं। उनको दिया गया दान महाफलदायी होता है।

Those persons who do not get angry, who are truthful, who are virtuous and restrain their senses are called saints in the world. Any donation made to them bring very good result.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३. अनाहूतेषु यद्दत्तं
यच्च दत्तमयाचितम् ।
भविष्यति युगस्यान्त-
स्तस्यान्तो न भविष्यति ॥ (व्यासस्मृतिः, ४/२६)

घर पर बुलाये बिना जो दान दिया जाता है और जो दान बिना मांगे दिया जाता है, युग का अन्त तो भले हो जाये किन्तु उस दान का नाश नहीं होता ।

The charity which is performed without calling the beneficiary to the house and which is made unsolicited, will never meet its end, though the era may end.

४. अक्षरद्वयमभ्यस्तं
नास्ति नास्तीति यत्पुरा ।
तदिदं देहि देहीति
विपरीतमुपस्थितम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९२)

पहले जन्म में जिस मनुष्य ने इन दो अक्षरों का अभ्यास किया है कि नास्ति-(मेरे पास दान के लिये धन नहीं है), उसी के विपरीत ये दो अक्षर 'देहि देहि' (कुछ दे दो) इस जन्म में उपस्थित हुए हैं । अर्थात् पूर्वजन्म का अदाता ही इस जन्म में भिखारी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनता है ।

In the eadier birth the person who refused to make any donation in this birth has became a beggar and is all the time begging for alms.

५. अदेशकाले यद् दान-
मपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं
तत्तामसमुदाहृतम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. ९७)

जो दान अनुचित स्थान और अनुचित काल में और अपात्रों को अनादर और अवज्ञा के साथ दिया जाता है, वह दान तामस दान कहलाता है ।

The donation, which is given at an improper place, at an improper time and to an undeserving person without grace and respect, is known as a *Tāmas* (of the lowest quality) donation.

६. अदेयं यच्च गृह्णाति
यश्चादेयं प्रयच्छति ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उभौ तौ चोरवच्छास्यौ
दाप्यौ चोत्तमसाहसम् ॥

(व्यवहारप्रकाशः, पृ. ९९)

जो व्यक्ति अदेय वस्तु का ग्रहण करता है और जो अदेय वस्तु का दान करता है, वे दोनों ही चोर के समान दण्डनीय हैं । उन्हें बड़ी चोरी का दण्ड देना चाहिये ।

He who, accepts the donation of something not worthy of being donated and he, who makes such donation, both should be punished like a thief. They should be punished for big theft.

७. **अधमं याच्यमानं स्यात् ।**

(बृहत्पराशरसंहिता, १/२८)

जो दान मांगने से प्राप्त होता है, वह दान निकृष्ट कहा गया है ।

A donation which has been obtained on demand by the taker, has been said to be the lowest form of donation.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८. **अन्नदः प्राणदो लोके**
प्राणदः सर्वदो भवेत् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः १२/३७)

अन्न दान करने वाला लोक में प्राणदाता कहलाता है और जो प्राणदाता है, वही तो सर्वदाता है ।

The donor of food is known, in the world as a lifegiver. And one who is life giver, is the all provider.

९. **अन्नदानं परो धर्मः ।**

(परमसंहिता, १२/४४)

अन्न का दान परम धर्म है ।

Gift of food is the best form of charity.

१०. **अन्नं प्राणो मनुष्याणा-**
मन्नदः प्राणदो भवेत् ।
तस्मादन्नं विशेषेण
दातव्यं भूतिमिच्छता ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ६/७३)

अन्न ही मनुष्यों का प्राण है, इसलिये अन्न का दान करने वाला प्राणदाता होता है । अतः कल्याण चाहने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाले को विशेषरूप से अन्न का ही दान करना चाहिये ।

Food is the life of men. The donor of food is the donor of life. Therefore he, who desires well being, should particularly donate food.

११. अन्नाद् दशगुणं पुण्यं
लभेद् दाता न संशयः ।

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः श्लोकः १५१)

अन्न का दान करने वाला पुरुष अन्न से दस गुणा पुण्य प्राप्त करता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

The donor of food grains earns virtue ten times of the donated grain, there is no doubt about it.

१२. अन्नदो भवति श्रीमान् ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३३८)

अन्न का दान करने वाला व्यक्ति श्रीयुक्त होता है ।

The donator of the food becomes wealthy.

१३. अन्नं ब्रह्म समाख्यातं
यतो भूतानि तेन वै । (लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३३८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्न को ब्रह्म कहा गया है, क्योंकि उससे प्राणी उत्पन्न होते हैं ।

The food is called a *Brahma*, because thence all the beings take birth.

१४. अन्ने श्रितानि भूतानि
अन्नं प्राणमिति श्रुतिः ।
तस्मादन्नं प्रदातव्य-
मन्नं हि परमं हविः ॥

(बोधायनस्मृतिः २/३/६८)

समस्त प्राणी अन्न पर ही आश्रित हैं । अन्न ही प्राण है, ऐसा श्रुति भी कहती है । इसलिये अन्न का ही दान करना चाहिये, क्योंकि अन्न ही सबसे बड़ी आहुति है ।

All the beings are dependent on food. Food is the vital force, it is declared by the sacred texts. Hence food should be donated because food is considered the greatest oblation.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१५. अपुण्यस्थाने यद्दत्तं
वृथा दानं प्रकीर्तितम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः १०/३१७)

पुण्यहीन लोगों को दिया गया दान निष्फल कहा गया है ।

A donation, given to a non pious persons has been declared as fruitless.

१६. अपात्रेषु तु यद्दत्तं
दहत्यासप्तमं कुलम् ।

(अत्रिस्मृतिः श्लोकः १४९)

अपात्र को जो दान दिया जाता है, वह सात पीढ़ी तक दग्ध करता है ।

A donation given to the undeserving person, tortures, as if by fire, seven generations of the donor.

१७. अयाचित प्रदाता वै
स याति गतिमुत्तमाम् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः ३४/४७)

बिना मांगे देने वाला दानी उत्तम गति को प्राप्त करता है ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The person who donates without being asked for gains an excellent state.

१८. **अयाचितं धनं पूतं**
शुक्लवृत्त्या समागतम् ।

(प्रजापतिस्मृतिः श्लोकः ४६)

सात्त्विक वृत्ति से आया हुआ, बिना माँगे प्राप्त हुआ धन पवित्र होता है ।

The wealth earned throgh right conduct and which comes unsolicited is always pure.

१९. **अर्थिने सततं देयम् ।**

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १०१)

याचक को अवश्य दान देना चाहिये ।

The donation must be given always to the beggar.

२०. **अश्रोत्रिये वृथा दानं**
वृथा श्राद्धमदक्षिणम् ।

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः २१७)

अश्रोत्रिय को दिया गया दान व्यर्थ है और दक्षिणा के विना श्राद्ध व्यर्थ हो जाता है ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Any donation made to a non learned person is fruitless, and *śrāddha* performed without remuneration (Dakṣiṇā) gets no result.

२१. अस्नात्वाऽश्नन् मलं भुङ्क्ते
अजप्त्वा पूयशोणितम् ।
अजुह्वंश्च कृमीन् कीटान्
अददंश्च शकृत्तथा ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, २/२२५)

जो बिना स्नान किये भोजन करता है वह मानो मल खाता है । जो बिना जप किये भोजन करता है, वह दूषित रक्त खाता है । बिना होम किये खाने वाला मानों कृमि और कीड़ों को खाता है तथा बिना दान किये खाने वाला मांनों कचरा खाता है ।

A person, who takes meals without taking a bath, eats faeces without repetition of *mantra*, eats contaninated blood, without *yajña*, eats the worms and insects and without giving charity, eats the refuse.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२२. आतुरस्य भिषङ्मित्रं
दानं मित्रं मरिष्यतः ।

(शातातपस्मृतिः स्मृतिचन्द्रिका, अशोचकाण्डः, पृ. ७९)

रोगी के लिये वैद्य ही मित्र है और मरने वाले पुरुष के लिये दान ही मित्र है ।

The *Vaidyā* (doctor) is the friend of a sick person and charity is the friend a dying person. Donation by and for a dying person is like a friend.

२३. इष्टो वा यदि वा मूर्खो
द्वेष्यः पण्डित एव वा ।
प्राप्तस्तु वैश्वदेवान्ते
सोऽतिथिः स्वर्गसंक्रमः ।

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः ६)

वैश्वदेव यज्ञ के अन्त में आया हुआ अतिथि चाहे प्रिय हो या शत्रु, मूर्ख हो या पण्डित, वह स्वर्ग को प्राप्त कराने वाला होता है ।

A guest arrived just after the *Vaiśwadeva* sacrifice, be he a friend or an enemy or stupid or learned, becomes an instrument to the donor reach heaven.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२४. ऊषरे वापितं बीजं
भिन्नभाण्डेषु गोदुहम् ।
हुतं भस्मनि हव्यं च
मूर्खे दानमशाश्वतम् ॥ (व्यासस्मृतिः ४/६३)

जैसे ऊसर भूमि में बोया हुआ बीज व्यर्थ हो जाता है, जैसे टूटे हुए बर्तन में गाय का दूध दुहना व्यर्थ जाता है और जैसे राख में किया हुआ हवन व्यर्थ हो जाता है, उसी प्रकार मूर्ख को दिया गया दान व्यर्थ हो जाता है ।

The seed, sown in barren land, the cowmilking in a broken pot, the oblation offered into ashes and a gift given to a stupid is of no use.

२५. एकमप्यक्षरं यस्तु
गुरुः शिष्ये निवेदयेत् ।
पृथिव्यां नास्ति तद्द्रव्यं
यद् दत्त्वा त्वनृणीभवेत् ॥

(लघुहारीतस्मृतिः, पृ. १७८)

यदि गुरु अपने शिष्य को एक भी अक्षर सिखाता है तो भी उसके बदले में ऐसा कोई द्रव्य नहीं है, जिसे देकर ऋणमुक्त हुआ जा सके ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

If a teacher teaches even a single syllable to his disciple, there is no wealth on the earth for repaying the debt of the teacher.

२६. **कपिला सर्वपापघ्नी ।**

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ११३)

कपिला धेनु की सेवा समस्त पापों का नाश करने वाली है ।

A *Kapilā* cow destroys all the sins of man.

२७. **कामधुग्धेनुवद्दानं**
फलत्याभीप्सितं फलम् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

दान कामनाओं को पूर्ण करने वाली धेनु के समान अभीष्ट फल प्रदान करता है ।

Charity, like *Kāmadhenu* fulfills all the desires of a man.

२८. **कुटुम्बिने दरिद्राय**
श्रोत्रियाय विशेषतः ।
यद्दानं दीयते तस्मै
तद्दानं शुभकारणम् ॥

(पराशरस्मृतिः १२/४८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh

दरिद्र गृहस्थ को, विशेषरूप से श्रोत्रिय गृहस्थ को जो दान दिया जाता है वह दान कल्याणकारी होता है ।

The donation, which is given to an indigent family man particularly to a family man, well versed in vedas brings reward to the donor.

२९. **कुटुम्बिने दरिद्राय**
श्रोत्रियाय विशेषतः ।
यद्दानं दीयते तस्मै
तदायुर्वृद्धिकारकम् ॥

(पराशरस्मृतिः, १२/४५)

दरिद्र गृहस्थ के लिये और विशेषरूप से श्रोत्रिय गृहस्थ के लिये जो दान दिया जाता है, वह दान आयु की वृद्धि करने वाला होता है ।

The donation which is given to indigent family man particularly to a Brahmaṇ learned in vedas, blesses the donor with a long life.

३०. **केवलं धर्मबुद्ध्या यद्**
धर्मदानं तदुच्यते । (मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९५)

'दान करना धर्म है' यह सोचकर जो दान किया जाता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है वह धार्मिक दान कहलाता है।

'Charity is virtue' with this thought if wealth is given that is called virtuous Charity.

३१. **केवलाघो भवति केवलादी ।**

(बोधायनस्मृतिः, २/७/२३)

केवल अकेला भोजन करने वाला पुरुष पापी होता है।

One who only eats by himself virtually eats sin. In other words, food should be distributed.

३२. **कृपणेन शवेनेव**
मृतेनापि न दीयते ।
मांसं वर्धयता तेन
काकस्योपकृतिः कृता ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ३८८)

कृपण पुरुष तो मुर्दे के समान होता है, जो मरकर भी दान नहीं देता । वह केवल अपने मांस को बढ़ाकर कौवे पर ही उपकार करता है, क्योंकि कौवा ही उसका मांस खायेगा ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A miser which like a dead body does not donate any thing even after his death. Only increasing the volume of his flesh he obliges the crow because only the crow will eat his flesh.

३३. गुणान्वित्ताय दातव्यं
नास्ति मूर्खे व्यतिक्रमः ।

(व्याससमृतिः ४/३३)

गुणी पुरुष को ही दान देना चाहिये । मूर्ख को छोड़ देने में कोई दोष नहीं है ।

Donation should be made only to the virtuous. There is nothing wrong in omitting a fool.

३४. गृहदानं महादानं
न दानं तु गृहात्परम् ।
येन दानेन अरुण !
सर्वदत्तं कृतं स्मृतम् ॥

(अरुणस्मृतिः, श्लोकः ३७)

घर का दान महादान है । घर के दान से बड़ा कोई दान नहीं, क्योंकि हे अरुण ! घर के दान से सब कुछ दान किया हुआ माना जाता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The donation of a house is a great charity. No donation is greater than that. O Aruṇa ! donation of a house is considered donation of all that one has.

३५. चन्द्रसूर्यग्रहे चैव
दत्तं भवति चाक्षयम् ।

(संवर्तस्मृतिः श्लोकः २०८)

चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण के समय जो दान किया जाता है, उसका पुण्य अक्षय होता है ।

The donation given during the period of lunar and solar eclipses results in everlasting benefit to the donor.

३६. तपः परं कृतयुगे
त्रेतायां ज्ञानमुच्यते ।
द्वापरे यज्ञमेवाहु-
र्दानमेव कलौ युगे ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृष्ठम् ९१)

सत्ययुग में तप का महत्त्व होता है, त्रेता में ज्ञान का और द्वापर में यज्ञ का महत्त्व है, किन्तु कलियुग में तो केवल दान का ही महत्त्व है ।

In the era of *Satya*, the austerity is

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

important, in *Tretā*, the knowledge, in *Dwāpara* the Sacrifice, but in the time of *Kali*, the only charity is important.

३७. त्रायते दानमप्येकं
पात्रभूते कृते द्विजे ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ३/८०)

यदि सुपात्र ब्राह्मण को दिया जाये तो एक दान भी दाता की रक्षा के लिये पर्याप्त है।

Even a single donation is capable of protecting the donor if it is made to a deserving *Brāhmaṇa*.

३८. त्रीण्याहु रतिदानानि
गावः पृथ्वी सरस्वती ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्)

गौ का दान, भूमि का दान और सरस्वती का दान, ये तीन दान अतिदान अर्थात् सर्वश्रेष्ठ दान माने गये हैं ।

Three donations have been considered great and the best i.e. gift of a cow, land and knowledge.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३९. **त्रीण्याहुरतिदानानि**
धेनुः पृथ्वी सरस्वती ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ११२)

गाय का दान, पृथ्वी का दान और विद्या का दान ये तीन अतिदान अर्थात् सर्वश्रेष्ठ दान कहे गये हैं।

The donation of a cow, of earth and of the knowledge, these three are called the greatest donations *(Atidāna)*.

४०. **दत्तं नैव पुनर्दद्यात् ।**

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, श्लोकः १५३)

एक बार दी हुई वस्तु को पुनः नहीं देना चाहिये ।

Anything donated once should not be donated again.

४१. **दत्तं पितॄणां किल चाक्षयं स्यात् ।**

(प्रजापतिस्मृतिः श्लोकः २३)

पितरों को दिया गया दान अक्षय होता है।

Donation made in the name of fore-fathers is indestructible i.e. lasts for ever.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४२. **दरिद्रायैव हि दातव्यं**
न सम्मृद्धाय पाण्डव !

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ६/९)

हे युधिष्ठिर ! दरिद्र को ही दान देना चाहिये, सम्मृद्ध को नहीं ।

O, *Yudhiṣṭhira* ! Donation should be given only to the poor and not to a prosperous person.

४३. **दाता नहि स्मरेद् दानम् ।**

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२४२)

दाता को अपने दिये हुए दान का स्मरण नहीं करना चाहिये ।

Let a donator not remember the gift.

४४. **दातारः किं विचारेण**
गुणवान्निर्गुणी भवेत् ।
समं वर्षति पर्जन्यः
सस्यादपि तृणादपि ॥

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः ७)

हे दाताओ ! तुम्हें यह विचार करने की क्या आवश्यकता है कि दान लेने वाला गुणवान् है या गुणहीन । तुम्हें

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निस्स्वार्थ भाव से दान देना चाहिये । मेघ तो धान और घास दोनों पर समान रूप से बरसता है ।

O donors ! where is the need for you to exercise your mind on whether the recipient of charity in virtuous or without virtue ? You should do charity selflessly. The cloud drops rain on both rice and grass without discrimination.

४५. दातारः स्युः श्रियान्विताः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १२)

दान करने वाले पुरुष लक्ष्मी से सम्पन्न होते हैं ।

The benefectors are always full of prosperity.

४६. दातुः पालयितुः स्वर्गं
हर्तुर्नरकमेव च ।

(व्यवहारप्रकाशः, पृ. ८०)

दाता और पालयिता को स्वर्ग की प्राप्ति होती है, किन्तु हरण करने वाले को नरक प्राप्त होता है ।

A donor and a protector attain the heaven and a plunderer goes to hell.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४७. दातृहस्तो भवेदूर्ध्वं
ग्रहीतुश्च भवेदधः ।
दातृयाचकयोर्भेदो
हस्ताभ्यामेव सूचितः ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२४५)

दाता का हाथ सदा ऊपर रहता है और लेने वाले का हाथ नीचे रहता है । इस प्रकार दाता और ग्रहीता के बड़े-छोटे का भेद दोनों के हाथों के ही द्वारा कह दिया जाता है ।

The hand of the donor is always above the hand of the taker. Thus the difference in the status of the giver and the taker is well indicated by the position of their hands.

४८. दानपालनयोर्मध्ये
दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ।
दानात्स्वर्गमवाप्नोति
पालनादच्युतं पदम् ॥

(व्यवहारप्रकाशः, पृ. ८०)

दान और पालन में दान से पालन करना श्रेष्ठ है । क्योंकि दान से तो केवल स्वर्ग की प्राप्ति होती है किन्तु पालन करने से श्रीकृष्ण का परम पद प्राप्त

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होता है ।

Between donation and continued responsibility of maintenance the latter is better. A man attains heaven on account of donation, but continued responsibility of maintenance exalts him to the states of *Śrī Kṛiśṇa (Viṣṇu).*

४९. **दानं बन्धुर्मनुष्याणां**
दानं कोशो ह्यनुत्तमः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. ९१)

दानरूप धर्म ही मनुष्यों का वास्तविक बन्धु है और दान ही सर्वश्रेष्ठ कोश है ।

Charity is real friend of men, and the same is the supreme treasure.

५०. **दानमेव कलौ युगे ।**

(पराशरस्मृतिः, श्लोकः २३)

कलियुग में केवल दान का ही महत्त्व है ।

Only donation is of importance in the Kali era.

Funding by IKS-MoE

५१. दानं दातव्यमित्येव
मतिं कृत्वा द्विजाय वै ।
उपकारवियुक्ताय
दत्तं यत्तद्धि सात्त्विकम् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ३/३७)

दान देना चाहिये, यही सोचकर उपकार करने में असमर्थ ब्राह्मण के लिये जो दान दिया जाता है, वह दान सात्त्विक कहलाता है ।

Having accepted the desirability of doing so, the donation given to a *Brāhmaṇa* who is incapable of obliging others, is called a *sātvik* (pious) donation.

५२. दानहोमफलं धनम् ॥

(बृद्धगौतमस्मृतिः, १४/४५)

धन के दो ही फल हैं - दान करना और अग्निहोत्र करना ।

There are two fruits of wealth-charity and sacrifice.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५३. दानं हि विधिना देयं
काले पात्रे गुणान्विते ।

(दक्षस्मृतिः ३/२५)

उचित समय पर, सुपात्र को तथा गुणवान् पुरुष को ही विधिपूर्वक दान देना चाहिये ।

Donation should be made in a proper manner to a deserving and virtuous person at the proper time.

५४. दानादृते नोपकारः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

दान के बिना उपकार करना सम्भव नहीं है ।

There is no benefit without donation.

५५. दानानामुत्तमं दानं
विद्यादानं विदुर्बुधाः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ११६)

विद्वान् लोग विद्यादान को समस्त दानों में उत्तम दान कहते हैं ।

The wisemen say that the gift of knowledge is the supreme of all types of gift.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५६. दानेन प्राप्यते स्वर्गो
दानेन सुखमश्नुते ।
इहामुत्र च दानेन
पूज्यो भवति मानवः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १०/२)

दान से स्वर्ग प्राप्त होता है और दान से सुख मिलता है। इस लोक में और परलोक में मनुष्य दान से पूजनीय होता है ।

Heaven is attained by virtue of charity which also gives pleasure. Man is worthy of worship by virtue of the donation in this world and after.

५७. दानेन भोगी भवति
मेधावी वृद्धसेवया ।
अहिंसया च दीर्घायु-
रिति प्राहुर्महर्षयः ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

मनुष्य दानरूप पुण्य से ऐश्वर्य का भोग करने वाला होता है । वृद्धों की सेवा करने से बुद्धिमान् होता है अहिंसा से दीर्घायु होता है ऐसा महर्षि जन कहते हैं ।

The Ṛṣis say that a person becomes the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

enjoyer of the property, through the service of old and respectables he becomes intelligent and through the non killing he attains the long age.

५८. दानेन लभ्यते विद्या ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

दान कर्म के द्वारा विद्या की प्राप्ति होती है ।

The knowledge is obtained through charity.

५९. दानेन शत्रून् जयति ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

मनुष्य दान के प्रभाव से शत्रुओं को जीत लेता है ।

The man can win the enemy by the charity.

६०. दीक्षाचर्या यज्ञचर्याः
सर्वचर्याः क्षणान्नृणाम् ।
दानतः सम्भवन्त्येव
तस्माद् दानपरो भवेत् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दीक्षाकार्य, यज्ञ का कार्य तथा अन्य समस्त मनुष्यों के कार्य और व्यवहार दान से ही शीघ्र पूर्ण होते हैं, इसलिये मनुष्य को दानशील होना चाहिये ।

The investitures, the sacrifices and the all deeds of the men are possible to do from the charity only. Hence one should become a charityful.

६१. द्रव्यं गुणवते देयम् । (दक्षस्मृतिः, ३/३२)

धन का दान सदा गुणवान् को ही देना चाहिये ।

Wealth should always be donated only a Virtuous person.

६२. धनं पवित्रं विप्राणा-
मस्ति तीर्थसमर्पितम् ।

(प्रजापतिस्मृतिः श्लोकः ४४)

तीर्थस्थानों में विप्रों को दिया गया धन पवित्र हो जाता है।

The wealth gets purified by giving it to *Brāhmaṇas* in places of pilgrimage.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६३. **धनं फलति दानेन ।**

(बृहस्पतिस्मृतिः, श्लोकः ७१)

धन दान से ही सफल होता है ।

Wealth gains meaning and success only when it is donated.

६४. **धर्मार्थे ब्राह्मणे दानं**
यशोऽर्थे तदनर्थकम् ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः २४५)

यदि धर्म के लिये ब्राह्मण को दान दिया गया है तो वह सार्थक है यदि यश के लिये दिया गया है तो व्यर्थ है ।

Donation is meaningful if given to a *Brāhmaṇa* for the purpose of Dharma, but if given for the fame and glory then it is of no avail.

६५. **न गतिर्मूर्खदानेन**
न तारोऽम्बुनि चाश्मनः ।
तस्मात्तस्य न दातव्यं
सह दात्रा स मज्जति ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/२१९)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूर्ख को दान देने से कोई लाभ नहीं। पत्थर कभी पानी पर नहीं तैर सकता। इसलिये मूर्ख को दान नहीं देना चाहिये। दाता के साथ वह मूर्ख भी डूब जाता है।

There is no use giving donation to a fool. A stone can not float on water. Therefore one should not make donation to a fool. He sinks down along with the donor.

६६. न ददाति द्विजो होत्रे
लोभाद् यज्ञाङ्गदक्षिणाम्।
वित्ते सति कृतं कर्म
निष्फलं स्याद् धनक्षयः।

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, श्लोकः १०/४४)

जो ब्राह्मण लोभवश यज्ञ के अंगरूप दक्षिणा को होता के लिये धन होने पर भी नहीं देता, तो उसका वह कर्म निष्फल हो जाता है तथा उसका वह धन भी नष्ट हो जाता है।

If a *Brāhmaṇa* who, out of greed, as despite having the capacity to do so, does not offer *Dakṣiṇā* (remuneration) as part of the sacrifice, his action results in failure and his wealth is also ruined.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६७. न दानं परिकीर्तयेत् ।

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः ९४)

दान करके उसे कहना नहीं चाहिये कि मैंने दान किया है ।

One should not publicise the fact of having made a donation.

६८. न दानात् परमो धर्म-
स्त्रिषु लोकेषु विद्यते ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १०/३)

तीनों लोकों में दान से बड़ा कोई धर्म नहीं है ।

There is no virtue greater than charity in all the three worlds.

६९. न दानेन विना किञ्चित्
प्रार्थितं फलमश्नुते ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. ९१)

दान के बिना कोई भी अभीष्ट फल प्राप्त नहीं किया जाता ।

No desired result is obtained without donation.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७०. न विद्या न तपो यस्य
ह्यादत्ते च प्रतिग्रहम् ।
निपातयन् स दातार-
मात्मानमप्यधो नयेत् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२२४)

जिसके पास न विद्या है और न तप है, किन्तु वह दान ग्रहण करता है, ऐसा वह व्यक्ति दाता को तो गिराता ही है अपने को भी पतित करता है ।

A man, who has no knowledge and has done no penance but accepts the donations from others, lowers the esteem of the doner and at the same time commits a great sin.

७१. नष्टशौचे व्रतभ्रष्टे
विप्रे वेद विवर्जिते ।
दीयमानं रुदत्यन्नं
भयाद्वै दुष्कृतं कृतम् ॥ (व्यासस्मृतिः ४/५१)

अपवित्र, व्रत से भ्रष्ट तथा वेदज्ञान से रहित ब्राह्मण को यदि अन्न दिया जाये तो वह अन्न भय से रो पड़ता है कि बुरा किया जो इसे दिया ।

Food, given to a Brāhmaṇa who is devoid

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

of purity and his duty and is ignorant of the vedas, weaps and blames its fate for being donted to such a man.

७२. नारुन्तुदः स्यादार्तोऽपि ।

(मनुस्मृतिः, २/१६१)

स्वयं पीडित होते-होते हुए भी मनुष्य को किसी के लिये मर्मपीडाकारक नहीं होना चाहिये ।

Even when suffering pain, one should not cause pain to others by hurting their feelings.

७३. नास्ति दानात्परं मित्र-
मिह लोके परत्र च ।

(अत्रिसंहिता, श्लोकः १५१)

इस लोक में तथा परलोक में दान से बड़ा कोई मित्र नहीं है ।

There is no friend greater than charity in this world and the other world.

७४. नाल्पत्वं वा बहुत्वं वा
दानस्याभ्युदयावहम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रद्धा भक्तिश्च दानानां
वृद्धिक्षयकरे स्मृते ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १४)

थोड़ा दान या अधिक दान, यह बात दान का महत्त्व नहीं बढ़ाती, अपितु श्रद्धा और भक्ति से ही दान के महत्त्व की वृद्धि होती है और श्रद्धा भक्ति के अभाव में दान का महत्त्व कम होता है।

Smallness or excess of donation have no importance for the glory of the charity, but only the faith and devotion give the importance to charity.

७५. **नित्यं ददाति यः साधु-**
रन्नं वेदविदो मुखे ।
मुक्तः स्याद् दुरितात्पापाद्
ब्रह्मसायुज्यमश्नुते ॥

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, श्लोकः १५०)

जो सत्पुरुष वेदज्ञानी ब्राह्मण के मुख में अन्न देता है, वह भयंकर पाप से मुक्त हो जाता है तथा ब्रह्म के स्वरूप को प्राप्त कर लेता है ।

A virtuous person who puts food in the mouth of a *Brāhmaṇa* who has acquired

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

the knowledge of vedas, gets rid of the vile sins and attains the status of *Brahma*.

७६. **निःस्वेभ्यो देयमेतेभ्यो**
दानं विद्या विशेषतः ।

(वैदिकमनुस्मृतिः, १०/२९)

दान, विशेषकर विद्या का दान दरिद्रों को ही देना चाहिये ।

Charity, particularly the gift of knowledge should be done to the poor.

७७. **न्यायेनार्जनमर्थानां**
वर्धनं चाभिरक्षणम्
सत्पात्रे प्रतिपत्तिश्च
सर्वशास्त्रेषु पठ्यते ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

न्यायपूर्वक धन का उपार्जन करना, बढ़ाना और रक्षा करना तथा सुपात्र को उनका दान करना सभी शास्त्रों में बताया गया है ।

The earning, increasing and protecting the wealth by rightful way and to give that for a virtuous person is prescribed in all the *Śāstras*.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७८. परस्परस्य दानानि
लोकयात्रा न धर्मतः ।

(व्यासस्मृतिः, ४/२७)

आपस में दिया गया दान तो केवल लोकाचार है । उससे धर्म नहीं होता ।

Mutual donation is only a way of the world. It is not *Dharma* and does not earn any virtue.

७९. परदत्तापहारेण
स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ११६)

दूसरों के दान का अपहरण करने से अपना दिया हुआ दान निष्फल हो जाता है ।

The charity performed by himself is destroyed by plundering of other's charity.

८०. पापं प्रतिग्रहीतारं
प्रदा तुरुपगच्छति ।
प्रतिग्रहीतुर्यत्पुण्यं
प्रदातारमुपैति तत् ॥ (वृद्धगौतमस्मृतिः, ४/५२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दान देने वाले का जो पाप है, वह दान लेने वाले के पास पहुँच जाता है और दान लेने वाले का जो पुण्य है वह दाता के पास पहुँच जाता है ।

The sin of the donor gets transferred to the taker, and the virtue of the taker, goes to the donor.

८१. **पात्रस्य हि विशेषेण**
दानस्यापि फलोत्तरम् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १४४)

यदि पात्र विशिष्ट है तो दान का फल भी विशिष्ट होता है ।

The gift has a greater fruit if a person is great for bestowal of the gift.

८२. **पापकर्मसमायुक्ते**
पतनान्नरके नरम् ।
त्रायते दानमेवैकं
पात्रभूते द्विजे कृतम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

पापकर्म से युक्त नरक (पापकारी योनियों) में गिरने से मनुष्य की सुपात्र ब्राह्मण की दिया गया दान ही

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रक्षा करता है ।

Only the charity, given to a virtuous *Brāhmaṇa*, protects the man from falling in to hell, full of sinful actions.

८३. पाशको मत्स्यघाती च
व्याधः शाकुनिकस्तथा ।
अदाता कर्षकश्चैव
पञ्चैते समभागिनः ।

(पराशरस्मृतिः, २/१३)

फांसी देने वाला जल्लाद, मत्स्यघाती, व्याध, पक्षियों का घातक और दान न देने वाला किसान ये पाँचों समान रूप से पापी हैं ।

An executioner, a fish killer, a hunter, a bird catcher and a farmer who does not give the food, these five types of men are equally sinful.

८४. पितृणां नरकस्थानां
जलं तीर्थस्य दुर्लभम् ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः २९)

नरक में स्थित पितरों के लिये तीर्थ का जल दुर्लभ होता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The water fo the holy rivers is not available to the ancestors languishing in the hell.

८५. प्रयत्नेन हि दातव्यो
महादानमयो निधिः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ४/५३)

महादान रूपी निधि का दान मनुष्य को प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये ।

A big donation of wealth should be made very carefully.

८६. प्राप्तानामनुरूपाणां
पात्राणां दानकर्मणः
देशे कृत्स्नेऽपि काले वा
नादेयं ह्यस्ति किञ्चन ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १२)

यदि दान के योग्य कोई अनुरूप पात्र व्यक्ति घर आ जाये तो समस्त देश और काल में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो अदेय हो । अर्थात् सुपात्र को सब कुछ दे देना चाहिये ।

If a person, approached is fit for the bestowal of gift, then there is nothing

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

unfit to be given in any place and any time.

८७. प्रच्छन्नानि च दानानि
ज्ञानं च निरहंकृतम् ।
जप्यानि च सुगुप्तानि
तेषां फलमनन्तकम् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ४/६७)

गुप्त दान, अहंकार रहित ज्ञान और गुप्त मन्त्र जप, इन तीन बातों का अनन्त फल होता है ।

Secret donations, knowledge without varity and the secret repetition of *mantras* (sacred verse) produce everlasting fruit.

८८. प्रतिग्रहो न दातव्यो
न शिला तारयेच्छिलाम् ॥

(स्मृतिचन्द्रिका, पृ. १६३)

जो दान हमें दूसरों से प्राप्त हुआ है, उसे पुनः दान नहीं करना चाहिये, क्योंकि उससे कोई पुण्य नहीं होगा । एक शिला दूसरी शिला को पार नहीं पहुँचा सकती ।

The donation gained from others should

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

not be donated again because it will not earn any virtue. One stone can not deliver another stone to the other side.

८९. **ब्रह्मचारिगतं भैक्षं**
नित्यं मेध्यमिति स्थितिः ।

(बोधायनस्मृतिः, १/५/५६)

ब्रह्मचारी को दिया गया भिक्षान्न सदा पवित्र होता है। ऐसा श्रुति का वचन है।

The alms, given to a *Brahmacārī* are always pure. It has been stated in the Vedas.

९०. **ब्राह्मणातिक्रमो नास्ति**
विप्रे वेदविवर्जिते ।
ज्वलन्तमग्निमुत्सृज्य
नहि भस्मनि हूयते ॥ (व्यासस्मृतिः, ४/३५)

वेदज्ञान से रहित विप्र का अतिक्रमण करने से विप्र का अतिक्रमण नहीं माना जाता है। जलती हुई अग्नि को छोड़कर राख में होम नहीं किया जाता।

If a *Brāhmaṇa* who has no knowledge of Vedas is ignored, it does not mean

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ignoring the *Brāhmaṇa.* Sacrifice is not done in ashes forsaking the flaming fire.

११. ब्राह्मणेषु च यद्दत्तं
यच्च वैश्वानरे हुतम् ।
तद् धनं धनमाख्यातं
धनं शेषं निरर्थकम् ॥

(व्यासस्मृतिः ४/३९)

जो धन ब्राह्मणों को दान कर दिया गया और जो अग्नि में होम कर दिया गया; वही धन वास्तव में धन कहलाता है । शेष धन व्यर्थ है ।

The wealth, which is given to the *Brāhmaṇa* and which is sacrificed in the fire (as part of *yajña)* is declared as the real wealth. The rest, of the wealth is useless.

१२. भिक्षां ददाति विप्राय
यतये ब्रह्मचारिणे ।
स सर्वाल्लभते कामां-
स्ततो याति परां गतिम् ॥

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, श्लोकः १५२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो व्यक्ति यति, ब्रह्मचारी तथा ब्राह्मण के लिये भिक्षा देता है, वह समस्त कामनाओं को प्राप्त करता है तथा अन्त में परम गति को प्राप्त होता है ।

A person who gives alms for the Brāhmaṇa a sage and a Brahmacārī (celibate) gets all his desires ful filled and in the end he gets salvation.

९३. महदप्यफलं दानं
श्रद्धया परिवर्जितम् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ० ९५)

महान् से महान् दान भी निष्फल है, यदि वह श्रद्धापूर्वक नहीं दिया गया ।

Even a great donation has no merit if it is given without reverence.

९४. मातापित्रोर्गुरौ मित्रे
विनीते चोपकारिणि ।
दीनानाथविशिष्टेषु
दत्तं तत्सफलं भवेत् ॥

(दक्षस्मृतिः ३/१६)

माता, पिता, गुरु, मित्र, विनम्र उपकारशील, दीन, अनाथ और सज्जन इनको दिया दान सफल होता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A donation, given to the parents, the teacher, friends, an humble person, a benefector, a poor person, an orphan and to a virtuous person, becomes fruitful.

९५. यत्तु प्रत्युपकारार्थं
फलमुद्दिश्य वा पुनः ।
दीयते च परिक्लिष्टं
तद् दानं राजसं स्मृतम् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९७)

जो दान प्रत्युपकार के लिये अथवा फल प्राप्ति को लक्ष्य में रखकर दिया जाता है तथा क्लेश के साथ दिया जाता है वह राजस दान कहा गया है ।

The donation, which is given with a distress for a grateful person and to find back its result, is known Rājasa donation (medium type).

९६. यथा जनित्री क्षीरेण
पुत्रं पुष्णाति सर्वदा ।
अनुगृह्णाति दातारं
तथा सर्वरसैर्मही ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. ११४)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे माता अपने दूध से सदा पुत्र को पुष्ट करती है, वैसे ही पृथ्वी भी दानी पुरुष पर समस्त रसों से अनुग्रह करती है ।

As a mother nourishes her son always through the milk so, the earth ingratiates the donator through her all essences.

९७. यथेरिणे बीजमुप्त्वा
न वप्ता लभते फलम् ।
तथाऽनृचे हविर्दत्त्वा
न दाता लभते फलम् ॥

(मनुस्मृतिः ३/१४२)

जैसे बंजर भूमि में बीज बोकर बोने वाला कभी फल को प्राप्त नहीं करता, उसी प्रकार अविद्वान् को दान देकर दाता कभी भी दान के फल को प्राप्त नहीं करता ।

As a man, sowing seeds in a barren land, does not find any fruit, so a donor giving a donation to an ignorant person, does not get the fruit of the donation.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

९८. यद् ददाति यदश्नाति
तदेव धनिनो धनम् ।
अन्ये मृतस्य क्रीडन्ति
दारैरपि धनैरपि ॥ (व्यासस्मृतिः ४/१७)

पुरुष जो दान करता और जो भोगता है, वही धनवान् का धन है । मरने के पश्चात् तो अन्य लोग ही उसकी स्त्रियों से और धन से खेलते हैं ।

Only that is the real wealth of the wealthy which a person donates and which he enjoys. Afer his death, others play with his women and his wealth.

९९. यद् ददाति विशिष्टेभ्यो
यच्चाश्नाति दिने दिने ।
तच्च वित्तमहं मन्ये
शेषं कस्यापि रक्षति ॥

(व्यासस्मृतिः ४/१६)

जो धन प्रतिदिन श्रेष्ठ पुरुषों को दिया जाता है और जो स्वयं भोगता है, बस उसी को मैं धन कहता हूँ । शेष व्यक्ति तो धन की रक्षा करते हैं ।

Wealth which is donated to noble men and which is enjoyed by the owner is the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

real wealthy. Others only guard the wealth without using it.

१००. यद् दानं दीयते भक्त्या
तद् भवेत्सुमहत्फलम् ।

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः ४९)

जो दान श्रद्धापूर्वक दिया जाता है, वह महान् फल प्रदान करता है ।

A donation which is given with devotion brings great results.

१०१. यज्ञोऽनृतेन क्षरति
तपः क्षरति विस्मयात् ।
आयुर्विप्रापवादेन
दानं च परिकीर्तनात् ।

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः ९५)

मिथ्या भाषण से यज्ञ का फल नष्ट हो जाता है । अहंकार करने से तपस्या नष्ट हो जाती है । विप्र की निन्दा से आयु घटती है और कह देने से दान का फल समाप्त हो जाता है ।

The fruit of Yajña is destroyed by false speech, A penance is destroyed by the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

arrogance. Age is reduced by calumnising a Brāhmaṇa and the declaration of having made a donation destroys the fruit of the donation.

१०२. यत्किंचिदपि दातव्यं
याचितेनानुसूयया ।
उत्पतस्यते हि तत्पात्रं
यत्तारयति सर्वतः ॥ (मनुस्मृतिः ४/२२८)

मांगने पर जो कुछ भी बन पड़े, ईर्ष्या छोड़कर अवश्य ही देना चाहिये । कभी तो कोई ऐसा सुपात्र मिलेगा जो सब पापों से पार उतार देगा ।

Whatever is possible one should give on demand without jealousy. A sometime or other in future across deserving person will come who will protect him against all sins.

१०३. यथाऽन्धकारं भुवनेषु लग्नं
दीपो हि निर्वापयति प्रदीप्तः ।
तथा नरे पापमपि प्रलीनं
निर्वापयेद्धि कपिला प्रदानम् ॥
(वृद्धगौतमस्मृतिः, १०/७९)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे लोकों में व्याप्त अन्धकार को सुदीप्त दीपक दूर कर देता है, वैसे ही मनुष्य में लगे हुए पाप को कपिला गौ का दान नष्ट कर देता है ।

As a lighted candle destroys the darkness enveloping the worlds, so the donation of a Kapilā cow destroys the sins of a man.

१०४. यथा त्वचं स्वां भुजगो विहाय
पुनर्नवं रूपमुपैति पुण्यम् ।
तथैव मुक्तः पुरुषः स्वपापाद्
विराजते वै कपिला प्रदानात् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १०/७८)

जिस प्रकार सर्प अपनी काँचुली को छोड़कर पुनः एक नवीन उज्ज्वल रूप को धारण कर लेता है, वैसे ही मनुष्य कपिला गौ के दान से अपने पाप से मुक्त होकर शोभायमान होता है ।

As a serpent, leaving his dead skin finds a new fresh form, so a man, freed from his sins gets adorned by the virtue of donation of a Kapilā cow.

१०५. यथैव दृष्ट्वा भुजगाः सुपर्णं
नश्यन्ति दूराद्विवशा भयार्ताः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथैव दृष्ट्वा कपिला प्रदानं
नश्यन्ति पापानि नरस्य शीघ्रम् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः १०/७७)

जैसे गरुड़ को देखकर सर्प भय से व्याकुल और विवश होकर भाग जाते हैं, वैसे ही कपिला गौ के दान को देखकर मनुष्य के सब पाप दूर भाग जाते हैं।

As the serpents on seeing the eagle run away hoplessly in fear, so the sins of a man run away on seeing the donation of a *Kapilā* cow.

१०६. **यथौषधं मन्त्रकृतं नरस्य**
प्रयुक्तमात्रं विनिहन्ति रोगम् ।
तथैव दत्ता कपिला सुपात्रे
पापं निहन्त्याशु नरस्य सर्वम् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः ९/७६)

जैसे मन्त्रपूर्वक प्रयोग की गयी औषधि तुरन्त रोग का नाश कर देती है, वैसे ही सुपात्र को दी गयी कपिला गौ मनुष्य के सम्पूर्ण पापों का नाश कर देती है।

As a medicine used with a *Mantra* destroys the disease of a man, so the donation of a Kapilā cow given to a

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

deserving person destroys the sins of a man.

१०७. यथा जनित्री क्षीरेण
पुत्रं वर्धयति स्वकम् ।
दातारमनुगृह्णाति
दत्ता ह्येवं वसुन्धरा ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः ६/१२०)

जैसे माता दूध से अपने पुत्र को बढ़ाती है, वैसे ही दान में दी गयी पृथ्वी दाता पर अनुग्रह करती है।

As a mother nourishes and brings of her son with milk, so the donation of land benefits the donor.

१०८. यथा बिभर्ति गौर्वत्सं
सृजति क्षीरमात्मनः ।
तथा सर्वगुणोपेतं
भूमिदं पाति सम्पदा ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ६/१२१)

जैसे गौ बछड़े को पालती है और दूध का निर्माण करती है, वैसे ही सम्पत्ति सर्वगुणपूर्ण भूमि का दान करने वाले की रक्षा करती है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

As the cow sires her calf by giving her milk, so the property protects the donor of land which is full of all virtues.

१०९. यथोदयस्थ सूर्यस्तु
तमः सर्वं व्यपोहति ।
तथा पापान्नरस्येह
भूमिदानं व्यपोहति ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः ६/१२३)

जैसे उदयाचल पर स्थित सूर्य समस्त अन्धकार का नाश करता है, वैसे ही भूमि का दान देने वाले के समस्त पापों का नाश कर देता है।

As the rising sun, destroys the whole darkness, so, the donation of land destroys the sins of a man.

११०. यथा भस्म तथा मूर्खो
विद्वान् प्रज्वलिताग्निवत् ।
होतव्यं च समिद्धेऽग्नौ
जुहुयात् को नु भस्मनि ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/२२०)

मूर्ख तो राख के समान है और विद्वान् प्रज्वलित

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग्नि के समान है। इसलिये प्रचण्ड प्रज्वलित अग्नि में ही होम करना चाहिये। अर्थात् दान विद्वान् को ही देना चाहिये। भला राख में कौन हवन करेगा ?

A fool is like ash and a learned person is like a flaming fire. One should perform a sacrifice only in the well lit fire and not in the ash.

१११. यथा हि क्षुधिता बाला
मातरं पर्युपासते ।
तथा सर्वाणि भूतानि
ह्यन्नमेव उपासते ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः ९/१४८)

जैसे भूखे बालक माता की सेवा करते हैं, वैसे ही सभी प्राणी अन्न की ही उपासना करते हैं।

As the hungry children worship their mother, so all the beings worship the food verily.

११२. यस्मादन्नात्प्रजाः सर्वाः
कल्पे कल्पेऽसृजत्प्रभुः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तस्मादन्नात्परं दानं
विद्यते नहि किंचन ॥

(संवर्तस्मृतिः श्लोकः ८१)

चूँकि परमात्मा ने प्रत्येक युग में अन्न से ही प्रजाओं की रचना की है, इसलिये अन्न से बड़ा कोई दूसरा दान नहीं है ।

Since God has created, in every era, people from grain. Gift of grain, therefore, is the biggest donation.

११३. यस्मादन्नात्प्रवर्तन्ते
धर्मार्थकामाश्चैव हि ।
तस्मादन्नात्परं दानं
नामुत्रेह च पाण्डव ॥

(वृद्धगौतम स्मृतिः, ६/२८)

चूँकि धर्म, अर्थ और काम अन्न से ही सिद्ध होते हैं, इसलिये अन्न से बड़ा दान न इस लोक में है और न परलोक में ।

Because the *Dharma*, wealth and the desires are fulfilled only by grain, there is no donation greater than that of grain, either in this world or in the other world.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

११४. यस्य वित्तं न दानाय
नोपभोगाय कल्प्यते ।
नापि कीर्त्यै न धर्माय
तस्य वित्तं निरर्थकम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१

जिसका धन न दान के काम आता है और न उपभोग के लिये ही प्रयुक्त होता है, यश और धर्म के लिये भी जिसकी उपयोगिता नहीं, उसका वह धन निरर्थक ही है ।

Whose wealth is neither used for the charity, nor for his own enjoyment nor for the fame and merit, his wealth is useless.

११५. यान्ग्रासान् क्षुधितो भुङ्क्ते
ते ग्रासाः क्रतुभिः समाः ।

(शंखलिखितस्मृतिः श्लोकः)

दाता के द्वारा दिये गये भोजन के जिन ग्रासों को भूखा भिक्षुक खाता है, वे ग्रास यज्ञ के समान होते हैं । अर्थात् एक-एक ग्रास से एक-एक यज्ञ का फल मिलता है ।

A hungry person eats which bits of food given by a donator, those bits get the similarty of many sacrifices.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

११६. येन येन तु भावेन
यद् यद् दानं प्रयच्छति ।
तत्तत्तेनैव भावेन
प्राप्नोति प्रतिपूजितः ।

(मनुस्मृतिः ४/२३४)

जिस भावना के साथ मनुष्य जो-जो दान देता है, वह उसी भावना से सत्कार सहित वापस प्राप्त करता है ।

With which motive a man makes donation, he gets the same benefit back with honours.

११७. वस्त्रदाता सुवेषः स्याद्
रूप्यदो रूपमेव च ।
हिरण्यदः सम्मृद्धिं च
तेजश्चायुश्च विन्दति ॥

(संवर्तस्मृतिः श्लोकः ५२)

वस्त्र का दान करने वाला (अगले जन्म में) सुन्दरवेष वाला होता है । चाँदी का दान करने वाला रूपवान् होता है, सुवर्ण का दान करने वाला सम्मृद्धि को, तेज तथा आयु को प्राप्त करता है ।

The donor of the clothes is reborn as well clad in the next birth, the donor of silver

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

as a handsome person. The donor of gold gains prosperity, brilliance and long life.

११८. वर्षाणां हि तडागेषु
फलं नैव पयोधिषु ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः ७/१४)

वर्षा का फल तालाबों में दिखाई देता है, समुद्रों में नहीं। अर्थात् दान का लाभ दरिद्रों को देने में है सम्मृद्ध को देने में नहीं।

The result of rains appears in the pools and not in the oceans.

११९. वदन्ति दानं मुनयः प्रधानं
कलौ युगे नान्यदिहास्ति किंचित् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ९/४३)

मुनि जन कलियुग में दान को प्रधान धर्म कहते हैं। इससे बड़ा कलिकाल में कोई अन्य धर्म नहीं है।

The sages have declared that donation is the chief virtue in the era of *kaliyuga*. No virtue is bigger than in this world.

१२०. विद्यादानं महादानम् ।

(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यस्मृतिः ११/६६)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विद्या का दान सबसे बड़ा दान है ।

Donation of knowledge is the biggest donation.

१२१. विद्यादानेन पुण्येन
ब्रह्मलोके महीयते ।

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः ८९)

जो विद्या का दान करता है, वह उस पुण्य से ब्रह्मलोक में पूजित होता है ।

A person enjoys in the Brahmaloka through the virtue of the gift of sacred knowledge.

१२२. विद्यादानं महीदानं
कन्यादानमिदं त्रयम् ।
सर्वदानोत्तमं ज्ञेयं
तद्धि चोभयतारकम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ११६)

विद्या का दान, पृथ्वी का दान तथा कन्यादान, ये तीन प्रकार के दान सभी दानों से श्रेष्ठ माने गये हैं, क्योंकि ये दाता और ग्रहीता दोनों का उद्धार करने वाले हैं ।

The gift of the sacred knowledge, the gift

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

of earth and the bestowing of a girl in marriage, these three kinds of gift excel in merit from all gifts, because of doing good for both sides, i.e. giver and taker.

१२३. विद्या कामदुधा धेनुः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ११६)

विद्या तो कामधेनु गाय के समान है ।

The knowledge is just like *Kāmadhenu*, a divine cow.

१२४. वेदाक्षर विहीनाय
यत्तु पूर्वोपकारिणे ।
सम्मृद्धाय च यद्दानं
तद् राजसमुदाहृतम् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ३/३९)

वेदाध्ययन से रहित तथा पहले उपकार कर चुकने वाले पुरुष को जो दान दिया जाता है, वह दान राजस दान कहलाता है ।

The donation, which is given to a person not versed in Vedas or to a previous benefactor, or to a richman is called Rājasa (of mediocre value).

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१२५. व्यर्थमब्राह्मणे दानं
पतिते तस्करेऽपि च ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १०/३१८)

निकृष्ट ब्राह्मण को, तस्कर और पतित व्यक्ति को दिया गया दान निष्फल हो जाता है ।

The donation, given to a non-Brāhmaṇa, a mean person and a black-marketeer is useless.

१२६. व्याधिर्दानेन नश्यति ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

दान कर्म से मनुष्य की व्याधि नष्ट हो जाती है ।

The bodily deseases are destroyed by the vertue fo the charity.

१२७. वैश्वदेव विहीनाय
यद्दानं श्रोत्रियाय च
दीयते तस्करायापि
तद्दानं तामसं स्मृतम् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ३/४१)

वैश्वदेव यज्ञ न करने वाले श्रोत्रिय को तथा तस्कर को जो दान दिया जाता है, वह दान तामस कहा गया है ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The donation which is given to a person who does not perform *Vaiśwadeva* sacrifice and to a thief, is declared the *Tāmas* (donation of the lowest value).

१२८. राज्ञः प्रतिग्रहस्त्याज्यो
लोकत्रयजिगीषुभिः ।

(बृहद्यमस्मृतिः, ५/५९)

जो तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करने की इच्छा हो तो उसे राजा की सहायता त्याग देनी चाहिये ।

He, who desires to conquer the three worlds should abandon aid given by king.

१२९. राज्ञः प्रतिग्रहाच्चैव
ब्राह्मण्यं हि विलुप्यते ।

(बृहद्यमस्मृतिः, ५/५९)

राजा का दान स्वीकार करने पर ब्रह्मतेज विनष्ट हो जाता है ।

The dignity of a *Brāhmaṇa* is destroyed on the acceptance of a gift from the king.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१३०. लावण्य गुणसम्पत्ति-
र्दानादेव हि लभ्यते ।
दानेन लभ्यते स्वर्गः
श्रीर्दानेन हि लभ्यते ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९१)

लावण्य रूप गुण की सम्पत्ति दानरूप पुण्य से ही प्राप्त की जाती है । दान से ही स्वर्ग और लक्ष्मी प्राप्त होती है ।

The property of beauty, the heaven and the Lakṣmī are obtained by the charity.

१३१. शतेषु जायते शूरः
सहस्त्रेषु च पण्डितः ।
वक्ता शतसहस्त्रेषु
दाता भवति वा न वा ॥

(व्यासस्मृतिः, ४/५८)

सैकड़ों में एक शूर होता है । सहस्त्रों में कोई विरला ही पण्डित होता है और लाखों में कोई-कोई ही वक्ता होता है । दाता तो शायद लाखों में भी हो न हो ।

Among hundreds of men, one hero gets born, among the thousands rarely a

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

person is learned and among the lacs of men there are found very few orators but there is no surety of a donor being even among lacs of people.

१३२. शुश्रूषाऽपि परं दानं
मुक्तस्य महात्मनः । (परमसंहिता, १२/५१)

जीवन्मुक्त महात्मा की तो सेवा करना भी बहुत बड़ा दान है ।

The service to a person who is librated from wordly desires and needs while living, is a great charity.

१३३. श्रद्धापूतं प्रदातव्यं
पात्रे दानं समर्चितम् ।
(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/३०५)

श्रद्धापूर्वक सुपात्र को ही पूजा के साथ दान देना चाहिये ।

One should make a donation to a deserving person with proper respect.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१३४. श्रद्धया स्वल्पमात्रं च
दत्तं कोटिगुणं भवेत् ।

(प्रजापतिस्मृतिः श्लोकः २५)

श्रद्धापूर्वक दिया गया थोड़ा सा भी दान कालान्तर में करोड़ों गुना हो जाता है ।

Even a small donation offered with respect and devotion increases over time several crore times.

१३५. श्रद्धयाऽन्नं प्रदातव्य-
मिति पौराणिकी श्रुतिः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः १२/४५)

श्रद्धापूर्वक अन्न का दान करना चाहिये यह पौराणिक संस्कृति है ।

Food should be gifted with respect and devotion. This is the culture of the *purāṇas.*

१३६. श्रोत्रियायैव देयानि
हव्यकव्यानि दातृभिः ।

(मनुस्मृतिः, ३/१२८)

हव्य और कव्य अर्थात् देवयज्ञ और पितृ यज्ञ के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निमित्त दिया जाने वाला दान केवल श्रोत्रिय विप्र को ही दिया जाना चाहिये ।

Havya the material for yajña and *Kavya* the material for *śraddha* should be offered as donation at the time fo *yajña* for the devas and *yajña* for the fore-fathers by a donor to a *Brāhmaṇa* who is learned of Vedas.

१३७. सन्ध्याहीना व्रतभ्रष्टाः
पिशुना विषयात्मकाः ।
तेभ्यो दत्तं निष्फलं स्यात्
नात्र कार्या विचारणा ॥

(बृहद्यमस्मृतिः, ५/५६)

जो सन्ध्योपासन नहीं करते, जो व्रतभ्रष्ट हैं, चुगलखोर हैं और विषयलोलुप हैं, उनको दिया गया दान निष्फल होता है । इस विषय में कोई सन्देह नहीं करना चाहिये।

The gift given to persons who do not perform the prayers, have fallen from the pledge, are backbiters and involved in carnal pleasures, is useless. One should have no doubt on this score.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१३८. सममब्राह्मणे दानं
द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवे ।
सहस्रगुणमाचार्ये
त्वनन्तं वेदपारगे । (दक्षस्मृतिः, ३/२७)

अब्राह्मण को दान देने पर समान फल प्राप्त होता है, ब्राह्मण को दान देने पर दुगुना फल प्राप्त होता है । आचार्य को देने पर सहस्रगुना और वेदपारंगत को दान देने पर उसका अनन्तगुना फल प्राप्त होता है ।

A gift to one who is not a *Brāhmaṇa*, yields an ordinary reward, a gift to a Brāhmaṇa, a double reward, a gift to a well read Brāhmaṇa, a hundred thousands fold reward, a gift to one who knows the vedas and the Angas, a reward without end.

१३९. समर्थो यस्य यस्तु स्या-
दन्नं दद्यात्तु देहिनाम् ।
(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/३२९)

जो जैसा अन्न देने में समर्थ है, उसे वही अन्न प्राणियों को देना चाहिये ।

One should give such grain to all the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

beings as he or she is capable of.

१४०. सममब्राह्मणे दानं
द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवे ।
श्रोत्रिये शतसाहस्त्र-
मनन्तं वेदपारगे ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १४४)

ब्राह्मणेतर को दिये गये दान का फल दान के बराबर ही होता है, ब्राह्मण कहलाने वाले को दिया गया दान दुगुना फल देता है। श्रोत्रिय ब्राह्मण को दिये गये दान का फल सौ हजार गुणा होता है किन्तु वेदपारंगत ब्राह्मण को दिये दान का फल अनन्तगुना होता है।

A gift to one who is not a Brāhmaṇa, yields the ordinary reward, a gift to one who calls himself a Brāhmaṇa, a double reward, a gift to a wellread Brāhmaṇa a hundred thousand fold rewards, a gift to one who knows the veda and the Angas, a reward without end.

१४१. सर्वेषामेव दानानां
ज्ञानदानं विशिष्यते ।

(परमसंहिता, ३१/५५)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सभी दानों में ज्ञान का दान सबसे विशिष्ट है ।

Of all kinds of gifts, the imparting of knowledge excels all others in merit.

१४२. सर्वेषामेव दानाना-
मन्नदानं परं स्मृतम् ।

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः ८१)

सभी दानों में अन्न का दान श्रेष्ठ माना गया है ।

Of all kinds of gifts the imparting of food is said to be greater than other donations.

१४३. सर्वदानफलं वक्तुं
शक्यते किल केवलम् ।
न तु कन्यादानफलं
वक्तुं युगशतेन वै ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ११६)

समस्त दानों का फल बताया जा सकता है, किन्तु कन्यादान का फल सैंकड़ों युगों में भी नहीं कहा जा सकता ।

The fruit of all donations can be described but the fruit of the bestowing of a girl in marriage can not be described in the hundreds of years.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

**१४४. सर्वं गवादिकं दानं
पात्रे दातव्यमर्चितम् ।**

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२२७)

गौ आदि का दिया दान सुपात्र में ही अभिनन्दित होता है ।

The donation of a cow and the like, given only to a deserving person is praised.

**१४५. सात्त्विकं भावमास्थाय
दानं दद्याद् विचक्षणः ।**

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः २११)

सात्त्विक भाव को हृदय में रखकर ही बुद्धिमान् पुरुष को दान देना चाहिये ।

A wise man should do charity with a virtuous feeling.

**१४६. सात्त्विकानां तु दानाना-
मुत्तमं फलमिष्यते ।** (वृद्धगौतमस्मृतिः, ३/४५)

जो दान सात्त्विक भावना से दिये जाते हैं । उनका फल उत्तम होता है ।

The donation given with a virtuous motive are supposed to bring excellent results.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१४७. सागराः सरितः शैला-
स्तीर्थानि विविधानि च ।
सर्वाणि भूमिदानस्य
कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ (मार्कण्डेयस्मृतिः)

समस्त समुद्र, समस्त नदियाँ, पर्वत और अनेक प्रकार के तीर्थ स्थल, ये सभी भूमिदान के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं हैं ।

All the oceans, rivers, mountains and the holy places of many kinds have no equality to a sixteenth part of a single gift of an earth bit.

१४८. सुवर्णदानं गोदानं
भूमिदानं तथैव च ।
नाशयत्याशु पापानि
ह्यन्य जन्म कृतान्यपि ।

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः २०४)

सुवर्ण का दान, गाय का दान और भूमि का दान अन्य जन्मों में किये गये पापों का भी क्षय कर देता है ।

The donation of gold, cow and land destroys even the sins committed in the previous births.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१४९. सुक्षेत्रे च सुपात्रे च
ह्युप्तं दत्तं न नश्यति ।

(पराशरस्मृतिः श्लोकः १/४७)

अच्छे खेत में बोया हुआ बीज और सुपात्र को दिया गया दान नष्ट नहीं होता ।

The seed sown in a productive field and the donation given to a deserving person does not get destroyed.

१५०. सुवर्णदानं भूदानं
गोदानं चैव वासव ।
एतत्प्रयच्छमानस्तु
सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

(बृहस्पतिस्मृतिः, श्लोकः ४)

सुवर्ण का दान, भूमि का दान और गौ का दान, हे इन्द्र ! इन तीन दानों को करने वाला पुरुष समस्त पापों से मुक्त हो जाता है ।

A person giving the gift of gold, land and cow, O *Indra*, gets rid of all the sins.

१५१. हतं श्राद्धमदक्षिणम् ।

(वशिष्ठस्मृतिः १/१२)

दक्षिणा से रहित श्राद्ध मानो विनष्ट हो गया ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

An oblation to the fore-fathers performed without offering *Dakṣinā* (remuneration) is as good as destroyed.

देवता

१. **सर्वदेवमयो वह्निः ।**

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १२/१५)

अग्नि सर्वदेवमय कहा गया है ।

Fire is the common factor in the nature of all the gods.

देवभाषा

१. **दिव्यया भाषया नूनं**
सम्भाषेतैव धर्मतः ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १९)

जब सम्भाषण करना अनिवार्य कर्तव्य बन जावे तब संस्कृत भाषा का ही प्रयोग करना चाहिये ।

One should talk always through divine language (Sanskṛta language).

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धनम्

१. **न्यायागतेन द्रव्येण**
कर्तव्यं पारलौकिकम् । (दक्षस्मृतिः ३/२५)

पारलौकिक क्रियाएँ न्यायपूर्वक अर्जित धन से ही करनी चाहिये ।

The celestial duties must be performed with the wealth ecquired through rightful means.

२. **विना द्रव्येण न क्रिया ।** (दक्षस्मृतिः ३/२३)

द्रव्य के विना क्रिया का सम्पादन नहीं हो सकता ।

No sacrificial rite can be performed without money.

धर्मः

१. **अकामतश्चरेद् धर्मम् ।**
(वृद्धहारीतस्मृतिः, ९/२४५)

धर्म का आचरण निष्काम भाव से करना चाहिये ।

The conduct of religion should be with a selfless motive.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. **अक्षरं दुष्करं ज्ञेयम् ।** (मनुस्मृतिः, २/५९)

अक्षर (परमात्मा का ज्ञान) को दुष्कर जानना चाहिये।

The everlasting *Brahma* is very difficult to know.

३. **अधर्मप्रभवं सर्वं**
दुःखयोगं शरीरिणाम् ।
(मनुस्मृतिः, ६/६४)

शरीरधारियों का समस्त दुःख अधर्मजन्य ही होता है।

All the afflictions of human beings are caused by absence of *Dharma*.

४. **अर्थकामेष्वसक्तानां**
धर्मज्ञानं विधीयते । (मनुस्मृतिः, १/१३२)

धर्म का ज्ञान उन्हीं के लिये विहित किया गया है, जो अर्थ और काम में आसक्त नहीं हैं ।

Knowledge of *Dharma* is prescribed only for those who are detached from *Artha* (wealth) and *Kāma* (passion).

५. **अयं तु परमो धर्मो**

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यद् योगेनात्मदर्शनम् ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/३४)

सबसे श्रेष्ठ धर्म यही है कि योगाभ्यास के द्वारा आत्मा का साक्षात्कार कर लिया जाये।

It is noblest *Dharma* to realise the self throgh the practice of Yoga.

६. **अविरोधी तु यो धर्मः**
स धर्मः सद्भिरुच्यते ।

व्याससमृतिः, प्रथमखण्डः, पृ. १७)

जो धर्म अविरोधी है, सत्पुरुषों के द्वारा वही धर्म कहा जाता है।

The religion which is by its very nature non-opposing has been true religion by the virtous.

७. **अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टं**
धर्ममप्याचरेन्न तु ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः १२३)

जो कार्य सुखदायक नहीं और जिससे लोक द्वेष करता हो, ऐसा कार्य चाहे धर्म भी क्यों न हो, उसे नहीं करना चाहिये।

An act which does not provide happiness

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

and is disliked by the world should not be performed, even though it may come within the ambit of *Dharma*.

८. **अहिंसयैव भूतानां**
कार्यं श्रेयोऽनुशासनम् ।

(मनुस्मृतिः, २/१३४)

मनुष्य को अहिंसा के द्वारा ही कल्याण का उपदेश करना चाहिये ।

Man should preach welfare through non-violence.

९. **इन्द्रियाणां प्रसंगेन**
धर्मस्यासेवनेन च ।
पापान् संयान्ति संसारा-
नविद्वान्सो नराधमाः ॥

(मनुस्मृतिः, १२/५२)

इन्द्रियों के प्रसंग से तथा धर्म का सेवन न करने से मूर्ख नीच पुरुष पापयुक्त संसार को प्राप्त होते हैं ।

Depraved and foolish human beings lead a life of sin in this world as a result of the attachment with sensual pleasures and non-performance of *Dharma*.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१०. **एक एव सुहृद् धर्मो**
निधनेऽप्यनुयाति यः । (मनुस्मृतिः, ८/१७)

एक धर्म ही सच्चा मित्र है, जो मरने पर भी साथ रहता है ।

Dharma alone is a true friend, who accompanies a person even after his or her death.

११. **कुविवाहैः क्रियालोपैः**
वेदानध्ययनेन च ।
कुलान्यकुलतां यान्ति ।
(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता, ८/१८५)

दूषित विवाह करने से, सत्क्रियाओं के अनाचरण से और वेद का अध्ययन न करने से श्रेष्ठ कुल भी नीच हो जाते हैं ।

By an improper marriage, by non-performance of one's duties and by not studying the Vedas, even noble families are rendred low-families.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१२. क्रियाहीने न धर्मः स्यात् ।

(दक्षस्मृतिः, ३/२३)

क्रियाहीन को धर्म की प्राप्ति नहीं होती ।

One who is passive cannot realise *Dharma.*

१३. क्षत्रियस्य परो धर्मः
प्रजानामेव पालनम् । (मनुस्मृतिः, ७/१४४)

क्षत्रिय का परम धर्म प्रजा की रक्षा करना ही है ।

To protect his people is the only foremost duty of a *Kṣatriya.*

१४. जपतां जुह्वतां चैव
विनिपातो न विद्यते ।

(मनुस्मृतिः, ४/१४६)

जप करने वालों का और यज्ञ करने वालों का कभी भी पतन नहीं होता ।

There is no downfall of those who utter the syllable of 'Om' and perform yajña (sacrifice).

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१५. त्रैविद्यवृद्धा यं ब्रूयु-
धर्मं धर्मविदो जनाः ।
स धर्मो

(वसिष्ठस्मृतिः, श्लोकः १५)

त्रैविध अर्थात् तीनों वेदों की विद्या में सम्मृद्ध धर्मज्ञानी लोग जिस बात को कहें, वही धर्म है ।

Whatever the people who are well versed in *Dharma* and the knowledge of the three *Vedas* say, only is *Dharma*.

१६. दानेन तपसा चैव
सत्येन च दमेन च ।
ये धर्ममनुवर्तन्ते
ते नराः स्वर्गगामिनः ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १०/९९)

दान से, तप से, सत्य से तथा इन्द्रियों के दमन से जो धर्म का अनुसरण करते हैं, वे मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त करते हैं ।

Those who follow *Dharma* by charity austerity, truth and by subduing their desires, go to heaven.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१७. द्विजत्वं देवतात्वं च
धर्मः प्रापयते नरम् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १/३२)

धर्म ही मनुष्य को ब्राह्मण और देवत्व प्रदान करता है।

Only *Dharma* confers upon a person the status of a *Brāhmaṇ* and a god.

१८. धर्मः श्रुतो वा दृष्टो वा
कृतो वा कथितोऽपि वा ।
आमोदितो वा राजेन्द्र
पुनाति ह नरं सदा ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १/२९)

धर्म चाहे सुना गया हो या धर्म का आचरण देखा गया हो, किया गया हो, धर्म कहा भी गया हो तथा उसका आनन्द लिया गया हो, प्रत्येक अवस्था में धर्म सदा मनुष्य को पवित्र ही करता है ।

In every form *Dharma* purifies a human being whether listened to, its conduct witnessed, performed, talked about or enjoyed.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१९. **धर्म एकोऽनुयात्येनम् ।**

(विष्णुस्मृतिः, अध्यायः २०, पृ. ४४१)

अकेला धर्म ही मनुष्य का पीछा करता है ।

Only *Dharma* follows a man.

२०. **धर्मस्य विजयो नित्यं**
नाधर्मस्य कदाचन ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ८९)

सदैव धर्म की ही विजय होती है, असत्य की कभी विजय नहीं होती ।

The *Dharma* is always victorious and never *Adharma* wins.

२१. **धर्मः पिता च माता च**
धर्मश्च सुहृदस्तथा ।
धर्मो भ्राता सखा चैव
धर्मः स्वामी परन्तप ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १/३०)

धर्म ही पिता, माता और सच्चा मित्र है । धर्म ही भ्राता और सखा है वास्तव में तो धर्म ही हमारा स्वामी है ।

Dharma is the father, mother and true friend of a man, *Dharma* is brother and

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

companion. In fact *Dharma* alone is our true lord.

२२. **धर्मं जिज्ञासमानानां**
प्रमाणं प्रथमं श्रुतिः ।
द्वितीयं तु स्वशास्त्राणि
तृतीयं लोकसङ्ग्रहः ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १४/४३)

जो धर्म को जानने की इच्छा रखते हैं, उनके लिये सबसे प्रथम तो वेद प्रमाण हैं । उसके पश्चात् (यदि वेद से निर्णय न हो सके तो) अपने धर्मशास्त्र प्रमाण हैं और धर्मशास्त्र भी यदि समर्थ न हों तो फिर तीसरा प्रमाण लोक-व्यवहार है ।

For those, who desire to know the nature of *Dharma*, the first valid evidence in *Veda*, thereafter second evidence should be sought in all traditional religious texts if the text also fail, the third is popular custom.

२३. **धर्म एव हतो हन्ति**
धर्मो रक्षति रक्षितः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो
मा नो धर्मो हतोऽवधीत् ॥

(मनुस्मृतिः, ८/१५)

धर्म का नाश करने पर वह नष्ट धर्म मनुष्य को मार डालता है और रक्षा किया हुआ रक्षा करता है। इसलिये धर्म का नाश नहीं करना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि नष्ट किया हुआ धर्म हमें ही मार डाले।

If *Dharma* is destroyed, that destroyed Dharma destroys the man but if protected it protects. Hence the *Dharma* must not be destroyed, lest the destroyed *Dharma* should destroy us.

२४. **धर्मं यो बाधते धर्मो**
न स धर्मः कथञ्चन ।

(व्यासस्मृतिः, प्रथमखण्डः, पृ. १७)

जो धर्म दूसरे धर्म का बाध करता है, वह धर्म नहीं हो सकता।

That *Dharma* is not a real *Dharma* which violates the boundaries of other religions.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२५. **धर्मं कुरुत यत्नेन**
यो वः सह स्थास्यति ॥

(कात्यायनस्मृतिः, २२/४)

केवल धर्म का संग्रह करो जो तुम्हारे साथ जायेगा ।

Perform *Dharma* only with efforts, which will always remain with you.

२६. **धर्मं जिज्ञासमानानां**
प्रमाणं परमं श्रुतिः ।

(मनुस्मृतिः, १/१३२)

धर्म को जानने की इच्छा रखने वालों के लिये श्रुति ही सबसे श्रेष्ठ प्रमाण है ।

The *Vedas* are the greatest source for those who desire to know *Dharma*.

२७. **धर्मो जयति नाधर्मः ।**

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ८/११८)

सदा धर्म की ही जय होती है, अधर्म की नहीं ।

Only the *Dharama* prevails always.

२८. **धर्मो विद्धस्त्वधर्मेण**
सभां यत्रोपतिष्ठति ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शल्यं चास्य न कृन्तन्ति
विद्धास्तत्र सभासदः ॥

(व्यवहारनिर्णयः, पृ. १७)

जिस सभा में अधर्म के द्वारा धर्म पीड़ित होकर रहता है और वहाँ के सभासद उसकी पीड़ा को नहीं काटते तो वे सभासद ही एक दिन उस अधर्म के द्वारा विद्ध होते हैं।

In which assembly, *Dharma* is attacked by Adharma, and the members in that assembly do not remove the agony those members also one day become a victim to that *Adharma*.

२९. **धर्मः सत्येन वर्धते ।** (मनुस्मृतिः, ८/८३)

धर्म की वृद्धि सत्य से होती है ।

Enhancement of *Dharma* is caused by truth.

३०. **धर्मक्रियाऽऽत्मचिन्ता च**
निःश्रेयस्करं परम् । (मनुस्मृतिः, १२/८३)

धर्माचरण और आत्मचिन्तन अत्यन्त कल्याणकारी बनाये गये हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Observance of *Dharma* and self-contemplation have been described as very beneficial.

३१. धर्मस्य कर्त्ता भोक्ता च
परमात्मा सनातनः ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ९/१५८)

धर्म का कर्त्ता और भोक्ता सनातन काल से परमात्मा ही है ।

God alone has been the creator and consumer of Dharma from the earliest times.

३२. धर्महीने कुतः सुखम् । (दक्षस्मृतिः, ३/२३)

धर्महीन के लिए सुख कहाँ ?

Where is pleasure for a person who is devoid of *Dharma*?

३३. धर्मेण हि सहायेन
तमस्तरति दुस्तरम् । (मनुस्मृतिः, ४/२४२)

धर्म की सहायता से ही मनुष्य कठिन अन्धकार को पार करता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

With the help of the *Dharma* alone a human being.

३४. धर्मेण लब्धुमीहेत ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, आचाराध्यायः, श्लोकः ३१७)

धर्मपूर्वक ही अर्थप्राप्ति की कामना करनी चाहिये ।

One should long to attain wealth only as ordained by *Dharma*.

३५. धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं
शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो
दशकं धर्मलक्षणम् ॥ (मनुस्मृतिः, ६/९२)

धैर्य, सहनशीलता, दमन, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना, ये धर्म के दस लक्षण हैं ।

Patience, tolerance, subjugation of desires, abstinence from stealing, purity, control over sensual organs, wisdom, learning, truth and abstinence from anger are the ten symptoms of *Dharma*.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३६. धनं तु वै सदा सर्वं
विज्ञेयं धर्मसाधनम् ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः २५३)

धन को सदा धर्म का साधन समझना चाहिये ।

One should consider wealth always as a means of attainig *Dharma*.

३७. धर्माद् विचलिता दण्ड्याः ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः ६४)

धर्म से विचलित लोग सदा दण्ड के योग्य हैं ।

People deviating from *Dharma* always deserve punishment.

३८. धर्मो वृथा यत्र न सत्यमस्ति ।

(वृहत्पराशरस्मृतिः, ८/७३)

वह धर्म भी व्यर्थ है जहाँ सत्य नहीं है ।

That *Dharma* is also useless where truth is absent.

३९. नष्टे धर्मे मनुष्येषु
व्यवहारः प्रवर्तते ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः ५७)

जब मनुष्यों में धर्म का लोप हो जाता है, तभी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यवहार की प्रवृत्ति होती है अर्थात् जहाँ धर्म से काम नहीं चलता वहाँ लोक-व्यवहार से निश्चय किया जाता है ।

When *Dharma* is destroyed among the people, then people tend to depend upon the popular custom. In other words, where it is not possible to seek evidence from *Dharma*, decisions are taken taking recourse to popular custom.

४०. न ऋते पोषणादन्यो
धर्मो लोकत्रयेऽस्ति वै ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ४)

गरीब के पोषण से बड़ा दूसरा कोई भी धर्म त्रैलोक्य में नहीं है ।

There is no merit greater the serving in whole world.

४१. न कामतश्चरेद् धर्मम् ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ९/२२६)

किसी कामना के साथ धर्म का आचरण नहीं करना चाहिये ।

The object of the observance of *Dharma* should not be to enjoy its fruit.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४२. न धर्मः क्षुद्रमानसे ।

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः ३७१)

क्षुद्र हृदय में धर्म नहीं टिक सकता ।

Dharma cannot stay in a narrow mind.

४३. न सीदन्नपि धर्मेण मनोऽधर्मे निवेशयेत् ।

(मनुस्मृतिः, ४/१७१)

व्यक्ति को कभी भी अपने मन को अधर्म में नहीं लगाना चाहिये । चाहे धर्ममार्ग में कष्ट प्राप्त हो रहे हों।

Even when faced with difficulties in the conduct of *Dharma*. One should never take recourse to *Adharma* (Vice).

४४. न स्वधर्मात्परं किञ्चित् पापकर्मव्यपोहनम् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, २/३२)

अपने धर्म से बड़ा पापनाशक और कुछ नहीं होता ।

Nothing is a greater destroyer of sin that one's religion.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४५. नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, १०/१९)

यह लोक यज्ञहीन पुरुष के लिये नहीं है ।

This world is not for those who do not perform *yajña*.

४६. न लिङ्गं धर्मकारणम् ।

(मनुस्मृतिः, ६/६६)

दण्डादि चिह्न धर्म का कारण नहीं होते ।

Symbols like staff etc. are no reason of *Dharma*.

४७. नामुत्र हि सहायार्थं
पिता माता च तिष्ठतः ।
न पुत्र दारा न ज्ञाति-
र्धर्मस्तिष्ठति केवलः ॥

(मनुस्मृतिः, ४/२३९)

परलोक में सहायंता करने के लिए पिता, माता, पुत्र या पत्नी नहीं ठहरते, केवल धर्म ही साथ रहता है ।

Father, mother, son and wife do not escort a person in the other world. Only *Dharma* accompanies him or her.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४८. परित्यजेदर्थकामौ
यौ स्यातां धर्मवर्जितौ ।
(मनुस्मृतिः, ४/१७६)

जो अर्थ और काम यदि धर्म से रहित हों तो उन्हें छोड़ देना चाहिये ।

Wealth and passion if divorced from *Dharma* (righteousness), should be abandoned.

४९. प्रत्यक्षं चानुमानं च
शास्त्रं च विविधागमम् ।
त्रयं सुविदितं कार्यं
धर्मशुद्धिमभीप्सता ॥ (मनुस्मृतिः १२/१०५)

प्रत्यक्ष, अनुमान और अनेक प्रकार के आगम शास्त्र, धर्म की शुद्धि चाहने वाले को इन तीनों को अच्छी प्रकार जानना चाहिये ।

A person, who wants purity of *Dharma*, should understand very well the three ingredients of knowledge i.e. direct experience, inference and reference texts.

५०. बाल्ये विद्यान्निषेवेत
यौवने दारसंग्रहम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्थाविर्ये मोक्षमातिष्ठेत्
सर्वदा धर्ममाचरेत् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १२/४)

बचपन में विद्या का अभ्यास करना चाहिये, युवावस्था में पत्नी का सेवन करना चाहिये, वृद्धावस्था में मोक्षानुसंधान करना चाहिये, किन्तु धर्म का आचरण सब कालों में करना चाहिये।

One should acquire knowledge in childhood, enjoy the wife in youth and attain salvation in old age but one should observe *Dharma* in all the stages.

५१. **भूतं भव्यं भविष्यं च**
सर्वं वेदे प्रतिष्ठितम् ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः १२/४१)

भूत; वर्तमान और भविष्य का जितना भी ज्ञान है, वह सब वेद में निहित हैं।

All the knowledge of the past, the present and the future, comprised in the *Vedas*.

५२. **भूतं भव्यं भविष्यं च**
सर्वं वेदात्प्रसिध्यति । (मनुस्मृतिः, १२/९७)

भूत, वर्तमान और भविष्य सब कुछ वेद से सिद्ध हो

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सकता है ।

The past, the present and the future, every thing get established through the *Vedas*.

५३. मातरं गुरुपत्नीं च
स्वसुर्दुहितरं स्नुषाम् ।
गत्वैताः प्रविशेदग्निं
नान्या शुद्धिर्विधीयते ॥

(यमस्मृतिः, श्लोकः ३५)

माता, गुरु की पत्नी, भगिनी, पुत्री और पुत्रवधू, इनके साथ गमन करके अग्नि में प्रविष्ट हो जाना चाहिये । इसके अतिरिक्त शुद्धि का अन्य कोई उपाय नहीं ।

After copulating with the mother, the teacher's wife, the sister, the daughter and the son's wife, one should enter into the burning fire. There is not way of purification other than this.

५४. मृतं धर्मस्तमनुगच्छति ॥ (मनुस्मृतिः, ४/२४१)

केवल धर्म ही मृत व्यक्ति का अनुगमन करता है ।

Only *Dharma* follows the dead.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५५. यः कश्चित्कस्यचिद् धर्मो
मनुना परिकीर्तितः ।
स सर्वोऽभिहितो वेदे
सर्वज्ञानमयो हि सः ॥ (मनुस्मृतिः, २/७)

जो कुछ भी किसी का धर्म मनु द्वारा कहा गया है, वह सब कुछ वेद में कहा गया है, क्योंकि वेद सर्वज्ञानमय है ।

Whatever law (*Dharma*) has been ordained for any person by Manu, that has been fully declared in the *Veda*, for the *Veda* is omniscient.

५६. यत्र विप्रतिपत्तिः स्याद्
धर्मशास्त्रार्थशास्त्रयोः ।
अर्थशास्त्रोक्तमुत्सृज्य
धर्मशास्त्रोक्तमाचरेत् ॥

(नारदस्मृतिः, १/३९)

जब विचार के अवसर पर धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र के वचनों में विरोध उपस्थित हो तो अर्थशास्त्र के कथन को छोड़कर धर्मशास्त्र के कथन का पालन करना चाहिये ।

There, where is any contradiction

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

between *Dharmaśāstra* and *Arthaśāstra*, one should perform the duty according to *Dharmaśāstra*, ignoring *Arthaśāstra*.

५७. **यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्तु**
तदेषां कर्मबन्धनम् ।

(बृद्धहारीतस्मृतिः, १०/१३)

यज्ञ से भिन्न उद्देश्य के लिये किया गया कर्म मनुष्यों का बन्धन ही है । भाव यह है कि यज्ञ के लिये जो कर्म किये जाते हैं वे बन्धन कारक नहीं होते हैं ।

Any act performed by people for a purpose other than *yajña* (sacrifice), shackles them.

५८. **यतिर्यस्य गृहे भुङ्क्ते**
तस्य भुङ्क्ते हरिः स्वयम् ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ८/८९)

जिसके घर में संन्यासी भोजन करता है, उसके घर में मानो स्वयम् भगवान् श्रीहरि भोजन करते हैं ।

In whose house a *saṁnyāsī* (a person who has renounced the world) takes his meals, it means God himself takes his meals in his house.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५९. **यत्र सत्यं स धर्मः स्यात्**
छलं यत्र न विद्यते ।

(वृहत्पराशरस्मृतिः, ८/७२)

धर्म वहीं है, जहाँ सत्य है और जहाँ छल नहीं है ।

Dharma is that where there is only truth and where there is no deception.

६०. **यस्तर्केणानुसन्धत्ते**
स धर्मं वेद नेतरः । (मनुस्मृतिः, १२/१०६)

जो व्यक्ति तर्कपूर्वक अनुसन्धान करता है, वही धर्म को जान सकता है अन्य नहीं ।

Only that person, who researches *Dharma* logically, can know it and not any one else.

६१. **यो यस्य विहितो धर्म-**
स्तेन धर्मेण कारयेत् ।

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः ३०)

जिसके लिये जिस धर्म का विधान किया गया है, उसी के अनुसार क्रियाएं की जानी चाहिये ।

One should perform the rituals according to the *Dharma* (duties) ordained for him.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६२. **यं शिष्टा ब्राह्मणा ब्रूयुः**
स धर्मः स्यादशङ्कितः ।

(वैदिकमनुस्मृतिः, ११/५१)

शिष्ट विद्वान् जो बात कहते हैं, निस्सन्देह वही धर्म है।

Only what is said by the polite learned people, is undoubtedly *Dharma*.

६३. **वरं स्वधर्मो विगुणो**
न पारक्यः स्वनुष्ठितः ।

(मनुस्मृतिः, १०/९७)

अपना धर्म चाहे गुणहीन भी हो वह अच्छा है, किन्तु दूसरे का धर्म चाहे अच्छी प्रकार अनुष्ठित हो तो भी ठीक नहीं ।

One's *Dharma*, even if lacking in merit, is good but others' *Dharma*, even though well performed, is not desirable.

६४. **वाक्चैव मधुरा श्लक्ष्णा**
प्रयोज्या धर्ममिच्छता ।

(मनुस्मृतिः, २/१३४)

धर्म की इच्छा करते हुए मधुर और स्नेह युक्त वाणी ही बोलनी चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Sweet and gentle speech must be used by a teacher who desires to abide by the sacred law.

६५. **विद्वान् स्वयं तु यो ब्रूयात्**
स धर्मः परमो मतः ॥

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः ३९५)

विद्वान् पुरुष स्वयं जो अपने मुख से कहता है, वही परम धर्म माना गया है ।

Whatevers a learned man himself speaks has been considered the highest *Dharma*.

६६. **वेदाद् धर्मो हि निर्बभौ ।**

(मनुस्मृतिः, ५/४४)

धर्म वेद से ही उत्पन्न हुआ है ।

Dharma has emanated from the Vedas only.

६७. **वेदाः प्राणा ।** (वृद्धहारीतस्मृतिः, ११/१७६)

वेद प्राण तुल्य हैं ।

Vedas are as precious as life itself.

Funding by IKS-MoE

६८. **वेदोऽखिलो धर्ममूलम् ।**

(मनुस्मृतिः १/१२५)

वेद सम्पूर्ण धर्मों का मूल है ।

Veda is the origin of all *Dharmas* (laws).

६९. **वेदो धर्ममूलं तद्विदाम् ।**

(गौतमस्मृतिः, प्रथमोऽध्यायः)

वेदों को जो जानता है, उनके लिये वेद ही धर्म का मूल हैं ।

For one who knows Vedas, *Vedas* alone are the source of *Dharma*.

७०. **शरीरमाद्यं धर्मस्य**
कारणं केवलं स्मृतम् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ३७)

धर्म का मुख्य साधन केवल शरीर ही बताया गया है।

The body only is said to be primary means of merit.

७१. **शरीरं धर्मसर्वस्वं**
रक्षणीयं प्रयत्नतः । (शंखस्मृतिः, १७/६५)

शरीर ही धर्म का सर्वस्व है, इसकी रक्षा प्रयत्न से करनी चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Body alone is the be-all of *Dharma*. It should be painstakingly protected.

७२. शीलवृत्तफलं श्रुतम् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १४/४५)

शास्त्रों के अध्ययन का केवल एक फल है – शील व्यवहार ।

The study of holy texts yields only one result and that is polite conduct.

७३. शुभाशुभकृतं सर्वं
प्राप्नोतीह फलं नरः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ८/२)

मनुष्य ने शुभ या अशुभ जो भी कर्म किया है, उस सबका फल वह इसी लोक में प्राप्त करता है ।

Whatever acts a human being has committed, whether good or bad, he or she gets the result thereof in this world itself.

७४. श्रद्धैव सर्वधर्मस्य
चातीव हितकारिणी ।

(स्मृतिसारसंग्रहः, पृ. २१६)

श्रद्धा ही समस्त धर्मों का हित करने वाली है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Faith and devoties are verily beneficial to all Dharmas (religions).

७५. **श्रुति स्मृति विरोधे तु**
श्रुतिरेव गरीयसी ।

(स्मृतिचन्द्रिका, प्रथमखण्डः, पृ. १६)

जहाँ श्रुति और स्मृति के वाक्यों में विरोध उपस्थित हो रहा हो वहाँ श्रुति को ही बलवती जानना चाहिये।

If there is a contradiction between the sentences of Śruti and Smṛti, one should prefer śruti to smṛti.

७६. **श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो**
धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः ।
ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये
ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, १२/२८)

श्रुति को वेद समझना चाहिये और धर्मशास्त्र को स्मृति समझना चाहिये, सभी ज्ञेय अर्थों में इन पर सन्देह नहीं करना चाहिये, क्योंकि धर्म इन्हीं दोनों से प्रादुर्भूत हुआ है ।

We should understand that *Śruti* is veda and the books of law are *Smṛti*. These two

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

should never be doubted because Dharma has originated from these two.

७७. श्रुतिस्मृत्युदितं धर्म-
मनुतिष्ठन्हि मानवः ।
इह कीर्तिमवाप्नोति
प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥

(मनुस्मृतिः, १/१२८)

श्रुति और स्मृति में कहे गये धर्म का पालन करता हुआ मनुष्य इस लोक में यश प्राप्त करता है और मरणोपरान्त श्रेष्ठ सुख प्राप्त करता है ।

The man who obeys the *Dharma* prescribed in the *Śruti* (vedas) and in the Smṛti (sacred traditions) gains fame in this world and after death unsurpassable bliss.

७८. स जीवति य एवैको
बहुभिश्चोपजीव्यते । (दक्षस्मृतिः, २/३७)

उसी का जीवन सार्थक है जो बहुतों का जीवन मूल है ।

Only his life has a meaning who is the shelter of many beings.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७९. **सत्त्वस्य लक्षणं धर्मः ।**

(मनुस्मृतिः, १२/३८)

धर्माचरण ही सत्त्वगुण का लक्षण (पहचान) है ।

Performance of *Dharma* is a symptom of purity.

८०. **सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्**
न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियं च नानृतं ब्रूया-
देष धर्मः सनातनः ॥ (मनुस्मृतिः, ४/१३८)

सत्य बोलना चाहिये, प्रिय बोलना चाहिये, किन्तु मिथ्या प्रिय भी नहीं बोलना चाहिये। यही सनातन धर्म है ।

One should speak the truth and speak sweetly, but he should not speak unpleasant truth, and an unpleasant lie. This is the eternal *Dharma*.

८१. **सत्यमेव हि वक्तव्यं**
सत्यसन्धानमेव च ।

(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता, ८/२८)

सत्य ही बोलना चाहिये और सत्य को ही धारण करना चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

One should speak the truth verily and accept the truth only.

८२. सत्येन पूयते वाणी
धर्मः सत्येन वर्धते ।
तस्मात्सत्यं हि वक्तव्य-
मात्मशुद्ध्यै द्विजातिभिः ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ८/३३८)

सत्य से वाणी पवित्र होती है, धर्म की वृद्धि भी सत्य से होती है । इसलिये आत्मशुद्धि के लिये सत्य ही बोलना चाहिये ।

Speech is purified by truth and the Dharma is increased by truth. Therefore only the truth must be spoken for self purification.

८३. स भवेत्कर्मचाण्डालो
यस्तु धर्मपराङ्मुखः ।

(पराशरस्मृतिः, ४/२१)

जो मनुष्य धर्म से विमुख है, वह कर्म से चाण्डाल होता है ।

He, who ignores *Dharma*, is the lowest being in action.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८४. स विद्धद्भिः बहिः कार्यो
नास्तिको वेदनिन्दकः ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, १२/२९)

जो नास्तिक और वेदनिन्दक है, उसे विद्वानों के द्वारा सभा से बाहर निकाल दिया जाना चाहिये ।

A person who is an atheist and speaks ill of the vedas, should be exiled from the assembly by the learned.

८५. सर्वेषामेव भूतानां
वेदश्चक्षुः सनातनः ।

(औशनसस्मृतिः, श्लोकः १४९)

वेद ही समस्त प्राणियों का सनातन नेत्र है।

Veda is an eternal eye for all beings.

८६. सर्वेषामेव मन्त्राणां
कारणं प्रणवः स्मृतिः ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ६/३)

सभी मन्त्रों का कारणभूत मन्त्र ओंकार है ।

Om, the original *mantra*, in the cause of all *mantras*.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८७. सर्वभूतेषु चात्मानं
सर्वभूतानि चात्मनि ।
समं पश्यन्नात्मयाजी
स्वाराज्यमधिगच्छति ॥

(मनुस्मृतिः, १२/९१)

समस्त प्राणियों में अपने आप को और अपने आप में सब भूतों को देखने वाला आत्मज्ञानी मोक्ष को प्राप्त होता है ।

A person who seen himself in all beings and all souls in himself. That realiser of self gains solvation.

८८. सर्वतीर्थानि पुण्यानि
पापघ्नानि सदा नृणाम् ।

(शंखस्मृतिः, ७/१३)

समस्त पवित्र तीर्थ मनुष्यों के पापों को नाश करने वाले हैं ।

All the sacred places of pilgrimage destroy the sins of people.

८९. सर्वधर्मान्परित्यज्य
योगधर्मं समाचरेत् ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/१)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समस्त धर्मों को छोड़कर केवल योगधर्म का आचरण करना चाहिये ।

One should only observe the yoga *Dharma* (virtues of yoga) abandoning all other *Dharmas*.

१०. सारासारविदः प्राज्ञाः
परं धर्मं विजानते ।

(नारदपाञ्चरात्रम्, श्लोकः ५/४)

तत्त्व और अतत्त्व को जानने वाले विद्वान् ही धर्म के रहस्य को समझते हैं, अन्य नहीं।

Only the learned men who know the essence of the true and the false, understand the great *Dharma* and not others.

११. स्वधर्मं येऽनुतिष्ठन्ति
ते यान्ति परमां गतिम् ।

(हारीतस्मृतिः, ७/१५)

जो अपने धर्म का पालन करते हैं, वे परम गति को प्राप्त करते हैं ।

Those, who perform their *Dharma* (duty), achieve the highest goal.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१२. स्वल्पाऽपि हन्ति भूयांसं
स्वधर्मं निन्दिता क्रिया ।

(नारदपाञ्चरात्रम्, ५/८५)

थोड़ा सा भी निन्दित कार्य बहुत बड़े धर्म को नष्ट कर देता है ।

Even a little bit of a bad action destroys even big *Dharma* (virtue) of men.

१३. हुतेन शाम्यते पापम् ।

(बोधायनस्मृतिः, २/३/६९)

अग्निहोत्र करने से पाप शान्त हो जाता है ।

A sin is destroyed by the performance of *yajña*.

नरः

१. बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/३६)

बुद्धिमान् प्राणियों में मनुष्य अधिक बुद्धिमान् है ।

Man has been considered wiser among the wise animals.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निन्दा

१. गुरोर्यत्र परीवादो
निन्दा वापि प्रवर्तते ।
कर्णौ तत्र पिधातव्यौ
गन्तव्यं वा ततोऽन्यतः ॥ (मनुस्मृतिः २/१७५)

जहाँ पर गुरु की आलोचना या निन्दा होती हो वहाँ कानों को बन्द कर लेना चाहिये या वहाँ से उठकर कहीं अन्यत्र चले जाना चाहिये ।

Whether people censure or defame one's teacher one should cover his or her ears or depart thence.

निर्णयः

१. केवलं शास्त्रमाश्रित्य
न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारे तु
धर्महानिः प्रजायते ॥

(बृहस्पतिस्मृतिः, पृ. २३)

केवल शास्त्र का आश्रय लेकर ही धर्म का निश्चय

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं कर लेना चाहिये । युक्तिहीन विचार करने पर धर्म की हानि हो सकती है । अर्थात् जो युक्ति युक्त हो उसी को स्वीकार करना चाहिये ।

One should not determine his duty only by taking shelter behind the śāstras. *Dharma* can come to arm by illogical reasoning. In other words, only that which is reasonable, should be accepted.

पर्यावरणम्

१. **तीर्थानि सरितोऽम्भांसि**
स्वतः शुद्धानि सर्वदा ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. २२)

तीर्थस्थान और नदियों के जल सर्वदा स्वतः ही शुद्ध होते हैं ।

The places of pelgrimage and the waters of rivers are always pure by themselves.

२. **दिवा सूर्यांशुभिस्तप्तं**
रात्रौ नक्षत्रमारुतैः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सन्ध्ययोरप्युभाभ्यां च
पवित्रं सर्वदा जलम् ॥

(लघुयमस्मृतिः, श्लोकः १६)

जल दिन में सूर्य की किरणों से तपता है, रात में नक्षत्रों से और हवाओं से शुद्ध होता है तथा सन्ध्याकाल में दोनों सन्ध्याओं से पवित्र होता है। इस प्रकार जल सदा पवित्र ही होता है।

The water is heated during the day by the sun rays, and at night is purified by the stars and the breezes and in the evening by the twilight worship. Thus, water always remains pure.

पवित्रदेशः

१. **देशानां पुण्यदेशत्वं**
महदैकनिवासत ॥

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २७४)

महान् पुरुष के निवास मात्र से ही कोई देश पुण्यदेश बन जाता है।

The place is pious due to the residence of a great person.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पापम्

१. कृत्वा पापं न गूहेत
गुह्यमानं विवर्द्धते ।

(पराशरस्मृतिः, ८/६)

पाप करके उसे छुपाना नहीं चाहिये, क्योंकि छुपाने से वह पाप और बढ़ता है ।

One should not hide one's sins for the sin if hidden, increases in intensity.

२. कृत्वा पापं हि संतप्य
तस्मात्पापात् प्रमुच्यते ।

(मनुस्मृतिः ११/२३०)

पाप करके यदि पश्चात्ताप कर लिया जाये तो मनुष्य उस पाप से मुक्त हो जाता है ।

If one repents after committing as sin, he or she gets rid of that sin.

३. ख्यापनेन तु तापेन
प्रायः पापं प्रणश्यति ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, २/३८)

ख्यापन से अर्थात् कह देने से तथा पश्चात्ताप से प्रायः पाप नष्ट हो जाता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Normaly a sin is destroyed by disclosing it and by repentance.

४. अर्श आद्या नृणां रोगा
अति पापाद् भवन्ति हि ।

(शातातपस्मृतिः, अध्यायः १, श्लोकः १०)

बवासीर आदि रोंग मनुष्यों को भयंकर पाप के कारण होते हैं ।

Diseases like piles etc. are cause by horrible sins of human heings.

पापी

१. प्रच्छन्नपापिनो ये स्युः
कृतघ्ना दुष्टचारिणः ।
नरकेषु च पच्यन्ते
यावदाभूतसम्प्लवम् ॥

(बृहद्यमस्मृतिः, ४/६)

जो प्रच्छन्न पापी हैं, कृतघ्न हैं और दुष्ट आचरण वाले हैं, वे प्रलय काल पर्यन्त नरकों में पकते हैं ।

Person who are secretly sinful ungrateful and wicked, are roasted in hell till the dissolution of the universe.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुत्रः

१. अपुत्रस्य वृथा जन्म ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १०/३१६)

पुत्रहीन का जन्म निष्फल है ।

The life of a man is useles, if he has no son.

२. अपुत्रस्य गतिर्नास्ति
स्वर्गो नैव च नैव च ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः १८८)

पुत्रहीन की गति नहीं होती । स्वर्ग तो कभी मिलता ही नहीं ।

There is no salvation of the man without son. The heaven is completely unavailable.

३. आचारहीनः पुत्रस्तु
मूत्रोच्चारसमः स्मृतः ।

(व्यवहारनिर्णयः, पृ. ४१९)

सदाचार से रहित पुत्र तो माता के मल और मूत्र के समान कहा गया है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A son without good conduct is declared like the urine and excrement of his mother.

४. **एक एवौरसः पुत्रः**
पित्र्यस्य वसुनः प्रभुः ।

(मनुस्मृतिः, ९/१६३)

एक औरस पुत्र ही पिता के धन का अधिकारी होता है, दत्तक पुत्र नहीं ।

Only the real son is the successor of his father's property.

५. **एष्टव्या बहवः पुत्राः**
शीलवन्तो गुणान्विताः ।

(औशनसस्मृतिः, श्लोकः २४२)

सदाचारी और गुणवान् अनेक पुत्रों की कामना करनी चाहिये ।

One should desire to produce many sons, well behaved and virtuous.

६. **कोऽर्थः पुत्रेण जातेन**
यो न विद्वान्न धार्मिकः ।

(व्यवहारनिर्णयः, पृ. ४१९)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ जो न विद्वान् हो और न धार्मिक ?

What is the use of the son born who is not the learned and the virtuous ?

७. **न पुत्रवानपत्नीकः**
किन्तु सोऽयमपुत्रवान् ।

(पूर्वांगिरसस्मृतिः, श्लोकः ३१९)

जिसकी पत्नी नहीं होती उसका पुत्र नहीं होता ऐसी बात नहीं है, अपितु जिसका पुत्र नहीं होता वास्तव में वही पत्नी विहीन है ।

A man without wife is not without son but a man without son is called without wife.

८. **नापुत्रस्य तु लोकोऽस्ति**
पुत्रिणस्तु त्रिविष्टपम् ।

(पूर्वांगिरसस्मृतिः, श्लोकः ३१६)

पुत्रहीन को स्वर्गलोक नहीं मिलता । पुत्रवान् के लिये तो तीनों लोक सुलभ हैं ।

There is no heaven for the person without son, but with a son he can avail three worlds.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

९. **पितुः पुत्रेण कर्तव्या**
पिण्डदानोदकक्रियाः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ७/४९)

पिता की पिण्डदान, जलदान आदि श्राद्ध क्रियायें पुत्र के द्वारा ही की जानी चाहिये।

To give the oblation and the like for the manes of his father is the duty of a son.

१०. **पुत्रेण लोकान् जयति ।**

(मनुस्मृतिः, ९/१३७)

पुत्र के द्वारा पिता शुभलोकों को प्राप्त करता है ।

A man wins all the worlds by a son.

११. **पुंनाम्नो नरकाद्यस्मात्**
त्रायते पितरं सुतः ।
तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः
स्वयमेव स्वयम्भुवा ॥

(मनुस्मृतिः ९/१३८)

पुत्र अपने पिता की पुम् नामक नरक से रक्षा करता है इसलिये पुत्र कहा गया है । स्वयं ब्रह्मा जी ने ऐसा कहा है ।

The son protects his father from the hell

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

nemed *Pum*, so he is called to be a *putra* by the Lord *Brāhma* himself.

१२. **पुनन्ति साधवः पुत्राः ।**

(गौतमस्मृतिः, चतुर्थोऽध्यायः)

सच्चरित्र पुत्र पिता को पवित्र बनाते हैं ।

The virtuous son make pure their fathers.

१३. **पुत्रेण प्राप्यते स्वर्गो**
जातमात्रेण तु ध्रुवम् ।
तस्मादिच्छन्ति सर्वे हि
पशवोऽपि वयांस्यपि ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/१८९)

उत्पन्न होने मात्र से ही पुत्र के द्वारा पिता स्वर्ग प्राप्त करता है, इसलिये सभी पशु भी और पक्षी भी पुत्र चाहते हैं ।

A person obtains the heaven by producing only the son, so animals and birds also desire to get the son.

१४. **पुत्रयत्नं सदा कुर्याद्**
वैदिकं लौकिकं शुभम् ।

(पूर्वांगिरसस्मृतिः, श्लोकः ३२१)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुत्र प्राप्ति के लिये सदा यत्न करना चाहिये। वेद और लोक दोनों में पुत्र शुभ माना गया है ।

Let him strive to produce a son always because it is declared the good by the Veda and worldly custom.

१५. पुत्रवानेव भाग्यवान् ।

(पूर्वांगिरसस्मृतिः, श्लोकः ३१७)

इस लोक में पुत्रवान् ही भाग्यशाली है ।

A man is verily fortunate who has a son.

१६. भवन्ति पुत्राः शुभवंशवृद्ध्यै ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ११/३४७)

पुत्र उत्तम कुल की वृद्धि के लिये ही होते हैं ।

The sons are for the progress of their good race.

१७. यः पिता स तु पुत्रः स्यात्
जायैव हि जनन्यपि ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/१९१)

जो पिता होता है, वह पुत्र भी होता है तथा जो जाया होती है वह जननी भी होती है (अर्थात् इन दोनों में भेद नहीं है ।)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The father is also a son and wife is also a mother.

१८. यथैवात्मा तथा पुत्रः
पुत्रेण दुहिता समा ।

(व्यवहारनिर्णयः पृ. ४५२)

पुत्र पिता की आत्मा होता है । बेटी भी पुत्र के ही समान मानी गयी है ।

The son is self of his father, and there is no any difference between son and daughter.

१९. यादृशं फलमाप्नोति
कुप्लवैः सन्तरन् जलम् ।
तादृशं फलमाप्नोति
कुपुत्रैः सन्तरंस्तमम् ॥ (मनुस्मृतिः, ९/१६१)

टूटी फूटी नौकाओं से नदी को पार करते हुए मनुष्य जैसे फल प्राप्त करता अर्थात् डूब जाता है वैसा ही फल वह कुपुत्रों से दुःखरूप अन्धकार को पार करते हुए पाता है ।

As a man finds the result when trying to cross the ocean by a wrecked boat, i.e. he drowns, similarly he, while crossing the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

darkness of pain by the disobedient sons, finds the result

२०. स पुण्यकृत्तमो लोके
यस्य पुत्राश्चिरायुषाः ।
विशेषेण हि धर्मज्ञाः
स परं ब्रह्म विदन्ति ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/१८८)

लोक में वह पुरुष अत्यन्त पुण्यशाली है जिसके पुत्र चिरायु और विशेष रूप से धर्मज्ञ होते हैं । वही पुरुष परब्रह्म को प्राप्त करता है ।

He is very fortunate in the world whose sons have the long span of life and are the knowers of *Dharma*. He finds the absolute *Brāhmaṇa*.

पुरुषार्थः

१. यथा ह्येकेन चक्रेण
न रथस्य गतिर्भवेत् ।
तथा पुरुषकारेण
विना दैवं न सिध्यति ॥

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, आचाराध्यायः श्लोकः ३५१)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे एक पहिये से रथ नहीं चलता, उसी प्रकार पुरुषार्थ के विना भाग्य सिद्ध नहीं होता ।

As the movement of a chariot is not possible with only one wheel, similarly one cannot obtain good fortune without fortitude.

पुष्पम्

१. **फलं वृक्षस्य राजानो**
पुष्पं वृक्षस्य ब्राह्मणाः ।
तस्मात्पुष्पं न हिंसीयात्
पुष्पात्संजायते फलम् ॥

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः २३)

राजा लोग किसी वृक्ष के फल के समान होते हैं और ब्राह्मण उस वृक्ष के पुष्प के समान होते हैं, इसलिये पुष्प का नाश नहीं करना चाहिये क्योंकि पुष्प से ही फल उत्पन्न होता है ।

The kings are like the fruit of a tree and the *Brāhmaṇa* are like the flowers of that tree. So one should not destroy a flower, because the fruit is produced from the flower.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राणायामः

१. प्राणायामः परं तपः ।

(मनुस्मृतिः, २/८३)

प्राणायाम परम तप है ।

Control of the breath is the best form of penance.

ब्रह्मचर्यम्

१. एकः शयीत सर्वत्र
न रेतः स्कन्देत्क्वचित् ।

(मनुस्मृतिः, २/१५५)

सर्वत्र अकेले ही सोना चाहिये, कहीं पर भी वीर्य का स्खलन न करे ।

Let one always sleep alone. Let him never ejaculate his semen anywhere in lust, breaks his vow of celibacy.

२. कामाद्धि स्कन्दयन् रेतो
हिनस्ति व्रतमात्मनः । (मनुस्मृतिः, २/१५५)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो काम के द्वारा वीर्य का स्खलन करता है, वह अपने (ब्रह्मचर्य) व्रत का ही नाश करता है।

He who ejaculates his semen in lust, breaks his vow of celibacy.

ब्राह्मणः

१. अग्रं वृक्षस्य राजानो
मूलं वृक्षस्य ब्राह्मणाः ।
तस्मान्मूलं न हिंसीया-
न्मूलादग्रं प्ररोहति ॥

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः २२)

राजा किसी वृक्ष के अग्र भाग के समान होता है और ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) उस वृक्ष की जड़ के समान होता है। इसलिये जड़ को नहीं काटना चाहिये, क्योंकि जड़ से ही शिखरभाग उत्पन्न होता है।

A ruler are like the forepart of a tree and the *Brāhmaṇa* (intellectual) is the root of such tree. So the root must not be destroyed, because the upper part grows out of the roots.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. **अनभ्यासेन वेदाना-**
माचारस्य च वर्जनात् ।
आलस्यादन्न दोषाच्च
मृत्युर्विप्रान् जिघांसति ॥ (मनुस्मृतिः ५/४)

वेदों का अभ्यास न करना, सदाचार का त्याग, आलस्य और अन्नदोष, इन दोषों से मृत्यु ब्राह्मणों (बुद्धिजीवियों) को मारना चाहती है ।

Death wants to kill a *Brāhmiaṇ* (intellectual) by non practice of vedas, depriving them of righteous acts, edleness and impurities in food.

३. **अनूचानो मुनिः श्रेयान्**
सर्वेषां च तपस्विनाम् ।
(अहिर्बुध्न्यसंहिता, ३३/६१)

समस्त तपस्वियों में अनूचान अर्थात् वेदज्ञ ब्राह्मण ही श्रेष्ठ होता है ।

A sage, who knows the Vedas is the most noble of all ascetics.

४. **अब्रह्मण्यं हतं क्षात्रम् ।**
(वशिष्ठस्मृतिः, १/१२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मतेज के बिना क्षत्रिय बल व्यर्थ है ।

The power of *Kṣatrīya* is of no avail in the absence of the lustre of knowledge.

५. **अविद्वांश्चैव विद्वांश्च**
ब्राह्मणो दैवतं महत् ।

(मनुस्मृतिः, ९/३१७)

मूर्ख हो या विद्वान् ब्राह्मण परम देवता है ।

A *Brāhmaṇa* (intellectual) whether he be wise or stupid, is a great deity.

६. **असत्पथेन विप्रस्य गमनं हि विरुध्यते ।**

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, १२/४३)

असत्पुरुषों के मार्ग से ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) का गमन शास्त्रविरुद्ध है ।

To follow in the wrong foot steps on the wicked is forbidden for the *Brāhmaṇ* (intellectual).

७. **आतुरो दुःखितो वापि**
भयार्तो वा बुभुक्षितः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भुञ्जन्नविधिना विप्रः
प्रायश्चित्तीयते न च ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १४/४)

यदि ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) कभी आतुर अथवा दुःखी अवस्था में, भय से पीड़ित होकर या भूख से व्याकुल होकर अविधिपूर्वक भोजन करले तो वह प्रायश्चित्त करने योग्य नहीं होता ।

If a *Brāhmaṇa*, (intellectual) when diseased, or sad or afraid or famished takes food without following the prescribed procedure and precautions, is not able ever to expiate.

८. **एतद्देशप्रसूतस्य**
सकाशादग्रजन्मनः
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्
पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

(मनुस्मृतिः, १/१३९)

पृथ्वी के समस्त मानव इसी भारत देश में उत्पन्न हुए, ब्राह्मणों के निकट जाकर अपने-अपने सदाचार की शिक्षा ग्रहण करें ।

From a *Brāhmaṇa*, born in this country,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

let all men on earth learn their several usages.

९. कलिधर्म परो न स्याद्
ब्राह्मणो वैदिकोत्तमः ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३६४)

वेदज्ञों में उत्तम ब्राह्मण को कलियुग के धर्मों में संलग्न नहीं होना चाहिये ।

A *Brāhmaṇa*, foremost of Vaidikas should not perform the acts of Kali.

१०. कर्तव्यं यत्नतः शौचं
शौचमूला द्विजातयः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२१२)

ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) को प्रयत्नपूर्वक बाह्य और आभ्यन्तर पवित्रता रखनी चाहिये । क्योंकि पवित्रता ही ब्राह्मणों (बुद्धिजीवियों) का मूल धर्म है ।

A *Brāhmaṇa* (intellectual) should maintain both external and internal purity, because purity is the basis of Dharma.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

११. **कैवल्यं ब्राह्मणस्यैव**
ज्ञानेनैव न चान्यतः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १८)

ब्राह्मण को ही मोक्ष की प्राप्ति होती है, वह भी केवल ज्ञान से ही होती है । अन्य किसी उपाय से नहीं ।

Only the *Brāhmaṇa* can attain the salvation, and that only by the knowledge, not by other means.

१२. **गावो भूमिः कलत्रं च**
ब्रह्मस्व हरणं तथा ।
यस्तु न त्रायते राजा
तमाहुर्ब्रह्मघातकम् ॥

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः २४)

गाय, भूमि, स्त्रियाँ और ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) का धन, जो राजा इनकी रक्षा नहीं करता, वह ब्रह्महत्यारा कहलाता है ।

A king who does not protect the cows, land, women, and the wealth of *Brāhmaṇa* (intellectuals) he is called a killer of *Brāhmaṇa* (intellectuals).

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१३. ग्रामस्थानं यथा शून्यं
यथा कूपस्तु निर्जलः ।
यथा हुतमनग्नौ च
अमन्त्रो ब्राह्मणस्तथा ॥

(पराशरस्मृतिः, ८/२४)

जैसे सुनसान गाँव व्यर्थ होता है, जैसे जलहीन कुँवा व्यर्थ होता है और जैसे अग्नि के विना होम व्यर्थ होता है। उसी प्रकार मन्त्रहीन ब्राह्मण व्यर्थ होता है।

A village devoid of inhabitants is of no]use. A well without water is useless and a sacrifice done without fire is of no avail. A *Brāhmaṇa* not versed in mantras is useless.

१४. चक्रात् तीक्ष्णतरो मन्युः ।

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः ३१)

क्रोध चक्र से भी अधिक तीक्ष्ण होता है।

Anger is sharper than the weapon (cakra) of *Viṣṇu*.

१५. जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः
संस्काराद् द्विज उच्यते ।

(अत्रिसंहिता, श्लोकः १४०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्राह्मण जन्म से होता है, किन्तु उपनयन आदि संस्कार के पश्चात् वह द्विज कहलाता है ।

A *Brāhmaṇa* is known as such by birth and he is called a twiceborn by, the *Upanayan Sanskāra* (thread ceremony).

१६. तेषां वाक्योदकेनैव
शुध्यन्ति मलिना जनाः ।

(शातातपस्मृतिः, श्लोकः ३०)

बुद्धिजीवियों के वाक्यरूपी जल से ही मलिन पुरुष शुद्ध हो जाते हैं ।

Sinners are purified by the utternacess of intellectuals as if by holy water.

१७. त्रिपदा चैव गायत्री
विज्ञेयं ब्राह्मणो मुखम् ।

(मनुस्मृतिः २/८१)

तीन चरणों वाली गायत्री को ब्रह्मा का मुख समझना चाहिये ।

One should regard the three footed Gāyatri mantra the the gate leading to Brahman (Vedas)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१८. दुर्लभो ब्राह्मणोत्तमः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १४४)

उत्तम कोटि का ब्राह्मण मिलना अत्यन्त दुर्लभ है ।

A foremost *Brāhmaṇa* is very difficult to gain.

१९. दहत्यग्निस्तेजसा च
सूर्यो दहति रश्मिना ।
राजा दहति दण्डेन
विप्रो दहति मन्युना ॥

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः ३०)

अग्नि अपने तेज से जलाती है, सूर्य किरणों से जलाता है, राजा दण्ड से शासन करता है किन्तु ब्राह्मण अपने क्रोध से ही जला सकता है ।

The fire burns by heat, the sun burns by its rays, the king burn by punishment, and a *Brāhmaṇa* burns by his anger. A ruler rules by employment of his power and authority.

२०. धर्मशास्त्ररथारूढा
वेदखड्गधरा द्विजाः ।

Funding by IKS-MoE

क्रीडार्थमपि यद् ब्रूयुः
स धर्मः परमो मतः ॥

(बोधायनस्मृतिः १/१/१४)

धर्मशास्त्र रूपी रथ पर सवार (धर्मशास्त्र के ज्ञानयुक्त) तथा वेदरूपी कृपाण को धारण करने वाले (वेदज्ञ) ब्राह्मण यदि खेल-खेल में भी कुछ बोल दें, वही धर्म हो जाता है।

The *Brāhmaṇa*, riding on the chariot of *Dharma śāstras* and having the sword of Veda, speak something even in amusement which becomes Dharma (great virtue).

२१. नन्दन्त्योषधयः सर्वा
वेदज्ञे गृहमागते ।
वयमेतत्कुक्षिगता
यास्यामः परमां गतिम् ॥

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३६५

वेदज्ञ ब्राह्मण के घर पर आने पर समस्त औषधियाँ प्रसन्न हो जाती हैं। वे सोचती हैं कि इसके उदर में पहुँचकर हम भी परम गति को प्राप्त कर लेंगी।

All the medicines are happy when they enter the house of a *Brāhmaṇa* well versed

in Vedas. The think that they will also get salvation on reaching his stomach.

२२. नवमान्या द्विजाः प्राज्ञै-
देवरूपा हि ते द्विजाः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ४/३९)

बुद्धिमानों को बुद्धिजीवियों का अपमान नहीं करना चाहिये । क्योंकि वे देवरूप माने गये हैं ।

The wise should never humiliate or insult to intellectuals since they are like deities.

२३. न विद्यया केवलया
तपसा वापि पात्रता ।
पात्रमित्युच्यते विप्र-
स्तपो विद्या समन्वितः ॥

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ४/२२१)

केवल विद्या से अथवा केवल तप से ब्राह्मण पूजनीय नहीं होता, अपितु तप और विद्या दोनों से युक्त होकर ही ब्राह्मण पूजा का पात्र बनता है ।

A *Brāhmaṇa* is not worthy by only the knowledge or by an austerity, but *Brāhmaṇa* is considered worthy of respect

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

who is full of both austerity and knowledge.

२४. न विप्राः शस्त्रपाणयः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ३/६९)

ब्राह्मणों (बुद्धिजीवियों) के हाथ में कोई शस्त्र नहीं होता ।

The *Brāhmaṇas*, do not hold the weapons in their hands, (the anger only is their weapon).

२५. न शारीरो ब्राह्मणस्य
दण्डो भवति कर्हिचित् ।

(व्यवहारनिर्णयः पृ. ४९५)

ब्राह्मण को शारीरिक दण्ड कभी नहीं दिया जाता ।

A *Brāhmaṇa* is never given corporal punishment.

२६. नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति
नाक्षत्रं ब्रह्म वर्धते ।
ब्रह्म क्षत्रं च सम्पृक्त-
मिह चामुत्र वर्धते ॥ (मनुस्मृतिः, ९/३२२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्राह्मण के बिना क्षत्रिय उन्नति नहीं कर सकता और क्षत्रिय के बिना ब्राह्मण भी वृद्धि को प्राप्त नहीं करता। जब ब्रह्मतेज और क्षत्रबल मिल जाते हैं तभी वे इस लोक में और परलोक में सम्मृद्ध होते हैं ।

A *Kṣatriya* can not do progress without the help of a *Brāhmaṇa*, and a *Brāhmaṇa* can not grow without the help of *Kṣatriya*. Therefore *Brāhmaṇa* and *Kṣatriya* combined together flowing in this world and other world.

२७. नस्ति विप्रात् परं तीर्थं
न पुण्यं ब्राह्मणात्परम् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ३/७८)

ब्राह्मण से बड़ा कोई तीर्थ नहीं और ब्राह्मण से बड़ा कोई पुण्य नहीं ।

There is no holy place better than a *Brāhmaṇa* and no virtue greater than *Brāhmaṇa*.

२८. नास्ति विप्रात् परा गतिः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः ३/७८)

(ब्राह्मण) बुद्धिमान् के अतिरिक्त कोई गति (शरण) नहीं होती ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

There is no shelter better than an intellectul (Brāhmaṇa).

२९. नित्यं योगरतो विद्वान्
समलोष्टाश्म कांचनः । (शंखस्मृतिः १४/८)

योगाभ्यास में लगा हुआ विद्वान् सदैव मिट्टी के ढेले को, पत्थर को और सुवर्ण को एक समान समझता है।

For a scholar enjoyed in the practice of yoga, a lump of earth, a stone and gold have the same value.

३०. निवृत्तः पापकर्मभ्यः
प्रवृत्तः पुण्यकर्मसु ।
यो विप्रस्तस्य सिध्यन्ति
विना यत्नैरपि क्रियाः ॥

(बोधायनस्मृतिः, ४/७/१)

जो व्यक्ति (ब्राह्मण), पाप कर्मों से दूर रहता है तथा पुण्य कर्मों में लगा रहता है, उसके समस्त कार्य बिना प्रयत्न के ही सिद्ध हो जाते हैं।

One who keeps away from sins and is engaged in pious activities, accomplishes all his tasks without making any effort.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३१. पन्था देयो ब्राह्मणाय
गवे राज्ञे ह्यचक्षुषे ।
वृद्धाय भारतप्ताय
गर्भिण्यै दुर्बलाय च ।

(बोधायनस्मृतिः, २/३/५७)

ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) को, गाय को, राजा को, अन्धे व्यक्ति को, वृद्ध को, भार लादे हुए पुरुष को, गर्भिणी स्त्री को तथा दुर्बल व्यक्ति को रास्ता दे देना चाहिये।

One should give the right of way to a *Brāhmaṇa* (intellectual) a cow, a king, a blind person, an aged person, a person carrying a load, a pragnent woman and a feeble person.

३२. परद्रव्य पर क्षेत्र
परदार पराङ्मुखान् ।
गृह्णीयात्सर्वकृत्येषु
ब्राह्मणान् ब्रह्मवादितः ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ५९)

दूसरों के धन से, दूसरों के क्षेत्र से तथा दूसरों की स्त्रियों से पराङ्मुख जो ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण हैं उनको ही समस्त शुभकार्यों में बुलाना चाहिये ।

One should involve, in all duties to those

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Brāhmaṇa knowing *Brāhmaṇas*, who are disinclined from others wealth, other's sphere and other's wife.

३३. प्राणसंकटे ब्राह्मणोऽपि शस्त्रमाददीत ।

(गौतमस्मृतिः, सप्तमोऽध्यायः)

प्राणसंकट उपस्थित होने पर ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) को भी रक्षा के लिये शस्त्र ग्रहण करना चाहिये ।

When confronted with danger to life, a *Brāhmaṇa* (intellectual) should take up arms for self defence.

३४. ब्रह्म चैव धनं येषां
को हिंस्यात्तान् जिजीविषुः ।

(मनुस्मृतिः, ९/३१६)

ज्ञान ही जिनका धन है–ऐसे पुरुषों को भला कौन मारना चाहेगा ।

Who would want to eliminate those persons whose only wealth is their knowledge.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३५. **ब्राह्मणानां धनं वेदाः**
ऋग्यजुः सामनामकाः ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३६४)

ऋग्, यजुः और साम ये तीनों वेद ही ब्राह्मणों के वास्तविक धन हैं ।

The Vedas viz. Ṛk, Yajuḥ and Sāma are the real wealths of *Brāhmaṇas*.

३६. **ब्राह्मणान्न परीक्षेत**
दैवे कर्मणि धर्मवित् । (शंखस्मृतिः १४/१)

दैव कार्य के विषय में ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) की परीक्षा नहीं करनी चाहिये, अपितु जैसा वे कहें उचित मान लेना चाहिये ।

In the matter of worship of God, one should not put a *Brāhmaṇa* (intellectual) to test but should follow his advice without question.

३७. **ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा**
यस्तु प्राणान् परित्यजेत् ।
मुच्यते ब्रह्महत्याद्यै-
र्गोप्ता गोब्राह्मणस्य च ॥

(पराशरस्मृतिः, ८/४२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) के लिये तथा गाय के लिये जो अपने प्राण छोड़ता है वह गौ और ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) का रक्षक ब्रह्महत्यादि पापों से मुक्त हो जाता है ।

One who lays down his life for a *Brāhmaṇa* (intellectual) or a cow, he is liberated from sins like the murder of a *Brāhmaṇa* (intellectual).

३८. **ब्राह्मणस्वं न हर्तव्यं**
क्षत्रियेण कदाचन । (मनुस्मृतिः, ११/८)

क्षत्रियों को कभी भी ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) का धन नहीं हरना चाहिये ।

A *Kṣatriya* should never seize the wealth of a *Brāhmaṇa* (Intellectual).

३९. **भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः**
प्राणिनां बुद्धिजीविनः ।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः
नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः ॥

(मनुस्मृतिः, १/९६)

चराचर भूतों में प्राणधारी जीव श्रेष्ठ हैं । प्राणियों में बुद्धिजीवी प्राणी श्रेष्ठ हैं । बुद्धिमानों में भी मनुष्य श्रेष्ठ है और मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ माने गये हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Of created beings, the most excellent are said to be those which are animated, of the animated, those which subsist by intelligence, of the intelligent, mankind, and of men the *Brāhmaṇas*.

४०. मनो दाम्यं सदा द्विजैः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२५३)

ब्राह्मणों को सदा अपने मन का दमन करना चाहिये ।

Mind should always be controlled by the *Brāhmaṇa* (intellectuals).

४१. मन्त्रार्थो ब्राह्मणमुखाद्
विज्ञेयो नान्यवर्त्मना ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ६०)

मन्त्र का अर्थ केवल ब्राह्मण के मुख से ही जानना चाहिये, किसी अन्य मार्ग से नहीं ।

The meaning of a Mantra must be known from the tongue of a *Brāhmaṇa* only and not from any other way.

४२. यथाऽन्नं मधुसर्पिर्भ्यां
संयुक्तं स्वादुतां व्रजेत् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एवं विद्या तपो योगै-
र्ब्राह्मणः पात्रतां व्रजेत् ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/२४)

जिस प्रकार मधु और घृत से मिश्रित भोजन स्वादिष्ट हो जाता है, वैसे ही विद्या, तप और योग से मिलकर ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) योग्यता को प्राप्त हो जाता है ।

As the food mixed with honey and Ghee (clarified butter) be comes tasty, so a *Brāhmaṇa* having gained the knowledge, austerity and meditation, attains worthiness.

४३. **यथा काष्ठमयो हस्ती**
यथा चर्ममयो मृगः ।
ब्राह्मणस्त्वनधीयान-
स्त्रयस्ते नामधारकाः ॥

(पराशरस्मृतिः, ८/२४)

जैसे लकड़ी का बना हाथी, जैसे चमड़े का बना मृग और जैसे वेद को न जानने वाला ब्राह्मण, ये तीनों केवल नाम को ही धारण करने वाले होते हैं ।

An elephant made of wood, an antelope made of leather and a *Brāhmaṇa* ignorant of vedas, have no similarity with the real thing except the name.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४४. यथा सर्वास्ववस्थासु
पावको दैवतं महत् ।
तथा सर्वास्ववस्थासु
ब्राह्मणो दैवतं महत् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः ३/६७)

जिस प्रकार सब अवस्थाओं में अग्नि परम देवता माना जाता है, वैसे ही ब्राह्मण सभी अवस्थाओं में परम देवता माना जाता है ।

As the fire has been considered a great deity in the all circumstances so has a *Brāhmaṇa* been regarded a great deity in all circumstances.

४५. यद् धनं यज्ञशीलानां
देवस्वं तद्विदुर्बुधाः । (मनुस्मृतिः ११/२०)

यज्ञ करने वालों का जो धन है, वह देवों का धन कहा गया है ।

The wealth belonging to those who perform sacrifice is regarded as the wealth of gods.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४६. यस्तु प्रव्रजितो भूत्वा
पुनः सेवेत मैथुनम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि
विष्ठायां जायते कृमिः ॥

(लघुशातातपस्मृतिः, श्लोकः ६०)

जो पुरुष एक बार संन्यास लेकर पुनः गृहस्थ होकर मैथुन का सेवन करता है, वह साठ हज़ार वर्ष तक मल में कीड़ा बनता है ।

The man, who after having renounced the world, again becomes a family man enjoys copulation with a woman, takes rebirth as s worm in the faeces for sixty thousand years.

४७. युगे युगे तु ये धर्मा-
स्तेषु तेषु च ये द्विजाः ।
तेषां निन्दा न कर्त्तव्या
युगरूपा हि ते द्विजाः ॥

(पराशरस्मृतिः ११/५२)

प्रत्येक युग में जो धर्म हुए हैं और उनमें जो ब्राह्मण हुए हैं, उनकी निन्दा नहीं करनी चाहिये, क्योंकि वे ब्राह्मण युग के अनुरूप ही बात कहते हैं ।

No criticism on censure should be made

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

of the different religions and their propagators who have existed in every age, because these propagators have preached according to the values and norms of the age.

४८. येषामध्ययनं नास्ति
ये च केचिदनग्नयः ।
न कुलं श्रोत्रियं येषां
सर्वे ते शूद्रधर्मिणः ॥

(लघुशातातपस्मृतिः, श्लोकः ५१)

जो वेद का अध्ययन नहीं करते और जो कोई अग्निहोत्र से रहित हैं, जिनका कुल श्रोत्रिय नहीं है, ऐसे विप्र शूद्रधर्म वाले ही हैं।

Those *Brāhmaṇa* (intellectuals) who do not study the vedas, who do not perform sacrifice and those who do not belong to the family having a tradition of learning the vedas, do really belong to the lowest clan of the society.

४९. योऽनधीत्य द्विजो वेद-
मन्यत्र कुरुते श्रमम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स जीवन्नेव शूद्रत्व-
माशु गच्छति सान्वयः ॥

(मनुस्मृतिः, २/१४३)

जो ब्राह्मण वेद का अध्ययन न करके अन्यत्र श्रम करता है, वह जीते जी ही वंशसहित शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है।

A twiceborn, who not having studied the veda, applies himself to other worldly affairs soon sinks even while living, to the lowest strate of social alongwith all his descendents.

५०. राजा सर्वस्येष्टे ब्राह्मणवर्जम् ।

(गौतमस्मृतिः, अध्यायः ११)

ब्रह्मवादी ब्राह्मण को छोड़कर राजा सभी का ईश्वर है।

A ruler is God to all people except the *Brāhmaṇas.*

५१. श्रोत्रियेभ्यः परं नास्ति
दैवतं तारणं महत् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ७/१३३)

श्रोत्रिय ब्राह्मण (बुद्धिजीवी) से बड़ा उद्धार करने

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाला देवता कोई अन्य नहीं है ।

There is no deity greater than a *Brāhmaṇa* (intellectuals) who is well versed in the *Vedas*.

५२. **लक्षणानि तु विप्रस्य**
दमो दानं दयाऽपि च ।

(अत्रिसंहिता, श्लोकः ३३)

ब्राह्मण के लक्षण हैं-दमन, दान और दया ।

The rastraint, the donation and the tenderness are the symbols of Brāhmaña.

५३. **वयसा लघवोऽपि स्यु-**
र्वृद्धा धर्मविदो जनाः ।

(वृहत्पराशरस्मृतिः, ८/७१)

आयु से छोटे होते हुए भी धर्मज्ञानी ब्राह्मण वृद्ध ही कहलाते हैं ।

Despite being young in age, *Brāhmaṇas* (intellectuals) are called old.

५४. **विद्या तपश्च योगश्च**
ब्राह्मणस्यैव लक्षणम् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १४२)

Funding by IKS-MoE

विद्या, तप और योग ब्राह्मण का ही लक्षण है ।

The knowledge, the austerity and the Yoga is the mark of *Brāhmaṇa* only.

५५. **विद्या विनय सम्पन्नः**
पात्रभूतो द्विजोत्तमः ।

(बृहद्यमस्मृतिः, श्लोकः ३/४२)

विनय से युक्त ब्राह्मण ही पूजा का पात्र बनता है ।

An excellent *Brāhmaṇa* is worthy (for worship) who is full of knowledge and humbleness.

५६. **विप्रत्वमतिदुर्लभम् ।**

(मार्कण्डेयस्मृतिः)

ब्राह्मणत्व की प्राप्ति अत्यन्त कठिन है ।

To be a real *Brāhmaṇa* is very difficult.

५७. **विप्राणां ज्ञानतो ज्येष्ठ्यम् ।**

(मनुस्मृतिः, २/१३०)

ब्राह्मणों की ज्येष्ठता ज्ञान के कारण ही होती है ।

The superiority of the *Brāhmaṇa* is on account of knowledge.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५८. वेदः कृत्स्नोऽधिगन्तव्यः
सरहस्यो द्विजन्मना ॥

(मनुस्मृतिः, २/१६५)

वेदों का अध्ययन गूढ ज्ञानरूप रहस्य के सहित किया जाना चाहिये ।

A *Brāhmaṇa* must study the vedas, together with their Rahasyas (hidden meaning).

५९. वेदाभ्यासो हि विप्रस्य
तपः परमिहोच्यते ॥ (मनुस्मृतिः, २/१४१)

वेदाभ्यास ही ब्राह्मण का सबसे बड़ा तप क़हा जाता है ।

Brāhmaṇa (intellectual) who performs penance should always recite the vedas, because the study of the vedas is said to be the biggest penance.

६०. शस्त्रं द्विजातिभिर्ग्राह्यं
धर्मो यत्रोपरुध्यते ।

(वैदिकमनुस्मृतिः, ८/२१३)

जहाँ धर्म का नाश हो रहा हो वहाँ ब्राह्मणों को भी शस्त्र उठा लेना चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Where *Dharma* is being destroyed, the *Brāhmaṇa* (intellectuals) also should take of arms.

६१. **शौचमूलो द्विजः स्मृतः ।**

(दक्षस्मृतिः, ५/२)

ब्राह्मण का मूल धर्म पवित्रता ही है ।

Purity is the basic Dharma of a *Brāhmaṇa*.

६२. **श्रोत्रिया न पराधीनाः ।**

(व्यासस्मृतिः, तृतीयखण्डः, पृ. १७४)

(श्रोत्रिय) विद्वान् किसी के अधीन नहीं रहा करता ।

A *Brāhmaṇa* who possesses the knowledge of Vedas, can never be dependent on anyone.

६३. **सन्ध्यां नोपासते यस्तु**
ब्राह्मणस्तु विशेषतः ।
स जीवन्नेव शूद्रःस्या-
न्मृतः श्वा चैव जायते ॥

(दक्षस्मृतिः, २/२२)

जो व्यक्ति विशेष रूप से ब्राह्मण सन्ध्या नहीं करता,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह जीते हुए ही शूद्र हो जाता है और मरकर कुत्ता बनता है ।

One, particularly a *Brāhmaṇa*, who does not perform *Sandhyā*, becomes *Śūdra* even living, and after death is reborn as a dog.

६४. सन्ध्यां नोपासते विप्राः
कथं ते ब्राह्मणाः स्मृताः ।

(बोधायनस्मृतिः, २/४/११)

जो ब्राह्मण सन्ध्योपासन नहीं करते, वे भला कैसे ब्राह्मण हैं ?

How could those persons, be declared *Brāhmaṇas* who do not perform Sandhyā ?

६५. सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्य-
मुद्विजेत विषादिव । (मनुस्मृतिः २/१३७)

ब्रह्मज्ञानी को सम्मान से विष के समान उद्विग्न होना चाहिये ।

A *Brāhmaṇa* (intellectual) should always be allergic to honours as if they were poison.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६६. सर्वं वै ब्राह्मणोऽर्हति ।

(मनुस्मृतिः, १/१००)

ब्राह्मण सबका पूजनीय है ।

A *Brāhmaṇa* is entitled for respect by all.

६७. सर्वेषामेव वै मान्यो
वेदविद्द्विज एव हि ।

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, २२/२)

वेदज्ञ ब्राह्मण सभी के लिये सम्मान के योग्य है ।

A *Brāhmaṇa*, who has acquired the knowledge of Vedas is certainly worthy of being honoured for all.

६८. स्वयमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते
स्वं वस्ते स्वं ददाति च ।

(मनुस्मृतिः, १/१०१)

ब्राह्मण अपना ही भोजन खाता है, अपना ही वस्त्र धारण करता है और अपने ही धन का दान करता है । (किसी अन्य का धन वह नहीं लेता ।)

The *Brāhmaṇa* eats but his own food, wears but his own apparel and bestows but his own wealth in charity.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६९. **हिताय हि प्रवर्तन्ते**
ब्राह्मणाः सततं सदा ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. २२)

ब्राह्मण सदा दूसरों के हित के लिये ही कार्य करते हैं।

The *Brāhmaṇas* do always work for the walfare for others.

भाग्यम्

१. **कर्मस्थानमियं धात्री**
कृतमत्रोपभुज्यते ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/२८४)

यह भूमि एक कर्मयोनि है । यहाँ अपना किया हुआ कर्म ही भोगना पड़ता है ।

This earth is the place of actions. The same is experienced here, which is done by him.

२. **केषां प्रभुत्वं बहुजीवितं च ।**

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/७२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अत्यन्त प्रभुता और दीर्घ जीवन भला किसको मिला है ।

To whome does the plenteous prosperity and the long life go.

३. दैवे पुरुषकारे च
कर्मसिद्धिर्व्यवस्थिता ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, आचाराध्यायः, श्लोकः ३४९)

कर्म की सिद्धि, भाग्य और पुरुषार्थ दोनों पर अवलम्बित है ।

The success in actions depends upon the both the destiny and the effort.

४. नैकेन चक्रेण रथः प्रयाति
न चैकपक्षो दिवि याति पक्षी ।
एवं हि दैवेन न केवलेन
पुंसोऽर्थसिद्धिर्नरकारतो वा ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/६८)

एक पहिये से रथ नहीं चलता और न एक पंख से पक्षी आकाश में उड़ता है । इसी प्रकार केवल भाग्य से अथवा केवल पुरुषार्थ से पुरुष को अर्थसिद्धि प्राप्त नहीं होती ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The chariot can not move by a single wheel, a bird can not fly in the sky through a single wing, in the same cannot get success in his purpose only by the destiny or by only effort.

५. प्राप्नोति नैव विधिना स पराङ्मुखेन
स्वीयोदरस्य परिपूरणमन्नमात्रम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः १२/७०)

यदि भाग्य प्रतिकूल हो तो मनुष्य अपने उदर की पूर्ति के लिये अन्न मात्र भी प्राप्त नहीं कर पाता ।

A man can not gain even a little food to fulfil his belly, if the destiny is unfavourable.

६. यदप्यमुष्मान्न परोऽस्ति दैवात्
कुर्यात्तथापीह नरो नृकारम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः १२/७७)

यद्यपि भाग्य से बड़ा कुछ भी नहीं है, फिर भी मनुष्य को पुरुषार्थ करना ही चाहिये ।

Though there is nothing greater than the destiny, never the less, let a man should do effort.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७. शुभ्राणि हर्म्याणि वराङ्गनाश्च
नानाप्रकारो विभवो नरस्य ।
उर्वीपतित्वं च नृकारता च
सर्वं हि मंजु क्षयमेति दैवात् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः १२/७०)

सुन्दर महल, सुन्दर स्त्रियाँ, मनुष्य के अनेक प्रकार के ऐश्वर्य, पृथिवी का राज्य और पुरुषार्थ सभी वस्तुएं भाग्य के द्वारा विनाश को प्राप्त हो जाती हैं ।

White palaces, beautiful women, the property of many kinds, the lordship of the earth and the effort of man, the all which in beautiful is destroyed by the desting.

भारतम्

१. कृष्णसारस्तु चरति
मृगो यत्र स्वभावतः ।
स ज्ञेयो यज्ञियो देशो
म्लेच्छदेशस्त्वतः परः ॥

(मनुस्मृतिः, १/१४२)

जिस देश में कृष्णसार मृग निश्चिन्त होकर घूमता है,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उस देश को यज्ञिय देश (भारतदेश) समझना चाहिये। इसके बाद वाले को म्लेच्छ देश जानना चाहिये ।

That land where the black buck dwells without fear and freely, one must know it be the land of performance of *yajña* (sacrifice). Countries other than it should be considered the countries of *Mlechas* (Barharians).

२. **यत्र गंगा सरिच्छ्रेष्ठा**
स देशस्तत्तपोवनम् ।

(स्मृतिचद्रिका, प्रथमखण्डः पृ. २१)

जिस देश में श्रेष्ठ गंगा नदी बहती है वह देश तो वास्तव में तपोवन है ।

The country in which the Ganga, the river flows, is a oacred place of henance.

मन्त्रः

१. **अक्षरं त्वक्षरं ज्ञेयम् ।** (मनुस्मृतिः २/८४)

अक्षर को कभी नष्ट न होने वाला समझना चाहिये ।

The syllable must be regarded as imperishable.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. अग्नौ क्रियावतां देवो
दिवि देवो मनीषिणाम् ।
प्रतिमास्वल्पबुद्धीनां
योगिनां हृदये हरिः ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ४/११९)

कर्मकाण्डियों का देवता अग्नि में रहता है (वे अग्निहोत्र करते हैं), विचारशील पुरुषों का देवता स्वर्ग में रहता है। अल्पबुद्धि वालों का देवता प्रतिमाओं में रहता है, किन्तु योगियों का परमेश्वर उनके हृदय में रहता है।

The Lord has his abode in fire for those who perform religious rites, the Lord of people of consideration dwells in heaven and of the shallow minded in idols but the Lord of yogins resides in their hearts.

३. एक एव हि विज्ञेयः
प्रणवो योगसाधनम् ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, २/६६)

एक अकेला प्रणव ही योग का उत्तम साधन जानना चाहिये।

One syllable alone should be considered the best means of yoga.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४. **ओंकारं विन्दते यस्तु**
तस्य जन्म न विद्यते ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः २/७२)

जो ओंकार को प्राप्त कर लेता है, उसका पुनर्जन्म नहीं होता ।

There is no rebirth for one who has achived the 'Om'.

५. **कर्माणि ह्यविनाशीनि**
बीजवत् प्रभवन्ति च ।
तानि योगाग्निदग्धानि
न प्ररोहन्ति वै पुनः ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ९/३१)

कृतकर्मों का नाश नहीं होता, अपितु बीज के समान ये पुनः अंकुरित हो जाते हैं, किन्तु जब ये योग की अग्नि से दग्ध हो जाते हैं तो पुनः अंकुरित नहीं होते ।

Deeds already done by do not perish. They instead, germinate again like a seed but when they are burnt in the fine of yoga, they do not germinate again.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६. **कुलान्यकुलतां यान्ति**
यानि हीनानि मन्त्रतः ।

(नित्याचारप्रदीपः द्वितीयभागः, पृ. १५)

जो कुल वेदमन्त्रों का पाठ नहीं करते वे कुल से भ्रष्ट हो जाते हैं ।

Those families where the mantras contained in the Vedas are not recited, are reborn as those of low status.

७. **गायत्रीं यो जपेन्नित्यं**
स न पापेन लिप्यते ।

(लघुहारीतस्मृतिः ४/४८)

जो नित्य गायत्री का जप करता है वह पाप से लिप्त नहीं होता ।

One who daily repeats the *Gāyatrī mantra*, does not get smeared by sin.

८. **गायत्र्या लक्ष्य जप्येन**
सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः २१९)

गायत्री मन्त्र का एक लाख बार जप करने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

By repeating the *Gāyatrī mantra* a hundred thousand times, a person gets liberated from all sins.

९. **गायत्र्यास्तु परं जप्यं**
न भूतं न भविष्यति ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, १०/११)

गायत्री से बड़ा जपयोग्य मन्त्र न पहले हुआ है और न होगा ।

A *mantra* more deserving of repetition than *Gāyatrī*, has neither been in the past nor shall ever be in future.

१०. **गायत्र्यास्तु परं नास्ति**
शोधनं पापकर्मणाम् ।

(संवर्तस्मृतिः श्लोकः २१८)

गायत्री से बड़ा पापों का नाश करने वाला कोई अन्य नहीं है ।

There is no instrument of destruction of sinful actions, greater than the *Gāyatrī mantra*.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

११. गायत्र्याः परमं नास्ति
दिवि चेहं च पावनम् ।

(शंखस्मृतिः, १२/११)

इस लोक में और स्वर्ग लोक में गायत्री से बड़ा कोई मन्त्र पवित्र करने वाला नहीं है ।

There is no *Mantra*, a greater purifier than *Gāyatrī mantra*, in this world and in heaven.

१२. गायन्तं त्रायते यस्माद्
गायत्रीति ततः स्मृता ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ४/३५)

चूंकि यह गायत्री अपने गानकर्ता की रक्षा करती है, इसीलिये गायत्री कहलाती है ।

Because it protects its singer, so it is known *Gāyatrī*.

१३. जपकाले न भाषेत
व्रतहोमादिकेषु च ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ७/१४७)

मन्त्र जप के समय तथा व्रत, यज्ञ आदि के समय भी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किसी से बात नहीं करनी चाहिये ।

One should not talk during the repetition of "*Mantra*" and austerity, sacrifice and the like.

१४. **तेजस्विनां सहस्रांशु-**
रिन्द्रियाणां यथा मनः ।
मेरुः शिखरिणां श्रेष्ठो
गायत्री छन्दसां तथा ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ४/१५)

जैसे तेजस्वियों में सूर्य श्रेष्ठ है, जैसे इन्द्रियों में मन श्रेष्ठ है और पर्वतों में सुमेरु श्रेष्ठ है, वैसे ही छन्दों में गायत्री श्रेष्ठ है ।

As the sun is supreme of all effulgents, as the mind is supreme of all organs, and as Meru is greatest of all the mountains, like that the *Gāyatrī* is the supreme of all the *Mantras*.

१५. **ध्यानेन सदृशं नास्ति**
शोधनं पाप कर्मणाम् ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ९/१७८)

ध्यान के समान पापकर्मों का नाशक कोई अन्य उपाय

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं है ।

There is no destroyer to sinful actions other than meditation.

१६. न जपं प्रसभं कुर्यात् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः ४/५५)

बलात् अर्थात् अनिच्छा से मन्त्र का जप नहीं करना चाहिये ।

One should not repeat a *Mantra* under duress or reluctantly.

१७. प्रणवं हि परं ब्रह्म
नित्यं ब्रह्मविदो विदुः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः २२/५)

ब्रह्मज्ञानी लोग सदा ओंकार को ही ब्रह्म कहते हैं ।

The knowers of *Brāhmaṇa* always call the 'Om' as the supreme *Brahmaṇa*.

१८. प्रणवे नित्ययुक्तस्य
न भयं विद्यते क्वचित् ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, २/६४)

नित्य प्रणव जप में लगे हुए साधक को कहीं भी कोई

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भय नहीं होता ।

One who is daily engaged in the repitition of "Om", does not feel any fear anywhere.

१९. **ब्रह्मणः प्रणवं कुर्या-**
दादावन्ते च सर्वदा । (मनुस्मृतिः, २/७४)

वेदमन्त्र के प्रारम्भ में और अन्त में ओम् का उच्चारण अवश्य करना चाहिये ।

Let one always pronounce the syllable "Om" in the beginning and at the end of the recitation of *Veda mantras*.

२०. **मन्त्रगुप्तिस्तु कर्त्तव्या**
सततं मन्त्रसिद्धये ।

(जयाख्यसंहिता, १७/४४)

मन्त्र को सिद्ध करने के लिये सदा मन्त्र को गुप्त रखना चाहिये ।

One should always keep the Mantra secret to obtain super normal power from it.

२१. **मन्त्रदाता गुरुः प्रोक्तः ।**

(स्मृतिसारसंग्रहः, पृ. ६५)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्र देने वाला ही गुरु कहलाता है ।

Only the preacher of a *Mantra* is said to be a teacher.

२२. यथा पत्रं फलं पुष्पं
शंकुनैकेन धार्यते ।
तथा जगदिदं सर्व-
मोंकारेणैव धार्यते ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः २/१४६)

जैसे पत्र, फल और पुष्प एक डंठल के द्वारा ही धारण किया जाता है, उसी प्रकार यह सम्पूर्ण जगत् ओंकार के ही द्वारा धारण किया जाता है ।

As the leaf•flower and the fruit are held by a single stem, in the same way this whole world is held by the syllable 'Om'.

२३. यथा वै शंकुना पर्णं
संवृतमेव सर्वतः ।
एवं सर्वास्तु वै वाचः
संतीर्णा प्रणवेन तु ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, २/४२)

जिस प्रकार एक पत्ता सब ओर से छोटे-छोटे तन्तुओं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से घिरा रहता है, वैसे ही समस्त शब्द प्रणव से व्याप्त हैं ।

As a leaf is covered from all sides by tiny cells, in the same way, all the words are contained in "Om".

२४. यथा हि गौर्वत्स कृतं निशम्य
हुंकृत्य वत्साभिमुखी प्रयाति ।
ब्रह्मापि तद्वत् प्रणवोपहूतं
वक्तारमागच्छति आशु वक्त्रे ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, २/४६)

जैसे गाय अपने बछड़े की आवाज सुनकर हुम् की आवाज करके बछड़े की ओर चल पड़ती है, उसी प्रकार ब्रह्म भी प्रणव से आमन्त्रित होकर वक्ता के पास आकर शीघ्र ही उसके मुख में निवास करता है ।

As a cow, on learning the voice of its calf, immediately moves towards it, similarly, the Brahma, being invited by the syllable "Om", comes and resides in the mouth of one who recites it.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२५. वाङ्मयं प्रणवः सर्वं
तस्मात्प्रणवमभ्यसेत् ।

(योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, २/१४)

समस्त वाङ्मय प्रणव अर्थात् ओंकार ही है ।

'Om' alone is the whole literature.

२६. वृथा जप्यमवैदिकम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, २/१०८)

अवैदिक मन्त्र का जप व्यर्थ है ।

The repetition of a non *vaidik Mantra* is fruitless.

२७. स्वर्गो मोक्षः सर्वमात्मन्यधीनम् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः २०/२३)

स्वर्ग और मोक्ष सब अपने अन्दर ही निहित हैं ।

The heaven and the salvation, all is placed into the self.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महान्

१. योऽनूचानः स नो महान् ।

(मनुस्मृतिः, २/१२९)

जो अनूचान अर्थात् वेदज्ञ है वही महान् है ।

The person who is well verised in Veda alone is geat.

मित्रम्

१. हिरण्यभूमिलाभेभ्यो
मित्रलब्धिर्वरा स्मृता ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः आचाराध्यायः श्लोकः ३५२)

सुवर्ण और भूमि की प्राप्ति की अपेक्षा एक अच्छे मित्र की प्राप्ति अधिक श्रेष्ठ मानी गयी है ।

The acquisition of a good friend has been considered far better than the acquisition of gold and land.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मोक्षः

१. अज्ञाते भगवत्तत्त्वे
दुर्लभा परमा गतिः ।

(जयाख्यसंहिता १/३८)

भगवत्तत्त्व को जाने बिना परम पद की प्राप्ति दुर्लभ है ।

The final beatitude is very difficult to gain without knowing the supremacy of the Almighty.

२. अरण्यनित्यस्य जितेन्द्रियस्य
सर्वेन्द्रियप्रीतिनिवर्तकस्य ।
अध्यात्मचिन्तागतमानसस्य
ध्रुवा ह्यनावृत्तिरुपेक्षकस्य ॥

(वसिष्ठस्मृतिः, श्लोकः २४५)

नित्य अरण्य में रहने वाले की, जितेन्द्रिय की, समस्त इन्द्रियों को उनके प्रिय विषयों से हटाने वाले की, अध्यात्म-चिन्तन में संलग्न अन्तःकरण वाले की तथा उपेक्षावृत्ति रखने वाले वीतराग पुरुष की अनावृत्ति अर्थात् मोक्ष निश्चित है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The salvation of that person is certain who always dwells in the forest, who has conquered his desires, who has diverted his sense organs from their desired objects, who is ever engaged in spiritual meditation, who has pure conscience and who has detached himself or herself from worldly pleasures.

३. गुरुशुश्रूषया त्वेवं
ब्रह्मलोकं समश्नुते ।

(मनुस्मृतिः, २/२३३)

गुरु की सेवा करके मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है ।

By doing service to one's teacher, one attains the world of Brahman.

मौनम्

१. गुरुणां सन्निधौ दाने
योगे चैव विशेषतः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एषु मौनं समातिष्ठन्
स्वर्गं प्राप्नोति मानवः ॥

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम् श्लोकः ९)

गुरुजनों के निकट, दान के समय और विशेष रूप से योग-साधना में मौन धारण करता हुआ मनुष्य स्वर्ग प्राप्त करता है।

A man obtains heaven (divine place) by keeping silence when near his teachers, at the time of charity and specially, yoga practices.

योगः

१. आश्रमे तु यतिर्यस्य
मुहूर्तमपि विश्रमेत् ।
किं तस्यान्येन धर्मेण
कृतकृत्यो हि जायते ॥

(दक्षस्मृतिः, ७/४६)

जिसके घर में एक योगी क्षणभर के लिये भी विश्राम कर ले, फिर उस गृहस्थ को किसी अन्य धर्म की आवश्यकता नहीं है, वह उसी से कृतकृत्य हो जाता है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

In whose house an ascetic takes rest even for a single moment, he has no need of another virtue, because he becomes successful from that.

२. **इन्द्रियाणां विचरतां**
विषयेष्वपहारिषु ।
संयमे यत्नमातिष्ठेद
विद्वान् यन्तेव वाजिनाम् ॥

(मनुस्मृतिः २/८८)

विद्वान् पुरुष को विषयों में ले जाने के स्वभाव वाली, इधर-उधर भटकती हुई इन्द्रियों को संयम में रखने का यत्न करना चाहिये, जैसे सारथि अश्वों के नियन्त्रण में यत्न करता है ।

A wise man should strive to restrain his organs, which run wild among alluring sensual objects and tend to lead to sensual pleasures charioteer tries to control his horses.

३. **जितेन्द्रियो हि शक्नोति**
वशे स्थापयितुं प्रजाः । (मनुस्मृतिः, ७/४४)

जितेन्द्रिय राजा ही प्रजा को वश में रख सकता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Only the king who has subdued the senses can keep the people under control.

४. तपसा किल्विषं हन्ति
विद्ययाऽमृतमश्नुते ।

(मनुस्मृतिः, १२/१०४)

मनुष्य तप के द्वारा पाप का नाश करता है और ज्ञान से मोक्ष प्राप्त करता है ।

A person destroys sins through austerity and attains immortality through knowledge.

५. तपसैव सुतप्तेन
मुच्यन्ते सर्वकिल्विषात् ।

(मनुस्मृतिः ११/२३९)

अच्छी प्रकार किये गये तप से ही मनुष्य सब पापों से छूट जाते हैं ।

Men get liberated from all sins by performing austerity well.

६. तपोमूलमिदं सर्वं
दैवमानुषकं सुखम् । (मनुस्मृतिः ११/२३३)

देवताओं और मनुष्यों के सुख का मूल केवल तप ही है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The celestial and the worldly happiness has its root in austerity.

७. **तपो हि दुरतिक्रमम् ।**

(मनुस्मृतिः, ११/२३८)

तप का अतिक्रमण करना अत्यन्त कठिन है ।

Austerity is very difficult to overstep.

८. **तीव्रे तपसि लीनाना-**
मिन्द्रियाणां न विश्वसेत् ।
विश्वामित्रोऽपि सोत्कण्ठं
कण्ठे जग्राह मेनकाम् ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः १५१६)

तीव्र तपस्या में लीन हुई इन्द्रियों का भी विश्वास बिल्कुल नहीं करना चाहिये । विश्वामित्र ने तप करते हुए भी बड़ी उत्कण्ठा के साथ मेनका को गले लगा लिया था ।

One should not trust the senses even when they are absorbed in the deep penance. *Viśvāmitra*, even while being a great ascetic, had embraced Menakā very eagerly.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

९. दान्तः शुचिस्तपस्वी च
सत्यवाग्विजितेन्द्रियः ।
स सात्त्विकः शमयुतः
सुरयोनिषु जायते ॥

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ९/१६३)

जो इन्द्रियों का दमन करता है, पवित्र, तपस्वी, सत्य बोलने वाला जितेन्द्रिय, सात्त्विक तथा शम से युक्त है वह मरणोपरान्त देवयोनि में उत्पन्न होता है ।

One who subdnes his sensual organs, is pure and an ascetic, speaks the truth and is virtuous and calm, gets reborn after death as a deity.

१०. द्वाविमौ पुरुषौ लोके
सूर्यमण्डलभेदिनौ ।
परिव्राड्योगयुक्तश्च
रणे चाभिमुखो हतः ॥

(पराशरस्मृतिः, ३/३२)

ये दो पुरुष लोक में सूर्यमण्डल का भी भेदन करने वाले हैं- एक तो योगयुक्त संन्यासी और दूसरा रणभूमि में सम्मुख होकर मरा हुआ वीर ।

An ascetic having practised yoga and a

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

fighter, killed fighting on the battlefield, these two person have the power to pierce even the sphere of the sun.

११. **ध्यानयोगपरिश्रान्तं**
यस्तु भोजयते यतिम् ।
अखिलं भोजितं तेन
त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ (दक्षस्मृतिः ७/४८)

ध्यान-योग से थके हुए योगी को जो पुरुष भोजन कराता है, उसने मानो चराचर सहित तीनों लोकों को भोजन करा दिया ।

If a man feeds an ascetic fatigued by meditation, he is supposed to have fed all the things, animate and inanimate, in the three worlds.

१२. **न तथैतानि शक्यन्ते**
संनियन्तुमसेवया ।
विषयेषु प्रजुष्टानि
यथा ज्ञानेन नित्यशः ॥

(मनुस्मृतिः, २/९६)

विषयों में फँसी हुई इन्द्रियों को विषयों का सेवन न करके बलपूर्वक उस प्रकार नहीं रोका जा सकता है

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्थात् ज्ञान के द्वारा इन्द्रियों का नियमन करें, बलपूर्वक नहीं।

Those organs which are strongly attached to sensual pleasures, cannot so effectually be restrained by abstinence from enjoyment by as by knowledge.

१३. प्रायो नाम तपः प्रोक्तं
चित्तं निश्चय उच्यते ।
तपो निश्चय संयुक्तं
प्रायश्चित्तमिति स्मृतम् ।। (मनुस्मृतिः ११/४७)

प्रायः नाम तप का है और चित्त निश्चय को कहा जाता है । इस प्रकार तप और निश्चय से युक्त कर्म प्रायश्चित्त कहलाता है ।

Prāyḥ is said to be austerity and chitta is called determination. The action which arises out of austerity combined with determination is called *(Prāyaścitta)*.

१४. ब्राह्मणस्य तपो ज्ञानं
तपः क्षत्रस्य रक्षणम् ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैश्यस्य तु तपो वार्ता
तपः शूद्रस्य रक्षणम् ॥

(मनुस्मृतिः ११/२३५)

ज्ञानार्जन ही ब्राह्मण का तप है । रक्षा करना क्षत्रिय का तप है । व्यापार करना वैश्य का तप है और सेवा करना शूद्र का तप है ।

Knowledge is said to be austerity of a *Brāhmaṇas.* To protect the people is the austerity of a *Kśatrīya.* Trade is the austerity of a *Vaiśya* and to serve is the austerity of a *Śūdra.*

१५. **भैक्षेण व्रतिनो वृत्तिः ।**

(मनुस्मृतिः, २/१८८)

ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाले को भिक्षा से गुजारा करना चाहिये ।

He, who takes the vow of celibacy should constantly subsist on alms.

१६. **यद् दुस्तरं यद् दुरापं**
यद् दुर्गं यच्च दुष्करम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वं तत्तपसा साध्यं
तपो हि दुरतिक्रमम् ॥

(मनुस्मृतिः, ११/२३९)

जो भी दुस्तर और दुर्लभ कार्य है, जो दुर्ग या दुष्कर कार्य है वह सब तप से सिद्ध किया जा सकता है, क्योंकि तप का अतिक्रमण करना अत्यन्त कठिन है ।

Whatever is hard to be traversed, whatever is hard to be attained whatever is hard to be reached, whatever is hard to be performed, can be accomplished by austerities, for austerity possesses a power which it is difficult to surpass.

१७. **योगिनं पूजयेन्नित्य-**
मन्यथा किल्विषी भवेत् ।

(विष्णुस्मृतिः २/१२/२)

योगी की सदैव पूजा करनी चाहिये, अन्यथा पाप लगता है ।

One should always honour a *yogī* otherwise, by not doing so, one shall be committing a sin.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१८. योगेनावाप्यते ज्ञानं
योगो धर्मस्य लक्षणम् ।
योगमूला गुणाः सर्वे
तस्माद्युक्तः सदा भवेत् ।

(बोधायनस्मृतिः ४/१/२७)

योगाभ्यास से ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । योग ही धर्म का लक्षण है । समस्त गुण योगमूलक हैं । इसलिये सदा योगी होना चाहिये ।

Knowledge is gained only through the practice of *Yoga*. *Yoga* is a symptom of virtue. All the auspicious qualities have their source in *yoga*. Hence one should always be a *yogī*.

१९. सर्वभूतसमत्वेन
योगः सिध्यति नान्यथा ।

(दक्षस्मृतिः ७/७)

समस्त प्राणियों में समत्वभाव रखने से योग सिद्ध होता है अन्यथा नहीं ।

Yoga can be realised only by keeping the same feelings for all the beings, otherwise not.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२०. **स्थावराणि च भूतानि**
दिवं यान्ति तपो बलात् । (मनुस्मृतिः ११/२४०)

चर और अचर प्राणी तप के बल से स्वर्ग प्राप्त करते हैं ।

All the created things, animate as well as inanimate, realise paradize by virtue of their austerity.

२१. **स्वयं वेद्यं च तद् ब्रह्म**
कुमारी मैथुनं यथा । (दक्षस्मृतिः ७/२५)

जिस प्रकार मैथुन का सुख स्वयम् कुमारी ही जानती है, वैसे ही वह ब्रह्म स्वयं ही जाना जाता है ।

The *Brahma* is known only by himself just as only a virgin herself realises the pleasure of sex.

राजधर्मः

१. **दुष्टस्य दण्डः सुजनस्य पूजा**
न्यायेन कोशस्य च समप्रवृद्धिः ।
अपक्षपातोऽर्थिषु राष्ट्ररक्षा
पञ्चैव यज्ञाः कथिता नृपाणाम् ॥

(अत्रिसंहिता, श्लोकः २८)

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुष्ट को दण्ड देना, सज्जनों की रक्षा, न्यायपूर्वक कोश की वृद्धि, याचकों में पक्षपात न करना तथा राष्ट्र की रक्षा करना, राजाओं के ये पाँच यज्ञ कहे गये हैं।

Punishment to the wicked, protection of the virtuous, increase in the treasure through fair means, impartiality and the protection of the country, these five *yajña* (sacrifice) have been prescribed for the kings.

२. **नोपेक्षेत क्षणमपि**
राजा साहसिकं नरम् ।

(मनुस्मृतिः ८/३४४)

राजा क्षणभर के लिये भी साहस-पूर्ण व्यक्ति (डाकू अथवा चोर) की उपेक्षा न करे (अपितु दण्ड देवे)।

A king should not ignore abrave-heart (a robber or a thief) even for a moment) in other words, punish him at once.

३. **न्यायेन दण्डनं राज्ञः**
स्वर्गकीर्तिकरं भवेत् ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः ७/१९३)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा यदि न्यायपूर्वक दण्ड देता है तो वह कार्य उसके लिये स्वर्ग और यश को देनेवाला होता है ।

If the king dispenses just punishment, this act of his may reward him with fame and paradise.

४. **मन्त्रिणो यत्र सभ्याश्च**
वैद्याश्च प्रियवादिनः ।
राज्याद् धर्मात्सुखात्तत्र
क्षिप्रं हीयेत पार्थिवः ॥

(कात्यायनस्मृतिः, श्लोकः १२)

जिस राजा के मन्त्री, सभासद् और वैद्य प्रियवादी हों वह राजा शीघ्र ही राज्य से, धर्म से और सुख से भ्रष्ट हो जाता है ।

Where the ministers, the members of the assembly and physicians, speak what is agreeble to the king, the king would be soon deprived of his kingdom, of Dharma and of happiness.

५. **यत्र धर्मो ह्यधर्मेण**
सत्यं यत्रानृतेन च ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हन्यते प्रेक्षमाणानां
हतास्तत्र सभासदः ॥

(कात्यायनस्मृतिः, श्लोकः ७३)

जहाँ सभासदों के देखते हुए ही धर्म का अधर्म के द्वारा और सत्य का असत्य के द्वारा हनन किया जाता है, वहाँ वे सभासद नष्ट हो जाते है।

In an assembly where justice is slain by injustice and where truth is strangled by untruth while the *Sabhāsads* (members) look on, the *Sabhāsads* (members) are doomed to destruction.

राजा

१. अन्यथावादिनो यस्य
दूतास्तस्य पराजयः।

(विष्णुस्मृतिः, पृ. ४५४)

जिस राजा के दूत मिथ्यावादी होते हैं, उसकी पराजय निश्चित है।

A king, whose messengers are liars, is destined for certain defeat.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२. अभयस्य हि यो दाता
स पूज्यः सततं नृपः ।

(वैदिकमनुस्मृतिः ८/१८२)

वही राजा निरन्तर पूजनीय है, जो प्रजा को अभय दान देता है ।

That king is worthy of continuous worship who gives assurance of protection to his people.

३. अदण्ड्यदण्डनं लोके
यशोघ्नं कीर्तिनाशनम् ।

(व्यवहारनिर्णयः, पृ. ५२६)

अदण्डनीयों को दण्ड देने से लोक में यश और कीर्ति का नाश होता है ।

Punishment to the innocent destroys fame and reputation in the world.

४. अदण्ड्यान् दण्डयन् राजा
दण्ड्यांश्चैवाप्यदंडयन् ।
अयशो महदाप्नोति
नरकं चैव गच्छति ॥

(मनुस्मृतिः, ८/१२८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो राजा दण्ड के अयोग्य व्यक्तियों को दण्ड देता है और दण्डनीयों को दण्ड नहीं देता, वह महान् अपयश को प्राप्त करता है और नरक को जाता है ।

A king who punishes those who do not deserve it, and does not punishes those who deserve it, brings great infamy on himself and after death sinks into hell.

५. कल्पद्रुमो न जानाति
न ददाति बृहस्पतिः ।
अयं तु जगती जानि-
र्जानाति च ददाति च ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १२४२)

कल्पवृक्ष देता तो है, किन्तु जानता नहीं है । बृहस्पति ज्ञान तो रखते हैं किन्तु देते कुछ नहीं । यह तो राजा ही है जो जानता भी है और देता भी है ।

The tree of Indra's paradise yields only the desired things but has no knowledge, and the *Bṛhaspati* the teacher of the gods, knows everything but gives nothing. It is only the Lord of the earth who knows as well as gives.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६. **जानन्ति पशवो गन्धाद्**
वेदाज्जानन्ति पण्डिताः ।
चाराज्जानन्ति राजान-
श्चक्षुर्भ्यामितरे जनाः ॥

(शार्ङ्गधरसंहिता, श्लोकः १४४८)

पशु गन्ध से जानते हैं । पण्डित लोग वेद से ज्ञान प्राप्त करते हैं । राजा लोग दूत अथवा जासूसों के माध्यम से जानते हैं तथा अन्य साधारण जन आँखों से जानते हैं ।

The animals obtain knowledge by smell, the wisemen obtain knowledge through vedas, the kings obtain information by their messengers and spies and ordinary people know through their eyes.

७. **दण्ड्येषु दण्डं विदधाति भूभृत्**
साम्यं स विदधाति पुरन्दरस्य ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/८४)

जो राजा दण्डनीय पुरुषों को ही दण्ड देता है, वह इन्द्र की समानता को प्राप्त करता है ।

A king who penalises only the guilty attains the status similor to that of *Indra.*

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८. **दुर्बलानामनाथानां**
बालवृद्धतपस्विनाम् ।
अन्यायैः परिभूतानां
सर्वेषां पार्थिवो गतिः ॥

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः २५)

दुर्बलों का, अनाथों का, बालक, वृद्ध और तपस्वियों का तथा अन्याय से प्रताडित प्रजाओं का सभी का रक्षक राजा ही होता है ।

Only the king is the protector of the weak, orphans, children, the aged, ascetics and those oppressed by injustice.

९. **धर्मेणैव सदा राजा**
पालयेत् पृथिवीमिमाम् ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ४/२६०)

राजा को धर्मपूर्वक ही इस पृथिवी का पालन करना चाहिये ।

A king should always protect the earth by following justice.

१०. **न राजानमराजा हन्यात् ।**

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, मिताक्षरा, आचाराध्यायः श्लोकः ३२६)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा से भिन्न पुरुष राजा को न मारे ।

A king should not be killed by a person other than a king.

११. न व्रतैर्नोपवासैश्च
न च यज्ञैः पृथग्विधैः ।
राजा स्वर्गमवाप्नोति
प्राप्नोति परिपालनात् ॥

(शंखस्मृतिः, ५/९)

व्रतों से, उपवासों से या अनेक प्रकार के यज्ञों से राजा स्वर्ग प्राप्त नहीं करता, अपितु प्रजा की रक्षा करने से राजा स्वर्ग को प्राप्त करता है ।

A king cannot realise heaven by performing austerities, fasts or various kinds of sacrifices. He gains it only by protecting his people.

१२. नादण्ड्यो नाम राज्ञोऽस्ति
यः स्वधर्मे न तिष्ठति ।

(वैदिकमनुस्मृतिः, ८/२०४)

ऐसा कोई भी व्यक्ति अदण्डनीय नहीं है जो अपने धर्म का पालन नहीं करता ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

No such person as does not perform his duty, is unpunishable by the king.

१३. नातः परतरो धर्मः
नृपाणां नरशालिनाम् ।
युद्धलब्धा महीशस्य
दीयते नृपसत्तमैः ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ४/२१९)

प्रजापालक राजाओं के लिये इससे बड़ा कोई धर्म नहीं हो सकता कि वे युद्ध में जीती हुई भूमि पुनः उसके राजा को लौटा दें ।

For kings who look after their subjects. there is no virtue greater than to return the territory conquered by them in war to its master.

१४. निर्गुणोऽपि यथा स्त्रीणां
सदा पूज्यः पतिर्भवेत् ।
तथा राजाऽपि लोकानां
पूज्यः स्याद् विगुणोऽपि सन् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः १२/७)

जैसे स्त्रियों के लिये उनका गुणहीन पति भी पूजनीय होता है, वैसे ही गुणहीन राजा भी प्रजा के लिये

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूजनीय होना चाहिये ।

As the husband, though devoid of good qualities is always worthy of worship by his wife like wise a king deficient in good qualities, is worthy of veneration by his people.

१५. **निकटस्थायिनो नित्यं**
जानन्ति चेष्टितं प्रभोः ।
तस्मात्ते यत्नतो रक्ष्या
भेदमूलं यतस्त्वमी ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः १२/३१)

निकट में रहने वाले लोग राजा की प्रत्येक चेष्टा को जानते हैं, इसलिये उनकी रक्षा प्रयत्न से करनी चाहिये, क्योंकि ये ही रहस्यभेदन की जड़ होते हैं ।

The people in close proximity to the king, know all the activities of the king. They must, therefore, always be protected painstakingly, because they have the potential to divulgeo all secrets.

१६. **नोपेक्षेत क्षणमपि**
राजा साहसिकं नरम् ।

(वैदिकमनुस्मृतिः ८/२०९)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा किसी भी चोर की एकक्षण के लिए भी उपेक्षा न करे ।

The king should not ignore any thief even for a moment.

१७. **पक्षिणां बलमाकाशं**
मत्स्यानामुदकं बलम् ।
दुर्बलस्य बलं राजा
बालस्य रुदितं बलम् ॥

(शंखलिखितस्मृतिः श्लोकः २८)

आकाश ही पक्षियों का बल होता है । जल ही मछलियों का बल होता है । दुर्बल का बल राजा है और रोना बच्चों का बल है ।

Space is the power of birds. Water is the power of fishes, the king is the only power of the weak and crying is the power of children.

१८. **पीड्यमानाः प्रजा रक्षेत्**
कायस्थैश्च विशेषतः ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, आचाराध्यायः, श्लोकः ३३६)

राजा का कर्तव्य है कि वह पीडित प्रजा की रक्षा करे । विशेषरूप से कायस्थों से पीडित प्रजा की रक्षा करनी चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

A king should protect his oppressed people, particularly from the *Kāyasthas*.

१९. म्रियमाणोऽप्याददीत
न राजा श्रोत्रियात्करम् ।
(मनुस्मृतिः ७/१३३)

भले ही प्राण जा रहे हों, फिर भी किसी श्रोत्रिय ब्राह्मण से राजा को कर (टैक्स) नहीं लेना चाहिये ।

Even while being in the danger of losing his life, the king should not impose tax on a *Brāhmaṇa*.

२०. यस्य राज्ञस्तु विषये
श्रोत्रियः सीदति क्षुधा ।
तस्यापि तत्क्षुधा राष्ट्र-
मचिरेणैव सीदति ॥
(मनुस्मृतिः ७/१३४)

जिस राजा के राज्य में श्रोत्रिय ब्राह्मण भूख से पीडित रहता है, उस राजा का भी राष्ट्र उस श्रोत्रिय की भूख से शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ।

The kingdom in which a *śrotriya Brāhmaṇa* languishes with hunger, soon meets its doom, cursed by the hunger of

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

the *Brāhmaṇa*.

२१. **यस्य मन्त्रं न जानन्ति**
समागम्य पृथग्जनाः ।
स कृत्स्नां पृथिवीं भुङ्क्ते
कोशहीनोऽपि पार्थिवः ॥

(मनुस्मृतिः ७/१४८)

जिस राजा के रहस्य को पृथक्-पृथक् लोग आकर नहीं जान सकते, वह राजा कोषरहित होते हुए भी सम्पूर्ण पृथ्वी का भोग करता है ।

That king whose secrets different people, assembled for the purpose, cannot discover, will enjoy the whole earth, though his treasure be empty.

२२. **यावानवध्यस्य वधे**
तावान्वध्यस्य मोक्षणे ।
अधर्मो नृपतेर्दृष्टो
धर्मस्तु विनियच्छतः ॥

(मनुस्मृतिः ९/२४९)

अवध्य का वध करने में जितना पाप लगता है, उतना ही पाप राजा को वध्य पुरुष को छोड़ देने पर लगता है । नियमानुसार दण्ड देना ही धर्म है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

When a king gets an innocent man executed, his guilt is considered equal to when he acquits a man, who should have been given the death penalty. The duty of a king is to dispense justice according to rules.

२३. येन येन यथाङ्गेन
स्तेनो नृषु विचेष्टते ।
तत्तदेव हरेत्तस्य
प्रत्यादेशाय पार्थिवः ॥

(मनुस्मृतिः ८/३३४)

चोर जिस-जिस अंग से लोगों में जैसे भी चोरी की चेष्टा करता है, राजा को चाहिये कि वह उस-उस अंग को काट देवे जिससे प्रजाओं को शिक्षा मिले ।

With whatever limb a thief in any way commits a theft, king should the cut those limbs off so that it may have a deterrent effect.

२४. राजा पिता च माता च
राजा च परमो गुरुः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा च सर्वभूतानां
परित्राता गुरुर्मतः ॥

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः २६)

राजा ही प्रजा का पिता और माता है, राजा ही परम गुरु है तथा समस्त प्राणियों का रक्षक राजा ही माना गया है ।

Only the king has been called the father and mother of his people. He alone is the highest teacher and has been called the protector of all beings.

२५. राजा हि युगमुच्यते ।

(वैदिकमनुस्मृतिः, ९/१३७)

राजा ही युग कहलाता है अर्थात् राजा ही युग को बनाता है ।

Only a king is called an era i.e. only a king forms an era.

२६. राजा सर्वस्येष्टे ब्राह्मणवर्जम् ।

(गौतमस्मृतिः एकादश अध्यायः)

ब्राह्मण को छोड़कर राजा सब पर शासन करता है ।

The king rules over all the people except the *Brāhmaṇas*.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२७. शरीर कर्षणात्प्राणाः
क्षीयन्ते प्राणिनां यथा ।
तथा राज्ञामपि प्राणाः
क्षीयन्ते राष्ट्रकर्षणात् ॥

(मनुस्मृतिः, ७/११२)

जैसे शरीर के शोषण से प्राणियों के प्राण नष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार राष्ट्र के छिन जाने से राजाओं के भी प्राण क्षीण हो जाते हैं ।

As the lives of living creatures are destroyed by the abuse of their bodies, similarly, the lives of kings lose their strength on being deprived of their kingdoms.

२८. सदा चोद्यमिना भाव्यं
नृपेण विजिगीषुणा ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः १२/६५)

विजय की इच्छा रखने वाले राजा को सदा उद्यमशील होना चाहिये ।

A king desirous of victory, should never cease in his efforts.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२९. सर्वतो धर्मषड्भागं
राज्ञो भवति रक्षतः ।
अधर्मादपि षड्भागो
भवत्यस्य ह्यरक्षतः ॥ (मनुस्मृतिः ८/३०४)

प्रजा की रक्षा करने वाले राजा को प्रजा के धर्म का छठा भाग मिलता है । इसी प्रकार रक्षा न करने पर अधर्म का छठा भाग राजा को मिलता है ।

A king who duly protects his subjects, receives one sixth of their spiritual merit. If, on the other hand, he does not protect them, one-sixth of their demerit is added to his share.

३०. सन्धिं छित्त्वा तु ये चौर्यं
रात्रौ कुर्वन्ति तस्कराः ।
तेषां छित्त्वा नृपो हस्तौ
तीक्ष्णे शूले निवेशयेत् ॥
(मनुस्मृतिः, ९/२७६)

जो तस्कर लोग रात में सेन्ध लगाकर चोरी करते हैं, राजा उनके दोनों हाथ काटकर तेज शूली पर चढ़ा देवे ।

The king should cut off the hands of those robbers and cause them to be impaled on

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

a pointed stake who break into houses and commit theft at night.

३१. साधून् सम्मानयेद् राजा
विपरीतांस्तु घातयेत् ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः आचाराध्यायः, श्लोकः ३३८)

राजा को साधु पुरुषों का सम्मान करना चाहिये और असाधुओं का हनन करना चाहिये ।

The king should always honour the sage-like virtuous men and eliminate the wicked.

३२. दुष्टस्य दण्डः सुजनस्य पूजा
न्यायेन कोषस्य च सम्प्रवृद्धिः ।
अपक्षपातोऽर्थिषु राष्ट्ररक्षा
पञ्चैव यज्ञाः कथिताः नृपाणाम् ॥

(अत्रिसंहिता, श्लोकः २८)

दुष्ट को दण्ड देना, सज्जनों की रक्षा करना, न्याय पूर्वक कोष की वृद्धि करना, याचकों को पक्षपात रहित होकर दान देना तथा राष्ट्र की रक्षा करना, ये राजाओं के पाँच यज्ञ कहे गये हैं ।

The punishment of wicked person, respect of good man, growth of the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

treasure by justful law, indifference in beggars and the protection of his country, the five *yajñas* are prescribed for the kings.

३३. रागादज्ञानतो वापि
लोभाद्वा योऽन्यथा वदेत् ।
सभ्योऽसभ्यः स विज्ञेय-
स्तं पापं विनयेन्नृपः ॥

(नारदस्मृतिः, १/६७)

जो सभासद् राग से, अज्ञान से या लोभवश मिथ्या बोलता है, उसे असभ्य ही समझना चाहिये । राजा उस पापी को दण्ड देवे ।

A member of an assembly, who speakes a lie, being oppressed by attachment, by ignorance or by the greed, should be known discourteous. Let the king punish that sinful man.

३४. राजा दण्डधरः स्मृतः । (नारदस्मृतिः १/२)

दण्डनीति को धारण करने वाला राजा श्रेष्ठ माना गया है ।

A king is declared possesser of *Danda.*

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाणी

१. अकारो वै सर्वा वाक् ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, १०/३९)

अकार ही समस्त वाणी (का आधार) है ।

The syllable 'a' is the basis of whole speech.

विकल्पः

१. तुल्यबलविरोधे विकल्पः ।

(गौतमस्मृतिः, प्रथमोऽध्यायः)

विकल्प का विधान वहीं होता है, जहाँ दो बातों में तुल्यबल विरोध हो ।

An option is possible only when there is a balanced opposition between two things.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विद्या

१. यथा खनन् खनित्रेण
नरो वार्यधिगच्छति ।
तथा गुरुगतां विद्यां
शुश्रुषुरधिगच्छति ॥ (मनुस्मृतिः, २/१९३)

जैसा मनुष्य फावड़े से भूमि को खोदता हुआ जल को प्राप्त कर लेता है वैसे ही शिष्य अपनी सेवा से गुरु की विद्या को प्राप्त कर लेता है ।

As a man digging the earth with a spade obtains water, even so an obedient pupil by serving his teacher, obtains knowledge bying hidden in his teacher.

२. वेदस्याध्ययनं नित्यं
धर्मशास्त्रस्य चापि यत् ।
अजानतोऽर्थं तत्सर्वं
तुषाणां कण्डनं यथा ॥

(लघुव्यासस्मृतिः, नित्याचारप्रदीपः भागः २, पृ. ५४)

अर्थ को जाने विना नित्य वेद का अध्ययन करना और धर्मशास्त्र का अध्ययन करना तो भूसी के कूटने के समान निष्फल है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

All the study of the vedas and *Dharmaśāstras* (religious texts) without understanding their meaning is as useless as the beating of husks.

३. **विद्याधनं तु यद्यस्य**
तत्तस्यैव धनं भवेत् । (मनुस्मृतिः, ९/२०६)

जिसका जो विद्यारूप धन है, वह धन उसी का है। उस पर किसी अन्य का अधिकार नहीं है ।

Only he is the owner of the wealth of knowledge, who has it. None else has any right over it.

४. **श्रुतिप्रमाण्यतो विद्वान्**
स्वधर्मे निविशेत वै ।

(मनुस्मृतिः २/८)

श्रुति को प्रमाण मानकर विद्वान् पुरुष को अपने धर्म पर अडिग रहना चाहिये ।

A learned person standing by the authority of the Vedas should remain steadfast to his *Dharma.*

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वीरता

१. यत्र यत्र हतः शूरः
शत्रुभिः परिवेष्टितः ।
अक्षयांल्लभते लोकान्
यदि क्लीबं न भाषते ॥

(पराशरस्मृतिः, ३/३२)

शत्रुओं से घिर जाने पर भी जो शूरवीर (प्राणरक्षा के लिये) दीन वचन नहीं बोलता, वह जहाँ कहीं मारे जाने पर अक्षय लोकों को प्राप्त करता है ।

Whenever a warrior even when surrounded by enemies he does not utter cowardly wards, he realised the unfinishable world whenever and wherever he is killed.

२. यस्य च्छेदक्षतं गात्रं
शरमुद्गरयष्टिभिः ।
देवकन्यास्तु तं वीरं
हरन्ति रमयन्ति च ॥

(पराशरस्मृतिः श्लोकः ३/३६)

जिसका शरीर रणभूमि में शर, मुद्गर और लाठियों से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्षत हुआ हो उस वीर को देवकन्या ले जाती हैं और प्रसन्न करती हैं ।

The warrior's soul whose body has been mutilated by arrows, mallets and batons on the battle-field, is taken away and made happy by fairies.

वेदः/ज्ञानम्

१. **इतिहासपुराणाभ्यां**
वेदं समुपबृंहयेत् ।

(वशिष्ठस्मृतिः नित्याचारप्रदीपः भागः २, पृ. ११)

इतिहास और पुराणों के द्वारा वेद की वृद्धि करनी चाहिये ।

Veda should be extended through history and *purāṇas.*

२. **बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो**
मामयं प्रहरिष्यति ॥

(वशिष्ठस्मृतिः नित्याचारप्रदीपः भागः २, पृ. ११)

अल्पज्ञ पुरुष से वेद इसलिये डरता है कि अब यह मुझ पर आक्रमण करेगा ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The veda gets afraid of an ignorant person, thinking that it would attack it *(veda)*.

३. **नास्ति वेदात्परं शास्त्रम् ।**

(अत्रिसंहिताः, श्लोकः १५१)

वेद से बड़ा कोई शास्त्र नहीं है ।

There is no *Śāstra* greater than the *Vedas*.

४. **यथा जातबलो बह्नि-**
र्दहत्यार्द्रानपि द्रुमान् ।
तथा दहति वेदज्ञः
कर्मजं दोषमात्मनः ॥

(मनुस्मृतिः १२/१०१)

जैसे प्रचण्ड अग्नि गीले वृक्षों को भी जला देती है, वैसे ही वेदज्ञ ब्राह्मण अपने कर्मजन्य दोष को भी जला देता है ।

As the all engulfing fire consumes even the trees full of sap, similarly he who knows the vedas burns out the taints of the soul which arise as a result of wicked acts.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५. **वेदप्रदानाचार्यं पितरं परिचक्षते ।**

(मनुस्मृतिः, २/१४६)

वेदज्ञान देने के कारण आचार्य को पिता कहा जाता है।

They call the teacher the pupils father, because he gives the knowledge of the vedas.

६. **वेद एव द्विजातीनां**
निःश्रेयसकरः परः ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, नित्याचारप्रदीपः, द्वितीयभागः, पृ. ३)

वेद ही बुद्धिजीवियों के लिये परम कल्याणकारी है ।

Only the vedas are most beneficial for the intellectuals.

७. **वेदविप्लावनात् तेन**
वरं मौनं समाश्रितम् ।

(लघुव्यासस्मृतिः, नित्याचारप्रदीपः, द्वितीयभागः पृ. ९)

वेद की निन्दा करने की अपेक्षा मौन का आश्रय लेना अधिक अच्छा है ।

Keeping silent is better than condemning the *Vedas.*

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वैराग्यम्

१. अत्यन्तमलिनः कायो
नवच्छिद्रसमन्वितः । (दक्षस्मृतिः २/७)

नौ छिद्रों से युक्त यह काया अत्यन्त मलिन है ।

The body of a person having nine openings, is very dirty.

२. असत्सङ्गाद् गुणज्ञोऽपि
विषयासक्तमानसः ।
अकस्मात् प्रलयं याति
गीतरक्तो यथा मृगः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः ४१८९))

दुष्ट पुरुषों के संग से गुणज्ञ पुरुष भी विषयों से आकृष्ट मन वाला होकर अकस्मात् ही उसी प्रकार नष्ट हो जाता है, जैसे गीत में अनुरक्त होकर मृग नष्ट हो जाता है ।

As a deer being absorbed in melodious sounds is easily killed, similarly a person, even having good attributes, being attached with worldly pleasures gets

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

destroyed by keeping the company of wicked persons.

३. **आत्माधीनशरीराणां**
स्वपतां निद्रया स्वया ।
कदन्नमपि मर्त्याना-
ममृतत्वाय कल्पते ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ३१८)

अपना शरीर जिनके वश में है तथा जो अपनी नींद सोते हैं, उनके लिये साधारण अन्न भी अमृत का सुख देता है ।

They who are in cantrol of their bodies and who are able to sleep peacefully without help, get the pleasure of nectar even from ordinary grain.

४. **इच्छानुरूपो विभवः**
कदा कस्य भविष्यति ।

(व्याससमृतिः, ४/२३)

इच्छानुरूप सम्पत्ति भला किसको कब प्राप्त हो सकती है ?

Who can obtain wealth as per his desire and when ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५. **इन्द्रियाणां जये शूरः ।** (व्यासस्मृतिः ४/६०)

इन्द्रियों को जीतने वाला ही वास्तविक शूर होता है ।

He is a real brave person who has conquered his senses.

६. **इन्द्रियाणां प्रसंगेन**
दोषमृच्छत्यसंशयम् ।

(मनुस्मृतिः, २/६८)

इन्द्रियों में आसक्त होने से पुरुष निस्सन्देह दोष को प्राप्त करता है ।

On account of his attachment to sensual pleasures, a man doubtlessly incurs guilt.

७. **उदारस्य तृणं वित्तं**
शूरस्य मरणं तृणम् ।
विरक्तस्य तृणं भार्या
निःस्पृहस्य तृणं जगत् ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः ३८९)

उदारपुरुष के लिये धन तिनके के समान है । शूर के लिये मृत्यु भी तृणवत् है । विरक्त पुरुष के लिये स्त्री तृण है, किन्तु निष्काम पुरुष के लिये तो सारा संसार ही तृण है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Wealth is like a straw for a kindhearted person, Death is like a blade of grass for a brave person. A woman is like a blade of grass for an ascetic. The whole world is like a blade of grass for a man without desire.

८. **उपहरणं विभवानां**
संहरणं सकलदुरितजालस्य ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः १२)

सम्पत्तियों का अर्जन करना समस्त पापसमूह को इकट्ठा करने के समान है ।

Gaining prosperity is just like compiling the whole lot of sins.

९. **एकाकी विचरेन्नित्यम् ।**

(विष्णुस्मृतिः, ४/१०)

सदैव एकाकी ही विचरण करना चाहिये ।

One should always think when alone.

१०. **एकेऽद्य प्रातरपरे**
पश्चादन्ये पुनः परे ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वे निःसीम्नि संसारे
यान्ति कः केन शोच्यते ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः ४१३७)

कुछ आज चले जायेंगे, कुछ प्रातःकाल चले जायेंगे और कुछ अन्य लोग उसके बाद चले जायेंगे। इस असीम संसार में सभी चले जा रहे हैं। भला कौन किसके लिये शोक करता है।

Some persons will leave the world today, some will go tomorrow morning and some others will leave after that. Thus, in this endless world, all are leaving gradually. Who is grieved by whom ?

११. एता याः प्रेक्षसे लक्ष्मी-
श्छत्रचामरचंचलाः ।
स्वप्न एष महाबुद्धे
दिनानि त्रीणि पंच वा ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः ४११९)

हे महाबुद्धिहीन मनुष्य ! यह जो तू छत्र चामर से चंचल इन सम्पत्तियों को देख रहा है यह तो केवल तीन या पाँच दिन का स्वप्न है।

O stupid man ! these objects of property

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

and luxuary which are more fickle than the umbrella of a king and the hair on the tail of a deer, that you see are only a transitory pipe-dream.

१२. **कः प्रार्थ्यते मदनविह्वलया युवत्या ।**

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः ५५५)

काम से मदमत्त युवती भला किससे प्रेम करती है ? अर्थात् वह किसी को प्रेम नहीं करती ।

Whom does a young sex-sidden lustful woman love ?

१३. **कृतकृत्याः प्रतीक्षन्ते**
मृत्युं प्रियमिवातिथिम् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः ८/६)

जिन्होंने अपने समस्त कर्तव्य पूर्ण कर लिये हैं, वे तो मृत्यु की प्रतीक्षा किसी प्रिय अतिथि के समान करते हैं ।

Those who have performed all their duties, wait for death as if for a dear guest.

Funding by IKS-MoE

१४. गर्भवासे च जनने
बाल्ये वास्य कुतः सुखम् ।
अस्वतन्त्रस्येव परै-
र्यन्त्रितस्येव पक्षिणः ॥

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः
प्रथमपटलम्, योगपादः, श्लोकः ३३)

जैसे दूसरों के द्वारा बाँधा गया पक्षी पराधीन होकर दुःख भोगता है, वैसे ही इस मनुष्य को गर्भवास में, उत्पन्न होने में तथा बचपन में भला सुख कैसा ?

Where is the question of happiness of a man in residing in the womb, in getting birth, and in childhood, just as a bird captured by and dependent on others, suffers pain and sorrow.

१५. च्युता दन्ताः सिताः केशाः
दृङ्निरोधः पदे पदे ।
पतिसज्जमिमं देहं
तृष्णा साध्वी न मुञ्चति ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ४२३)

दाँत उखड़ गये, बाल सफ़ेद हो गये, कदम-कदम पर दृष्टि भी निरुद्ध होने लगी । फिर भी पतिव्रता नारी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के समान तृष्णा इस देहरूप पति को नहीं छोड़ती।

Teeth have been fallen off, hair has become gray, and the eyesight is restrained at every step, nevertheless, desire does not abandon the body, as a fidel woman does not desert her husband.

१६. जगदेतन्निराक्रन्दं
निस्सारकमनर्थकम्।

(शंखस्मृतिः, ७/१०)

यह संसार बड़ा भयानक, सारहीन और व्यर्थ है।

This world is very perilous, meaningless and wasteful.

१७. जितेन्द्रियस्य किं शौचैः।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२१८)

जितेन्द्रिय पुरुष को शुद्धि के आचरण से क्या प्रयोजन? अर्थात् वह तो पहले ही पवित्र हो चुका है।

There is no use of cleanliness to a person who has already conquered his senses.

१८. जीर्यन्ति जीर्यतः केशाः
दन्ताः जीर्यन्ति जीर्यतः।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चक्षुः श्रोत्रे च जीर्यन्ति
तृष्णैका निरुपद्रवाः ॥

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः
प्रथमपटलम्, योगपादः, पृ. ६०९)

जीर्ण होने वाले पुरुष के केश जीर्ण हो जाते हैं और दाँत भी गिर जाते हैं । नेत्र और कान भी जीर्ण हो जाते हैं । बस यह एक तृष्णा ही है जो कभी जीर्ण नहीं होती, अपितु उपद्रवों से दूर रहकर बढ़ती रहती है ।

The hair of an old and weak person become weak and his teeth fall off. The eyes and ears also weaken. Only the desire never gets weakened, but, on the other land, keeps on goowing.

१९. **जीवन्ति जीविते यस्य**
विप्रमित्राणि बान्धवाः ।
जीवितं सफलं तस्य
चात्मार्थे को न जीवति ॥

(व्यासस्मृतिः ४/२१)

जिसके जीवित रहने से ब्राह्मण, मित्र और बन्धुबान्धव जीवित रहते हैं, उसी का जीवन सफल है । अन्यथा भला अपने लिये कौन जीवित नहीं रहता ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Only the life of that person is fruitful on which are dependent *Brāhmaṇas*, friends and kinsmen otherwise, who does not live for himself.

२०. **त्यागाच्छान्तिरनुत्तमा ।**

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ९/१९८)

केवल त्याग से ही परम शान्ति मिल सकती है (संग्रह से नहीं) ।

Supreme peace can be obtained only by renunciation (and not from compiling worldly objects).

२१. **त्यागेनैवामृतत्वं हि**
प्राप्तुं शक्यं मनीषिभिः ।

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः
योगपादः प्रथमपटलम्, पृ. ६१०)

केवल वैराग्य से ही मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है ।

Salvation can be achieved only through renunciation.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२२. त्वङ्मांसरक्तवाष्पाम्बु
पृथक् कृत्वा विलोचने ।
समालोकय रम्यं चेत्
किं मुधा परिमुह्यसि ॥

(श्रुतिसिद्धान्तसारसंग्रहः साधनप्रकरणं, श्लोकः ९३)

स्त्री के नेत्रों में त्वचा; मांस; रक्त एवं वाष्प जल को पृथक् पृथक् करके यदि अच्छा लगता है तो उसे देख। अन्यथा व्यर्थ ही उसके नेत्रों पर क्यों मोहित होता है ?

Look at a woman's eyes separating the skin, flesh, blood and water therein. If they appear good, only then look at them. Otherwise, why be attracted to her eyes unnecessarily ?

२३. दरिद्रोऽर्थं ततो राज्यं
तथेन्द्रत्वं ततोऽक्षयम् ।
पदं वाञ्छति नान्तोऽस्ति
तस्मात्तृष्णां परित्यजेत् ॥

(व्याससमृतिः स्मृतिचन्द्रिका द्वितीयखण्डः, पृ. ४५९)

दरिद्र व्यक्ति पहले धन कमाता है। धन मिल जाये तो फिर राज्य चाहता है। राज्य मिल जाये तो फिर इन्द्र

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का पद चाहता है और इन्द्र के पद के पश्चात् अक्षय पद को चाहता है । इस प्रकार तृष्णा का कोई अन्त नहीं है । इसलिए तृष्णा का त्याग कर देना चाहिये ।

In the begining a poor man desires wealth, on getting it, he wants the kingdom, if he gets it, he wants the post of *Indra*. And then he desires the undecaying state. Thus there is no end to desire. One should therefore abandon desire.

२४. देहे चेत्प्रीयते कश्चित्
प्रीयते नरकेऽपि सः ।

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः, प्रथमपटलः योगपादम्, श्लोकः २४)

यदि कोई पुरुष इस मलिन शरीर में प्रसन्न होता है तो वह नरक में भी अवश्य ही प्रसन्न होता होगा । क्योंकि देह भी तो दुःखमय है ।

If a person is happy while occupying this dirty body, certainly he will also be happy in hell, because after all the body is also full of afflictions.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२५. नहि प्रमाणं जन्तूना-
मुत्तरक्षण जीवने ।
तस्मादात्महितं नित्यं
चिन्तयन्नेव तच्चरेत् ॥

(पूर्वांगिरसस्मृतिः, श्लोकः ३१५)

प्राणी अगले क्षण जीवित रहेगा, इसमें कोई प्रमाण नहीं । इसलिये अपना आत्मकल्याण सोचते हुए प्रतिक्षण सदाचार का पालन करना चाहिये ।

There is no guarantee that a being shall remain alive the next moment. One should, therefore, every minute indulge in good conduct while at the same time keeping in mind self-welfare.

२६. नित्यं सन्निहितो मृत्युः
कर्तव्यो धर्मसंग्रहः ।

(व्यासस्मृतिः, ४/१९)

सर्वदा मृत्यु निकट खड़ी हुई है । इसलिये धर्म का संग्रह करना चाहिये ।

Death is always near at hand. One should therefore, perform the duties imposed upon oneself.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२७. पतनान्ता समुच्छ्रयाः ।

(कात्यायनस्मृतिः २२/८)

समस्त उन्नतियों का अन्त में पतन होता है।

All growth has its end in ruin.

२८. परिष्वक्तो नरो नार्या
ह्लादमेति यथा युवा ।
तल्पस्थोऽपि सकामां तां
भावहीनो न कामयेत् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/३५२)

जैसे युवा पुरुष नारी से आलिंगित होकर आनन्द को प्राप्त करता है, वैसे भावहीन पुरुष बिस्तर पर बैठकर भी कामयुक्त स्त्री को नहीं भोग सकता ।

A young man, embracing a woman, reaches the heights of pleasure but a man devoid of sexual desire, cannot, even in bed, copulate with a sex-ridden woman.

२९. पशवोऽपि हि जीवन्ति
केवलात्मोदरम्भराः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किं कायेन सुगुप्तेन
बलिना चिरजीविना ॥

(व्यासस्मृतिः, ४/२२)

जीने को तो पशु भी अपने पेट के लिये जीते हैं, फिर मनुष्य के देह के सुरक्षित, बलवान् और चिरजीवी होने से क्या लाभ ।

For that matter, even the animals live to fill their bellies. What use, then, is for the human body to be secure, energetic and long-lasting?

३०. फलं हि मोक्षो योगस्य ।

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः, योगपादः तृतीयपटलम्, श्लोकः ९४)

योगसाधना का फल केवल मोक्ष है (लौकिक सम्पत्ति नहीं) ।

Salvation is the only fruit of the practice of yoga (not worldly objects).

३१. बलवानिन्द्रियग्रामो
विद्वान्समपि कर्षति ।

(मनुस्मृतिः, २/१९०)

इन्द्रियों का समूह बड़ा बलवान् है, यह विद्वान् को भी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आकृष्ट करता है, मूर्ख की तो बात ही क्या है ।

The conglomeration of senses in very forceful. It captivates even the learned, what to talk of fools.

३२. मनसि च परितुष्टे
कोऽर्थवान् को दरिद्रः ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः ३०८)

मन के सन्तुष्ट हो जाने पर भला कौन धनी और कौन दरिद्र ? अर्थात् सन्तोष के प्राप्त होने पर धनवान् होने का अहंकार और दरिद्र होने का शोक दोनों नष्ट हो जाते हैं ।

Once the heart is satisfied, the difference between the rich and the poor evaporates. In other words, on the heart being satiated, the insolence of being rich and the anguish of being poor are destroyed.

३३. मरणान्तं हि जीवितम् ।

(कात्यायनस्मृतिः, २२/८)

जीवन का अन्त मृत्यु है ।

Death is the end of life.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३४. मानुष्ये कदलीस्तम्भे
निस्सारे सारमार्गणम् ।
यः करोति स सम्मूढो
जलबुद्बुदसन्निभे ॥ (कात्यायनस्मृतिः, २२/५)

केले के स्तम्भ के समान निस्सार और जल के बुलबुले के समान क्षणिक मनुष्यलोक में जो सार ढूंढता है वह मूर्ख है ।

The man who searches for meaning in this world which is as feeble and short-lived as a banana tree and as momentary as an air bubble, is a fool.

३५. मृत्युकाले मतिर्या स्यात्
तां गतिं याति मानवः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/३५४)

मृत्यु के समय जिसकी जो भावना होती है, मनुष्य उसी गति को अगले जन्म में प्राप्त करता है ।

The thoughts and emotions of a man on the verge of his death determine his fate in the next birth.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३६. मोक्षमार्गः परो योगः
साङ्गः साध्यो विपश्चिता ।

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः, पृ. ६१०)

मोक्ष का मार्ग ही सबसे बड़ा योग है । आठों अंगों के साथ विद्वान् को इस योग का अभ्यास करना चाहिये ।

The practice for salvation is the greatest yoga, it should be practised by the learned with all the eight limbs.

३७. यतो यतो निवर्तते
ततस्ततः सुखी भवेत् ।
निवर्तनाद्धि सर्वतो
न वेत्ति दुःखमण्वपि ॥

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः योगपादः प्रथमपटलम्, श्लोकः ४४)

जिस-जिस वस्तु से मन निवृत्त हो जाता है, उस-उस से ही वह सुखी हो जाता है । जब सब ओर से मन निवृत्त हो जाता है तो मन लेश मात्र भी दुःख का अनुभव नहीं करता ।

A man, being detached from certain things gets happiness. When he gets detached from all the things, he does not feel even an iota of unhappiness.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३८. यत्पृथिव्यां ब्रीहियवं
हिरण्यं पशवः स्त्रियः ।
नालमेकस्य तु यत-
स्तां तृष्णां दूरतस्त्यजेत् ॥

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः योगपादः, प्रथमपटलम्, पृ. ६०९)

पृथ्वी पर जितने भी धान, जौ, सुवर्ण, पशु और स्त्रियाँ हैं, ये तो एक व्यक्ति के लिये भी पर्याप्त नहीं हैं। इसलिये ऐसी तृष्णा को दूर से ही छोड़ देना चाहिये।

All the grains, gold, animals and women on the earth are not sufficient even for a single person. Therefore one should renounce such desire from a long distance.

३९. यथा यथा निषेवन्ते
विषयान्विषयात्मकाः ।
तथा तथा कुशलता
तेषां तेषूपजायते ॥

(मनुस्मृतिः, १२/७३)

जैसे-जैसे विषयलोलुप पुरुष विषयों का सेवन करते

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं, त्यों त्यों उन विषयों में उनकी कुशलता बढ़ती जाती है ।

As sensual man indulge in sensual pleasures, in that same proportion their taste for them grows.

४०. यदा भावेन भवति
सर्वभावेषु निःस्पृहः ।
तदा सुखमवाप्नोति
प्रेत्य चेह च शाश्वतम् ॥

(मनुस्मृतिः ६/८०)

जब मनुष्य सब पदार्थों में भावना से निःस्पृह हो जाता है, तभी मनुष्य इस लोक में तथा मृत्यु के पश्चात् भी शाश्वत सुख को प्राप्त करता है ।

When by disposition of his heart a person becomes indifferent to all objects, he obtains eternal happiness both in this world and after death.

४१. यदि नाम न धर्माय
न कामाय न कीर्तये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यत्परित्यज्य गन्तव्यं
तद्धनं किं न दीयते ॥

(व्याससमृतिः ४/२०)

यदि धन का उपयोग धर्म के लिये नहीं होता, न इच्छा के लिये और न यश के लिये ही उपयोग होता है तथा जिसे छोड़कर जाना ही है, उसका दान क्यों नहीं कर दिया जाता ?

Why is that wealth not donated, which is used neither for virtue nor for the fulfilment of desire nor for earning fame, and which one must part with one day ?

४२. **यद् यद् गृहे तन्मनसि**
यत्र तत्रावतिष्ठतः ।
नाशव्ययादिभीत्या
क्व परिग्रहवतां सुखम् ॥

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः योगपादः,
प्रथमपटलम्, श्लोकः ४३)

जो-जो वस्तु घर में है वह सब मन में रहती है । जहाँ-जहाँ भी मनुष्य रहता है, उन वस्तुओं के नाश और व्यय का भय उसके मन में रहता है । भला संग्रह करने वालों को सुख कहाँ से मिल सकता है ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

A man is always worried about the safety of the things he possesses. Whenever he lives, he is afraid of the destraction and loss of those things. How can a person obtain happiness who has the habit of accumulation of things.

४३. यद्वर्धयितुमिच्छन्ति
तच्छरीरमशाश्वतम् ।

(व्याससमृतिः ४/१८)

जिस शरीर की लोग वृद्धि करते हैं, वह शरीर तो नाशवान् है ।

This body, which people desire to develop is doomed to destruction.

४४. यावतः कुरुते जन्तुः
सम्बन्धान् मनसः प्रियान् ।
तावन्तोऽस्य निखन्यन्ते
हृदये शोकशङ्कवः ॥

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः योगपादः प्रथमपटलम्, श्लोकः ४२)

मनुष्य जितने भी मन को प्रिय लगने वाले सम्बन्ध बनाता है, उसके हृदय में उतने ही शोक की कीलें ठुक जाती हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The number of nails driven into man's heart is equal to the number of relationships of love a man builds.

४५. यौवनेऽनिष्ट संयोगा-
दिष्टलाभे वियोगतः ।
रागाद्याक्रान्तचित्तस्य
कुतः सौख्यं शरीरिणः ॥

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः प्रथमपटलम्
योगपादः, श्लोकः ३४)

युवावस्था में इष्ट प्राप्ति से वियोग के कारण अनिष्ट की प्राप्ति होती है तथा चित्त राग-द्वेषादि के कारण पीड़ित रहता है । भला शरीरधारी को सुख कहाँ ?

In youth, a man has to face misfortune because of separation from something or someone deeply desired and the heart is troubled by feelings of hostility and revenge. There is no happiness for a human being.

४६. यः कालाकालविद्विप्रो
नैनः स्पर्शी स कर्हिचित् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/९०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो ब्राह्मण काल और अकाल को जानता है, उसे कोई भी पाप स्पर्श नहीं करता ।

The *Brāhmaṇa*, who knows the propriety and impropriety of the times, is not touched by sins.

४७. **वर्तमानं क्षणातीतं**
सम्बन्धः कस्य केन वा ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ४१२६)

वर्तमान क्षणभर बाद अतीत बन जायेगा । किसके साथ भला कैसा सम्बन्ध ?

After a moment, the present will turn into the past, so, all relations are false.

४८. **विषं विषयवैषम्यं**
न विषं विषमुच्यते ।
जन्मान्तरघ्ना विषयाः
एक जन्महरं विषम् ॥

(श्रुतिसिद्धान्तसारसंग्रहः साधनप्रकरणं, श्लोकः १२५)

विषयों की विषमता का ही नाम विष है । वैसे विष को विष नहीं कहते । यह विष तो एक ही जन्म को हरता है, किन्तु विषय तो अन्य जन्मों का भी नाश

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर देते हैं ।

Poison is the name of diversity of sensual pleasures. The poison is not called poison. This poison destroys only the present life, but the sensual pleasures destroy several births.

४९. वेषलंघनमात्रेण
देही मोक्षं कथं व्रजेत् ।

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः योगपादः प्रथमपटलम्, श्लोकः ४७)

केवल वेष का लंघन करने से अर्थात् क़ाषाय वस्त्र पहन लेने मात्र से मनुष्य भला मोक्ष कैसे प्राप्त कर सकता है ?

How can a person obtain salvation by changing of the cloths only i.e. by wearing saffron clothes. ?

५०. व्रतानि यम धर्माश्च
सर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः । (मनुस्मृतिः २/३)

व्रत, यम और धर्म सब संकल्प से उत्पन्न होने वाले कहे गये हैं ।

Vows, laws and duties are all stated to be offsprings of determination.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५१. व्रणादेस्तु यथा पूय-
मूत्रादेर्निगमात् सुखम् ।
पापकण्डूतिसौख्यं वा
तत्तुल्यं सुरते सुखम् ॥

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः प्रथमपटलम्
योगपादः, श्लोकः २७)

घाव आदि से मवाद और पेशाब आदि के निकलने से जो सुख मिलता है और जो सुख खुजली को खुजाने से मिलता है, वही सुख सुरत में भी मिलता है अर्थात् जैसे खुजली के खुजाने से मिलने वाला सुख घातक होता है, वैसे ही रतिक्रिया का सुख भी परिणाम में घातक है ।

The pleasure that one gets ofter removing pus from a festering boil and after scratching the itching spots on the skin. is equal to the pleasure one gets in intercourse.

५२. संयोगा विप्रयोगान्ताः ।

(कात्यायनस्मृतिः २२/८)

समस्त संयोगों का अन्त वियोग है ।

Separation is the end of all unions.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५३. सततं स्त्रवतेऽमेध्यं
किं देहस्योच्यते शुभम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/१८५)

देह से निरन्तर गन्दगी निकलती है फिर भला शरीर की कौन सी वस्तु पवित्र है, जिससे लोग मोह करते हैं।

There is a continuous oozing out of excreta from the body. What is so pure in the body that people have attachment for ?

५४. सर्वस्त्विन्द्रियलौल्येन
संकटान्यवगाहते ।

(व्यासस्मृतिः, स्मृतिचन्द्रिका द्वितीयखण्डः, पृ. ४५९)

इन्द्रियों की चंचलता के कारण सभी लोग संकटों में ही प्रवेश करते हैं ।

All the persons are entrapped in troubles by the fickleness of the senses.

५५. सर्वे क्षयान्ता निचयाः ।

(कात्यायनस्मृतिः २२/८)

समस्त संचयों का अन्त में क्षय होता है ।

All the compilations have their end in destruction.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५६. सौख्यं त्वगस्थिमांसादौ
कतरत्स्यान्मनोहरम् ।

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिः, प्रथमपटलम् योगपादम्, श्लोकः २९)

स्त्री की त्वचा, अस्थि, मांसादि में भला कौन सा सुन्दर सुख मिल सकता है ? अर्थात् वहाँ सुख नहीं अपितु केवल दुःख ही मिल सकता है ।

Which pleasure can be got and of the skin, bones and flash of a woman ? None.

५७. हा कष्टं पुरुषस्य जीर्णवयसः
पुत्रोऽप्यमित्रायते ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः ४१६१)

वृद्ध होने पर पुरुष का पुत्र भी शत्रु बन जाता है, यह बड़े कष्ट की बात है ।

Alas, even the son becomes the enemy of a man in old age. This is very agonising.

५८. हृदि सर्वं प्रतिष्ठितम् ।

(शंखस्मृतिः, ७/१५)

सब कुछ मनुष्य के हृदय में ही प्रतिष्ठित है ।

Every things is vests in human heart.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५९. हृदिस्था देवताः सर्वाः । (शंखस्मृतिः)

सारे देवता मनुष्य के हृदय में ही स्थित रहते हैं ।

All the gods dwell in the human heart.

व्यवहारः

१. अकामतः कृते पापे
प्रायश्चित्तं विदुर्बुधा ।

(मनुस्मृतिः, ११/४५)

जो पाप बिना इच्छा के ही अनजाने में हो गया है उसके निराकरण के लिये विद्वान् लोग प्रायश्चित्त का उपदेश करते हैं ।

The wisemen advise expiation for the removal of a sin committed unknowingly and inadvertently.

२. अकृतार्थस्तु यो मृत्युं
प्राप्तः खरसमो हि सः ।

(व्याससमृतिः ४/२५)

जो अपना कर्तव्य किये बिना मृत्यु को प्राप्त होता है, वह तो गधे के समान है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A person who dies without performing his duties, is considered equal to an ass.

३. अक्लेशेन शरीरस्य
कुर्वीत धनसञ्चयम् । (मनुस्मृतिः, ४/३)

शारीरिक कष्ट न उठाते हुए धन का संचय करना चाहिये ।

Let one collect wealth but without afflicting one's body.

४. अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्ट-
मन्तरैव विनश्यति ।
अबीजकमपि क्षेत्रं
केवलं स्थण्डिलं भवेत् ॥ (मनुस्मृतिः, १०/७१)

बंजर भूमि में बोया गया बीज कुछ समय पश्चात् नष्ट हो जाता है । इसी प्रकार बीज रहित क्षेत्र भी केवल स्थण्डिल (भूमिमात्र) ही होता है ।

A seed sown on barren land, perishes after some time. Fertile field, similarly, in which no good seed is sown, remains a farm only in same.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५. अतिथिं पूजयेद्यस्तु
श्रान्तं चादुष्टमानसम् ।
सवृषं गोशतं तेन
दत्तं स्यादिति मे मतिः ॥

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः स्मृतिचन्द्रिका, द्वितीयखण्डः, पृ. ५९८)

जो पुरुष थके हुए तथा पवित्र मन वाले अतिथि का सत्कार करता है, उसने मानों बैल सहित सौ गौवों का दान कर दिया । ऐसा मेरा मानना है ।

One who honours a tired and purehearted guest supposed to have earned the reward of donating one hundred cows with the oxen. This is my opinion.

६. अदक्षिणं चेत्तत्कर्म
निखिलं निष्फलं भवेत् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९८)

जितने भी धार्मिक कृत्य हैं, वे सब दक्षिणा के अभाव में निष्फल हो जाते हैं ।

All the rites, done without remuneration are fruitless.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७. **अनन्यचित्तो भुंजीत वाग्यतोऽन्नमकुत्सयन् ।**

(व्याससमृतिः, ३/६७)

एकाग्रचित्त से, मौन रहकर अन्न की निन्दा न करते हुए भोजन करना चाहिये ।

One should take meals with concentration silently and without criticising it.

८. **अनार्यैर्न सम्भाषेत ।**

(गौतमस्मृतिः, अध्यायः १७)

अनार्य लोगों के साथ सम्भाषण नहीं करना चाहिये ।

One should not enter into a dialogue with uncivilised people.

९. **अनिन्दन् भक्षयेन्नित्यम् ।**

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः २७३)

भोजन करते समय कभी उसकी (भोजन की) निन्दा नहीं करनी चाहिये ।

One should always take food without criticising it.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१०. अनेना भवति स्तेनः
स्वकर्मप्रतिपादनात् ।

(नारदस्मृतिपरिशिष्टम्, ४/४७)

यदि चोर अपना अपराध कह दे तो वह निष्पाप हो जाता है ।

A thief gets free from the sin if he accepts his fault.

११. अन्त्यादपि परं धर्मं
स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ।

(मनुस्मृतिः, २/२३८)

चाण्डाल से भी उत्तम धर्म ग्रहण कर लेना चाहिये और श्रेष्ठ स्त्री यदि नीच कुल में भी हो तो उसे ग्रहण कर लेना चाहिये ।

One may receive the highest law even from the lowest person and an excellent lady as wife even from a mean family.

१२. अन्नं प्राणो बलं चान्न-
मन्नाज्जीवितमुच्यते ।
अन्नं च जगदाधारं
सर्वमन्ने प्रतिष्ठितम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ५/१११)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्न ही प्राण हैं, अन्न ही बल है, अन्न से ही जीवन कहा जाता है और अन्न ही जगत् का आधार है। सब कुछ अन्न में ही स्थित हैं।

Food is life, food is the strength of the beings. Life depends upon food. Food is the basis of the whole world. Every thing is dependent on food.

१३. अन्नं हि जगदाधारम्।

(बृहत्पराशरसंहिता, ५/१११)

अन्न ही जगत् का आधार है।

The food is the substratum of the whole world.

१४. अन्यदुप्तं जातमन्य-
दित्येतन्नोपपद्यते।
उप्यते यद्धि यद्बीजं
तत्तदेव प्ररोहति॥ (मनुस्मृतिः, ९/४०)

बोया कुछ अन्य बीज हो और उत्पन्न कुछ अन्य हुआ हो, ऐसा सम्भव नहीं है। जैसा-जैसा बीज बोया जाता है, वैसा-वैसा ही उत्पन्न होता है।

It is not possible to sow one kind of seed

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

and reap another kind. As you sow, so will you reap.

१५. **अन्यायोपार्जितं द्रव्य-**
मापद्यपि विवर्जयेत् ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ७/१७२)

अन्याय से एकत्र किया गया धन आपत्तिकाल में भी छोड़ देना चाहिये ।

One should abandon the wealth, acquired by unjust means even in times of distress and difficulty.

१६. **अपमानात्तपोवृद्धिः**
सम्मानात्तपसः क्षयः ।

(आपस्तम्बस्मृतिः, १०/९)

अपमान से तप बढ़ता है और सम्मान से तप का नाश होता है ।

Austerity is increased by disgrace and decreased by honour.

१७. **अपि यत्सुकरं कर्म**
तदप्येकेन दुष्करम् । (मनुस्मृतिः, ७/५५)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो कार्य किसी के लिये सरल है, वह किसी दूसरे के लिये दुष्कर भी हो सकता है ।

An undertaking easy for someone, may be at times hard to be accomplished by another.

१८. अभक्ष्यमपि भक्ष्यं स्याद्
देशधर्मेण वै मुनेः ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः १५४)

देश के धर्म (लोकाचार) के अनुसार अभक्ष्य पदार्थ भी कभी-कभी भक्ष्य बन जाता है ।

Food not fit to be eaten sometimes becomes eatable according to the usage and custom of a particular country.

१९. अभूतमप्यभिहितं
प्राप्तकालं परीक्षयेत् ।

(नारदस्मृतिः, १/६४)

समय आने पर अघटित घटना के बोधक कथन की परीक्षा करनी चाहिये ।

Let one examine in time even to an untrue statement about the happening.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२०. **अभोज्यमन्नं नात्तव्य-**
मात्मनः शुद्धिमिच्छता ।

(मनुस्मृतिः, ११/१६०)

जो आत्मा की शुद्धि चाहे, उसे अभक्षणीय अन्न नहीं खाना चाहिये ।

One should not eat the forbidden food, if one desires to keep his soul pure.

२१. **अमाययैव वर्तेत**
न कथंचन मायया ।

(मनुस्मृतिः, ७/१०४)

सदैव छल को छोड़कर ही व्यवहार करना चाहिए, किसी भी अवस्था में छल के साथ व्यवहार न करें ।

Let one always behave truly without deceit or deception. One should not resort to fraud or prevarication under any circumstances.

२२. **अलक्ष्मी कलहाधारा ।**

(नित्याचारप्रदीपः, प्रथमोभागः, पृ. ५१३)

कलह दरिद्रता का आधार है ।

Internal oquabbling is the root of poverty.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२३. अलाभे न विषादी स्यात्
लाभे चैव न हर्षयेत् ।

(मनुस्मृतिः, ६/५७)

मनुष्य को अप्राप्ति में दुखी नहीं होना चाहिये और प्राप्ति में हर्षित नहीं होना चाहिये ।

One should not be dejected by non acquisition and nor should be happy in acquisition.

२४. अल्पं वाऽपि सुमहद् वापि
कुर्यादातिथ्यमात्मवान् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ६/६९)

आत्मज्ञानी पुरुष को थोड़ा या अधिक अपने सामर्थ्य के अनुसार अतिथि का सत्कार अवश्य करना चाहिये ।

A self knowing person should offer hospitality to the guest depending on his capability.

२५. अवस्त्रत्वं निरन्नत्वं
कृषितो नैव जायते ।

(वृहत्पराशरस्मृतिः, ५/१८६)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कृषि करने वाले को कभी भी वस्त्र का और अन्न का अभाव नहीं होता ।

A farmer never experiences the shortage of clothes and grain.

२६. **अव्रतानाममन्त्राणां**
जातिमात्रोपजीविताम् ।
सहस्त्रशः समेतानां
परिषत्त्वं न विद्यते ॥

(मनुस्मृतिः, १२/११४)

जो सत्य के व्रती नहीं हैं, जो मन्त्रणा करना नहीं जानते तथा जो केवल जाति के दम्भ पर जीविका कमाते हैं, ऐसे हजारों व्यक्ति भी इकट्ठे हो जायें तो उसे सभा नहीं कह सकते ।

Even if thousands of such persons meet, as have not fulfilled their sacred duties, are unacquainted with the vedas, and subsist only on arrogance in the name of their caste, cannot form an assembly for setting the sacred law.

२७. **असत्याः सत्यसंकाशाः**
सत्याश्चासत्यसन्निभाः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दृश्यन्ते विविधा भावा-
स्तस्माद्युक्तं परीक्षणम् ॥

(नारदस्मृतिः, १/७१)

अनेक प्रकार के असत्य भाव कभी-कभी सत्य जैसे दिखाई देते हैं और कभी-कभी सत्य भाव असत्य के समान दिखाई देते हैं। इसलिये सर्वत्र कथनों की परीक्षा करना ही उचित है।

Sometimes unreal things seem to be as real and real things sometimes seem to be as unreal, so proper investigation is compulsary.

२८. असन्तुष्टे सुखं नास्ति ।

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः ३७१)

असन्तुष्ट व्यक्ति को कभी सुख नहीं मिलता।

There is no happiness for an uncontented person.

२९. अस्नातो नाचरेत्कर्म ।

(बृहत्पराशरसंहिता, २/२४)

स्नान किये बिना नित्य कर्मों का आचरण नहीं करना चाहिये।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

One should not perform any religious act without taking bath.

३०. **अस्वतन्त्रः स्मृतः शिष्यः**
आचार्ये तु स्वतन्त्रता ।

(नारदस्मृतिः, ४/३३)

शिष्य को सदैव अस्वतन्त्र (गुरु के अधीन) माना गया है । गुरु स्वतन्त्र होता है ।

A pupil is declared dependent to teacher and independence lies with the teacher.

३१. **अस्वतन्त्राः प्रजाः सर्वाः ।**

(नारदस्मृतिः, ४/३३)

समस्त प्रजायें (अर्थात् सन्तान) माता-पिता के अधीन होती हैं ।

All children dependent to their parents.

३२. **आकराः शुचयः सर्वे**
वर्जयित्वा सुराकरम् ॥

(बोधायनस्मृतिः, १/५/५८)

मदिरा की खान को छोड़कर सभी खानें शुद्ध होती हैं ।

All mines except that of liquor, are pure.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३३. आकारैरिंगितैर्गत्या
चेष्टया भाषणेन च ।
नेत्रवक्त्रविकारेण
गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः ॥ (मनुस्मृतिः, ८/२६)

आकृतियों से, संकेतों से, चलने से, चेष्टा से, बोलने से और नेत्र तथा मुख के विकार से मन के अन्दर का विचार जान लिया जाता है ।

The internal working of the mind is perceived through the shape, the body language, the gait, the gestures, the speech and the changes in the eyes and the face.

३४. आकाशं वायुरग्निश्च
मेध्यं भूमिगतं जलम् ।
न दुष्यन्ति च दर्भाश्च
यज्ञेषु चमसो यथा ॥

(पराशरस्मृतिः १०/४४)

आकाश, वायु, अग्नि और भूमि के अन्दर पड़ा हुआ जल तथा कुशा कभी दूषित नहीं होते, जैसे यज्ञों में चमस दूषित नहीं होता ।

The ether, air, fire, the water inside the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

earth and the dry grass never can get impure like a spoon used in the *yajña* (sacrifices)

३५. आततायिनमायान्तं
हन्यादेवाविचारयन् ।

(मनुस्मृतिः, ८/३५०)

आते हुए आततायी को देखते ही बिना विचार किये ही मार डालना चाहिये ।

One should slay without hesitation and at sight the aggressor who approaches with murderous intent.

३६. आतुरस्यौषधैः कार्यं
नीरुजस्य किमौषधैः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः ३/५२)

रोगी को ही औषधियों से प्रयोजन होता है, नीरोग को भला औषधियों से क्या प्रयोजन ?

Medicines are meant only for the sick. What is the use of medicines for a healthy person ?

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३७. आत्ममातुः स्वसुः पुत्राः
आत्मपितुः स्वसुः सुताः ।
आत्ममातुल पुत्राश्च
विज्ञेया आत्मबान्धवाः ॥

(कात्यायनस्मृतिः नित्याचारप्रदीपः प्रथमभागः, पृ. १२०)

अपनी माता की बहन के पुत्र, अपने पिता की बहन के पुत्र तथा अपने मामा के पुत्र, इन तीनों को अपना भाई समझना चाहिये ।

One should regard as one's own brother, one's mother's sister's son, father's sister's son and sons of one's maternal uncle.

३८. आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी ।

(मनुस्मृतिः, ८/८४)

आत्मा ही आत्मा का साक्षी है ।

The self is the self's own witness.

३९. आपत्काले तु निस्तीर्णे
शौचाचारं न चिन्तयेत् ।

(पराशरस्मृतिः, ७/४३)

आपत्तिकाल में शुद्धि-अशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Let one not think of purity or impurity in the moment of emergency.

४०. आपद्गतः सम्प्रगृह्णन्
भुञ्जानोऽपि यतस्ततः ।
न लिप्येतैनसा विप्रो
ज्वलनार्कसमो हि सः ॥

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः प्रायश्चित्ताध्यायः श्लोकः ४१)

यदि ब्राह्मण संकट काल में कुछ मांग लेता है और इधर-उधर कुछ खा लेता है तो भी पाप से युक्त नहीं होता, क्योंकि वह अग्नि और सूर्य के समान है ।

If a *Brāhmaṇa* asks for something or eates something here and there in the period of distress, he does not get tainted with sin, because he is said to be like fire and the sun.

४१. आयुर्वित्तं गृहच्छिद्रं
मन्त्रो मैथुनभेषजे ।
तपो दानापमानौ च
नव गोप्यानि सर्वदा ॥

(दक्षस्मृतिः, ३/१४)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आयु, धन, घर के दोष, मन्त्र, मैथुन, औषधि, तप, दान और अपमान ये नौ बातें सदा गोपनीय रखनी चाहिये ।

One's age, wealth, the domestic defects, the secret, sexual intercource, medicine, austerity, charity and humiliations, these nine should always be kept confidential.

४२. **आहारं तु रहः कुर्याद्**
विहारं चैव सर्वदा ।
गुप्ताभ्यां लक्ष्मीयुक्तः स्यात्
प्रकाशे हीयते श्रिया ॥

(हारीतस्मृतिः, द्वितीयखण्डः, पृ. २४१).

आहार और विहार सदा एकान्त में करना चाहिये । गुप्त आहार-विहार के द्वारा मनुष्य श्री से युक्त होता है और प्रकाश में करने से श्रीहीन हो जाता है ।

One should enjoy food and marriment always in solitude. A man becomes prosperous if he enjoys them in secret, but by using them in the open, is deprived of *Lakṣmī* (prosperity).

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४३. **आहिताग्निरनड्वांश्च**
ब्रह्मचारी च ते त्रयः ।
अश्नन्त एव सिध्यन्ति
नैषां सिद्धिरनश्नताम् ॥

(बोधायनस्मृतिः, २/७/३२)

अग्निहोत्र करने वाला पुरुष, बैल और ब्रह्मचारी ये तीनों भोजन करके ही सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं, बिना खाये नहीं ।

A person who performs oblation to the sacrificial fire, an Ox and a celibate there three reach the highest stage only by eating food, without food they cannot reach the stage.

४४. **इच्छानुरूपो विभवः**
कदा कस्य भविष्यति ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९२)

इच्छा के अनुसार धन-दौलत किसको भला कब मिलती है, अर्थात् सब सम्पत्ति कभी किसी को नहीं मिलती ।

Where is the man who has found wealth according to his desire ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४५. उत्पादक ब्रह्मदात्रो-
गरीयान् ब्रह्मदः पिता ।

(मनुस्मृतिः, २/१४६)

जन्म देने वाले और ज्ञान देने वाले पिताओं में ज्ञान देने वाला पिता ही श्रेष्ठ माना जाता है ।

Out of the biological father and the father who, as a teacher, imparts knowledge, The latter has been considered superior.

४६. ऊर्ध्वं नाभेर्यानि खानि
तानि मेध्यानि सर्वशः ।
यान्यधस्तान्यमेध्यानि
देहाच्चैव मलाश्च्युताः ॥

(मनुस्मृतिः, ५/१६२)

नाभि से ऊपर जो इन्द्रियाँ हैं, वे सब प्रकार से पवित्र होती है । नाभि से नीचे की इन्द्रियाँ अपवित्र होती हैं, क्योंकि निम्न इन्द्रियों से ही देह के मल बाहर निकलते हैं ।

The organs in the body above the navel are always pure, but the lower organs are impure because the excretions of the body pass out through these organs.

Funding by IKS-MoE

 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४७. ऊर्ध्वं नाभेर्मेध्यतर:
पुरुषः परिकीर्तितः ॥ (मनुस्मृतिः १/९१)

मनुष्य नाभि से ऊपर अधिक पवित्र माना गया है (नाभि से नीचे अल्प पवित्र है)।

Man is consideed to be purer above the navel than below it.

४८. ऋणप्रदाता वैद्यश्च
श्रोत्रियः सजला नदी ।
यत्र नास्ति चतुष्टय्यं
न तत्र दिवसं नयेत् ॥

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २८२)

जिस बस्ती में ऋण देने वाला धनी, वैद्य, श्रोत्रिय ब्राह्मण और जलयुक्त नदी, ये चार बातें न हों वहाँ एक दिन भी नहीं रहना चाहिये ।

A Money lender, a phisycian, a learned of veda and a river full of water, where, there are not these four things, let him not spend even a single day.

४९. ऋणं लेख्यकृतं देयम् ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः व्यवहाराध्यायः, श्लोकः ९०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिखित रूप में लेकर ही ऋण देना चाहिए ।

A debt should be given only on a written contract.

५०. एको ह्यनीशः सर्वत्र ।

(मनुस्मृतिः परिशिष्टम् श्लोकः ४९)

अकेला व्यक्ति सब स्थानों पर असमर्थ होता है अर्थात् समुदाय में ही शक्ति है, अकेले में नहीं ।

A person alone is helpless in all spheres of life i.e. there is strenght in unity but not in being separate.

**५१. एकाकी चिन्तयेन्नित्यं
मनोवाक्कायकर्मभिः ।**

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः १०८)

मन, वचन, देह और कर्म के साथ सदा अकेले ही चिन्तन करना चाहिये ।

One should contemplate alone with mind, tongue, body and actions.

**५२. एकः प्रजायते जन्तु-
रेक एव प्रलीयते ।** **(मनुस्मृतिः, ४/२४०)**

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राणी अकेला ही संसार में जन्म लेता है और अकेला ही मृत्यु को प्राप्त होता है ।

A being is born alone and also dies alone.

५३. एनो गच्छति कर्त्तारम् ।

(मनुस्मृतिः, ८/१९)

पाप सदा पापकर्त्ता का पीछा करता है ।

A sin always chases its doer.

५४. कः परित्यज्य गां दुष्टां
दुहेच्छीलवतीं खरीम् ।

(पराशरस्मृतिः, ८/३३)

गाय भले ही मरखनी हो, किन्तु उसे छोड़कर भला शीलस्वभाव वाली गधी को कौन दुहता है ?

A cow may be aggressive but who will milk a gentle female ass, leaving the cow ?

५५. कथमिह मनुष्य जन्मा
सम्प्रविशति सदसि बिबुधगमितायाम् ।
येन न सुभाषितामृत-
माह्लादि निपीतमातृप्तेः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १४०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह मनुष्य विद्वानों से सेवित सभा में कैसे प्रवेश कर सकता है, जिसने आह्लादकारी सुभाषित रूपी अमृत को छककर न पिया हो ।

How can a man in this world can enter the assembly of learned persons, who has not satiated himself with the nectar of the blissful and good statements ?

५६. कर्तव्यं वचनं सर्वैः ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, व्यवहाराध्यायः श्लोकः १८८)

सभी को अपने वचन का पालन करना चाहिए ।

Everyone should keep their word.

५७. कर्मजा गतयो नृणा-
मुत्तमाधममध्यमाः । (मनुस्मृतिः, १२/४)

मनुष्यों की जो उत्तम, अधम और मध्यम योनियाँ हैं, वे सब उनके कर्मों से ही प्राप्त हुई हैं ।

Our actions determine the various conditions of men, the highest, the mediocre and the lowest.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५८. **कर्मणां करणं नित्यं**
धनसाध्यं हि मुख्यतः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९८)

कर्मों का करना मुख्यरूप से धन द्वारा ही साध्य होता है ।

The performance of the righteous actions is mainly achived only throgh wealth.

५९. **कलिः शयानो भवति**
सजाग्रद् द्वापरं युगम् ।
कर्मस्वभ्युद्यतस्त्रेता
विचरंस्तु कृतं युगम् ॥

(मनुस्मृतिः, ९/३०२)

कलियुग सोया हुआ होता है । द्वापर युग को जागता हुआ माना गया है । त्रेतायुग कर्मों में उद्यत होता है तथा सत्ययुग विचरण शील होता है ।

Sleeping represents the Kali or iron age, waking up the *Dwāpar* or brazen age, readiness to act, the Tretā or silver age but moving about actively is the characteristic of the Krita or the golden age.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६०. **कस्यैताः शस्यसम्पदः ।**

(व्यासस्मृतिः, ४/५६)

ये धन-धान्य भला कब किसके हुए हैं ।

By whome, these grains and wealth are preserved for a long time?

६१. **काकाल्लौल्यं यमात्क्रौर्य**
स्थपतेरथ कृन्तनम् ।
आद्याक्षराणि सङ्गृह्य
कायस्थ इति कीर्तितः ॥

(औशीनसीस्मृतिः श्लोकः ३५)

काक से चंचलता, यम से क्रूरता और स्थपति (पत्थर पर नक्काशी करने वाला शिल्पकार) से काटने की कला लेकर, अर्थात् तीनों के प्रथम अक्षरों को लेकर कायस्थ कहा जाता है ।

Having taken the fickleness from the crow (kāka), cruelty from the god of death (yama) and the art of chiselling stones from the architect, thus taking the first letter 'Kā' 'ya' and 'stha', the word Kāyastha is said to be made.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६२. कामिनीषु विवाहेषु
गवां भुक्ते तथेन्धने ।
ब्राह्मणाभ्युपपत्तौ च
शपथैर्नास्ति पातकम् ॥

(याज्ञवल्क्यस्मृति-मिताक्षरा टीका
व्यवहाराध्यायः श्लोकः ११३)

स्त्रियों में, विवाहों में, गाय के भोजन के लिये तथा यज्ञादि के इन्धन के लिये और ब्राह्मण की रक्षा के लिये झूठी शपथ खाने से भी पाप नहीं होता ।

There is no sin in taking a false oath in women, marriages and for the food of cows, wood for the *yajña* and protection of a *Brāhmaṇa*.

६३. कार्यं विना सुखत्यागी
पशुरेव न संशयः ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २८५)

बिना किसी प्रयोजन के सुख का त्याग करने वाला पुरुष निस्सन्देह पशु ही होता है ।

A man who abandons the pleasure for no purpose is certainly an animal.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६४. कालातीतं तु यत्कर्म
अकृतं तं विनिर्दिशेत् ।

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः ६५)

समय बीत जाने पर जो कर्म किया जाता है, उसे न किया हुआ ही समझना चाहिये ।

An act performed after its proper time has elapsed, should be regarded as not having been performed at all.

६५. काले कालकृतो नश्येत्
फलभोग्यो न नश्यति ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः व्यवहाराध्यायः, श्लोकः ५८)

कालकृत वस्तु तो समय आने पर स्वयम् ही नष्ट हो जाती है, किन्तु जो पदार्थ फल के द्वारा भोग्य है, वह तो फल देकर ही नष्ट होता है ।

All that has been created will meet its end on its own at the destined time but not without first producing its consequences.

६६. कालो वै परमेश्वरः ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः १६९)

समय ही परमात्मा है ।

Time alone is God.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६७. किं गतासोस्तु भेषजैः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२१८)

मृतक पुरुष को भला औषधि देने से क्या लाभ ?

What is the use of administering medicine to a dead person ?

६८. कुलजे वृत्तसम्पन्ने
धर्मज्ञे सत्यवादिनि ।
महापक्षे धनिन्यार्ये
निक्षेपं निक्षिपेद् बुधः ॥

(मनुस्मृतिः, ८/१७९)

अच्छे कुल में उत्पन्न, चरित्रवान्, धर्मज्ञानी, सत्यवादी, बड़े परिवार वाले आर्य, धनवान् के पास ही बुद्धिमान् पुरुष को अपनी धरोहर रखनी चाहिये ।

A sensible man should make a deposit of his property only with a person of good family, of good conduct, well acquainted with the religion virtuous, having many relatives, wealthy and honourable.

६९. कुले कूलप्रपाते च
कालक्षेपो न विद्यते ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/५६)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वंश और नदी का किनारा, इनके गिरने में देर नहीं लगती ।

A family and the bank of a river take not time to fall.

७०. कुशासनं सदा पूतं
जपहोमार्चनादिषु ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ७/४६)

जप, होम, अर्चन आदि क्रियाओं में कुशा का आसन सदा पवित्र होता है ।

A seat made of *kuśā* (a kind of grass) is always holy for the repetition of Om, sacrifice and worship.

७१. कृत्वा पापं न गूहेत
गूहमानं विवर्द्धते ।

(पराशरस्मृतिः, ८/६)

पाप करके उसे छुपाना नहीं चाहिये, क्योंकि छुपाने से वह और अधिक बढ़ता है ।

One should not conceal a sin after committing it, because a sin being hidden gets intensified more.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७२. **केवलं यो वृथाऽश्नाति**
तेन भुक्तं सुरासमम् ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ८/२८२)

जो केवल व्यर्थ खाता है अर्थात् निष्कर्मण्य होकर खाता है, उसका वह खाया हुआ भोजन मदिरा के समान होता है ।

The food taken by one who eats without working for it, is as useless as liquor.

७३. **कोविदार कदंबेषु**
न भुंजीयात्कदाचन ।

(हारीतस्मृतिः ६/१७)

कचनार और कदम्ब के पत्तों में कभी भोजन नहीं करना चाहिये ।

One should not eat food in the leaves of Kacnār and Kadamba trees.

७४. **क्रोधी प्रमादवान्दृप्तो**
नास्तिको विपरीतवाक् ।
निद्रालुस्तामसो याति
बहुशो मृगपक्षिताम् ॥

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ९/१६५)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो क्रोधी है, आलसी और घमंडी है, नास्तिक और मिथ्या बोलने वाला है, सदा निद्रालु और तमोगुणी है, वह अनेक बार पशु और पक्षी की योनि में जन्म लेता है।

A man, who is hot-tempered, lazy, arrogant, an atheist, a liar, a sluggard and ignorant, takes rebirth as animals and birds again and again.

७५. गणान्नं गणिकान्नं च
लोकेभ्यः परिकृन्तति ॥

(मनुस्मृतिः, ४/२१९)

समुदाय का अन्न अर्थात् चन्दे के रूप में एकत्र किया गया अन्न तथा वेश्या का अन्न मनुष्य को शुभ लोकों से पृथक् कर देता है।

Community food i.e. food collected through contributions and the food given by a prostitute, shuts a person off good regions.

७६. गुरुरग्निर्द्विजातीनां
वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः ।

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः २०८)

ब्राह्मणों का गुरु अग्नि देव है और ब्राह्मण समस्त वर्णों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का गुरु है ।

The god of fire is the teacher of the twice borns but a Brāhmaṇa is the teacher of all other costes.

७७. **गुरोः कुले न भिक्षेत ।**

(मनुस्मृतिः, २/१८४)

ब्रह्मचारी को गुरु के कुल भिक्षा में नहीं मांगनी चाहिये ।

A *Brahmachāri* should not beg from the relatives of his teacher.

७८. **गोमूत्रं गोमयं क्षीरं**
दधि सर्पिः कुशोदकम् ।
निर्दिष्टं पंचगव्यं च
पवित्रं कायशोधनम् ॥ (लघुशातातपस्मृतिः)

गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी ये पंचगव्य और कुशा का जल, देह-शुद्धि करने वाला होता है ।

Urine of cow, cowdung, cowmilk, curd and ghee, these five things and the (Kuśa) grass-water are purifiers of the body.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७९. **गोमयेनोपलिप्ता भूः**
पवित्रा सर्वकर्मसु ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः १०९)

गोबर से लिपी हुई भूमि समस्त कार्यों में पवित्र मानी गयी है ।

The ground, smeared by cowdung is pure for all rituals.

८०. **चत्वार्येतानि कर्माणि**
सन्ध्यायां वर्जयेद् बुधः ।
आहारं मैथुनं निद्रां
तथा संपाठमेव च ॥

(संवर्तस्मृतिः श्लोकः ९६)

सन्ध्या काल में विद्वान् को ये चार बातें छोड़ देनी चाहिये- भोजन, मैथुन, निद्रा, और अध्ययन ।

A wiseman should abstain from these four things is the evening eating, copulation, sleeping and study.

८१. **चराणामन्नमचराः ।** (मनुस्मृतिः, ५/२९)

अचर पदार्थ चर प्राणियों के भोज्य हैं ।

Non-living thing are the food of living creatures.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८२. जनन्यां संस्थितायां तु
समं सर्वे सहोदराः ।

(मनुस्मृतिः, ९/१९२)

माता के रहते हुए सब भाइयों का अधिकार समान है।

As long as the mother is alive, all the brothers have equal rights (on her).

८३. जन्म प्रभृति यत्किंचित्
सुकृतं समुपार्जितम् ।
तत्सर्वं निष्फलं याति
एक हस्ताभिवादनात् ॥

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः ३६७)

जन्म से लेकर मनुष्य ने जो कुछ भी पुण्य उपार्जित किया है, वह सब निष्फल हो जाता है, जब वह (गुरुजनों को) एक हाथ से प्रणाम करता है । भाव यह है कि प्रणाम दोनों हाथ जोड़कर करना चाहिये ।

Whatever virtue has been acquired by a man since his birth, is set at naught if he salutes his teachers with only one hand.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८४. **जानाति हि पुनः सम्यक्**
कविरेव कवेः श्रमम् ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १६२)

एक कवि ही दूसरे कवि के परिश्रम को जानता है। अन्य नहीं जान सकता।

Only a poet can appreciate the efforts of another poet.

८५. **जितेन्द्रियस्य किं शौचैः ।**

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२१८)

जिसने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया, उसे भला बाह्य शुद्धियों से क्या प्रयोजन ?

What is the use of cleanliness for the concquerer of senseorgans.

८६. **जितो येनेन्द्रियग्रामः**
स शूरः कथ्यते बुधैः ।

(दक्षस्मृतिः, ७/१९)

जिसने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया, विद्वानों के द्वारा वही शूर कहा जाता है।

He, who has conquered his semes is called brave by the learned.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८७. जीवितात्ययमापन्नो
योऽन्नमत्ति यतस्ततः ।
आकाशमिव पङ्केन
न स पापेन लिप्यते ॥

(मनुस्मृतिः १०/१०४)

जीवन का संकट उपस्थित होने पर जो पुरुष इधर उधर से अन्न भी खा लेता है तो वह पाप से लिप्त नहीं होता, जैसे आकाश कभी कीचड़ से मैला नहीं होता ।

He who, when in danger of losing his life, accepts food from whenever available, is no more tainted by sin, than the sky is tainted by mud.

८८. जीवो जीवेन हिंस्यते ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः १४५)

जीव दूसरे जीव के द्वारा ही मारा जाता है ।

A creature is killed by another creature.

८९. ज्यैष्ठ्यं गुणवयः कृतम् ।

(नारदस्मृतिः, ४/३१)

ज्येष्ठता अर्थात् बड़प्पन गुण और आयु के आधार पर होता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The seniority depends upon merit and the lifespan.

९०. तलवद् दृश्यते व्योम
खद्योतो हव्यवाडिव ।
न तलं विद्यते व्योम्नि
न खद्योते हुताशनः ॥

(नारदस्मृतिः,१/७२)

आकाश तलयुक्त दिखाई देता है और जुगनू अग्नि के समान दिखाई देता है, किन्तु वास्तव में न तो आकाश में तल है और न जुगनू में अग्नि है । (भाव यह है कि प्रत्यक्ष की भी परीक्षा करनी चाहिये)।

The sky seems to have bottom and the glowworm seems to be like a fire, but in reality, there is no bottom in the sky and no fire in the glowworm.

९१. तस्करस्यानृतं बलम् ।

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः २९)

झूठ बोलना ही तस्कर का बल होता है ।

The strength of a thief lies in his capacity to tell lies.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

९२. तस्मात् प्रत्यक्षदृष्टोऽपि
युक्तो ह्यर्थः परीक्षितुम् ।
परीक्ष्य ज्ञापयन्नर्थान्
न धर्मात्परिहीयते ॥ (नारदस्मृतिः, १/७३)

प्रत्यक्ष देखे गये अर्थ की भी परीक्षा करना उचित है। जो परीक्षा करने के पश्चात् अर्थों का ज्ञापन करता है, वह धर्म से हीन नहीं होता ।

One should alow put to test what is directly experienced. Dharma is not damaged or deseused if the knowledge is pased on after proper examination.

९३. तीर्थयात्रा विवाहेषु
संग्रामे देवतालये ।
उपनीतोत्सर्जनेषु
स्पृष्टास्पृष्टं न विद्यते ॥
(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः २२८)

तीर्थयात्रा में, विवाहों में, संग्राम में, मन्दिर में, उपनयन और उत्सर्जन में छुआछूत का विचार नहीं किया जाता ।

Untouchability is not considered and practised in a pilgrimage, a marriage

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ceremony, a battle, a temple, a sacred thread ceremony in excretion.

९४. तुल्यार्थानां विकल्पः स्यात् ।

(पुलस्त्यस्मृतिः, श्लोकः २५)

तुल्य अर्थ वाले कार्यों में ही विकल्प किया जाता है, असमान अर्थ वालों में नहीं ।

An option can be exercised only among the jobs and objects of equal value, not among these of unequal value.

९५. त्रयः परार्थे क्लिश्यन्ति
साक्षिणः प्रतिभूः कुलम् ।

(मनुस्मृतिः, ८/१६९)

ये तीन लोग सदा दूसरों के लिये ही कष्ट पाते रहते हैं-गवाह, जमानती और पारिवारिक जन ।

A deponent, a bondsman and family members, these three always suffer only for others.

९६. त्यजति भयमकृतं पापं
सुत्रिमयशः प्रमादिनं विद्या

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ह्रीः कामिनमलसं श्रीः
क्रूरं स्त्री दुर्जनं लोकः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः, श्लोकः १५४५)

पाप न करने वाले को भय छोड़ देता है । अच्छे मित्र को अपयश छोड़ देता है । प्रमादी को विद्या छोड़ देती है । कामी को लज्जा और आलसी को लक्ष्मी छोड़ देती है । क्रूर पुरुष को स्त्री और दुर्जन को लोग छोड़ देते हैं ।

A man who does not commit sins has no fear, Disgrace has no effect on a true friend. Knowledge abandons a sensual person. Shame has nothing to do with a lustful person and a lazy person repels wealth. Similarly the wife deserts a cruel man and the society a wicked person.

९७. **त्रयः स्वतन्त्रा लोकेऽस्मिन्**
राजाऽऽचार्यस्तथैव च ।
प्रतिवर्णं च सर्वेषां
वर्णानां स्वे गृहे गृही ॥

(नारदस्मृतिः, ४/३२)

इस लोक में तीन लोग ही स्वतन्त्र हैं-राजा, आचार्य, अपने-अपने वर्ण के अध्यक्ष अथवा अपने घर में गृही ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

There are three persons are independent in this world a king, a teacher and a leader and a householder in his house, belonging to each castes.

९८. दण्डस्यागतिका गतिः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/४१)

दण्ड की गति को समझना अत्यन्त कठिन है । अर्थात् दण्डनीति का रहस्य बड़ा दुर्ज्ञेय है ।

The mystery of penal system is impregnable.

९९. दर्शनात् स्पर्शनं परम् ।

(नित्याचारप्रदीपः, प्रथमभागः, पृ. ५२३)

दर्शन से स्पर्श करना अधिक श्रेष्ठ है ।

To touch is better than to just look at.

१००. दुःखं तापत्रयं प्रोक्तं
तापो हि नरकं विदुः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १४/४२)

आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक इन तीनों तापों का नाम ही दुःख है और यह ताप ही नरक नाम से जाना जाता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Sorrow is the name of three afflictions, spiritual, worldly and those ordained by gods and these afflictions are known by the name of hell.

१०१. दुर्बलेऽनुग्रहः प्रोक्तः ।

(पराशरस्मृतिः ६/५५)

अनुग्रह दुर्बल पर ही करना चाहिये, ऐसा शास्त्र में कहा गया है ।

It has been said in the holy books that favour should be done only to the weak.

१०२. दुर्लभं भारते वर्षे
जन्म तत्र मनुष्यता ।

(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता, ११/२)

भारतवर्ष में जन्म लेना अत्यन्त दुर्लभ है, उसमें भी मनुष्य जन्म अत्यन्त दुर्लभ है ।

It is very difficult to take birth in India, more so, as human being.

१०३. दुष्कृतं हि मनुष्याणा-
मन्नमाश्रित्य तिष्ठति ।

(आंगिरसस्मृतिः, श्लोकः ५७)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनुष्यों का पाप सदैव अन्न का आश्रय लेकर रहता है।

Food is always at the base of sin.

१०४. दृष्टिपूतं न्यसेत्पादम् ।

(मनुस्मृतिः, ६/४६)

चारों ओर अच्छी प्रकार देखकर ही कदम बढ़ाना चाहिये ।

One should take a step forward only after looking in all the four directions.

१०५. देवब्राह्मणराज्ञां च द्रव्यं विज्ञेयमुत्तमम् ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः-वीरमित्रोदयः व्यवहाराध्यायः, श्लोकः २७९)

देवता, ब्राह्मण और राजा का धन उत्तम जानना चाहिये।

The wealth of the gods, *Brāhmaṇa* and the king should be regarded as pure.

१०६. देवादीनामृणी भूत्वा नरकं प्रतिपद्यते । (दक्षस्मृतिः, २/४७)

देवता आदि का ऋणी होकर मनुष्य नरक को जाता है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A person indebted to gods and the like goes to hell.

१०७. द्यूतमेतत्पुरा कल्पे
दृष्टं वैरकरं महत् ।
तस्माद् द्यूतं न सेवेत
हास्यार्थमपि बुद्धिमान् ॥

(मनुस्मृतिः, ९/२२७)

यह जुआ पहले समय में भी महान् वैरभाव उत्पन्न करने वाला देखा गया है । इसलिये बुद्धिमान् पुरुष हँसी मज़ाक में भी कभी जुआ न खेले ।

In a former age also the vice of gambling has been seen to cause great enmity, A wise man, therefore, should not practise it ever for amusement.

१०८. द्वावेतौ पूजितौ स्वर्गं
नयतोऽधस्त्वपूजितौ ।
कालागतोऽतिथिर्दृष्ट-
वेदपारो गृहागतः ॥

(वेदव्यासस्मृतिः, ३/४३)

ये दो व्यक्ति पूजित होकर स्वर्ग ले जाते हैं और अपूजित होकर अधोगति को प्राप्त कराते हैं- एक तो

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किसी भी समय आया अतिथि और दूसरा घर पर आया वेद का पारंगत विद्वान् ।

These two persons, if honoured, take us to heaven and, if not honoured, take us to our down. One is an uninviated and unannounced guest and the other is a learned man, well versed in Vedas.

१०९. धनमूलाः क्रियाः सर्वाः ।

(नारदस्मृतिः, ४/४३)

समस्त क्रियाओं का मूल धन होता है ।

All the acts have their root in wealth.

११०. धनं सदा भूमिगतं प्रकुर्यात् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९२)

धन को सदा छिपा कर ही रखना चाहिये ।

The wealth should be always kept under well protection.

१११. धनायुषी गुप्ततमे तु कार्ये ।

(वसिष्ठस्मृतिः, श्लोकः १७४)

मनुष्य को अपना धन और अपनी आयु अत्यन्त गुप्त रखनी चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

One should keep his wealth and age as closely guarded secrets.

११२. धर्ममूलाः सदा श्रियः ।

(नारदस्मृतिः, १/३१)

सम्पत्तियों का मूल सदा धर्माचरण ही होता है ।

All the riches wealth are based upon the righteous actions.

११३. धर्मशास्त्रविरोधे तु
युक्तियुक्तो विधिः स्मृतः ।

(नारदस्मृतिः, १/४०)

जब दो धर्मशास्त्रों के कथन में कहीं विरोध उपस्थित हो तो तर्क और युक्ति से जो विधि उचित लगे, उसी का पालन करना चाहिये ।

If there is a contradiction between *Dharmaśāstras* statements then that should be accepted which is reasonable.

११४. धर्मार्थौ यत्र न स्यातां
शुश्रूषावापि तद्विधा ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तत्र विद्या न वक्तव्या
शुभं बीजमिवोषरे ॥

(मनुस्मृतिः, २/११२)

जहाँ न धर्म हो और न अर्थ हो, और न वैसी सेवा ही हो, वहाँ विद्या नहीं देनी चाहिये। जैसे बंजर भूमि में अच्छा बीज नहीं बोया जाता।

Knowledge should not be imported where there is neither wealth, righteousmen nor service, as in a barren piece of land, no good seed can be sown.

११५. ध्रुवं द्यूतात् कलिर्यस्माद्
विषं सर्पमुखादिव ।

(कात्यायनस्मृतिसारोद्धारः, श्लोकः ९३४)

जैसे सर्प के मुख से विष ही निकलता है, वैसे ही जुवा खेलने से सदा झगड़ा ही होता है।

As it is inevitable that a snake's mouth exits poison only, likewise only dispute can result for gambling.

११६. न कुर्याद् वेग धारणम् ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः २३८)

मलमूत्रादि के वेग को कभी भी रोकना नहीं चाहिये।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

One should never delay or obstruct calls of nature.

११७. न क्लेशेन विना द्रव्यम् ।

(दक्षस्मृतिः, ३/२३)

क्लेश के बिना द्रव्य की प्राप्ति नहीं होती ।

One cannot acquire wealth without pain.

**११८. न क्वापि विद्या वक्तव्या
कदाचिदपि चोषरे ।**

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १४/५५)

कभी भी और कहीं भी बंजर भूमि में अर्थात् कुपात्र को विद्या नहीं देनी चाहिये ।

Never and nowhere should knowledge be imparted to an undeserving person just as seeds should not be sown on barren land.

**११९. न गर्भपीडा तुलिता
पीडाऽन्या सर्वदेहिनाम् ।**

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३३८)

समस्त प्राणियों की कोई भी पीडा गर्भ की पीडा की तुलना नहीं कर सकती ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

No pain can be compared with the labour pain of a woman.

१२०. न चैवासिस्तथा तीक्ष्णः
सर्पो वा दुरधिष्ठितः ।
यथा क्रोधो हि जन्तूनां
शरीरस्थो विनाशकः ॥

(आपस्तम्बस्मृतिः, श्लोकः १०/४)

तीक्ष्ण तलवार और छेड़ा हुआ सर्प भी उतना विनाशकारी नहीं होता, जितना प्राणियों के शरीर में स्थित क्रोध विनाशक होता है ।

Neither a sharp edged sword nor an annoyed snake is so distructive as the anger located in the bodies of beings.

१२१. न जातु हीयते लेख्यं
साक्षिभिः शपथेन वा ।

(बृहस्पतिस्मृतिः, तृतीयखण्डः, पृ. १५१)

गवाहों के द्वारा या शपथ खाकर भी लिखित प्रमाण को झुठलाया नहीं जा सकता ।

A written evidence cannot be proved false by witnesses or by taking oath.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१२२. न तीर्थे स्त्र्याकुले स्नायात्
नासज्जनसमावृते ।

(वृहत्पराशरस्मृतिः २/१०५)

जिस तीर्थ पर स्त्रियों की भीड़ स्नान करती हो, वहाँ पर पुरुष को स्नान नहीं करना चाहिये तथा दुर्जनों से घिरे हुए तीर्थ पर भी स्नान नहीं करना चाहिये ।

A man should not take bath at a holy place where women are bathing and also at the place which is surrounded by evil persons.

१२३. न नर्मयुक्तं वचनं हिनस्ति
न स्त्रीषु राजन्न विवाह काले ।
प्राणात्यये सर्वधनापहारे
पञ्चानृतान्याहुरपातकानि ॥

(व्यवहारप्रकाशः, पृ. १३७)

रतिकाल में बोले गये मिथ्यावचन में पाप नहीं होता । स्त्रियों में, विवाह के समय में, प्राणों के संकट में तथा समस्त धन का अपहरण हो जाने के अवसर पर, इन पाँच स्थानों पर बोला गया असत्य पाप नहीं होता ।

Lies told during copulation do not

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

constitute a sin. Untruth spoken among women, at the time of marriage, when life is in peril or when one has been robbed of all the wealth, is no sin.

१२४. न पुत्रर्णं पिता दद्याद्
दद्यात्पुत्रस्तु पैतृकम् ।

(नारदस्मृतिः, ४/१०)

पुत्र के द्वारा लिये गये ऋण को पिता नहीं चुकाता, किन्तु पिता के ऋण को पुत्र द्वारा ही चुकाया जाना चाहिये ।

The father should not repay the debt borrowed by the son, but let a son should repay the father's debt.

१२५. न भोक्तव्यमभोज्यान्नम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२४९)

अभक्ष्य अन्न नहीं खाना चाहिये ।

The forbiden food should not be eaten.

१२६. न भोक्तव्यो बलादाधिः ।

(मनुस्मृतिः, ८/१४४)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बलपूर्वक किसी की आधि अर्थात् धरोहर का उपयोग नहीं करना चाहिये ।

Some one's property put on mortgage should not be consumed or utilised.

१२७. न यज्ञे ह्यनृतं वदेत् ।

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः ९५)

यज्ञ में कभी झूठ नहीं बोलना चाहिये ।

One should not speak a lie during the sacrifice.

१२८. न यमं यममित्याहु–
रात्मा वै यम उच्यते ।
आत्मा संयमितो येन
तं यमः किं करिष्यति ॥

(आपस्तम्बस्मृतिः, १०/३)

यम को यम नहीं कहते । आत्मा ही यम कहलाता है। जिसने आत्मा को बाँध लिया, उसका भला यमराज क्या करेगा ।

The wise do not call death as yama, but the self is known as yama. One who has conqueved self cannot be harmed by *yamarāj* (the messenger of death).

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१२९. न लोकवृत्तं वर्तेत
वृत्तिहेतोः कथंचन ।
अजिह्मामशठां शुद्धां
जीवेद् ब्राह्मणजीविकाम् ॥

(मनुस्मृतिः, ४/११)

कभी भी मनुष्य को केवल जीविका के लिये लोकाचार का पालन नहीं करना चाहिये, अपितु कुटिलता तथा शठता से रहित, ब्राह्मण के समान शुद्ध जीविका जीनी चाहिये ।

One should never, only for the sake of subsistence, follow the ways of the world. Let him live the pure, straight forward and honest life of a Brāhmaṇa.

१३०. न विषं विषमित्याहुः
ब्रह्मस्वं विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति
ब्रह्मस्वं पुत्रपौत्रकम् ॥

(बृहस्पतिस्मृतिः, श्लोकः ४६)

विष को विष नहीं कहते अपितु ब्राह्मण के धन को विष कहते हैं । विष तो एक को ही मारता है, किन्तु ब्राह्मण का धन तो पुत्र और पौत्र को भी मार देता है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The wise do not take a poison to be a real poison, but the wealth plundered from a Brāhmaṇa is known to be a real poison. The common poison destroys only a single person but the wealth of a *Brāhmaṇa* destroys even his sons and grandsons.

१३१. न वृथा शपथं कुर्यात्
स्वल्पेऽप्यर्थे नरो बुधः ।

(मनुस्मृतिः, ८/१११)

छोटी-छोटी बातों के लिये बुद्धिमान् पुरुष को व्यर्थ की कस्में नहीं खानी चाहिये ।

A wise man should not take an oath unnecessarily for trifles.

१३२. न सन्दिग्धां नावमधिरोहेत ।

(गौतमस्मृतिः, अध्यायः ९)

सन्देहयुक्त नाव पर नहीं चढ़ना चाहिये ।

One should not board a doubtful boat.

१३३. न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा ।

(लघुशातातपस्मृतिः, श्लोकः १३५)

भोजन के बाद स्नान नहीं करना चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

One should not take bath after a meal.

१३४. न हि चिन्त्यमनागतम् ।

(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता, ८/१४१)

जो अभी तक आया नहीं है, ऐसे भविष्य के विषय में नहीं सोचना चाहिये ।

One should not unduly worry about the future, the time which has not yet arrived.

१३५. न हि जातु विना दण्डं कश्चिन्मार्गेऽवतिष्ठते ।

(नारदस्मृतिः, १/६६)

बिना दण्ड के कोई भी व्यक्ति सन्मार्ग पर नहीं चलता ।

A man never follows on right path without punishment.

१३६. नहि दण्डादृते शक्यः कर्तुं पापविनिग्रहः । (मनुस्मृतिः, ९/२६३)

दण्ड के बिना पाप पर नियन्त्रण करना सम्भव नहीं है ।

Sins can never be controlled without inflicting punishment.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१३७. न होडेन विना चौरं
घातयेद् धार्मिको नृपः ।

(मनुस्मृतिः, ९/२७०)

होड अर्थात् चोरी का माल पकड़े बिना धार्मिक राजा किसी चोर को न मारे ।

A just king should never kill a thief unless the stolen goods are recovered.

१३८. नाततायिवधे दोषो
हन्तुर्भवति कश्चन ।

(मनुस्मृतिः, ८/३५१)

आततायी का वध कर देने पर वधकर्ता को कोई दोष नहीं लगता ।

There is no sin on the part of a person in killing an oppressor.

१३९. नात्मानमवमन्येत
पूर्वाभिरसम्मृद्धिभिः ।
आमृत्योः श्रियमन्विच्छे-
न्नैनां मन्येत दुर्लभाम् ॥

(मनुस्मृतिः, ४/१३७)

पिछली दरिद्रताओं को सोचकर अपना तिरस्कार नहीं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करना चाहिये । मृत्यु पर्यन्त लक्ष्मी की इच्छा करनी चाहिये । किसी भी सम्पत्ति को दुर्लभ न मानें ।

One should not despise oneself thinking of former failures. Untile death, one should seek fortune. No riches should be considered difficult to obtain.

१४०. नाद्याद् गृहेऽन्नपाकाद्यं
कदाचिदनिमन्त्रितः । (व्यासस्मृतिः, ३/४६)

बिना घर पर बुलाये कभी भी पक्वान्न भोजन नहीं करना चाहिये ।

One should never partake of food and the like in the house of anyone without being invited.

१४१. नानियुक्तेन वक्तव्यं
व्यवहारे कथंचन । (नारदस्मृतिः, ३/१)

जब तक बोलने के लिये न कहा जाये, तब तक व्यवहार (कचहरी) में नहीं बोलना चाहिये ।

Without being asked one should not intervene in the cort's proceeding.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१४२. नारुन्तुदः स्यादार्तोऽपि ।

(मनुस्मृतिः, २/१६१)

स्वयं पीडित होते हुए भी मनुष्य को किसी के लिये मर्मपीडाकारक नहीं होना चाहिये ।

Even when suffering pain, one should not cause pain to others by zurking their feelings.

१४३. नावमन्येत मेधावी कृशानपि कदाचन ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ३/६५)

बुद्धिमान् को किसी कमजोर व्यक्ति का भी अपमान नहीं करना चाहिये ।

A wise man should never humiliate or insult even a weak person.

१४४. नाश्नीयात् सन्धिवेलायाम् ।

(मनुस्मृतिः, ४/५५)

सन्धिवेला में भोजन नहीं करना चाहिये ।

One should not take meals at twilight.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१४५. नास्ति दानात्परं मित्रम्
इहलोके परत्र च ।

(अत्रिस्मृतिः, श्लोकः १४८)

दान से बड़ा इस लोक में और परलोक में कोई मित्र नहीं है ।

There is no friends greater than charity either in this world or in the other world.

१४६. नास्ति भूम्याः समो निधिः ।

(अरुणस्मृतिः, श्लोकः ९०)

भूमि के समान कोई निधि नहीं होती ।

There is no treasure comparable to land.

१४७. नास्ति मातुः परो गुरुः ।

(अत्रिस्मृतिः, श्लोकः १४८)

माता से बड़ा कोई दूसरा गुरु नहीं होता ।

There is not teacher greater than the mother.

१४८. नास्ति वेदात्परं शास्त्रम् ।

(अत्रिस्मृतिः, श्लोकः १४८)

वेद से श्रेष्ठ कोई शास्त्र नहीं है ।

There is not text nobler than the Vedas.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१४९. निक्षेपोपनिधी नित्यं
न देयौ प्रत्यनन्तरे ।

(वैदिकमनुस्मृतिः, ८/१०२)

किसी की धरोहर या निधि किसी अन्य को नहीं देनी चाहिये ।

Any thing mortgaged or any fund belonging to someone should not be given to anyone else.

१५०. नित्यं यमः प्रियद्वेष्यौ
प्राप्ते काले नियच्छति ।

(मनुस्मृतिः, ९/३०७)

प्रिय जन हो या शत्रु समय आने पर यमराज सबको पकड़ लेता है ।

Yama, the god of death, at the appointed time, captures all whether friends or foes.

१५१. नित्यं शुद्धः कारुहस्तः ।

(बोधायनस्मृतिः, १/५/५६)

कारीगर (शिल्पकार) का हाथ सदा पवित्र होता है ।

The hand of an artisan is always pure.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१५२. निराशमतिथिं कृत्वा
भुक्तवान् स प्रणष्टवान् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ६/६४)

जिसने भी अतिथि को निराश करके भोजन किया, वह नष्ट हो गया ।

He, who having disappointed a guest, takes meals, is destroyed.

१५३. निर्निमित्तो न वै मृत्युः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ७/३८८)

मृत्यु कभी बिना कारण के नहीं होती ।

Death never comes without a reason.

१५४. निर्णिक्तव्यवहारेषु
प्रमाणमफलं भवेत् ।

(नारदस्मृतिः, १/६२)

व्यवहार का निर्णय हो चुकने के बाद प्रमाण का कोई फल नहीं होता ।

The proof, submitted after declaration of the decision, is useless.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१५५. नेक्षेतोद्यन्तमादित्यं
नास्तं यन्तं कदाचन ।
नोपसृष्टं न वारिस्थं
न मध्यं नभसो गतम् ॥ (मनुस्मृतिः, ४/३७)

उगते हुये सूर्य को नहीं देखना चाहिये और न ही अस्त होते हुए सूर्य को देखें । ग्रहण होते सूर्य को, जल में प्रतिबिम्बित सूर्य को तथा आकाश के मध्य भाग में स्थित सूर्य को नहीं देखना चाहिये ।

One should never look at the rising or the setting sun or when it is eclipsed or reflected in water, or when it stands in the middle of the sky.

१५६. न्यायोपार्जित वित्तेन
कर्त्तव्यं ह्यात्मरक्षणम् ।
(पाराशरस्मृतिः, १२/४३)

न्याय से अर्जित किये हुए धन से ही अपनी रक्षा करनी चाहिये ।

Self-protection should be achieved through the wealth acquired by rightful means.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१५७. पत्नीमूलं गृहं पुंसां
यदि छन्दानुवर्तिनी । (दक्षस्मृतिः, ४/१)

स्त्री ही पुरुषों के गृहस्थाश्रम का मूल है, यदि पत्नी आज्ञाकारिणी हो तो ।

The wife the origin of the family life of a man provided she is obedient her husband.

१५८. परदारान् परद्रव्यं
हरते यो दिने दिने ।
सर्वतीर्थाभिषेकेण
पापं तस्य न नश्यति ॥

(व्यासस्मृतिः ४/५)

जो दूसरों की स्त्रियों को और दूसरों के धन को प्रतिदिन हरता है, समस्त तीर्थों में स्नान करने से भी उसका पाप नष्ट नहीं होता ।

The sins of that person can never be destroyed by taking bath in all Tīrthas (places of pilgrimage), who plunders others' wives and wealth every day.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१५९. परान्नं परवस्त्रं च
परयानं परस्त्रियः ।
परवेश्मनि वासश्च
शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः १७)

दूसरे का अन्न, दूसरे का वस्त्र, दूसरे का वाहन, दूसरों की स्त्रियाँ तथा दूसरों के घर में निवास, ये बातें तो इन्द्र की भी लक्ष्मी हर लेती हैं ।

Living on others' food, wearing others' clothes, using others' vehicles, having affairs with others' wives and dwelling in others' houses, such things destroys the prosperity even of Indra, the lord of gods.

१६०. परीक्ष्यकारिणं धीर-
मत्यन्तं श्रीर्निषेवते ।

(कात्यायनस्मृतिः, श्लोकः ३)

परीक्षा करके कर्म करने वाले धीर पुरुष के पास लक्ष्मी सदा रहती है ।

He who performs a task after due deliberation and is patient, always owns wealth.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१६१. पवित्रं परमं पुण्यं
स्मृतिवाक्यं न लङ्घयेत् ।

(कात्यायनस्मृतिः, श्लोकः ५)

पवित्र और परम पुण्यशाली जो स्मृतिवाक्य है उसका उल्लंघन नहीं करना चाहिये ।

One should not transgress the highly purifying and holy edicts of the smṛti.

१६२. पाखण्डिनो विकर्मस्थान्
बैडालवृत्तिकान्छठान् ।
हैतुकान् बकवृत्तींश्च
वाङ्मात्रेणापि नार्चयेत् ।

(मनुस्मृतिः, ४/३०)

पाखण्डियों का, विपरीत कर्म करने वालों का, बिडालवृत्ति अर्थात् धोखेबाजों का, धूर्तों का, स्वार्थी लोगों का तथा बगुलाभक्तों का वाणी से भी सम्मान नहीं करना चाहिये ।

One should not honour, even by words, hypocrites, men who indulge in forbidden practices, men who like cats, are cheats, rogues selfish people logicians (arguing againt Vedas) and those who, like herons, are deceitful.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१६३. पादुकास्थो न भुंजीत ।

(पाराशरस्मृतिः, ६/६६)

जूते पहन कर भोजन नहीं करना चाहिये ।

One should not take food while wearing shoes.

१६४. पानमक्षाः स्त्रियश्चैव
मृगया च यथाक्रमम् ।
एतत्कष्टतमं विद्या-
च्चतुष्कं कामजे गणे ॥

(मनुस्मृतिः, ७/५०)

कामजन्य दोषों में ये चार बड़ा भयानक कष्ट देते हैं–मदिरापान, जुआ खेलना, स्त्रियों की कामना करना और शिकार खेलना ।

Drinking, gambling, having desire for women and hunting, these four are the most painful and pernicious of the defects that spring from love of pleasure.

१६५. पावकः सर्वमेध्यं वै ।

(अत्रिसंहिता, श्लोकः १४१)

अग्नि सबको पवित्र करने वाली होती है ।

Fire is all purifier.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१६६. पितुर्दशगुणं माता
गौरवेणातिरिच्यते ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १४/६१)

पिता की अपेक्षा माता अपने गौरव के कारण दस गुणा महान् है ।

A mother is ten times greater than the father due to her dignity.

१६७. पूर्वपक्षेऽधरीभूते
भवन्त्युत्तरवादिनः ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, व्यवहाराध्यायः, श्लोकः १७)

पूर्वपक्ष के निरस्त हो जाने पर उत्तरपक्षी प्रबल होते हैं।

When the first part of an argument is defeated, The latter part gains strength.

१६८. प्रजास्तत्र विवर्द्धन्ते
नेता चेत्साधु पश्यति ।

(विष्णुस्मृतिः, तृतीयः अध्यायः, पृ. ४११)

यदि नेता ठीक-ठीक देखता है तो वहाँ प्रजा सम्मृद्ध होती है ।

The people progress there if their leader sees well.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१६९. प्रत्यक्षमनुमानेन
न कदाचित्प्रबाध्यते ।

(कात्यायनस्मृतिः, तृतीयखण्डः, पृ. १४५)

अनुमान के द्वारा प्रत्यक्ष प्रमाण का बाध कभी नहीं किया जा सकता ।

Actual experience can never be surpassed by inference.

१७०. प्रयुञ्जानोऽग्नि शुश्रूषां साधयेद् देहमात्मनः ।

(मनुस्मृतिः २/२४८)

अग्निहोत्र करते हुए ब्रह्मचारी को अपनी देह को बलिष्ठ बनाना चाहिये ।

A celibate, while conducting oblations to the sacred fire, should make his physique stronger.

१७१. फलं कतकवृक्षस्य
यद्यप्यम्बुप्रसादकम् ।
न नामग्रहणादेव
तस्य वारि प्रसीदति ॥

(मनुस्मृतिः, ६/६७)

यद्यपि निर्मली वृक्ष का फल जल को स्वच्छ कर देता है, किन्तु उसका केवल नाम लेने से ही जल स्वच्छ

Funding by IKS-MoE

नहीं होता, अपितु उस फल को जल में मिलाना पड़ता है। भाव यह है कि क्रिया के बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं होता।

Though the fruit of the Kataka tree (the cleaning nut) cleans water but the water is not cleaned simply by uttering its name. It has to be mixed with water to clean it for attainment of an objective, deeds are needed, not mere words.

१७२. बलं मूर्खस्य मौनत्वम् ।

(शंखलिखितस्मृतिः, श्लोकः २९)

मौन रहना ही मूर्ख का बल होता है।

To keep silence is the strength of a stupid person.

१७३. बलाद् दत्तं बलाद् भुक्तं
बलाद्यच्चापि लेखितम् ।
सर्वान् बलकृतानर्था-,
नकृतान् मनुरब्रवीत् ॥

(मनुस्मृतिः, ८/१६८)

बलपूर्वक दी गयी वस्तु, बलपूर्वक किया भोग और बलात् लिख़ाया गया लेख, इस प्रकार जितने भी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बलपूर्वक कराये गये कार्य हैं वे सब न किये हुए के ही समान हैं । ऐसा मनु ने कहा.है ।

What is given by force, what is enjoyed by force, and what has been caused to be written by force, and all other transactions done by force are equal to not having been done at all.

१७४. बालोऽपि नावमन्तव्यः ।

(मनुस्मृतिः, ७/८)

(सत्पुरुषों को) किसी बालक का भी अपमान नहीं करना चाहिये ।

Even an infant must not be humiliated.

१७५. बहुत्वं परिगृह्णीयात्
साक्षिद्वैधे नराधिपः । (मनुस्मृतिः, ८/७३)

यदि दो गवाहों में विरोध उपस्थित हो तो राजा का कर्त्तव्य है कि वह बहुमत की बात माने ।

In case of a conflict between two witnesses, the king's duty is to accept as true the evidence of the majority.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१७६. भाग्यहीने धनं नास्ति ।

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः ३७१)

भाग्यहीन पुरुष को धन प्राप्त नहीं होता ।

A star crossed person does not obtain wealth.

१७७. भावदुष्टं न भुञ्जीत ।

(पराशरस्मृतिः, ६/३८)

यदि खिलाने वाले की भावना दूषित हो तो उसका भोजन नहीं खाना चाहिये ।

If the one who entertains has a vile motive, food offered by him should not be accepted.

१७८. भावदुष्टो न भोज्यः स्यात् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १५२)

भावना से दूषित भोजन खाने योग्य नहीं होता ।

The food presented with bad idea, should not be eaten.

१७९. भिषङ्मिथ्या चरन् दण्ड्यः ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, श्लोकः २४२)

मिथ्या आचरण करने वाला पाखण्डी वैद्य दण्डनीय है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A hypocrite physician indulging in false conduct deserves punishment.

१८०. भोज्यं भोज्यमगर्हितम् ।

(मनुस्मृतिः, ५/२४)

दोषरहित अथवा अनिन्दित भोजन ही खाना चाहिये।

One should eat only that food which is undefiled and uncensured.

१८१. मधुपर्के च सोमे च
नोच्छिष्टं धर्मतो विदुः ।

(पाराशरस्मृतिः, ७/३५)

मधुपर्क और सोमरस धर्मानुसार उच्छिष्ट नहीं माने जाते ।

Wisemen do not consider according to the Dharma (law) *Madhuparka* and *Somarasa* to be defiled.

१८२. मनःपूतं समाचरेत् । (शंखस्मृतिः, ७/६)

मन से पवित्र होकर ही आचरण करें ।

Let one behave with a clear heart.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१८३. मन्त्रिदोषो यथा राज्ञः
पत्युर्जायाकृतो यथा ।
तथा शिष्यकृतो दोषो
गुरुमेति न संशयः ॥

(लक्षणसंहिता, १/२८)

जैसे मन्त्री का दोष राजा का दोष माना जाता है और पत्नी का किया हुआ अपराध पति का अपराध माना जाता है, वैसे ही शिष्य का दोष गुरु को ही जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं ।

As the minister's fault goes to the king, as the wife's fault goes to her husband, so the pupil's fault goes to the teacher. There is no doubt here.

१८४. मन्दरस्यापि शिखरं
निर्मानुष्यं न शिष्यते ।
मनुष्यदुर्गं दुर्गाणां
मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ॥

(मनुस्मृतिः, ७/७४)

मन्दराचल का शिखर भी मनुष्यों से खाली नहीं बचा है । इसलिये दुर्गों का भी दुर्ग मनुष्य ही है ।

Even the top of the Mandar hill is not

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

devoid of man, hence only man is the best of all the forts.

१८५. मरणं जन्मने जन्म
मरणायैव केवलम् ।

(नारदपाञ्चरत्नम्, ५/५१)

मृत्यु जन्म के लिये ही होती है और जन्म मरने के लिये ही होता है ।

One dies to be born again and one takes birth to die.

१८६. मातरः प्रथमं पूज्याः
पितरश्च ततः परम् ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः १९३)

सबसे प्रथम माताएँ ही पूजनीय होती हैं, पिताओं की पूजा उनके पश्चात् करनी चाहिये ।

First and foremost mothers are worthy of worship. Fathers should be worshipped after that.

१८७. मातापित्रोः परं तीर्थम् ।

(व्यासस्मृतिः, ४/१२)

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माता और पिता सबसे बड़े तीर्थ हैं ।

Parents are the greatest objects of pilgrimage.

१८८. मातृवत्परदारांश्च
परद्रव्याणि लोष्ठवत् ।
आत्मवत्सर्वभूतानि
यः पश्यति स पश्यति ॥

(आपस्तम्बस्मृतिः, १०/११)

जो परस्त्रियों को माता के समान, दूसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान तथा सब प्राणियों को अपने समान देखता है वही वास्तव में देखता है ।

He alone really sees who views other women as his mother, others' wealth as dust and all other being like himself.

१८९. मुखशुद्धौ हि शुद्धिः स्याद्
व्यवहारस्य नान्यथा ॥

(नारदस्मृतिः, २/४४)

(उच्चारण के) शुद्ध होने पर ही (मुकदमा) व्यवहार शुद्ध हो सकता है, इसका कोई अन्य उपाय नहीं है ।

On the puriety of the mouth

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(pronunciation), the purity of dealing is possible, otherwise not.

१९०. मुनीनामात्मविद्यानां
द्विजानां यज्ञयाजिनाम् ।
वेदव्रतेषु स्नाताना-
मेकोऽपि परिषद् भवेत् ॥

(पाराशरस्मृतिः, ८/२१)

धारणा ध्यानादि के द्वारा आत्मतत्त्व को जानने वाले मुनि, यज्ञ करने वाले ब्राह्मण तथा वेदव्रती स्नातक इनमें से एक पुरुष भी पूरी सभा कहलाता है।

A sage who has realised the self with meditation, a *brāhmaṇa* who performs *yajña* (sacrifice) and one learned in vedas, any one out of these alone is called a full assembly.

१९१. मूलेनैव विनष्टेन
सर्वमेतद् विनश्यति । (दक्षस्मृतिः, २/४९)

जब मूल ही नष्ट हो जाये तो यह सब कुछ नष्ट हो जाता है।

Everything is destroyed after the destruction of the root.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१९२. मृत्तिकाः सप्त न ग्राह्या
वल्मीके मूषिकस्थले ।
अन्तर्जले श्मशानान्ते
वृक्षमूले सुरालये ॥ (अत्रिसंहिता, श्लोकः ३२१)

सात प्रकार की मिट्टी नहीं लेनी चाहिये–वल्मीक से, चूहों के बिल से, जल के अन्दर से, श्मशान से, वृक्षों की जड़ में से और देवालय से ।

Earth of seven kinds should not be taken out-from *valmīka*, a hole where mice live, under water, a crematorium, roots of trees and temples.

१९३. मृत्तिकानां सहस्रेण
चोदकुम्भशतेन च ।
न शुद्ध्यन्ति दुरात्मानो
येषां भावो न निर्मलः ॥

(दक्षस्मृतिः, ५/१०)

जिन पुरुषों का अन्तःकरण शुद्ध नहीं है वे हज़ार बार मिट्टी से और सौ घड़े जल से भी शुद्ध नहीं हो सकते ।

People whose conscience is not clean, cannot become pure even by washing

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

themselves a thousand times with earth in hudreds of pots of water.

१९४. मोघमन्नं तु चाश्नाति योऽतिथिं न प्रपूजयेत् । (वृद्धगौतमस्मृतिः, ६/६५)

वह तो व्यर्थ ही अन्न खाता है जो अतिथि की पूजा नहीं करता ।

It is no use one's eating if one does not honour a guest.

१९५. यज्ञाः सङ्कल्पजाः स्मृताः ।

(मनुस्मृतिः, २/३)

सभी यज्ञ (आदि शुभ कार्य) संकल्प से ही उत्पन्न होते हैं ।

All auspicious acts like sacrifice are said to originate from their conception.

१९६. यत्पापं भ्रूणहत्यायां द्विगुणं गर्भपातने ।

(पराशरस्मृतिः, ४/२०)

भ्रूणहत्या में जो पाप होता है गर्भपात में उससे दुगुना पाप होता है ।

The sin in foeticide, gets doubled in abortion.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१९७. यत्र पानमपेयस्य
देशेऽभक्ष्यस्य भक्षणम् ।
अगम्यागामिता यत्र
तं देशं परिवर्जयेत् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १/४५)

जिस देश में अपेय पदार्थ पिया जाता हो और अभक्ष्य पदार्थ खाये जाते हों तथा अगम्य स्त्रियों के साथ गमन किया जाता हो उस स्थान को छोड़ देना चाहिये।

Let one abandon the place where there is drinking of undrinkables, eating of uneatable food and copulation with the forbidden women.

१९८. यथा दायस्तथा ग्रहः ।

(मनुस्मृतिः, ८/१८०)

जैसा देना वैसा लेना ।

As you sow, so you reap.

१९९. यथा पक्वेषु धान्येषु
निष्फलाः प्रावृषो गुणाः ।
निर्णिक्तव्यवहाराणां
प्रमाणमफलं तथा ॥ (नारदस्मृतिः, १/६३)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे धान के पक जाने पर वर्षा का होना व्यर्थ हो जाता है, उसी प्रकार व्यवहाररूप अभियोग का निर्णय हो जाने के पश्चात् उपस्थापित किया गया प्रमाण व्यर्थ हो जाता है ।

As the rain on the ripe crops is useless, so the proof, provided after decision of a dispute is useless.

२००. यथाविधेन द्रव्येण
यत्किंचित्कुरुते नरः ।
तथाविधमवाप्नोति
स फलं प्रेत्य चेह च ॥

(नारदस्मृतिः, ४/४९)

मनुष्य जिस प्रकार के द्रव्य (धन) से जो कुछ कार्य करता है, वह इस लोक में तथा मरने के पश्चात् वैसा ही फल प्राप्त करता है ।

A man performs whatever act through which kind of things or wealth, he attains the same type of results, in this life and after the death.

२०१. यथा ह्यग्नौ स्थितं दीप्ते
शुद्धिमायाति काञ्चनम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एवं धनागमाः सर्वे
शुद्धिमायान्ति राजसु ॥

(नारदस्मृतिः, ४/१७/४६)

जैसे प्रदीप्त अग्नि में तपकर सुवर्ण शुद्ध हो जाता है, वैसे ही राजाओं के पास आकर सभी धन शुद्ध हो जाते हैं ।

As a gold, thrown into the burning fire remains pure, so, all the wealths are pure having attained by the king.

२०२. यद्यत् परवशं कर्म
तत्तद्यत्नेन वर्जयेत् । (मनुस्मृतिः, ४/१५९)

जो जो पराधीन कर्म हैं उस-उसको यत्नपूर्वक छोड़ देना चाहिये ।

Let one carefully avoid all undertakings the success of which depends on others.

२०३. यथा ह्येकेन चक्रेण
न रथस्य गतिर्भवेत् ।
तथा पुरुषकारेण
विना दैवं न सिध्यति ॥

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, आचाराध्यायः, श्लोकः ३५१)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे एक पहिये से रथ नहीं चलता उसी प्रकार पुरुषार्थ के बिना भाग्य सिद्ध नहीं होता ।

As the movement of a chariot is not possible with only one wheel, similarly one cannot obtain good fortune without fortitude.

२०४. यादृशं फलमाप्नोति
कुप्लवैः सन्तरन् जलम् ।
तादृशं फलमाप्नोति
कुपुत्रैः सन्तरंस्तमः ॥

(मनुस्मृतिः, ९/१६१)

जैसे टूटी फूटी नाव से नदी को पार करने वाला पुरुष फल पाता है वैसा ही फल कुपुत्रों से अन्धकार को अर्थात् दुःख को पार करने वाला पुरुष पाता है ।

As a man crossing a river in a dilapidated boat, gets the fruit of his efforts, so does the man who tries to cross the gloom of the world with the help of bad sons.

२०५. यावताऽन्नेन तृप्तिः स्यात्
तावद् भैक्षं समाचरेत् ।

(हारीतस्मृतिः, ६/१३)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जितने अन्न से उदर की तृप्ति हो जाये उतनी ही भिक्षा ग्रहण करनी चाहिये ।

A beggar should ask for only that amount of food which is sufficient to satisfy his hunger.

२०६. यो भावयति या सूते
येन विद्योपदिश्यते ।
ज्येष्ठो भ्राता च भर्त्ता च
पञ्चैते गुरवः स्मृताः ॥

(विष्णुस्मृतिः, नित्याचारपद्धतिः प्रथमभागः, पृ. ४०३)

जो हित की भावना करता है अर्थात् पिता, जो उत्पन्न करती है अर्थात् माता, जो विद्या देता है, बड़ा भाई और भर्त्ता (भरण करने वाला) ये पाँच लोग गुरुजन माने गये हैं ।

Father who is a well wisher, mother who gives birth, one who imports knowledge, elder brother and one who feeds, these five have been called *Gurus* (teachers).

२०७. ये तु सभ्याः सभां प्राप्य
तूष्णीं ध्यायन्त आसते ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यथा प्राप्तं न चेद् ब्रूयुः
सर्वे तेऽनृतवादिनः ॥

(व्यवहारप्रकाशः पृथिवीचन्द्रनृपतिविरचितः, पृ. ९)

जो लोग सभा में पहुँच कर कुछ सोचते हुए से चुपचाप बैठे रहते हैं और बोलने का अवसर प्राप्त होने पर भी नहीं बोलते, वे वास्तव में झूठ बोलने वाले लोग ही कहलाते हैं ।

Those persons who sit silent engrossed in thought in meeting and do not speak even when an opportunity is given to do, are in fact considered liars.

२०८. रत्नं हि सुन्दरी नारी
साधुर्नारी निधिः स्मृता ।

(मनुस्मृति-भूमिका, सत्यभूषणयोगी सम्वत्सरः २०२२)

सुन्दर स्त्री एक रत्न है, किन्तु पतिव्रता स्त्री एक खजाना है ।

A beautiful woman is a jewel but a faithful wife is a treasure.

२०९. राजप्रतिग्रहात्सर्वं
ब्रह्मवर्चसमेव च ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh

नश्यतीति न सन्देह
इत्याह भगवान्यमः ॥

(बृहद्यमस्मृतिः, ५/५८)

राजा की सहायता स्वीकार करने से समस्त ब्रह्मवर्चस् नष्ट हो जाता है ऐसा भगवान् यम का कहना है ।

By accepting the financial aid of king. The vigour of a *Brāhmin* is destroyed. This has been so declared by lord Yama (the messenger of death).

२१०. राज्ञां राष्ट्रकृतं पाप-
मिति धर्मविदो विदुः ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ७/१८९)

राष्ट्र के द्वारा किया गया पाप राजा का पाप माना गया है, ऐसा धर्मज्ञानी लोग कहते हैं ।

A sin done by the nation has been considered a sin committed by the king. Those who are well-versed in *Dharma* say it.

२११. लक्ष्मीः स्थिरतरा गेहे
न तिष्ठत्येव कुत्रचित् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १३०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लक्ष्मी स्थिर होकर किसी भी घर में नहीं रहती ।

The wealth, does not stay for a long time in any house.

२१२. लोकयात्रा न धर्मतः ।

(व्यासस्मृतिः, ४/२७)

केवल धर्म के सहारे लोकयात्रा नहीं चलती ।

To maintain the conventional custom is not possible through *Dharmaśāstra*.

२१३. लोकेऽस्मिन् मंगलान्यष्टौ
ब्राह्मणो गौर्हुताशनः ।
हिरण्यं सर्पिरादित्य
आपो राजा तथाऽष्टमः ॥

(नारदस्मृतिः, ४/१७/५४)

इस लोक में आठ तत्त्व मंगलकारी होते हैं - ब्राह्मण, गौ, अग्नि, सुवर्ण, घृत, आदित्य, जल और आठवां राजा ।

There are eight auspicious things in this world-*Brāhmaṇa*, a cow, fire, gold, ghee, sun, water and eighth is a king.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२१४. लोष्ठमर्दी तृणच्छेदी
नखखादी च यो नरः ।
स विनाशं व्रजत्याशु
सूचकोऽशुचिरेव च ॥

(मनुस्मृतिः, ४/७१)

मिट्टी के ढेले को मलने वाला, तिनका तोड़ने वाला, नाखून चबाने वाला, चुगलखोर और अपवित्र रहने वाला मनुष्य जल्दी ही विनाश को प्राप्त हो जाता है।

A man who crushes a clod of earth, breaks off grass blades or bites his nails and a back-biter and he who remains unclean, is soon ruined.

२१५. वचस्तथाविधं ब्रूयाद्
यथा न नरकं व्रजेत् ।

(नारदस्मृतिः, ३/१५)

मुकदमे में वचन उस प्रकार का बोलना चाहिये जिससे बाद में नरक न जाना पड़े ।

Let him speak so, by which he would not go to hell.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२१६. वर्ज्यं पर्युषितं पुष्पं
वर्ज्यं पर्युषितं जलम् ।
न वर्ज्यं तुलसीपत्रं
न वर्ज्यं जाह्नवी जलम् ॥

(विष्णुस्मृतिः, नित्याचारप्रदीपः, प्रथमभागः पृ. ६२३)

बासी पुष्प और बासी जल का त्याग कर देना चाहिये किन्तु तुलसी पत्र और गङ्गा का जल बासी होने पर भी नहीं छोड़ना चाहिये ।

Stale flowers and stale water should be abandoned but the stale leaf of *Tulsī* and the stale water of the *Gaṅgā* should never be abandoned.

२१७. वसन्वा यत्र तत्रापि
स्वाचारं न विवर्जयेत् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १/४७)

मनुष्य चाहे किसी देश में रहे किन्तु अपना निर्धारित आचरण नहीं छोड़ना चाहिये ।

One should not abandon one's prescribed conduct irrespective of the land where he resides.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२१८. **वित्तापेक्षं भवेदिष्टम् ।**

(यमस्मृतिः, श्लोकः ६९)

यज्ञादि कार्य धन की अपेक्षा करते हैं ।

Rituals like *yajña* (sacrifice) in order to be performed need money.

२१९. **विधिवत्कर्म कर्त्तव्यं ज्ञानेन सह सर्वदा ।**

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः १३९)

सदा ज्ञान के साथ विधिपूर्वक ही कर्म करना चाहिये विधि को छोड़कर नहीं ।

Duty should be performed in the prescribed manner always with proper knowledge, never without following the prescribed procedure.

२२०. **विविधानि च शिल्पानि समादेयानि सर्वतः ।** (मनुस्मृतिः २/२४०)

अनेक प्रकार की कलायें सब दिशाओं से ग्रहण कर लेनी चाहिये ।

Various arts should be acquired from all quarters.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२२१. विवदन् बहुभाषी सन्
न कुर्वीत भुजिक्रियाम् ।

(लोगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३४९)

विवाद करते हुए अथवा बहुत बोलते हुए भोजन नहीं करना चाहिये ।

Making a dispute or speaking a lot, one should not eat the food.

२२२. विषादप्यमृतं ग्राह्यम् । (मनुस्मृतिः, २/२३९)

विष से भी अमृत का ग्रहण कर लेना चाहिये ।

Nector should be sought and obtained even from poison.

२२३. वृत्तिलोपो विगर्हितः ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः २४२)

किसी की आजीविका का नाश करना विशेष रूप से निन्दनीय है ।

To destroy one's means of livelihood is particulary contemptible.

२२४. व्यवहारो हि बलवान्
धर्मस्तेनावहीयते । (नारदस्मृतिः, १४०)

Funding by IKS-MoE

व्यवहार (न्यायालय का फैसला) बलवान् होता है। व्यवहार के द्वारा धर्म हीन बना दिया जाता है।

The transaction of the court is always strong. Dharma presented by the treats is made weak by that.

२२५. व्यसनानि दुरन्तानि । (मनुस्मृतिः, ७/४५)

व्यसनों का परिणाम बुरा होता है।

The result of all bad habits is bad.

२२६. शयनस्थो न भुञ्जीत ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३४९)

शय्या पर बैठकर भोजन नहीं करना चाहिये।

One should not eat the food sitting on the bed.

२२७. शास्त्रातिगः स्मृतो मूर्खः ।

(बौधायनस्मृतिः, ५/७७)

शास्त्र का उल्लंघन करने वाला मूर्ख कहा गया है।

A man who violates the *śāstra*, is declared stupid.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२२८. शुचीनामशुचीनां च
सन्निपातो यथाम्भसाम् ।
समुद्रे समतां याति
तद्वद् राज्ञो धनागमः ॥

(नारदस्मृतिः, ४/१७/४५)

जैसे पवित्र और अपवित्र सभी जलों का समुदाय समुद्र में आकर एक समान हो जाता है, वैसे ही राजकोष में आकर सभी धन एक समान हो जाते हैं ।

As the various waters become equal in the ocean, like wise, all the wealths become equal in the kings treasure.

२२९. शौचाचारविहीनस्य
समस्ता निष्फलाः क्रियाः ।

(दक्षस्मृतिः, ५/२)

शौच और सदाचार से रहित पुरुष की समस्त क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं ।

All the sacrificial acts of a person become fruitless who is devoid of cleanliness and good conduct.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२३०. श्मशानेष्वपि तेजस्वी
पावको नैव दुष्यति । (मनुस्मृतिः, ९/३१८)

तेजस्वी अग्नि श्मशानों में अपवित्र नहीं होती।

A brilliant fire is not contaminated even in crematoria.

२३१. श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वान्
स्वधर्मे निविशेत वै । (मनुस्मृतिः, २/८)

श्रुति को प्रमाण मानकर विद्वान् पुरुष को अपने धर्म में ही प्रवृत्त होना चाहिए ।

On the authority of the revealed texts, a learned person should be intent on the performance of his duties only.

२३२. सकामायां तु कन्यायां
संगमे नास्त्यति क्रमः ।
(नारदस्मृतिः, ४/१२/७२)

यदि कन्या किसी पुरुष को चाहती है तो उन दोनों का संगम होने पर कोई दोष नहीं होता ।

There is no fault in copulation with a girl if she has disire to do so.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२३३. सति प्रभूते पयसि
नाल्पे स्नायात्कदाचन ।
(वृद्धगौतमस्मृतिः, ८/२२)

प्रचुर पानी के होते हुए थोड़े पानी में कभी स्नान नहीं करना चाहिये ।

One should never bath in a little water if water is available in abundance.

२३४. सत्यपूतां वदेद् वाचम् । (शंखस्मृतिः, ७/६)

सत्य से पवित्र वाणी ही सदा बोलनी चाहिये ।

One should always utter the speech purified by truth.

२३५. सत्यानृतं तु वाणिज्यम् ।
(व्याघ्रस्मृतिः, श्लोकः ३७३)

वाणिज्य तो सत्य और मिथ्या दोनों की सहायता से चलता है ।

Commerce and trade run with the help of both truth and falsehood.

२३६. सदा काले प्रसन्नेन
कर्तव्यं कर्म निश्चितम् ।
(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः १६९)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सदा उचित समय पर ही प्रसन्न होकर निश्चित कर्म करना चाहिये ।

One should happily perform one's prescribed duties always at the proper time.

२३७. **सन्धिं छित्त्वा तु ये चौर्यं**
रात्रौ कुर्वन्ति तस्कराः ।
तेषां छित्त्वा नृपो हस्तौ
तीक्ष्णे शूले निवेशयेत् ॥

(मनुस्मृतिः, ९/२७६)

जो तस्कर रात में सेंध लगाकर चोरी करते हैं, राजा उनके हाथों को काटकर तीक्ष्ण सूली पर चढ़ा देवे ।

The king should cut off the hands of those robbers who, breaking into houses, commit theft at night and cause them to be impaled on a pointed stake.

२३८. **सभायां न प्रवेष्टव्यं**
वक्तव्यं वा समञ्जसम् ।

(नारदस्मृतिः, ३/१०)

सामान्य नियम यह है कि किसी सभा में बिना बुलाये नहीं जाना चाहिये । यदि जाना ही पड़ जाये तो उचित

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ही बोलना चाहिये ।

One should not enter an assembly without invitation if entered he should speak proper words.

२३९. समर्थो हि समर्थेन
नाविज्ञातः क्वचिद् वसेत् ।

(वेदव्यासस्मृतिः, ३/६)

समर्थ पुरुष को दूसरे समर्थ पुरुष से अज्ञात रहकर कहीं निवास नहीं करना चाहिये । अर्थात् कहीं निवास करने से पहले यह जान लेना चाहिये कि यहाँ तुमसे भी अधिक सामर्थ्यशाली कोई अन्य है या नहीं ।

A capable person should not reside at a place remaining unknown to any other capable person live. In other words, before settling at a place, one should know whether or not there is already a person more capable.

२४०. सर्वतः प्रतिगृह्णीयाद्
ब्राह्मणस्त्वनयं गतः । (मनुस्मृतिः, १०/१०२)

आपत्ति में पड़ने पर ब्राह्मण को सबसे दान ले लेना चाहिए (इसमें कोई दोष नहीं) ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A *Brāhmaṇa* who has fallen into distress, may accept donation from anybody. There is no sin involved in it.

२४१. सम्पर्काज्जायते दोषः ।

(पाराशरस्मृतिः, ३/२८)

दुष्ट के सम्पर्क से दोष उत्पन्न होता है ।

Defects are caused by coming into contact with the wicked.

२४२. सर्वकामफला वृक्षाः ।

(अत्रिस्मृतिः, ३/१८)

वृक्ष सबकी कामनाओं को पूर्ण करने वाले होते हैं ।

The trees fulfill the desires of all persons.

२४३. सर्वं परवशं दुःखं
सर्वमात्मवशं सुखम् ।

(मनुस्मृतिः, ४/१६०)

जो कुछ पराधीन है वह सब दुःख है और जो अपने वश में है वह सब सुख है ।

Every thing that depends on others, is the cause of pain and every thing that depends on oneself, gives pleasure.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२४४. सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ।

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः २०८)

अतिथि सबके लिये गुरु-तुल्य (पूजनीय) है ।

A guest is equal to the teacher (worshipable by all).

२४५. सर्वत्र जीवनं रक्षेत् ।

(शंखस्मृतिः, १७/६४)

जीवन की रक्षा सर्वत्र करनी चाहिये ।

One should protect life every where.

२४६. सर्वे प्रस्त्रवणाः पुण्याः
सर्वे पुण्याः शिलोच्चयाः ।
नद्यः पुण्याः सदा सर्वा
जाह्नवी च विशेषतः ॥

(शंखस्मृतिः, नित्याचारपद्धतिः, प्रथमभागः, पृ. २९८)

सभी झरने पवित्र होते हैं । समस्त पर्वत भी पवित्र होते हैं । नदियाँ भी सभी पवित्र हैं, विशेष रूप से गंगा सबसे अधिक पवित्र है ।

All the waterfalls are sacred, all the mountains are sacred and all the rivers are also sacred, particularly the *Gaṅgā* is the most sacred river.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२४७. सवीर्याः सफलाः पूज्या
निर्वीर्या निष्फलाः सदा ।

(ब्रह्योक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता, १०/१४०)

वीर्यवान् पुरुष ही सदा सफल और पूजनीय हैं, निर्वीर्य पुरुष सदा असफल ही होते हैं।

The valiant are always succesful and worthy of worship and cowards are always failures.

२४८. सायमप्यतिथिः पूज्यः ।

(वेदव्यासस्मृतिः, ३/७४)

अतिथि यदि सायंकाल में भी आ जाये तो वह भी पूजनीय है ।

A guest is worthy of worship if he arrives even in the evening.

२४९. संशये तु न भोक्तव्यम् ।

(पराशरस्मृतिः, ८/५)

भोजन में सन्देह हो जाने पर भोजन नहीं करना चाहिये ।

One should not eat the food if there is any doubt about its purity or cleanliness.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२५०. सुखदुःखानि तुल्यानि
यथात्मनि तथा परे । (दक्षस्मृतिः, ३/२१)

सुख-दुःख जिस प्रकार अपने को होता है दूसरे को भी वैसा ही होता है ।

As we view our sorrows and pleasures, so do others theirs.

२५१. सुखं न कृषितोऽन्यत्र
यदि धर्मेण वर्तते ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ५/१८६)

यदि धर्मपूर्वक अर्थात् सच्चे हृदय से की जाये तो कृषि से अधिक सुख अन्यत्र नहीं है ।

If done religiously and with honesty in the heart, there is nowhere more pleasure than in agriculture.

२५२. सुखं वा यदि वा दुःखं
यत्किञ्चित्क्रियते परे ।
यत्कृतं तु पुनः पश्चात्
सर्वमात्मनि तद् भवेत् ॥

(दक्षस्मृतिः, ३/२२)

जो सुख और दुःख दूसरे के लिये किया जाता है वह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब अपनी आत्मा में ही आकर प्राप्त होता है ।

Whatever pleasure and sorrow is borne for others, all that is returned to the soul itself.

२५३. सुखं ह्यवमतः शेते
सुखं च प्रति बुध्यते ।
सुखं चरति लोकेऽस्मि-
न्नवमन्ता विनश्यति ॥ (मनुस्मृतिः, २/१६३)

अपमान को सहने वाला धीर पुरुष सुख से सोता है और सुख से जागता है तथा इस लोक में सुखपूर्वक विचरता है । किन्तु अपमान करने वाला मनुष्य विनष्ट हो जाता है ।

A patient man is scorned, nevertheless may sleep with an easy mind, and wakes up with an easy mind, lives in the world happily but the one who scorns is doomed to destruction.

२५४. सुरा वै मलमन्नानाम् ।

(मनुस्मृतिः, ११/९३)

मदिरा तो अन्नों का मल है (इसलिये सुरा नहीं पीनी चाहिये) ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Wine is the faeces of grains. It, therefore should not be taken.

२५५. सुबीजं चैव सुक्षेत्रे
जातं सम्पद्यते सदा ।
(मनुस्मृतिः, १०/६९)

उत्तम बीज उत्तम खेत में बोया जाकर ही अच्छी प्रकार उत्पन्न होता है ।

A good seed, only when sown in good soil, sprouts well.

२५६. स्ववीर्याद् राजवीर्याच्च
स्ववीर्यं बलवत्तरम् । (मनुस्मृतिः, ११/३२)

अपने पराक्रम और राजा के पराक्रम में अपना पराक्रम ही अधिक बलशाली होता है ।

Between one's own power and that of the king. One's own power is greater.

२५७. सूक्ष्मो हि भगवान् धर्मः
परोक्षो दुर्विचारणः ।
अतः प्रत्यक्षमार्गेण
व्यवहारगतिं नयेत् ॥ (नारदस्मृतिः, १/४१)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(भगवान्) धर्म बड़ा सूक्ष्म है और परोक्ष स्वभाव वाला है । उस पर विचार करना बड़ा कठिन है । इसलिये प्रत्यक्ष मार्ग से व्यवहारनीति का ही आश्रय लेना चाहिये ।

The nature of Dharma is very subtle, invisible and unthinkable, so one should behave through the perceptual way.

२५८. स्तेनाः साहसिकाश्चण्डाः
कितवा वधकाश्च ये ।
असाक्षिणस्ते दुष्टत्वात्
तेषु सत्यं न विद्यते ।। (नारदस्मृतिः, ४/१५९)

चोर, डाकू, क्रोधी, धूर्त और हत्यारे लोग कभी भी गवाह नहीं बन सकते, क्योंकि दुष्टता के कारण उनमें सत्य नहीं होता ।

The thieves, robbers, cruels, cunnings and murderes do not deserve to be a witness in the court because of wickedness, the truth does not stay in their words.

२५९. स्त्रीणां साक्ष्यं स्त्रियः कुर्युः ।

(मनुस्मृतिः, ८/६८)

स्त्रियों का गवाह स्त्रियों को ही बनाना चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Only women should give evidence for women.

२६०. स्नानभोजनजप्येषु
सदा मौनं समाचरेत् ।

(अत्रिसंहिता, श्लोकः ३२३)

स्नान, भोजन और जप के समय मौन धारण करना चाहिये ।

Silence should be observed at the time of bath, meals and jap (repetition of Mantras).

२६१. स्नेहेनापि समं पत्न्या
शय्यास्थोऽपि हि मानवः ।
पुष्पैरपि न युध्येत
युद्धं तत्र विपत्तये ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/४७)

शय्या पर बैठे हुए भी पत्नी के साथ स्नेह से भी फूलों से भी झगड़ा न करे, क्योंकि युद्ध सदा विपत्तिकारक ही होता है ।

A man, sitting on the bed should not quarrel even with his wife, even with

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

love or even with flowers, because a quarrel always results in trouble.

२६२. हतं ज्ञानं क्रियाहीनं
हतास्त्वज्ञानिनः क्रियाः ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः १४१)

क्रिया से रहित ज्ञान नष्ट हो जाता है और अज्ञानी की क्रियायें नष्ट हो जाती हैं ।

The knowledge devoid of action is ruined and the actions of the ignorant persons are ruined.

व्यवहारनीतिः

१. ऋणं लेख्यकृतं देयम् ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, व्यवहाराध्यायः, श्लोकः ९०)

लिखित रूप में लेकर ही ऋण देना चाहिये ।

A debt should be given only on a written contract.

२. कर्त्तव्यं वचनं सर्वैः ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, व्यवहाराध्यायः, श्लोकः १८८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सभी को अपने वचन का पालन करना चाहिये ।

Everyone should keep their word.

३. **पूर्वपक्षेऽधरीभूते**
भवन्त्युत्तरवादिनः ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, व्यवहाराध्यायः, श्लोकः १७)

पूर्वपक्ष के निरस्त हो जाने पर उत्तरपक्षी प्रबल होते हैं ।

When the first part of an argument is defeated. The latter part gains strength.

४. **स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु**
बलवान् व्यवहारतः ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, व्यवहाराध्यायः श्लोकः २१)

दो स्मृति शास्त्रों का विरोध उपस्थित होने पर व्यवहार नीति ही बलवान् होती है ।

If there is a contradiction present between two *Smṛtis*, then a practical approach is the best policy.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शरीरम्

१. **अशाश्वतानि गात्राणि ।**

(व्याससमृतिः ४/१९)

शरीर सदैव अनित्य है ।

A body is always in a state of transition.

२. **अशुचित्वं शरीरस्य ।** (शंखस्मृतिः ७/९)

शरीर अपवित्र जाना जाता है ।

The body is considered impure.

३. **क्षणध्वंसिनि कायेऽस्मिन्**
का चिन्ता मरणे रणे । (पाराशरस्मृतिः ३/३९)

यह शरीर जब क्षणभंगुर है तो युद्धभूमि में मर जाने पर फिर कैसी चिन्ता ?

If this body is transitory then why worry about death on the battle field ?.

श्रद्धा

१. **गंगातोयेषु यस्यास्थि**
प्लवते शुभकर्मणः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

न तस्य पुनरावृत्ति-
र्ब्रह्म लोकात्कथञ्चन ॥

(लघुयमस्मृतिः, श्लोकः १०)

गंगा के जल में जिस शुभकर्मामृत पुरुष की अस्थि तैरती है, उसकी ब्रह्मलोक से पुनरावृत्ति नहीं होती ।

The bones of which virtuous dead person float on the waters of the Ganga. He never comes back from the world of *Brahma.*

सज्जनः

१. **अति कुपिता अपि सुजना**
योगेन मृदु भवन्ति ।

(शार्ङ्गधरपद्धति-सज्जनखण्डः)

अत्यन्त कुपित होने पर भी सत्पुरुष मिलने पर कोमल हो जाते हैं ।

The righteous get cool and soft on meeting even though they are extremly incensed frior to this.

२. **अहो सुमनसां प्रीति-**
र्वामदक्षिणयोः समा ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः ३)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुन्दर मन वाले सत्पुरुषों का स्नेह विपक्ष तथा स्वपक्ष के लिए एक जैसा है अर्थात् सत्पुरुष सबसे समान स्नेह करते हैं।

Righteous distribute equal affection to those in favour and those against. In other words the righteous have equal affection for all.

३. तृणानि भूमिरुदकं
वाक्चतुर्थी च सूनृता ।
एतान्यपि सतां गेहे
नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥

(मनुस्मृतिः, ३/१०१)

तृणं (आसन), भूमि, जल और चौथी मधुर वाणी, ये चार वस्तुएँ सज्जनों के घर से कभी पृथक् नहीं होतीं।

The grass (i.e. an *Āsana*) the earth, the water and the fourth sweet word, these things never depart from the houses of good person.

४. देवत्वं सात्त्विका यान्ति ।

(मनुस्मृतिः १२/४०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सत्त्वगुण सम्पन्न पुरुष देवयोनि को प्राप्त होते हैं ।

A man endowed with *sattva* (novel) qualities obtains divinity.

५. **यथैधस्तेजसा बह्निः**
प्राप्तं निर्दहति क्षणात् ।
तथा ज्ञानाग्निपापं
सर्वं दहति वेदवित् ॥

(मनुस्मृतिः ११/२४७)

जैसे अग्नि अपने तेज से प्राप्त ईन्धन को जलाकर राख कर देती है, वैसे ही वेदज्ञ पुरुष ज्ञान की अग्नि से सारे पाप को जला डालता है ।

As fire, in one brief moment consumes with its bright flame the fuel that has been placed on it, likewise he who knows the vedas, destroys all guilt with the fire of his knowledge.

६. **स्वानि कर्माणि कुर्वाणा**
दूरे सन्तोऽपि मानवाः ।
प्रिया भवन्ति लोकस्य
स्वे स्वे कर्मण्यवस्थिताः ॥

(मनुस्मृतिः ८/४२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपने-अपने कर्म करते हुए भी सत्पुरुष भले ही दूर रहें, फिर भी अपने-अपने कर्तव्य में लगे हुए होने के कारण लोगों के प्रिय होते हैं ।

Noble men who follow their own particular occupation become dear to the people, even though they may live at a distance, became they perform their duties devotedly.

सत्यम्

१. **अश्वमेध सहस्त्राद्धि**
सत्यमेवातिरिच्यते ।

(व्यवहारप्रकाशः पृ. १२२)

एक हज़ार अश्वमेधों से एक सत्य ही श्रेष्ठ सिद्ध होता है ।

One truth is higher than thousand Aśwamedha yajñas (sacrifices).

२. **इहैव तस्य देवत्वं**
यस्य सत्ये स्थिता मतिः ।

(मनुस्मृतिः परिशिष्टम्, श्लोकः ६२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसकी बुद्धि सत्य में स्थित है, उसे इस लोक में ही देवत्व प्राप्त हो जाता है ।

One whose mind is rooted in truth gets the statas of a god even in this world.

३. रक्षेत्सत्यं समाहितः ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, आचाराध्यायः, श्लोकः ३५२)

सावधानी से सत्य की रक्षा करनी चाहिये ।

Truth should be protected carefully.

४. सत्यं जयति नानृतम् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः ८/११८)

सत्य की ही जय होती है, असत्य की नहीं ।

Only the *Dharma* herewith always and only the truth is victorious not the falsehood.

५. धर्मो वृथा यत्र न सत्यमस्ति
सत्यं न तद्यन्न हृदानुविद्धम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः ८/७३)

वह धर्म भी व्यर्थ है, जहाँ सत्य नहीं है और जो हृदय से अनुविद्ध नहीं है, वह सत्य नहीं है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Dharma is also useless where truth is absent and the truth is not truth which does not come from the core of the heart.

सदाचारः

१. अकार्यमनृतं फल्गु
वाक्यं तुच्छप्रभाषणम् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ६)

मिथ्या, व्यर्थ और तुच्छ वाक्य का भाषण नहीं करना चाहिये ।

One should not indulge in false, fruitless and trifling speech.

२. अग्निहोत्री तपस्वी च
वेदमध्यापयेच्च यः ।
सङ्कल्पं सरहस्यं च
तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ (व्यासस्मृतिः, ४/४३)

जो अग्निहोत्र करता है, तपस्वी है तथा जो संकल्प और रहस्य सहित वेद का अध्यापन करता है, उसे आचार्य कहते हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Wisemen say that man *Ācārya* who performs agnihotra and austerity and who teaches Vedas with Rahasya.

३. अज्ञानाद्धि कृतं पापं
वेदाभ्यासेन शुध्यति ।

(बृहद्योगि याज्ञवल्क्यस्मृतिः ११/१९)

अज्ञानपूर्वक जो पाप किया गया है वह वेदाध्ययन से नष्ट हो जाता है ।

A sin, committed unknowingly gets destroyed through the study of Vedas.

४. अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानात्
कृत्वा कर्म विगर्हितम् ।
तस्माद्विमुक्तिमन्विच्छन्
द्वितीयं न समाचरेत् ॥

(मनुस्मृतिः ११/२३२)

अज्ञान से या ज्ञानपूर्वक निन्दित कर्म को करके यदि मनुष्य उस पाप से मुक्त होना चाहता है तो उसे पुनः दोबारा वह कार्य नहीं करना चाहिये ।

Once having committed a condemnable act knowingly or unknowingly, if a person wants to rid himself or herself of it, he or

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

she should not commit the act again.

५. अतितेजस्व्यपि राजा
पानासक्तो न साधयत्यर्थान् ।

(शार्ङ्गधरपद्धतिः राजखण्डः ११३)

अत्यन्त तेजस्वी राजा भी जब मदिरापान में आसक्त हो जाता है तो किसी भी कार्य को सिद्ध नहीं कर सकता ।

Even an illustrious king, if addicted to wine, cannot accomplish any task.

६. अतिथीन्नावमन्येत ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः १२/३२)

अतिथियों का कभी भी अपमान नहीं करना चाहिये ।

One should never insult the guests.

७. अतिथिर्यस्य भग्नाश-
स्तस्य होमो निरर्थकः ।

(पाराशरस्मृतिः, श्लोकः १/४६)

जिसके घर से अतिथि निराश होकर लौट जाता है, उसका यज्ञ करना व्यर्थ है ।

It is futile for a man to perform a *yajña*

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(sacrifice) if from his house a guest returns with his hopes unfulfilled.

८. **अज्ञं हि बालमित्याहुः ।** (मनुस्मृतिः २/१२८

अज्ञानी को ही विद्वान् लोग बालक कहते हैं।

The sages have always called an ignorant man, a child.

९. **अघं स केवलं भुङ्क्ते**
यः पचत्यात्मकारणात् ।

(मनुस्मृतिः ३/११८)

जो व्यक्ति केवल अपना पेट भरने के लिये ही भोजन पकाता है वह केवल पाप खाता है।

One who prepares food only to feed himself, eats sin only.

१०. **अनाचारं हतं कुलम् ।**

(वशिष्ठस्मृतिः १/१२)

सदाचार से रहित कुल विनष्ट हो जाता है।

A race, devoid of righteous conduct is destroyed.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

११. अध्येतव्यः प्रयत्नेन
वेदो नारायणात्मकः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १७)

वेद साक्षात् नारायण स्वरूप हैं । प्रयत्नपूर्वक उसका अध्ययन करना चाहिये ।

Vedas are virtually a form of God. They should be studied with effort.

१२. अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चाति भोजनम् ।

(मनुस्मृतिः, २/५७)

अति भोजन आरोग्य के लिये अहितकर, आयु को कम करने वाला और सुख का नाश करने वाला है।

Excessive intake of food is pejudicial to health longevity and bliss.

१३. अनिशं मनसा यस्तु
पापमेवाभिचिन्तयेत् ।
कल्पकोटिसहस्राणि
निरयं चाधिगच्छति ॥

(वृद्धहारीतस्मृतिः ९/१६०)

जो निरन्तर मन से पाप का ही चिन्तन करता है, वह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हज़ारों करोड़ों युगों तक नरक में जाता है ।

One who continually contemplates sin,. is condemned to dwell in hell for crores of ages.

१४. अनृतं ये न भाषन्ते
कटुकं निष्ठुरं तथा ।
स्वागतेनाभिभाषन्ते
तेऽपि यान्त्यमरावतीम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. १०४)

जो लोग कभी मिथ्या, कड़वा तथा निष्ठुर भाषण नहीं करते हैं एवं सदैव स्वागतपूर्वक अभिभाषण करते हैं, वे लोग भी स्वर्ग प्राप्त करते हैं ।

The persons, who never speak a lie, a bitter or harsh and speak always welcoming words go to the heaven.

१५. अनृतं सुतरां पापम् ।

(अभिलषितार्थचिन्तामणिः, १/३६)

असत्य निश्चित रूप से महापाप है ।

The untruth is a great sin.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१६. अपूज्या यत्र पूज्यन्ते
पूज्या यत्रावमानिता ।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति
दुर्भिक्षं मरणं भयम् ॥

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३६५)

जहाँ अपूज्यों की पूजा होती है तथा पूजनीय पुरुषों का अपमान होता है, वहाँ तीन व्यवहार (कर्म) अवश्य होंगे-दुर्भिक्ष, मृत्यु और भय ।

Where the unworthy persons are revered and respected over are dishonoured, three distresses will surely take place there-scarcity, death and fear.

१७. अप्रणोद्योऽतिथिः सायम् ।

(मनुस्मृतिः ३/१०५)

सायंकाल के समय आये हुए अतिथि को लौटाना नहीं चाहिये ।

One should not turn out a guest who has arrived in the evening.

१८. अबद्धं मनो दरिद्रम् ।

(बोधायनस्मृतिः १/७/२८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चञ्चल मन दरिद्र होता है ।

A fickle mind is always in a state of destitution.

१९. **अभिवादनशीलस्य**
नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते
आयुर्विद्या यशो बलम् ॥

(मनुस्मृतिः २/१२१)

नित्य बड़ों का अभिवादन करने वाले तथा उनकी सेवा करने वाले की चार बातें बढ़ती हैं–आयु, विद्या, यश और बल ।

One who always salutes and constantly does service to the elders, obtains an increase of four things—age, knowledge, fame and strength.

२०. **अभ्यागतान्यथाशक्ति**
भोजयेदतिथिं सदा ।

(लघुव्याससंहिता, २/६३)

अभ्यागतों को तथा अतिथि को यथाशक्ति सदा भोजन कराना चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Let him feed a guest and persons approached at home according to one's capacity.

२१. अयाचितं धनं पूतं
शुक्लवृत्त्या समागतम् ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः ४६)

जो धन बिना मांगे प्राप्त होता है तथा पवित्र आचरण से प्राप्त होता है, वह धन पवित्र माना गया है ।

The wealth which is obtained without being asked and acquired through the means of pure conduct is considered.

२२. अरण्ये विजने नष्टं
परस्वं दृश्यते यदा ।
मनसाऽपि न लिप्यन्ते
ते प्रयान्त्यमरावतीम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. १०४)

जो लोग निर्जन जंगल में भी दूसरों के खोये हुए धन को देखकर मन से भी उसमें लिप्त नहीं होते, वे लोग स्वर्गगामी होते हैं ।

The persons, who never become attached with the other's wealth, lost in the lonely

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

forest, find place in heaven.

२३. अल्पं वा बहु वा यस्य
श्रुतस्योपकरोति यः ।
तमपीह गुरुं विद्यात्
श्रुतोपक्रियया तया ॥ (मनुस्मृतिः २/१४९)

जो व्यक्ति जिस किसी को थोड़ा या बहुत वेदज्ञान देकर उपकार करता है उस विद्या के उपकार के कारण उसे भी गुरु ही समझना चाहिये ।

A person who obliges anyone by teaching the Vedas should be considered a Guru irrespective of the amount of knowledge, by vertue of the benefit of knowledge imparted.

२४. अश्लीलवचनं चैव
न कुर्वीत कदाचन ।
(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता ८/१२९)

कभी भी कामोत्तेजक अशोभनीय वचन नहीं बोलने चाहिये ।

One should never utter erotic or disgraceful words.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२५. **असम्मानात्तपो वृद्धिः ।**

(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता ७/५१)

असम्मान को सहन करने से तप में वृद्धि होती है ।

Austerity increases by ignoring the dishonour .

२६. **अस्नात्वा नाचरेत्कर्म**
जपहोमादि किञ्चन ।

(दक्षस्मृतिः, चन्द्रिका, पृ. २९०)

बिना स्नान किये जप, होम आदि शुभ कर्म नहीं करने चाहिये ।

Righteous actions like uttering holy words and sacrifice etc. should not be performed by one without taking a bath.

२७. **अहिंसा गुरुसेवा च**
निःश्रेयसकरं परम् । (मनुस्मृतिः, १२/८३)

अहिंसा और गुरुसेवा परम कल्याणकारी कर्म हैं ।

Abstention from doing injury and serving the Guru are the best means for affairing supreme bliss.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२८. **आचारभ्रष्टदेहानां**
भवेद् धर्मः पराङ्मुखः ।

(पराशरस्मृतिः, श्लोकः ३७)

जिनका देह सदाचार से रहित है, धर्म उनसे पराङ्मुख हो जाता है ।

Dharm avoids such persons whose bodies are without righteous conduct.

२९. **आचारमूलं श्रुतिशास्त्रवित्तम् ।**

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/३७७)

वेदशास्त्र और धर्म का मूल सदाचार ही है । अर्थात् सदाचार से ही वेदों का और शास्त्रों का ज्ञान तथा धर्म की प्राप्ति हो सकती है ।

Righteous conduct is the root of the vedas and the Dharma. In other words, only though righteous conduct, one can acquire knowledge of vedas are shastras (holy books) as well as Dharma.

३०. **आचारवन्तो मनुजा लभन्ते**
आयुश्च वित्तं च सुतांश्च सौख्यम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धर्मं तथा शाश्वतमीशलोकम्
अत्रापि विद्वज्जनपूज्यतां च ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२०८)

सदाचारी पुरुष आयु, धन, पुत्र, मित्रता, धर्म, अनश्वर ईशलोक को प्राप्त करते हैं तथा इस लोक में वे विद्वज्जनों के द्वारा पूजनीय होते हैं।

Men of righteous conduct obtain a long span of life, wealth, sons, friends, Dharma, and the eternal state of God and in this world they are revered by the wise.

३१. **आचारवृक्षस्य फलं हि नाकः ।**

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ८/१२८)

स्वर्ग सदाचाररूपी वृक्ष का ही फल है ।

Heaven is the fruit of the tree of righteous conduct.

३२. **आचारश्चापि साधूनां**
प्रमाणं वेदवद् भवेत् । (मनुस्मृतिः, ४/१७९)

सत्पुरुषों का आचरण भी वेद के समान प्रामाणिक होता है ।

The conduct of righteous human being is also as authentic as the Vedas.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३३. आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः ११/२०)

सदाचार से रहित मनुष्य को तो वेद भी पवित्र नहीं कर सकते ।

Even the Vedas cannot purify a person, who is devoid of righteous conduct.

३४. आचाराद् विच्युतो विप्रो
न वेदफलमश्नुते । (मनुस्मृतिः, १/१०९)

सदाचार से हीन ब्राह्मण वेद के फल को प्राप्त नहीं करता ।

A Brahmana who departs from righteous conduct, does not reap the fruit of Vedas.

३५. आचारो हन्त्यलक्षणम् ।

(मनुस्मृतिः, ४/१५६)

सदाचार दुष्ट लक्षणों का नाश कर देता है ।

Righteous conduct destroys wicked symptomes.

३६. आचारः परमो धर्मः ।

(मनुस्मृतिः, १/१०८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सदाचार सबसे बड़ा धर्म है ।

Virtuous conduct is the noblest religion.

३७. आचार्यश्च पिता चैव
माता भ्राता च पूर्वजः ।
नार्तेनाप्यवमन्तव्या । (मनुस्मृतिः २/२२५)

मनुष्य चाहे कितना भी दुखी हो, फिर भी वह अपने गुरु, पिता, माता तथा बड़े भाई का अपमान न करे ।

However sad a person may be, he or she should not show disrespect to his or her teacher, father, mother or elder brother.

३८. आतिथ्यं सर्ववर्णानां
कर्त्तव्यं स्यादसंशयम् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ४/२०९)

सभी वर्ण के लोगों का आतिथ्य सत्कार करना निस्सन्देह कर्त्तव्य कर्म है ।

It is vindeed an act of duly to after hospitality to people of all castes.

३९. आत्मार्थं भोजनं यस्य
सुखार्थं यस्य मैथुनम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वृत्त्यर्थं यस्य चाधीतं
निष्फलं तस्य जीवितम् ॥

(लघुव्याससंहिता २/८२)

जो व्यक्ति भोजन केवल अपने उदर के लिये करता है तथा जो केवल सुख के लिये मैथुन करता है एवं जिसका अध्ययन केवल आजीविका के लिए है, उसका जीवन व्यर्थ है।

The life of that person is meaningless who takes food only for himself, who copulates with the woman only for the pleasure and who studies only for livelihood.

४०. आमृत्योः श्रियमन्विच्छेत् ।

(याज्ञवल्क्यसंहिता,१/१५३)

मृत्युपर्यन्त सम्पत्ति की कामना करनी चाहिये।

Let one disire wealth till death.

४१. इन्द्रियाणां जये शूरो
धर्मं चरति पण्डितः ।
हितप्रियोक्तितो वक्ता
दाता सम्मानदानतः ॥ (व्यासस्मृतिः, ४/६१)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इन्द्रियों को जीतने पर ही वास्तविक शूरत्व सिद्ध होता है। धर्म का आचरण करने पर ही पण्डित कहलाता है, हित और हितकारक एवं प्रिय बात बोलने वाला ही वास्तविक वक्ता है तथा सम्मानसहित देने वाला ही दाता है।

He is the real brave who conquers the senses, he is really a pandita who performs his duty, he is a true speaker who utters virtuous and pleasing and he is the real donator who gives the gift with honour.

४२. इन्द्रियाणां निरोधेन
रागद्वेषक्षयेण च ।
अहिंसया च भूताना-
ममृतत्वाय कल्पते ।

(मनुस्मृतिः, ६/६०)

इन्द्रियों के संयम से, राग और द्वेष के नाश से तथा प्राणियों की अहिंसा से मनुष्य मोक्ष के योग्य होता है।

By keeping in control one's sensual desires, by destroying prejudice and hostility and by showing non-violence to

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

other beings, does one deserve to obtain salvation.

४३. **इष्टेन लभते स्वर्गं ।**

(लघुशंखस्मृतिः श्लोकः १)

इष्ट (यज्ञों) के द्वारा मनुष्य स्वर्ग (सुखों) को प्राप्त करता है ।

One who perform his daily duties religously goes to heaven.

४४. **उत्तरे चेद् वयसि साधुवृत्त-**
स्तदेवास्य भवति नेतराणि ।

(बोधायनस्मृतिः, १/५/१०३)

आयु के उत्तर चरण में अर्थात् ज्ञान होने पर जो श्रेष्ठ आचरण किया जाता है, वही इस मनुष्य का अपना है, अन्य नहीं ।

The virtuous conduct which is practised in the later part of the life i.e. afer acquiring knowledge, that alone belong to man, nothing other.

४५. **एकाकी चिन्तयेन्नित्यं**
विविक्ते हितमात्मनः ।

(मनुस्मृतिः ४/२५८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनुष्य को अपना हित अकेले ही एकान्त में सोचना चाहिये ।

One should contemplate one's interest alone and in solitude.

४६. **कर्मणा मनसा वाचा**
सर्वेषां हितमाचरेत् ।

(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/६७)

कर्म से, मन से और वाणी से सबका हित करना चाहिये ।

One should do good to all, with action, thought and speech.

४७. **कारुण्यं प्राणिषु प्रायः**
कर्तव्यं पुण्यहेतवे ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः १४८)

पुण्य के लिए प्रायः प्राणियों पर दया करनी चाहिये ।

Let us have compassion on all beings for earning virtue.

४८. **कीटो भवति मत्सरी ।**

(मनुस्मृतिः, २/२०१)

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दूसरों से ईर्ष्या रखने वाला मनुष्य अगले जन्म में कीड़ा बनता है ।

He, who is envious of others will be reborn next as an insect.

४९. गुरुं दृष्ट्वा समुत्तिष्ठेत् ।

(उशनश्संहिता, १/२८)

गुरु को देखकर आसन से खड़ा हो जाना चाहिये ।

Let one stand up while seeing his teacher.

५०. गुरुद्वेषी पतत्यधः ।

(औशनसस्मृतिः, श्लोकः ३१)

गुरु से द्वेष करने वाला नीचे गिरता है ।

He, who has hostility towards his teacher, falls in virtue.

५१. गुरुरात्मवतां शास्ता
शास्ता राजा दुरात्मनाम् ।
अन्तः प्रच्छन्नपापानां
शास्ता वैवस्वतो यमः ॥

(उत्तरांगिरसस्मृतिः, ६/७)

आत्मज्ञानियों का अनुशासन गुरु करता है । दुष्टों का

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शासन (दण्ड के द्वारा) राजा करता है, किन्तु जिनके अन्दर पाप छुपा रहता है उनका अनुशासन वैवस्वत यमराज करता है ।

The controller of the self knowers is the teacher, the king controler the wicked with punishment, and Yama the son of Vaivaswat is the controller of those who hide their sins in their hearts.

५२. गुरुरेवेश्वरः परः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ४०)

गुरु ही परमेश्वर है ।

The teacher is verily the God.

५३. चतुर्थमायुषो भागं त्यक्त्वा सङ्गान् परिव्रजेत् ।

(मनुस्मृतिः ६/३३)

आयु के चतुर्थ भाग में आसक्ति को छोड़कर संन्यास ले लेना चाहिये ।

In the fourth stage of life, one should adopt *Saṁnyāsa* and renonnce all attachments.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५४. चाण्डालमपि वृत्तस्थं
तं देवा ब्राह्मणं विदुः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, २१/८)

यदि चाण्डाल भी सदाचार में स्थित है, तो विद्वान् लोग उसे ब्राह्मण ही मानते हैं ।

Wisemen consider even a lowcast person as a *Brāhmaṇa*, if he is righteous.

५५. जपतां जुह्वतां चैव
विनिपातो न विद्यते । (मनुस्मृतिः, ४/१४६)

जप करने वालों का और अग्निहोत्र करने वालों का पतन नहीं होता ।

There is no downfall of those who conduct Japa (recitation) and sacrifices.

५६. जामयो यानि गेहानि
शपन्त्यप्रतिपूजिताः ।
तानि कृत्याहतानीव
विनश्यन्ति समन्ततः ॥ (मनुस्मृतिः, ३/५८)

जिन घरों को स्त्रियाँ असत्कृत होकर शाप दे देती हैं, वे घर कृत्या के द्वारा नष्ट किये हुए के समान शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Those homes are destroyed which are cursed by the humiliated women like those destroyed by a terrible giantess.

५७. ज्ञात्वा देशं च कालं च
व्ययं सामर्थ्यमेव च ।
कर्तव्योऽनुग्रहः सद्भि-
र्मुनिभिः परिकीर्तितः ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ८/७६)

देश और काल को जानकर तथा व्यय और अपने सामर्थ्य को देखकर ही सत्पुरुषों को किसी पर मुनियों द्वारा प्रशंसित-अनुग्रह करना चाहिये ।

Favours as liked by the sages should be granted by virtuous men, keeping in view the place, the time, the cost and their capacity.

५८. ज्ञानं वै तीर्थमुच्यते ।

(बृद्धगौतमस्मृतिः, २०/१०)

ज्ञान निश्चित रूप से तीर्थ कहलाता है ।

Knowledge is called a sure place of pilgrimage.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५९. **ज्ञानकर्मसमायुक्तः**
परमाप्नोति पूरुषः ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यः, ९/२८)

ज्ञान और कर्म दोनों से युक्त होकर ही योगी पुरुष परब्रह्म को प्राप्त करता है ।

A person, having acquired both knowledge and action, obtains the highest stage.

६०. **ज्ञानस्य साधनं शास्त्रं**
तच्छास्त्रं गुरुवक्त्रगम् ।

(जयाख्यसंहिता, १/६२)

ज्ञान का साधन केवल शास्त्र है और वह शास्त्र गुरु के मुख में रहता है ।

Scripture is the only means of knowledge and that knowledge inhabits the mouth of the teacher.

६१. **ज्ञानेन साध्यते मोक्षः**
क्रिया ज्ञानस्य शोधिनी ।

(परमसंहिता, १२/५९)

ज्ञान के द्वारा मोक्ष की सिद्धि होती है और क्रिया ज्ञान को शुद्ध करती है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Salvation is achieved by means of knowledge and action purifies knowledge.

६२. तमसो लक्षणं कामः ।

(मनुस्मृतिः, १२/३८)

काम अर्थात् एषणा तमोगुण की पहचान है ।

Passion is the symbol of Tamas.

६३. तीर्थभूता हि साधवः ।

(पाराशरस्मृतिः ६/६१)

सत्पुरुष तो तीर्थ के समान होते हैं ।

Virtuous persons are like places of pilgrimage.

६४. त्यजेत्पर्युषितं पुष्पं
त्यजेत्पर्युषितं जलम् ।
न त्यजेज्जाह्नवीतोयं
तुलसीदलपङ्कजम् ॥

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोक १०८)

बासी फूल को और बासी जल को भले ही छोड़ दें, किन्तु गङ्गा के जल को और तुलसी के फूलों तथा पत्तों को नहीं छोड़ना चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Let one abandon the stale flower, let one abandon the stale water, but one should not abandon the water of the *Gangā* and the flowers and the leaves of *Tulsī*.

६५. त्रिदण्डग्रहणादेव
यतित्वं नैव जायते ।
अध्यात्मयोगयुक्तश्च
ब्रह्मावाप्तिर्भवेद् यतः ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/१३८)

केवल त्रिदण्ड के धारण करने से ही व्यक्ति संन्यासी नहीं हो जाता, अपितु अध्यात्मयोगी को ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है ।

There is no ascetism through the holding of three ponged stick. Only the person, who has *Adhyātma* yoga in *Saṁnyāsī*, because the attainment of supreme self is possible from that.

६६. दानैर्होमैर्जपैर्नित्यं
प्राणायामैर्द्विजोत्तमः ।
पातकेभ्यः प्रमुच्येत
वेदाभ्यासान्न संशयः ॥

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः २०३)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दान, यज्ञ, जप और नित्य प्राणायाम के द्वारा तथा वेदाभ्यास के द्वारा उत्तम द्विज पापों से मुक्त हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं।

An excellent twice form can always get rid of the sins through the charity, Japa, sacrifices, breath cantrol and by the study of Veda.

६७. दिवा वा यदि वा रात्रा-
वतिथिस्त्वाव्रजेद् यदि ।
तृणभूवारिवाग्भिस्तु
पूजयेत्तं यथाविधि ॥

(लघुविष्णुस्मृतिः, २/१०)

दिन में या रात में यदि कोई अतिथि घर पर आ जाये तो तृण, भूमि और वाणी से विधिपूर्वक उसका सम्मान करना चाहिये।

If a guest arrives either during the day or at night, one should honour him in the prescribed manner, with grass, space, water and speech.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६८. दिव्यया भाषया नूनं
सम्भाषेतैव धर्मतः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृष्ठम् १९)

जब सम्भाषण करना अनिवार्य कर्तव्य बन जाये, तब निश्चित रूप से संस्कृत भाषा का ही प्रयोग करना चाहिये ।

One should talk always through divine language (Sanskṛt language).

६९. दुराचारो हि पुरुषः
लोके भवति निन्दितः ।

(मनुस्मृतिः, ४/१५७)

दुराचारी पुरुष सदा लोक में निन्दा को प्राप्त करता है ।

A wicked person always is a target of censure in the world.

७०. दुर्लभा भगवद्यागा
भाविनो भुवि मानवाः ।

(जयाख्यसंहिता, २२/६३)

भगवान् का भजन करने वाले तथा भावनापूर्ण मनुष्य पृथ्वी पर अत्यन्त दुर्लभ हैं ।

The devout and the thoughtful persons are very rare on this earth.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७१. दुर्लभो हि शुचिर्नरः ।

(वैदिकमनुस्मृतिः, ७/११)

पवित्र मनुष्य बड़ी कठिनता से मिलता है ।

A pure hearted man is very difficult to find.

७२. दूषितान्नानि सर्वत्र त्याज्यान्येव विपश्चिता ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ५)

विद्वान् को चाहिये कि वह दूषित अन्नों का सर्वत्र त्याग करे ।

The wiseman should abandon the impure food everywhere.

७३. दृष्टिमान् शास्त्रवेदवित् ।

(अत्रिसंहिता, श्लोकः ३४७

शास्त्र और वेद का ज्ञाता ही वास्तव में दृष्टि वाला है ।

A person who knows the vedas and other *śāstra*, has a real vision.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७४. देवताप्रतिमां साध्वीं
बालां चैव तपस्विनीम् ।
घातयित्वा समाप्नोति
ब्रह्महत्यां न संशयः ॥

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ९/१७९)

देवता के समान साध्वी, तपस्विनी तथा कन्या को मारकर मनुष्य ब्रह्महत्या के पाप को प्राप्त करता है । इसमें कोई संशय नहीं है ।

By killing an ascetice girl as virtuous as a goddess, a man commits the sin of murdering *Brāhmaṇa*.

७५. धन्यं यशस्यमायुष्यं
स्वर्ग्यं वाऽतिथिपूजनम् ।

(मनुस्मृतिः, ३/१०६)

अतिथि का सत्कार सौभाग्य, यश, आयु तथा स्वर्ग देने वाला होता है ।

Honouring a guest brings good luck, fame, long life and heavenly pleasure.

७६. धर्मार्थौ यत्र न स्यातां
शुश्रूषा वापि तद्विधा ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तत्र विद्या न वक्तव्या
शुभं बीजमिवोषरे ॥ (मनुस्मृतिः, २/८७)

जहाँ न धर्म हो, न अर्थ हो अथवा वैसी सेवा भी न हो, वहाँ विद्या नहीं देनी चाहिये। जैसे ऊसर भूमि में अच्छा बीज नहीं बोया जाता।

Where there is neither Dharma (duty) nor wealth or where the due service and obedience are lacking, knowledge should not be imported as good seeds are not sown in barren land.

७७. न कार्यं नैव चाकार्यं
सर्वं कुर्यादशङ्कया।
एतदासुरकं भावं
समाश्रित्य विनश्यति ॥ (बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः)

न कोई कार्य है और न कोई अकार्य, सब कुछ निश्शंक होकर करना चाहिये यह राक्षसी भाव है जिसको धारण करके मनुष्य नष्ट हो जाता है।

There is no deed good and bad. Every thing should be done without hesitation. It is an evil thought by adopting which, a human being is doomed to ruin.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७८. न कुर्यात्कस्यचित् पीडां
कर्मणा मनसा गिरा ॥

(मनुस्मृतिपरिशिष्टं, श्लोकः ७)

कर्म से मन और वाणी से किसी को कष्ट नहीं देना चाहिये ।

One should not hurt anybody with one's action, mind and speech.

७९. न कुर्वीत वृथा चेष्टाम् । (मनुस्मृतिः, ४/६३)

व्यर्थ की चेष्टायें नहीं करना चाहिये ।

One should not make useless efforts.

८०. न गुणान् गुणिनो हन्ति
स्तौति चान्यान् गुणानपि ।
न हसेच्चान्यदोषांश्च
तेऽनसूयाः प्रकीर्तिताः ॥

(अत्रिसंहिता, श्लोकः ३४)

जो व्यक्ति दूसरे गुणवान् के सद्गुणों को दोष रूप में निर्दिष्ट नहीं करता तथा जो व्यक्ति दूसरों के गुणों की प्रशंसा करता है एवं जो व्यक्ति दूसरे के दोषों का उपहास नहीं करता है, वह व्यक्ति अनसूयक कहलाता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A person who does not hurt the attributes of qualified man, who praises other's attributes and who does not laugh on other's defects, all those are praised for being, unjealous.

८१. न जातिः पूज्यते ।
गुणाः कल्याणकारकाः ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, २१/८)

जाति की पूजा नहीं होती, केवल गुण ही कल्याणकारी होते हैं ।

The caste is not honoured but only the good qualities are honoured.

८२. न जायते न म्रियते
पुरुषः शाश्वतः सदा ।
प्रायेण मरणं नाम
पापिनामेव केवलम् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ८/४)

मृत्यु प्रायः केवल पापियों की ही हुआ करती है । शाश्वत पुरुष तो न कभी उत्पन्न होता है और न मरता है ।

There is no birth and death for the eternal

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

person. Normally death occurs only to sinful person.

८३. न तेन वृद्धो भवति
येनास्य पलितं शिरः ।
यो वै युवाऽप्यधीयान-
स्तं देवाः स्थविरं विदुः ॥

(मनुस्मृतिः, २/१३१)

मनुष्य इस बात से बूढ़ा नहीं कहलाता कि उसके केश पक गये हैं, अपितु जो युवा है किन्तु विद्वान् है, उसे ही विद्वान् लोग वृद्ध मानते हैं ।

A man is not considered venerable only because his hair is gray, the wise consider him to be venerable, who, though young, in learned.

८४. न दण्डैर्न च मौनेन
शून्यागाराश्रयेण च ।
यतिः सिद्धिमवाप्नोति
योगेनाप्नोत्यनुत्तमाम् ॥ (शंखस्मृतिः, ५/१२)

न दण्ड धारण करने से, न मौन से और न सूने घर में रहने से संन्यासी सिद्धि को प्राप्त करता है, अपितु

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

योगाभ्यास के द्वारा ही वह उत्तम सिद्धि को प्राप्त करता है ।

A saint can not find the supreme stage by adopting a staff, by keeping silence or by living in an empty house. He obtains that only with the practice of yoga.

८५. **न द्वितीयस्तु साध्वीनां**
कश्चिद् भर्तोपदिश्यते । (मनुस्मृतिः, ५/१६२)

पतिव्रता स्त्रियों का दूसरा कोई भी पति नहीं बताया गया है ।

No other person anywhere is prescribed as husband for women loyal to their nonhusbands.

८६. **न नद्यां मेहनं कुर्या-**
न्नैवाप्सु न च गोमये । (वशिष्ठस्मृतिः, ६/९)

नदी में, किसी जल में तथा गोबर में कभी भी पेशाब नहीं करना चाहिये ।

One should never urinate in a river, in water and on the cow dung.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८७. न पादेन स्पृशेदन्नम् । (मनुस्मृतिः, ३/२२९)

पैर से अन्न का स्पर्श नहीं करना चाहिये ।

One should not touch food with feet.

८८. न बान्धवा न सुहृदो
न धनानि महान्त्यपि ।
अलं धारयितुं शक्ता-
स्तमस्युग्रे निमज्जतः ॥

(नारदस्मृतिः, ४/२२१)

तमोगुण (प्रमादाधिक्य) रूपी सागर में डूबते हुए का उद्धार करने में न तो बान्धव समर्थ हैं, न सुहृद् समर्थ हैं एवं विपुल धन भी समर्थ नहीं है ।

Neither kinsmen nor friends and nor the great wealths are able to support a man, fallen into carelessness and darkness of afflictions.

८९. न ब्रह्मयज्ञादधिकोऽस्ति यज्ञो
न तत्प्रदानात्परमस्ति दानम् ।

(गोभिलस्मृतिः प्रपाठकः २, श्लोकः ५२)

ब्रह्मयज्ञ अर्थात् ज्ञानयज्ञ से बड़ा कोई यज्ञ नहीं होता और उस ज्ञान के दान से बड़ा कोई दान नहीं होता ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

There is no *yajña* (sacrifice) greater than Brahma-*yajña* which is the donation of knowledge and there is no gift greater than the imparting of knowledge.

९०. न लङ्घयेन्मातृवाक्यम् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ६)

माता के वाक्य की अवज्ञा नहीं करनी चाहिये ।

Let him not violate his mother's order.

९१. न वाचमनृतां वदेत् । (मनुस्मृतिः, ६/४८)

असत्य वाणी कभी न बोलें ।

One should not utter false speech.

९२. न वारयेद् गां धयन्तीम् ।

(मनुस्मृतिः, ४/५९)

दूध पिलाती हुई गाय को नहीं हटाना चाहिये ।

One should not drive away a suckling cow.

९३. न विस्मयीत तपसा ।

(संवर्तस्मृतिः, श्लोकः ९४)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तपस्या करके मनुष्य को अहङ्कार नहीं करना चाहिये।
One should not be proud and arrogant because one he has perfrmed austerity.

९४. न शुष्कां गिरमीरयेत्।

(वृद्धगौतमस्मृतिः १२/३२)

अतिथियों के साथ रूक्ष वाणी नहीं बोलनी चाहिये।

Should not use with the guests harsh language.

९५. न संभाषां परस्त्रीभिः प्रतिषिद्धः समाचरेत्। (मनुस्मृतिः ८/३६१)

अभिभावक के द्वारा प्रतिषेध किये जाने पर परस्त्रियों के साथ वार्तालाप नहीं करना चाहिये।

If forbidden by the guardian, one should not speak to other people's women.

९६. न स्त्रीवश्यो भवेत्पुमान्।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३४५)

मनुष्य को स्त्री का वशंवद नहीं होना चाहिये।

Let a man not become henpecked.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१७. न स्नानेन न मौनेन
नैवाग्निपरिचर्यया ।
ब्रह्मचारी दिवं याति
स याति गुरुपूजनात् । (शंखस्मृतिः, ५/१०)

ब्रह्मचारी न स्नान करने से, न मौन रहकर और न ही अग्निहोत्र करने से स्वर्ग प्राप्त करता है, अपितु गुरु की पूजा करने से ही स्वर्ग प्राप्त करता है ।

A celebate man cannot obtain heaven by taking bath, or observing silence or by the worship of fire. He obtains heaven only by worshipping his teacher.

१८. न स्पृहेत् परदारेषु ।

(अत्रिसंहिता, श्लोकः ३८)

दूसरों की स्त्रियों की अभिलाषा नहीं करनी चाहिये ।

Let him not long for other's wives.

१९. न हसेच्च्चान्यदोषान्वै । (अत्रिसंहिता, श्लोकः ३४)

दूसरों के दोषों का उपहास नहीं करना चाहिये ।

One should not laugh at the faults of other's.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१००. न हायनैर्न पलितै-
र्न वित्तेन न बन्धुभिः ।
ऋषयश्चक्रिरे धर्मं
योऽनूचानः स नो महान् ॥

(मनुस्मृतिः, २/१५४)

कोई मनुष्य वर्षों से अर्थात् दीर्घ आयु से, सफेद केशों से, धन से या बन्धुओं से वृद्ध नहीं होता । ऋषियों ने यह धर्म बनाया है कि हममें जो वेदपारङ्गत है, वही वृद्ध है ।

Neither by long years, nor by white hair, nor by wealth, not by kinsmen, when greatness. The sages have made thin law ony he who has learnt the Vedas together with the Angas, is great.

१०१. न हि स्नानं विना पुंसां
प्राशस्त्यं कर्मसु स्मृतम् ।

(लघुव्याससंहिता, १/७)

स्नान के बिना अध्ययन दानादि कर्मों में मनुष्य प्रशस्त नहीं माना गया है ।

The auspiciousness into pious acts is not declared for men without taking a bath.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१०२. न हीदृशमनायुष्यं
लोके किञ्चन विद्यते ।
यादृशं पुरुषस्येह
परदारोपसेवनम् ॥ (मनुस्मृतिः, ४/१३४)

संसार में पुरुष के लिये आयुनाशक ऐसा दूसरा कोई पाप नहीं, जैसा कि दूसरों की स्त्रियों का भोग करना पाप है ।

There is no sin in the world more harmful to the longevity of a man than copulataion with others' wives.

१०३. नाक्षैः क्रीडेत्कदाचित्तु । (मनुस्मृतिः, ४/७४)

कभी जुवा न खेलें ।

One should never indulge in gambling.

१०४. नाज्ञातेन समं गच्छेत् । (मनुस्मृतिः, ४/१४६)

अज्ञात पुरुष के साथ अकेला कभी नहीं जाना चाहिए।

One should not make a journey in the company of unknown person.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१०५. **नात्मानमवमन्येत ।** (मनुस्मृतिः, ४/१३७)

अपनी आत्मा का कभी भी अपमान नहीं करना चाहिये।

One should never humiliate one's own soul (self).

१०६. **नाधार्मिके वसेद् ग्रामे ।** (मनुस्मृतिः, ४/६०)

अधार्मिक गाँव में निवास नहीं करना चाहिये।

Let one not reside in village of non righteous persons.

१०७. **नानुरोधोऽस्त्यनध्याये ।**

(मनुस्मृतिः, २/१०५)

अनध्याय में अर्थात् स्वाध्याय के त्याग में विद्वानों का कभी आकर्षण नहीं होता ।

Scholars never welcome absence of study.

१०८. **नान्नमद्यादेकवासाः ।** (मनुस्मृतिः, ४/४५)

केवल एक वस्त्र पहन कर भोजन न करें ।

One should not take food wearing a single garment.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१०९. नानृतात्पातकं परम् ।

(अरुणस्मृतिः, श्लोकः ९०)

मिथ्या भाषण से बड़ा कोई पाप नहीं होता ।

There is not sin greater than telling a lie.

११०. नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयात् ।

(मनुस्मृतिः, २/८५)

बिना पूछे बीच में किसी से नहीं बोलना चाहिये ।

One should not intervene in a conversation without permission.

१११. नारुन्तुदः स्यादार्तोऽपि
न परद्रोह कर्मधीः ।
ययाऽस्योद्विजते वाचा
नालोक्यां तामुदीरयेत् ॥

(मनुस्मृतिः, २/१३६)

मनुष्य कितना भी पीड़ित क्यों न हो, उसे अरुन्तुद अर्थात् किसी को कष्ट देने वाला नहीं होना चाहिये, दूसरों के प्रति द्रोह करने वाली बुद्धि भी न रखे, जिस वाणी से लोग उद्विग्न हों ऐसी लोकनिन्दित वाणी भी न बोले ।

Let one not, even though pained, speak

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

words cutting others to the quick. Let one not hurt others in thought or deed. Let one not utter speeches despised by people which make others angry.

११२. नाश्नन्ति पिशुने देवा
नाश्नन्त्यनृतवादिनः ।

(अंगिरः स्मृतिः, श्लोकः १३१)

चुगलखोर और झूठ बोलने वाले के घर में सत्पुरुष भोजन नहीं करते ।

Gentlemen do not take food in the house of a back biter or a liar.

११३. नास्तिक्यं वेदनिन्दां च
देवतानां च कुत्सनम् ।
द्वेषं दम्भं च मानं च
क्रोधं तैक्ष्ण्यं च वर्जयेत् ॥

(मनुस्मृतिः, ४/१६३)

नास्तिकता और वेदों की निन्दा को, देवताओं के तिरस्कार को, द्वेष, पाखण्ड, अभिमान, क्रोध और तीक्ष्णता को छोड़ देना चाहिये ।

Let one avoid atheism, cavilling at the vedas, contempt of the gods, hatred, want

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

of modesty, pride, anger and harshness.

११४. नित्यं स्थितस्ते हृद्येष ।
पुण्यपापेक्षिता मुनिः ॥ **(मनुस्मृतिः, ८/९१)**

पुण्य और पाप को देखने वाला मुनि (परमात्मा) सदा तुम्हारे हृदय में स्थित है।

God, the supreme sage who witnesses all virtuous acts and all sins, ever dwells in your heart.

११५. नियमो नैक वै शिशोः ।
(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३३६)

शिशु के लिए भोजनादि विषयक कोई नियम निर्धारित नहीं है ।

There is no law for a child.

११६. निषिद्धसेवनं नित्यं
वर्जनीयं प्रयत्नतः ।
(मनुस्मृतिपरिशिष्टं, श्लोकः १२)

निषिद्ध कर्मों का सेवन प्रयत्नपूर्वक छोड़ देना चाहिये ।

One should make efforts to give of the practice of forbiden activities.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

११७. नेक्षणीयो न सम्भाष्यो
नोपकार्योऽपि बर्बरः ॥

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ.३३०)

आततायी पुरुष को न देखना चाहिये, न उसके साथ बात करनी चाहिये और न ही उसका उपकार करना चाहिये ।

A barbar wicked person neither should be seen, nor should be talked and nor should be benefitted.

११८. नैत्यके नास्त्यनध्यायो
ब्रह्मसत्रं हि तत्स्मृतम् ।

(मनुस्मृतिः, २/१०६)

नित्यकर्म में कभी अनध्याय का विधान नहीं है क्योंकि वह ब्रह्मयज्ञ माना गया है ।

There are no forbidden days for the daily worship and rituals since that has been declared to be a Brahmasatra (an ever lasting sacrifice offered to *Brāhmaṇa*).

११९. नैनं छन्दांसि वृजिनान्तारयन्ति
मायाविनं मायया वर्तमानम् ।

(वशिष्ठस्मृतिः, श्लोकः १७०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छल का आचरण करने वाले मायावी पुरुष को वेद भी पाप से नहीं पार लगा सकते ।

Even the Vedas cannot destroy the sin of a deceit ful, person who conduct is always deceitful.

१२०. नोच्छिष्टं कस्यचिद् दद्यात् ।

(मनुस्मृतिः, २/३१)

अपना झूठा भोजन किसी को नहीं देना चाहिये ।

One should not offer one's left food to anyone.

१२१. परचिन्ता न कर्त्तव्या आत्मचिन्ता तु नित्यशः ।

(ब्रह्मोक्त याज्ञवल्क्यसंहिता, ८/१४०)

दूसरे के विषय में न सोचें किन्तु आत्मचिन्तन सदैव करना चाहिये ।

One should not worry about others but should always indulge in self-instrospection.

१२२. परदारापहर्तारः परदाराभिमर्शकाः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परदारप्रयोक्तार-
स्ते वै निरयगामिनः ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १०/८७)

जो दूसरों की स्त्रियों का अपहरण करते हैं, दूसरों की स्त्री के विषय में चिन्तन करते रहते हैं तथा उनका प्रयोग करते हैं वे निश्चित ही नरकगामी होते हैं ।

Those, who kidnap others' wives, who keep thinking of others' wives and who use others' wives, certainly go to hell.

१२३. परान्नं नैव भुजीयात् ।

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, श्लोकः १७४)

दूसरे का मुफ्त का अन्न नहीं खाना चाहिये ।

One should not eat others' food free of charge.

१२४. परुषं न वदेत् किञ्चित्
सदा मधुरवाग्भवेत् ।

(वशिष्ठस्मृतिः, ५/६२)

कभी कठोर नहीं बोलना चाहिये । सदा मधुर वचन बोलने चाहिंये ।

One should not speak harsh language but always use sweet words.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१२५. पापमभक्ष्यस्य च भक्षणे ।

(नित्याचारप्रदीपः, प्रथमोभागः पृ. ५६४)

अभक्ष्य वस्तु को खाने में महापाप होता है ।

To eat the for bidden food is great sin.

१२६. पापानामपि पुण्यानां
शास्त्रमेकं निरूपकम् ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २७४)

पाप और पुण्यों का निर्णय केवल शास्त्र ही करता है।
Only the *śāstra* is authority incase of sins and virtues.

१२७. पिता माता तथाचार्य-
स्त्रयो मान्याः सदैव हि ।

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, १०/४१)

पिता-माता और गुरु, ये तीनों सदा सम्मान के योग्य हैं।

Father, mother and teacher, these three are always worthy of respect.

१२८. पितृदेवमनुष्याणां
वेदश्चक्षुः सनातनम् । (मनुस्मृतिः, १२/९४)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पितर, देवता और मनुष्य, इन सभी का सनातन नेत्र वेद है ।

The Veda is the eternal eye of the forefathers, gods and men.

१२९. पितृहा चेतनाहीनो
मातृहाऽन्धः प्रजायते ।

(शातातपस्मृतिः, श्लोकः ५१)

पिता की हत्या करने वाला चेतनाहीन होता है और माता की हत्या करने वाला अन्धा बनता है ।

One guilty of particide loses the use of his senses and one that of matricide becomes blind.

१३०. पूजितं ह्यशनं नित्यं
बलमूर्जं च यच्छति ।
अपूजितं तु तद्भुक्त-
मुभयं नाशयेदिदम् ।। (मनुस्मृतिः, २/३०)

आदरपूर्वक खाया हुआ भोजन सदा बल और ऊर्जा को प्रदान करता है । अनादर से खाया हुआ भोजन बल और ऊर्जा दोनों का नाश कर देता है ।

The food, if taken respectfully always

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

gives strength and energy, but if taken without respect, destroy both.

१३१. पूजयेदशनं नित्यम् । (मनुस्मृतिः, २/२९)

भोजन का सदा सम्मान करना चाहिये ।

Let one always respect the food.

१३२. प्रजासुखे सुखं येषां
तद्दुःखे ये च दुःखिताः ।
तपसा कर्शिता ये वा
ते नराः स्वर्गगामिनः ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १०३)

प्रजा के सुख में ही जिनका सुख है तथा प्रजा के दुःख से जो दुःखी होते हैं और तपस्या के द्वारा जो कृश हो गये है, वे ही लोग स्वर्ग के अधिकारी हैं ।
Men, who feel the pleasure and pain in the pleasure and pain of the people and who are the weak through the ansterity go to heaven.

१३३. प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति
नेता चेत्साधु पश्यति । (मनुस्मृतिः, ७/२५)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि नेता ठीक-ठीक दृष्टि रखता हो तो प्रजायें मोह को प्राप्त नहीं होतीं ।

If the leader has the correct attitude for the people, they do not go astray.

१३४. प्रशस्ताचरणं नित्य-
मप्रशस्तविवर्जनम् ।
एतद्धि मङ्गलं प्रोक्त-
मृषिभिर्धर्मदर्शिभिः ॥

(अत्रिसंहिता, श्लोकः ३६)

श्रेष्ठ कर्मों का आचरण और निन्दित कर्मों का त्याग, धर्मदर्शी ऋषियों के द्वारा मंगलकारक कहा गया है ।
The performance of the excellent actions and abandonment of bad actions is always declared to be auspicious by Ṛṣis the seers of Dharma.

१३५. प्राणायामसमो नान्यः
पावको जगतीतले ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. ४३)

प्राणायाम के समान पवित्र करने वाला कोई अन्य साधन इस पृथ्वी पर नहीं है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

There is no purifier better than *prāṇāyāma* in the world.

१३६. फलितं पुष्पितं वापि
वनं छिन्द्यात्तु यो नरः ।
तडागसेतुं यो भिन्द्यात् ।
तं शूलेनानुरोहयेत् ॥ (वृद्धहारीतस्मृतिः ७/२१८)

जो मनुष्य फलयुक्त और पुष्पयुक्त वन को काटता है तथा जो तालाब के सेतु को तोड़ता है, उसको सूली पर चढ़ा देना चाहिये ।

One should hang a person, who destroys an orchard of fruits and flowers and who breakes the embankment of water tank.

१३७. बहुना किमधीतेन
कुशास्त्रेण दुरात्मनः ।
(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १४१)

दुष्ट पुरुष कुशास्त्रों का अध्ययन कितना भी क्यों न करे, इससे क्या लाभ ?

What is the use of much studying of bad texts for a mean person ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१३८. ब्रह्मचर्यं परं तीर्थम् ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १४/१४)

ब्रह्मचर्य का पालन सबसे बड़ा तीर्थ है ।

The observance of Brahmacharya i.e. celebacy (the protection of semen) is a great virtue.

१३९. ब्रह्मचारी यदि हठात्
प्रमादाद्वाऽतिमोहितः ।
रमामुपेयात्पापी स्याद्
ब्राह्मण्याच्च्यवते च सः । (मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९)

यदि ब्रह्मचारी हठपूर्वक अथवा प्रमाद वश मोहित होकर स्त्रीगमन करता है, तो वह पापी कहलाता है तथा ब्रह्मत्व से च्युत हो जाता है ।

If a *Brahmacārī*, by obstinacy or by delusion or by ignorance, copulates with a woman, then he becomes sinful, and falls from the *Brāhmaṇa* coste.

१४०. ब्रह्मचारी स्वधर्मस्थो
गुरुसेवापरो वसेत् ।

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, १/५)

ब्रह्मचारी को अपने धर्म में स्थित रहते हुए गुरु की

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेवा में संलग्न रहना चाहिये ।

A *Brahmacārī*, established in his duty should be engaged in the service of his teacher.

१४१. ब्रह्मणः प्रणवं कुर्या-
दादावन्ते च सर्वदा । (मनुस्मृतिः, २/७४)

मन्त्र के प्रारम्भ में और अन्त में ओम् का उच्चारण सदैव करना चाहिये ।

One should always pronounce the syllable "Om" both at the beginning and at the end of a lesson in the Vedas.

१४२. ब्रह्मण्यश्च शरण्यश्च
न याति नरकं नरः ।
(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १०६)

ब्रह्मज्ञान परायण और शरणागतरक्षक मनुष्य कभी भी नरक को प्राप्त नहीं करता ।

The man, knowing Brāhman and protecting of a refugee does not go to hell.

१४३. ब्रह्मतेजो हि दुःसहम् । (व्यासस्मृतिः, ४/४७)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मतेज को सहना बड़ा असह्य होता है ।

The glory of a Brahma is unbearable.

१४४. ब्रह्मध्यानात्परं कर्म
नान्यत् किमपि विद्यते ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ४०)

ब्रह्म के ध्यान से अधिक श्रेष्ठ कर्म अन्य कोई नहीं।

There is no other deed better than the meditation of Brahma.

१४५. ब्रह्महा च सुरापश्च
स्तेयी च गुरुतल्पगः ।
एते सर्वे पृथग्ज्ञेयाः
महापातकिनो नराः ॥ (मनुस्मृतिः, ९/२३५)

ब्राह्मण की हत्या करने वाला, मदिरा पीने वाला, चोरी करने वाला और गुरु की पत्नी से सम्भोग करने वाला, ये सब महापापी हैं और इन्हें (समाज से अलग) तिरस्कृत समझा जाना चाहिये ।

A Murderer of *Brāhmaṇa* (intellectual) an alcoholic a thief and one who copulates with his teacher's wife, all these are the greatest sinners and should be banished from the society.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१४६. ब्रह्मारम्भेऽवसाने च
पादौ गृह्यौ गुरोः सदा ।

(मनुस्मृतिः, २/४६)

वेदाध्ययन के प्रारम्भ में और अन्त में सदा गुरु के चरणों का स्पर्श करना चाहिये ।

Both at the beginning and the end of study of the vedas, one must always touch the feet of one's teacher.

१४७. ब्राह्मणस्य तु देवस्य
दरिद्रस्य च यद्धनम् ।
गुरोश्चापि हृतं राजन्
स्वर्गस्थमपि पातयेत् ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, ४/४२)

ब्राह्मण का, देवता का, दरिद्र का तथा गुरु का जो धन हरण किया गया है, वह धन स्वर्ग में गये हुए को भी नीचे गिरा देता है ।

The wealth, forcibly snatched from a *Brāhmaṇa*, a good person, a poor person and one's teacher causes the downfall of even one who has realised heaven.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१४८. ब्राह्मणो वा मनुष्याणा-
मादित्यस्तेजसामिव ।
शिरो वा सर्वगात्राणां
धर्माणां सत्यमुत्तमम् ॥

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्-सत्यभूषणयोगी, श्लोकः ६०)

मनुष्यों में जैसे ब्राह्मण (वेदस्वाध्यायी आचारवान्) श्रेष्ठ होता है, तेजस्वियों में आदित्य उत्तम होता है और समस्त अंगों में सिर उत्तम होता है, वैसे ही समस्त धर्मों में सत्य उत्तम होता है ।

As the *Brāhmaṇa* is the supreme human being the sun is most resplendent of all brilliant objects and the head is superior to all bodily organs, so is the truth greatest of all Dharmas (Virtues).

१४९. ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय
चिन्तयेदात्मनो हितम् ।

(याज्ञवल्क्यसंहिता, १/११५)

ब्राह्ममुहूर्त में उठकर अपने हितसाधक कार्यों का चिन्तन करना चाहिये ।

Having awaked in the early morning let him think of the good of self.

Funding by IKS-MoE

१५०. ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय
धर्मार्थावनुचिन्तयेत् । (लघुव्याससंहिता, १/१)

ब्राह्ममुहूर्त में उठकर धर्म और धन के विषय में चिन्तन करना चाहिये ।

Let him wakeup in the early morning and think of the acquisition of spiritual merit and wealth.

१५१. ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत
धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत् ।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान्
वेदतत्त्वार्थमेव च ॥ (मनुस्मृतिः, ४/९२)

ब्राह्ममुहूर्त में जागना चाहिये तथा धर्म और धन के विषय में चिन्तन करना चाहिये । शरीर के क्लेशों के विषय में और उनके कारणों को तथा वेद के तत्त्वार्थ के विषय में चिन्तन करना चाहिये ।

One should get up from bed early in the morning and contemplate on Dharma (law) and wealth, afflictions of the body, their reasons and the essential meaning of the Vedas.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१५२. भरणं पोष्यवर्गस्य
प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्-सत्यभूषणयोगी, श्लोकः २४१)

पालन करने योग्य बन्धुवर्ग का पालन-पोषण करना स्वर्ग प्राप्त करने का श्रेष्ठ साधन है ।

To look after and feed these of one's brethren who deserve to be looked after and fed is the best way to realise heaven.

१५३. भिक्षाश्येव भवेन्नित्यं
वेदाध्ययनकालके ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ५)

वेदाध्ययन की अवधि में शिष्य को केवल भिक्षान्न-भक्षक होना चाहिये ।

A pupil must be subsisting on the alms in the period of Veda-study.

१५४. भूतेष्वात्मवदाचरेत् ।

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः १४८)

समस्त प्राणियों पर अपने समान ही व्यवहार करना चाहिये ।

One should behave with all the beings as one would do with oneself.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१५५. भूर्धारयति सत्येन
सत्येनोदेति भास्करः ।
सत्येन वायुः प्लवते
सत्येनापः स्रवन्ति च ॥

(नारदस्मृतिः, ४/२१३)

पृथ्वी सत्य से ही प्राणियों को धारण करती है । सूर्य सत्य से ही उदित होता है । वायु सत्य से ही गति करता है और जल सत्य के बल से ही बहते हैं ।

Truth make the earth support the beings, the sun rise, the wind blow and the water flow.

१५६. मङ्गलाचारयुक्तानां
विनिपातो न विद्यते । (मनुस्मृतिः, ४/१४६)

मंगलाचार अर्थात् परमेश्वर का नाम कीर्तन करने वालों का अधःपतन नहीं होता ।

People who begin any work with the incontation of the name of God, never come to fall.

१५७. मत्तक्रुद्धातुराणां च
न भुंजीत कदाचन । (मनुस्मृतिः, ४/२०७)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्मत्त, क्रोधी तथा रोगी लोगों का भोजन कभी नहीं खाना चाहिये ।

One should never savour the food of intoxicated angry and diseased persons.

१५८. मधुलुब्धो यथा भृङ्गः
पुष्पात् पुष्पान्तरं व्रजेत् ।
ज्ञानलुब्धस्तथा शिष्यो
गुरोर्गुर्वन्तरं व्रजेत् ॥

(स्मृतिसारसंग्रहे उद्‌धृतः, पृ. २१६)

जैसे भ्रमर मधु के लोभ में एक पुष्प से दूसरे पुष्प पर घूमता फिरता है वैसे ही ज्ञान का लोभी जो शिष्य हो, उसे एक गुरु से दूसरे गुरु के पास जाना चाहिये ।

As a large black bee, in its greedy for honey, roams from one flower to another, so a pupil, who aspires for knowledge, should go from one teacher to another.

१५९. मनः सत्येन शुध्यति । (मनुस्मृतिः, ५/१०९)

मन सत्य से शुद्ध होता है ।

Mind is purified by truth.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१६०. मनसैवार्चयेद् देवं
पश्चादर्थं विचिन्तयेत् ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ६/४२)

सबसे पहले इष्टदेव का ध्यान केवल मन से ही करना चाहिये । उसके पश्चात् अर्थ का चिन्तन करना चाहिये ।

First of all one should worship one's desired god and after that one should think of wealth.

१६१. मनस्तापेन शुध्येत ।

(आपस्ताम्बस्मृतिः, ८/२०)

पश्चात्ताप करने से मन शुद्ध हो जाता है ।

The mind is purified by the penance.

१६२. मन्त्रमुच्चार्य सर्वत्र
स्वाहान्ते जुहुयाद्धविः ।

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, २/५९)

सर्वत्र मन्त्र के उच्चारण के अनन्तर स्वाहा उच्चारण करने के पश्चात् अग्नि में हवि देनी चाहिये, बिना मन्त्रोच्चारण के नहीं ।

Having pronounced the mantra in all sacred rites let him offer Havi alter *Swāhā*.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१६३. मातरं गुरुपत्नीं च
स्वसारं दुहितां तथा ।
गत्वा तु प्रविशेदाग्निं
नान्या शुद्धिर्विधीयते ॥

(बृहद्यमस्मृतिः, तृतीयोऽध्यायः, श्लोकः ७)

माता, गुरुपत्नी, बहन तथा बेटी, इनके साथ सम्भोग करने पर अग्नि में प्रविष्ट होना चाहिये । इसके अतिरिक्त शुद्धि का कोई अन्य उपाय नहीं है ।

After doing intercourse with one's mother, or teacher's wife, or sister, or daughter, one should enter into the burning fire. There is no other way to get oneself purified.

१६४. मातापितृभ्यां नामीभि-
र्भ्रात्रा पुत्रेण भार्यया ।
दुहित्रा दासवर्गेण
विवादं न समाचरेत् ॥ (मनुस्मृतिः, ४/१८०)

माता और पिता के साथ, स्त्रियों के साथ, भाई, पुत्र और पत्नी के साथ, बेटी के साथ और नौकरों के साथ कभी भी विवाद (कलह) नहीं करना चाहिये ।

With one's parents with female relatives,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

with one's brother, son and his wife with his daughter and with the servants one should never enter into a debate.

१६५. मातृवत्स्वसृवच्चैव
नित्यं दुहितृवच्च ये ।
परदारेषु वर्तन्ते
तेऽपि यान्त्यमरावतीम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १०४)

जो व्यक्ति दूसरों की स्त्रियों के प्रति माता के समान, बहन के समान और बेटी के समान व्यवहार करते हैं वे लोग स्वर्गगामी होते हैं ।

The person, who behave towards others' women like of a mother, sister and daughter happily go to heaven.

१६६. मानसं वाचिकं पापं
कायेनैव च यत्कृतम् ।
तत्सर्वं नाशमायाति
प्राणायामप्रभावतः ॥

(संवर्तस्मृतिः श्लोकः २२५)

मानसिक वाचिक तथा कायिक जितने भी पाप हैं, वे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब प्राणायाम से नष्ट हो जाते हैं।

All the sins, committed by mind, tongue and body get destroyed through the virtue of *(Prāṇāyāma)* breath control.

१६७. मिथ्याव्रतं न कर्त्तव्यं
मिथ्या दीक्षां विवर्जयेत् ।

(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता, ८/१४३)

मिथ्या प्रतिज्ञा नहीं करनी चाहिये और मिथ्या दीक्षा को ग्रहण नहीं करना चाहिये।

No false vow should be undertaken and no false sermons should be accepted.

१६८. मुक्तेर्नान्याऽस्ति सरणि-
र्ज्ञानमेवैकमुच्यते । (मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. २)

केवल एक ज्ञान ही मुक्ति का मार्ग कहा जाता है। मुक्ति का कोई अन्य मार्ग नहीं है।

There is no other means of salvation. only the knowledge is called the only means for that.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१६९. मूले ह्युपासिते सम्यक्
फलं भवति नान्यथा ।

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, १२/२५)

मूल की सेवा करने से ही फल मिलता है ।

Fruit is gained by watering the roots, not the leaves.

१७०. मूषिको धान्यहारी स्यात् ।

(याज्ञवल्क्यसंहिता, ३/२१४)

अन्न चुराने वाला व्यक्ति अगले जन्म में चूहा बनता है।

A man who steals the foodgrains becomes a mouse in next birth.

१७१. मोक्षं पूर्तेन विन्दति ।

(लघुशंख स्मृतिः श्लोकः १)

मनुष्य पूर्त (लोककल्याणविषयक कर्मों) के द्वारा मोक्ष को प्राप्त करता है ।

By doing philan thropic deed so liberated.

१७२. मौनात्सत्यं विशिष्यते ।

(मनुस्मृतिः, २/५८)

मौन से सत्य भाषण करना अधिक श्रेष्ठ है ।

Funding by IKS-MoE

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Truthfulness in speech is better than maintaining silence.

१७३. मौनेन भोजनं कुर्यात् ।

(लौगाक्षिस्मृतिः पृ. ३५०)

मौन धारण करके भोजन करना चाहिये ।

Let him take food with silence.

१७४. यं माता पितरौ क्लेशं
सहेते सम्भवे नृणाम् ।
न तस्य निष्कृतिः शक्या
कर्तुं वर्षशतैरपि ॥ (मनुस्मृतिः, २/२०२)

माता और पिता सन्तान के जन्म, उसके पालन-पोषण आदि में जिस कष्ट को सहते हैं, उसका बदला सौ वर्षों में भी चुकाया नहीं जा सकता ।

The trouble and pain which the parents undergo on the upbringing of their offspring since their birth, cannot be compensated even in a hundred years.

१७५. य आवृणोव्यवितथं
ब्रह्मणा श्रवणावुभौ ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स माता स पिता ज्ञेय-
स्तं न द्रुह्येत्कदाचन ॥ (मनुस्मृतिः, २/१४४)

जो गुरु ज्ञान से शिष्य के कानों को सत्य से परिपूर्ण करता है, उसे अपनी माता और पिता ही समझना चाहिये । उससे कभी भी द्रोह नहीं करना चाहिये

The teacher who fills the ears of his disciplens honestly with knowledge, should be regarded as father and mother. He should never be offended.

१७६. यतिः पूज्यो हि सर्वदा ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३३२

संन्यासी सदा पूजनीय होता है ।

An ascetic is worthy of always respect.

१७७. यतिनिन्दा कुलघ्नी स्यात् ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३३२)

संन्यासी की निन्दा कुल का नाश करने वाली होती है।

The scorning of an ascetic carries a man to the destruction of family.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१७८. यतिश्च ब्रह्मचारी च
उभौ भिक्षाशिनौ स्मृतौ ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ८/५४)

संन्यासी और ब्रह्मचारी दोनों भिक्षान्नभोजी माने गये हैं।

An ascetic and a celibate *(Brahmacārī)*, both are considered to be dependent upon charity.

१७९. यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च
करिष्यंश्चैव लज्जति ।
तज्ज्ञेयं विदुषां सर्वं
तामसं गुण लक्षणम् ॥ मनुस्मृतिः, १२/३५)

जिस कर्म को करके, अथवा करते हुए या करने की इच्छा करते हुए मनुष्य लज्जा का अनुभव करता है, वह सब तमोगुण का लक्षण है, ऐसा विद्वान् को समझना चाहिये।

When a man, having done, doing or about to do an act, feels a shamed, the learned may know that it is a symptom of underlying evil.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१८०. यत्र बन्धुजनाः सन्तः
स्वाचारैकप्रवर्तकाः ।
न सन्ति यत्र विबुधाः
न तिष्ठेत्क्षणं सुधीः ॥

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २७४)

जिस देश में सदाचारी बन्धुजन न हों तथा शास्त्रोपदिष्ट अपने कर्तव्य का पालन करने वाले विद्वज्जन न हों वहाँ बुद्धिमान् पुरुष को एक क्षण भी नहीं रहना चाहिये ।

Where, there do not live good kinsmen and the learned persons. performer their duties, let a wiseman not live there even for a moment.

१८१. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते
सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥

(मनुस्मृतिः, ३/५६)

जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं । जहाँ इनका सम्मान नहीं होता, वहाँ समस्त क्रियाएँ असफल हो जाती हैं ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Where women are honoured, gods dwell but where they are not honoured, all rites and activities become fruitless.

१८२. यत्र नास्ति भयत्राता
श्रोत्रियः सजला नदी ।
आत्मसौख्यं यत्र नास्ति
न तत्र दिवसं नयेत् ॥

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३६५)

जहाँ कोई भय से रक्षा करने वाला व्यक्ति न हो, श्रोत्रिय ब्राह्मण न हो, जल से भरी नदी न हो तथा जहाँ मन को सुख पहुँचाने का साधन न हो, वहाँ एक दिन भी निवास नहीं करना चाहिये ।

Where, there is no rescuer from fear, no *śrotṛya Brāhmaṇa,* no river full of water, and where there is no self pleasure, let him not live even for one day.

१८३. यथा यथा नरोऽधर्मं
स्वयं कृत्वाऽनुभाषते ।
तथा तथा त्वचेवाहि-
स्तेनाधर्मेण मुच्यते ॥ (मनुस्मृतिः, ११/२२८)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे-जैसे मनुष्य पाप को करके उसे स्वयं कह देता है, वैसे-वैसे वह अधर्म से मुक्त हो जाता है जैसे कि सर्प केंचुली से मुक्त हो जाता है ।

A man who has confesses his guilt is freed of it in the same proportion just as a snake is freed of its slough.

१८४. यथा यथा मनस्तस्य
दुष्कृतं कर्म गर्हति ।
तथा तथा शरीरं तत्
तेनाधर्मेण मुच्यते ॥ (मनुस्मृतिः, ११/२२९)

जैसे जैसे मनुष्य का मन पाप कर्मों की निन्दा करता है, त्यों त्यों उसका शरीर उस अधर्म से मुक्त होता चला जाता है ।

As the mind of a man increasingly traduces the vice deed, with the same speed, his body gets rid of that vice.

१८५. यथा यथा हि पुरुषः
शास्त्रं समधिगच्छति ।
तथा तथा विजानाति
विज्ञानं चास्य रोचते ॥ (मनुस्मृतिः, ४/२०)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे-जैसे पुरुष शास्त्र का अध्ययन करता जाता है वैसे-वैसे वह विशेष ज्ञान प्राप्त करता है और विज्ञान में उसकी रुचि बढ़ती जाती है ।

The more a man studies the sacred books, the more he acquires greater knowledge and his interest therein is enhanced.

१८६. यथा रथोऽश्वहीनस्तु
यथाऽश्वो रथिहीनकः ।
एवं तपश्च विद्या च
संयुतं भेषजं भवेत् ॥ (लघुहारीतस्मृतिः ७/९)

जैसे अश्व के बिना रथ व्यर्थ है और सारथि या महारथी के बिना अश्व अनुपयोगी है, उसी प्रकार तप और विद्या मिलकर ही कल्याणकारी होते हैं अकेले अकेले नहीं ।

As a chariot without a horse and a horse without a chariot are useless, similarly the austerity and learning seperately have no merit only when combined, they become beneficial.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१८७. यथा रथो विनाऽश्वैः स्या-
दश्वाश्च रथिना विना ।
एवं तपो ह्यविद्यस्य
विद्या चाप्यतपस्विनः ॥

(वृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/२३)

जैसे अश्वों के बिना रथ व्यर्थ है और सारथि के बिना रथ व्यर्थ है और सारथि के विना रथ व्यर्थ है उसी प्रकार विद्याहीन का तप और तप से रहित पुरुष की विद्या व्यर्थ है।

As a chariot without horses is and as the horses are useless without a charioter, similarly the austerity of an ignorant man and the knowledge of a person without austerity is useless.

१८८. यस्य पुत्राः सदाचाराः
श्रुतिज्ञाः धर्मसम्मुखाः ।
पितृभक्तिरता दान्ता
न वैधुर्यं मृतस्त्रियि ॥

(प्रजापतिस्मृतिः, श्लोकः ७८)

जिसके पुत्र सदाचारी हैं, वेदज्ञ हैं और धर्म के प्रति श्रद्धावान् हैं, उसके घर में स्त्री के मर जाने पर भी विधुरता नहीं कहलाती है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

There is no widowhood of the man even after his wife' death, if his sons are of good conduct, learned of the vedas, virtuous and devoted to their father.

१८९. यस्य वाङ्मनसी शुद्धे
सम्यग्गुप्ते च सर्वदा ।
स वै सर्वमवाप्नोति
वेदान्तोपगतं फलम् ॥ (मनुस्मृतिः २/१३५)

जिसकी वाणी और मन शुद्ध है तथा अच्छी प्रकार सुरक्षित अर्थात् संयत है, वह ही समस्त वेदान्त के फल को अर्थात् वेदज्ञान के फल को प्राप्त करता है।

He, for sooth, whose speech and thoughts are pure and ever perfectly guarded and under control, gains the whole reward of the knowledge of the *Vedānta*.

१९०. यस्तु वाचा वदेत्पाप-
मसत्यकथनादिकम् ।
कल्पायुत सहस्त्राणि
तिर्यग्योनिषु जायते ॥
(वृद्धहारीतस्मृतिः, ९/१६१)

जो वाणी से पाप तथा असत्य-कथन करता है, वह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करोड़ों, हज़ारों वर्षों तक पशु-पक्षी की योनि में उत्पन्न होता है ।

He, who utters the sinful and false statements, takes birth as birds and animals for thousands of years .

१९१. यस्मिन् देशे यदाचारा
ब्राह्मणा धर्मवर्धकाः ।
सम्प्रदायाश्च कृत्याश्च
ताः कदाचिन्न लङ्घयेत् ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २९७)

जिस देश में उपयुक्त आचरण वाले, धर्म की वृद्धि करने वाले ब्राह्मण हों, सम्प्रदाय अथवा कृत्य हों उनका कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिये ।

In which place, the *Brāhmaṇas* with whatever conduct, and the protector of traditional laws live and whatever sects and the duties are there, let one should not violate them.

१९२. यस्य शौचेऽपि शैथिल्यं
वृत्तं तस्याप्यरक्षितम् ॥

(दक्षस्मृतिः स्मृतिचन्द्रिका, द्वितीयो खण्डः, पृ. २४९)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसकी शारीरिक स्वच्छता में भी शिथिलता है, उसका चरित्र भी सुरक्षित नहीं है ।

The Character of that person is vulnerable who is slack even in mantaining cleanliness.

१९३. योगाभ्यासबलेनैव
नश्येयुः पातकानि तु । (हारीतस्मृतिः, ७/३)

योगाभ्यास की शक्ति से ही सारे पाप नष्ट जाते हैं ।

All the sins are destroyed by the power acquired by the practice of yoga.

१९४. युगधर्मा-लोकधर्मा
यत्र यत्र यथोचिताः ।
परिग्राह्या विशेषेण
नातिलङ्घ्याः कदाचन ॥

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २७७)

जहाँ-जहाँ जैसे युगधर्म और लोकधर्म उचित बताये गये हैं, उनका विशेष रूप से पालन करना चाहिये । उनका कभी भी उल्लङ्घन नहीं करना चाहिये ।

The laws suitable for particular age and the conventional duties should ever be

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

performed and never should be condemned.

१९५. येनास्य पितरो याताः
येन याताः पितामहाः ।
तेन यायात् सतां मार्गं
तेन गच्छन्न रिष्यते ॥ (मनुस्मृतिः, ४/१७८)

जिस सन्मार्ग से पिता गये और जिस सन्मार्ग पर पितामह चले, उस सन्मार्ग पर चलते हुए मनुष्य दुखी नहीं होता ।

If one follows in righteous footsteps of one's father and one's grandfather, he has little chance of being unhappy.

१९६. ये निर्जितेन्द्रिया धीरा-
स्ते नराः स्वर्गगामिनः ।
(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १०३)

जिन धैर्यशाली पुरुषों ने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया है, वे स्वर्ग को प्राप्त करते हैं ।

The men, who are brave and controller of their senses, surely go to heaven.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१९७. योऽकामां दूषयेत्कन्यां
स सद्यो वधमर्हति । (मनुस्मृतिः, ८/३६४)

जो पुरुष सम्भोगेच्छा से रहित कन्या के साथ बलात् सम्भोग करता है, वह शीघ्र ही वध के योग्य है ।

He who sexually assaults an unwilling girl, deserves immediate execution.

१९८. योऽर्थे शुचिर्हि स शुचि-
न मृद्वारिशुचिः शुचिः ॥ (मनुस्मृतिः, ५/१०६)

जो धन में पवित्र है, वही वास्तव में पवित्र है । जल और मिट्टी से पवित्र वास्तव में पवित्र नहीं माना जाता ।

He really is pure who gains wealth by pious means and not he who purifies himself with earth and water.

१९९. योऽन्यथा सन्तमात्मान-
मन्यथा सत्सु भाषते ।
स पापकृत्तमो लोके
स्तेन आत्मापहारकः ॥ (मनुस्मृतिः, ४/२५५)

जो मनुष्य है तो कुछ अन्य, परन्तु सज्जनों के मध्य में अपने को कुछ और ही दिखाता है, वह लोक में

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पापकारी चोर और आत्मवञ्चक कहलाता है ।

He who poses himself to be virtuous while in fact, being just the opposite, is called a sinner, a thief and a self deceiver.

२००. यो मोहादथवाऽऽलस्या-
दकृत्वा देवतार्चनम् ।
भुङ्क्ते स याति नरकं
सूकरेष्वपि जायते ॥

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३२२)

जो मोहवश या आलस्य के कारण देवताओं का पूजन किये बिना भोजन करता है, वह नरक को जाता है तथा सुअर की योनि में जन्म लेता है ।

A person, who by delusion or by laziness, without worshiping the god, eats the food, goes to the hell and takes birth into the body of pigs.

२०१. यो वै वेदाधिकारी स्यात्
स मुक्तेरधिकार्यपि ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. २१)

जो वेदाध्ययन का अधिकारी है, वह मुक्ति का भी अधिकारी है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Who has the ability to study the vedas, he has the ability also of attaining the salvation.

२०२. वरं कूपशताद् वापी
वरं वापी शतात्क्रतुः ।
वरं क्रतुश्शतात् पुत्रः
सत्यं पुत्रशताद् वरम् ॥

(नारदस्मृतिः, ४/२१२)

सौ कुओं से एक बावड़ी श्रेष्ठ है, सौ बावड़ियों से यज्ञ का सम्पादन करना श्रेष्ठ है, सौ यज्ञों के सम्पादन की अपेक्षा एक पुत्र की प्राप्ति श्रेष्ठ है और सौ पुत्रों की प्राप्ति से एक सत्य का पालन श्रेष्ठ है ।

A pool is better than hundreds of well, a sacrifice is better than hundred pools, a son is better than hundred sacrifices and a truth is better than hundred sons.

२०३. वाच्यार्था नियताः सर्वे
वाङ्मूला वाग्विनिःसृताः ।
तांस्तु यः स्तेनयेद् वाचं
स सर्वस्तेय कृन्नरः ॥ (मनुस्मृतिः, ४/२५६)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समस्त अर्थ वाणी में निहित हैं । वाणी ही उनका मूल है और वाणी से ही वे निकले हैं । उस वाणी को जो चुराता है, वह मनुष्य मानो सब कुछ चुराने वाला है ।

All meaning vests in speech. Speech is their arigin and from speech they proceed. He who is dishonest in respect of speech, is dishonest. in every thing.

२०४. वामाचारो न कर्त्तव्यः ।

(नित्याचारप्रदीपः, प्रथमोभागः, पृ. ५५१)

निन्दित आचरण नहीं करना चाहिये ।

One should not indulge in censurable conduct.

२०५. वित्तं बन्धुर्वयः कर्म
विद्या भवति पंचमी ।
एतानि मान्यस्थाननि
गरीयो यद्यदुत्तरम् ॥ (मनुस्मृतिः, २/१३६)

धन, बन्धु, आयु, कर्म और विद्या ये पाँच बातें सम्मान के योग्य हैं । किन्तु इनमें उत्तर उत्तर की जो वस्तु है, वह पहले से श्रेष्ठ है ।

Wealth, kindred, age, the due

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

performance of rites, and learning deserve respect, but those named later are superior to those named earlier.

२०६. विद्ययैव समं कामं
मर्तव्यं ब्रह्मवादिना ।
आपद्यपि हि घोरायां
न त्वेनामिरिणे वपेत् ॥ (मनुस्मृतिः, २/११३)

भले ही ब्रह्मज्ञानी विद्वान् विद्या के साथ मर जाये, किन्तु इस विद्या को बंजर भूमि में न बोये ।

Even in times of dire distress, a teacher of the veda had better die alongwith his knowledge than sow it in barren soil.

२०७. विद्या ब्राह्मणमेत्याह
शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम् ।
असूयकाय मां मा दा-
स्तथा स्यां वीर्यवत्तमा ॥

(मनुस्मृतिः, २/११४)

विद्या ब्राह्मण के पास जाकर बोली कि हे ब्राह्मण ! मैं तेरी निधि हूँ, मेरी रक्षा कर । तू मुझे निन्दक पुरुष को मत प्रदान कर । इससे मैं बलवती हो जाऊँगी ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Learning approached a *Brāhmaṇa* and said, "I am your wealth, please preserve me. Do not deliver me to a scorner. So preserved, I shall become supremely strong."

२०८. विष्णोर्दास्यं परा भक्तिः ।

(वृद्धहारीतस्मृतिः, १/१९)

व्यापक परमेश्वर का दास बनना ही सबसे बड़ी भक्ति है ।

The servitude of the all pervading Lord in the best way of worshipping him.

२०९. वृद्धांश्च नित्यं सेवेत
विप्रान् वेदविदः शुचीन् ।
वृद्धसेवी हि सततं
रक्षोभिरपि पूज्यते ॥ (मनुस्मृतिः, ७/३८)

वृद्धों की, पवित्र वेदज्ञ ब्राह्मणों की नित्य सेवा करनी चाहिये । निरन्तर वृद्धों की सेवा करने वाला मनुष्य राक्षसों के द्वारा भी पूजा जाता है ।

Let one daily worship aged men and learned *Brāhmaṇas*, who know the vedas and are pure, for he who always worships

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

aged men is honoured even by *Rākṣasas* (demons).

२१०. वृत्तिच्छेदं गृहच्छेदं
दाराच्छेदं च भारत ।
मित्रच्छेदं तथा कुर्यु-
स्ते वै निरयगामिनः ॥

(वृद्धगौतमस्मृतिः, १०/८९)

जो दूसरों की वृत्ति अर्थात् आजीविका का नाश करता है, दूसरों के घर को उजाड़ता है, दूसरों की पत्नी का अपहरण करता है और मित्र के साथ विश्वासघात करता है वे सब नरक में जाते हैं ।

Those who destroy the means of livelihood of others, destroy others' house, abduct others' wives and abuse their friends' trust, all go to hell.

२११. वृद्धांस्तु नित्यं सेवेत । (मनुस्मृतिः, ७/३८)

सदा वृद्धों की सेवा करनी चाहिये ।

Let one always serve the old.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२१२. वेदवत्तरणोपायो
नान्योऽस्ति जगतीतले ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १७)

वेद के समान मुक्ति का कोई दूसरा उपाय इस संसार में नहीं है ।

There is no other means of liberation similar to veda, in this world.

२१३. वेदविद्वान्सदाचारः
सदा वसति सन्निधौ ।
भोजने चैव दाने च
वर्जनीयो न सत्तमैः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२३३)

यदि वेद का विद्वान् और सदाचारी पुरुष आपके समीप रहता है तो भोजन और दान के समय उसको छोड़ना नहीं चाहिये ।

If a person, learned in the Vedas and of good conduct lives some-whose in your neighbourhood, he should not be omitted at the times of meals and charity.

२१४. वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं
शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धर्मक्रियात्मचिन्ता च
सात्त्विकं गुणलक्षणम् ॥

(मनुस्मृतिः, १२/३१)

वेदों का अभ्यास करना, तप, ज्ञान, पवित्रता, इन्द्रियनिग्रह, धर्माचरण तथा आत्मचिन्तन, ये सात्त्विक गुण के लक्षण हैं ।

The study of the vedas, austerity, the pursuit of knowledge, holiness control over the senses the performance of pious acts and meditation are the characteristices of the quality of purity.

२१५. वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च
नियमाश्च तपांसि च ।
न विप्रदुष्टभावस्य
सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित् ॥

(मनुस्मृतिः, २/९७)

जिसकी भावनाएँ अत्यन्त दूषित हैं, उस पुरुष के लिए वेद, त्याग, यज्ञ, नियम और तप कभी सिद्धि को प्राप्त नहीं होते ।

Neither the Vedas, asceticism, sacrifices, restraint, nor austerities, ever procure attainment for a man whose heart is contaminated.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२१६. वेदोदितं स्वकं कर्म
नित्यं कुर्यादतन्द्रितः ।

(मनुस्मृतिः, ४/१४)

अपना अपना जो वेदोक्त कर्म है, उसका पालन आलस्यहीन होकर करना चाहिये ।

Let one perform one's duty as ordained by the Vedas, setting aside all laziness.

२१७. वैश्वदेवपरो भूयात्
नित्यं वै ब्राह्मणोत्तमः ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३३२)

श्रेष्ठ ब्राह्मण को सदा वैश्वदेव यज्ञ के सम्पादन में तत्पर होना चाहिये ।

Let a foremost of B*rāhmaṇa* ever be engaged in *Vaiśwadeva yajña.*

२१८. व्यसनस्य च मृत्योश्च
व्यसनं कष्टमुच्यते । (मनुस्मृतिः, ७/५३)

व्यसन और मृत्यु में व्यसन को अधिक कष्टकारी कहा गया है ।

Between bad habit and death, the bad habit has been regarded as more painful.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२१९. शत्रुं मित्रं च ये नित्यं
तुल्येन मनसा नराः ।
भजन्ति मैत्रं संगम्य
ते प्रयान्त्यमरावतीम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः पृ. १०५)

जो लोग सदा शत्रु और मित्र के साथ समान मनोभाव के साथ व्यवहार करते हैं तथा सबके साथ मित्रता को प्राप्त करते हैं, वे लोग स्वर्ग को प्राप्त करते हैं ।

The men, who behave friendly with the both, enemy and friend always, go to divine world.

२२०. शरीरपरितापेन तपसाऽध्ययनेन च ।
मुच्यते पापकृत्पापाद्दानाच्चापि प्रमुच्यते ॥

(वशिष्ठस्मृतिः, २०/५२)

शरीर के सन्ताप से, तप से, अध्ययन से और दान देने से पापकारी मनुष्य पाप से मुक्त हो जाता है ।

A sinful person can be liberated from the sin through the experience of bodily pain, through austerity, through study and throngh the donations.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२२१. शोचन्ति जामयो यत्र
विनश्यत्याशु तत्कुलम् । (मनुस्मृतिः, ३/५७)

जहाँ स्त्रियाँ दुःखी होती हैं, वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ।

That family gets destroyed very soon where the women are unhappy.

२२२. शौचाचारविहीनानां
सर्वाः स्युर्निष्फलाः क्रियाः ।
(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२१२)

शौच और सदाचार से रहित मनुष्यों की समस्त क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं ।

All the endeavour of such people becomes fruitless as are devoid of cleanliness and good conduct.

२२३. शौचे यत्नः सदा कार्यः
शौचमूलो द्विजः स्मृतः ।
(दक्षस्मृतिः, स्मृतिचन्द्रिकातः उद्धृतः, द्वितीयखण्डः, पृ. २४९)

विप्र को स्वच्छता और पवित्रता के लिए सदा प्रयत्न करना चाहिये, क्योंकि शुद्धि के कारण ही ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A *Brāhmaṇa* should always try for cleanliness and holiness becouse a twice born's identity is based on purity.

२२४. श्रद्धावन्तो दयावन्तः
शिष्टाः शिष्टजनप्रियाः
धर्माधर्मविदो नित्यं
ते प्रयान्त्यमरावतीम् ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १०५)

श्रद्धावान्, दयावान्, सदाचारी, शिष्टजनों से स्नेह करने वाले तथा धर्माधर्म के ज्ञाता लोग सदा स्वर्गलोक प्राप्त करते हैं ।

Those persons go always to the heaven who are trustful, kindhearted, gentle, who love to gentle and know the merit and demerit.

२२५. श्रद्धा हि परमं तपः । ।

(बोधायनस्मृतिः १/५/७२)

श्रद्धा सर्वोत्तम तप है ।

Devotion is the highest form of penance.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२२६. श्रुतं गरीयः सर्वेभ्यो
वित्तादिभ्यो न संशयः ।

(लघुव्याससमृतिः नित्याचारप्रदीपः, भागः २, पृ. ५५)

निस्सन्देह समस्त धनादि की अपेक्षा शास्त्रज्ञान श्रेष्ठ होता है ।

The knowledge of *Śāstras* is undoubtedly superior to all wealth.

२२७. श्रुतिं विना न मुक्तः स्यात् ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ११)

वेद-ज्ञान के विना मनुष्य दुःखों से मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता ।

The man can not be liberated without the vedic knowledge.

२२८. श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च
भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः ।
न हृष्यति ग्लायति वा
स विज्ञेयो जितेन्द्रियः ॥

(मनुस्मृतिः, २/७३)

सुनकर, छूकर, देखकर, खाकर और सूंघकर जो मनुष्य न प्रसन्न होता है और न दुखी होता है उसे जितेन्द्रिय समझना चाहिये ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A man may be considered to have really conquered his senses, if on hearing, touching, seeing, tasting and smelling anything, he neither rejoices nor repines.

२२९. सतामसम्मतं कर्म
त्याज्यमेव विपश्चिता ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २७३)

जो कर्म सत्पुरुषों को मान्य नहीं है, वह कर्म बुद्धिमान् पुरुष के द्वारा छोड़ना ही चाहिये ।

An action not advised by the noblemen should be abandoned by the wiseman.

२३०. सत्येन द्योतते राजा
सत्येन द्योतते रविः ।
सत्येन द्योतते वह्निः
सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥

(उत्तरांगिरसस्मृतिः, ३/१)

सत्य से ही राजा शोभा पाता है । सत्य से सूर्य द्योतित होता है । सत्य से अग्नि द्योतित होता है तथा सत्य में ही सब कुछ प्रतिष्ठित है ।

A king gets his dignity from truth. The sun gets its brilliance from truth, the fire is

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

effulgent because of truth and every things is established in truth.

२३१. सत्यं स्वर्गस्य सोपानं
पारावारस्य नौरिव ॥

(नारदस्मृतिः ४/२१०)

जैसे नौका समुद्र को पार करने का साधन है, वैसे ही सत्य का पालन स्वर्ग जाने का सोपान है ।

The truth is the ladder leading to the heaven as a boat is the means to cross the ocean.

२३२. सत्ये देवाः समुद्दिष्टा
मनुष्यास्त्वनृतं स्मृतम् ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः ६२)

देवताओं को सत्य कहा गया है और मनुष्यों को असत्य माना गया है ।

The gods are said to be true and men false.

२३३. सदा नैमित्तिकं कर्म
नित्यात्कृत्याद् विशिष्यते ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २७३)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नित्यकर्म से नैमित्तिक कर्म सदा विशिष्ट हुआ करता है ।

The special duties are always better than general duties.

२३४. सद्यो भ्रष्टः प्रपतति
मस्करी नात्र संशयः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १०)

कर्त्तव्य से भ्रष्ट हुआ संन्यासी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ।

A *Saṁnyāsī* disinclined from his duty falls down very soon.

२३५. सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता
भर्त्रा भार्या तथैव च ।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं
कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥

(मनुस्मृतिः, ३/६०)

जिस कुल में पति अपनी पत्नी से सन्तुष्ट रहता है तथा पत्नी अपने पति से सन्तुष्ट रहती है, वहाँ कल्याण निश्चित है ।

In the family, where the husband is

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

satisfied with his wife and the wife with her husband, happiness will assuredly be lasting.

२३६. सन्तोषमूलं हि सुखं
दुःखमूलं विपर्ययः । (मनुस्मृतिः, ४/१२)

सुख का मूल सन्तोष है और असन्तोष दुःख का मूल है ।

Happiness has its root in contentment and the dissatisfaction in the root of sorrow and misery.

२३७. सम्यग्दर्शनसम्पन्नः
कर्मभिर्न निबध्यते । (मनुस्मृतिः, ६/७४)

सम्यक् ज्ञान से सम्पन्न पुरुष कर्म करते हुए भी कर्मों के बन्धन में नहीं बँधता ।

A man endowed with right vision can not be bound by his actions, despite performing them.

२३८. सम्मानाच्च तपः क्षयः ।
(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता ७/५१)

सम्मान स्वीकार करने से तप का क्षय होता है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Ansterity decreased by accepting the honour.

२३९. सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यम् ।

(लघुव्याससंहिता, १/२७)

सन्ध्योपासन से रहित मनुष्य नित्य अपवित्र माना गया है ।

A man devoid of *Sandhyā* (worship) is always impure.

२४०. सर्वमर्हति पूतात्मा । (दक्षस्मृतिः, २/१३)

पवित्र आत्मा वाला पुरुष सब प्रकार के सम्मान के योग्य होता है ।

A pure hearted man is capable of all actions i.e. he deserves honour.

२४१. सर्वलक्षणहीनोऽपि
यः सदाचारवान्नरः ।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च
शतं वर्षाणि जीवति ॥ (मनुस्मृतिः, ४/१५८)

समस्त अच्छे लक्षणों से रहित होने पर भी जो पुरुष सदाचारी है, श्रद्धावान् है और अनिन्दक है वह सौ वर्ष

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तक जीवित रहता है ।

A man who follows the conduct of the Virtuous, and has faith and is free from envy, lives a hundred years, though he be entirely destitute in auspicious symptoms.

२४२. सर्वहिंसानिवृत्ता ये
नराः सर्वसहाश्च ये ।
सर्वस्याश्रयभूता ये
ते नराः स्वर्गगामिनः ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १०३)

जो मनुष्य सब प्रकार की हिंसा से दूर रहते हैं, जो सर्वसहिष्णु होते हैं तथा जो सबको आश्रय प्रदान करते हैं वे लोग स्वर्ग को प्राप्त करते हैं ।

The men, who are exempt from the violence of all kinds, who have tolerance and who give the shelter to all beings go to heaven.

२४३. सर्वस्य तपसो मूल–
माचारं जगृहुः परम् । (मनुस्मृतिः, १/११०)

समस्त तपस्याओं का मूल सदाचार ही स्वीकार किया गया है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The sages have considered good conduct to be the origin of all austerity.

२४४. सर्वेषामेव यागाना-
मात्मयागः परः स्मृतः ।

(औशनसस्मृतिः, श्लोकः २१७)

समस्त यज्ञों में आत्मयज्ञ अर्थात् आत्मज्ञान श्रेष्ठ है ।

Self-sacrifice i.e. knowledge of the self is the best of all the sacrifices.

२४५. सर्वेषामेव शौचाना-
मर्थशौचं परं स्मृतम् । (मनुस्मृतिः, ५/१०६)

सभी पवित्रताओं में धन की पवित्रता सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है ।

The purity of wealth has been considered the greatest of all purities.

२४६. सात्त्विकानां फलं भुङ्क्ते
देवत्वे नात्र संशयः ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ९७)

मनुष्य सात्त्विक कर्मों का फल देवता के रूप में प्राप्त करता है । अर्थात् सात्त्विक कर्म करने वाला देवता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है । इसमें कोई संशय नहीं ।

The result of Vertuous deed is enjoyed undoubtedly in the form of a deity (in heaven).

२४७. साधूनां समयश्चापि
प्रमाणं वेदवद् भवेत् ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. २७८)

सत्पुरुषों का चरित्र भी वेद के समान प्रमाण माना गया है ।

The conduct of the good persons is as valid as the Veda.

२४८. स्त्रियास्तु पतिशूश्रूषा
परमो धर्म उच्यते ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३५५)

पति की सेवा ही स्त्रियों का परम धर्म कहा जाता है।

The service of her husband is the prime duty of a woman.

२४९. स्नानं दानं जपो ध्यानं
पितृदेवार्चनं तथा ।

Funding by IKS-MoE

CC-0: Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पावनानि मनुष्याणां
दुष्कृतस्येह कर्मणः ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः,७/१२८)

स्नान, दान, जप, ध्यान और पितरों की पूजा, ये सब कर्म मुनष्यों के पाप कर्मों को पवित्र करने वाले हैं।

Bathing, cherity, repetition of the sacred syllable 'Om' meditation and the worship of dead fore-fathers, purify the sinful actions of men.

२५०. **स्नाने दाने जपे होमे**
दैवे पित्र्ये च कर्मणि ।
सव्यापसव्यौ कर्त्तव्यौ
सपवित्रौ करौ द्विजैः ॥

(पराशरस्मृतिः नित्याचारप्रदीपः, प्रथमभागः, पृ. ३७)

स्नान में, दान में, जप तथा यज्ञ में देवता और पितरों के श्राद्ध में ब्राह्मणों के द्वारा बांये और दाहिने हाथ में पवित्र (कुशा) धारण करनी चाहिए।

Both his left and right hands should be kept pure by the *Brāhmaṇa* on the occasion of bathing, charity, repetition, sacrific and the rites for peace of the rules of his dead relatives and gods.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२५१. स्नानहोमजपातिथ्यं
नाचरेच्छक्तिमांस्तु यः ।
वृथा हि जीवितं तस्य
परलोकात्स हीयते ॥

(बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ७/१२७)

जो मनुष्य सामर्थ्यवान् होते हुए भी स्नान, यज्ञ, जप, तथा अतिथि सत्कार नहीं करता, उसका यह जीवन तो व्यर्थ है ही, उसका परलोक भी बिगड़ जाता है ।

The life of that person is fruitless who despite being capable, does not perform bathing, sacrifice, repetition and hospitality. He spoils not only his life after death, but even in this world, he is punished.

२५२. स्वर्गं मोक्षं च कीर्तिं च
विद्यया लभते नरः ।

(ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यस्मृतिः, ११/६७)

मनुष्य विद्या के द्वारा ही स्वर्ग, मोक्ष और यश को प्राप्त करता है ।

A man can find heaven, emancipation and fame only through learning.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२५३. स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्यात् ।

(मनुस्मृतिः, ३/७५)

मनुष्य को नित्य स्वाध्याय में लगे रहना चाहिये ।

One should ever be engaged in the study of the sacred texts.

२५४. स्वाध्यायेन ऋषीन्पूज्य
सोमेन च पुरन्दरम् ।
प्रजया च पितॄन्पूर्वान्
अनृणो दिवि मोदते ॥

(बोधायनस्मृतिः, २/९/६)

मनुष्य तीन कार्य करके ऋणमुक्त होता है, स्वाध्याय से ऋषियों को सन्तुष्ट करके, सोम से इन्द्र को और सन्तानोत्पत्ति से पितरों को सन्तुष्ट करके । इस प्रकार ऋणमुक्त होकर वह स्वर्ग में मुदित होता है ।

By pleasing the Ṛṣis through the study of the sacred texts, by pleasing Indra with soma, and by pleasing the forefathers by procreation, a man gets freedom from dept and experiences the happiness of heaven.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२५५. स्वाध्यायेन व्रतैर्होमै-
स्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः ।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च
ब्राह्मीयं क्रियते तनुः । (मनुस्मृतिः २/३)

स्वाध्याय से, चान्द्रायणादि व्रतों से, अग्निहोत्र से, कर्म उपासना और ज्ञानरूप त्रैविद्य से, पौर्णमास आदि इज्या-दृष्टि से, पुत्रोत्पत्ति से, महायज्ञ अर्थात् ब्रह्मयज्ञ देवयज्ञादि के करने से, तथा अग्निष्टोम आदि सामान्य यज्ञों से यह शरीर ब्रह्ममय किया जाता है ।

By self study of the Vedas, taking vows, oblations recitation of the sacred texts, acquisition of the threefold sacred science, making offerings to the gods, the procreation great sacrifices and by rites, this human body is made fit for union with *Brahma*.

२५६. स्वाध्यायोऽध्येतव्यः स्यादिति वेदानुशासनम् ।
(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. ७)

अपने अध्येतव्य ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिये, यह वेद का आदेश है ।

The (Veda) prescribed text should be studied, this is the order of Veda.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२५७. स्वीयामेव वदेद्भाषां ।

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १९)

अपनी मातृभाषा ही सदा बोलनी चाहिये ।

One should speak always in his own language.

२५८. हीनाचारो हि पुरुषो
निन्द्यो भवति सर्वशः ।
दुःखभागी च सततं
व्याधितोऽल्पायुरेव च ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२०५)

सदाचार से रहित पुरुष सदा निन्दित, दुःखी, रोगी और अल्पायु वाला होता है ।

A man devoid of good conduct is always censued by others, unhappy ill and short lived.

२५९. हीनान्न वस्त्रवेषः स्यात्
सर्वदा गुरुसन्निधौ । (मनुस्मृतिः, २/१९९)

सदैव गुरु के पास शिष्य को हीन अन्न, वस्त्र और वेषभूषा रखनी चाहिये ।

In the presence of his teacher a disciple

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

should always take more frugal diet and wear less valuable clothes and ornaments than the former.

२६०. हृदयस्य तु शौचेन
स्वर्गं गच्छन्ति मानवाः ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः, २१/१०)

हृदय की पवित्रता से ही मनुष्य स्वर्ग को जाते हैं ।

All men go to heaven through the purity of their hearts.

२६१. हेमन्ते वह्निदो यश्च
तथा ग्रीष्मे जलप्रदः ।
वर्षास्वाश्रयदो यश्च
न याति नरकं नरः ॥

(मार्कण्डेयस्मृतिः, पृ. १०६)

हेमन्त ऋतु में जो अग्नि का दान करता है, ग्रीष्म काल में जो जल का दान करता है, तथा वर्षाकाल में आश्रय प्रदान करता है, वह मनुष्य कभी नरक को प्राप्त नहीं होता ।

A man, who gives the warmness to needy in the season of winter, who gives the water to a thirsty in summer, and who

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

gives the shelter in season of rain, he never goes to hell.

२६२. होतव्यं समिद्धेऽग्नौ ।

(लौगाक्षिस्मृतिः, पृ. ३३६

अच्छी प्रकार प्रज्ज्वलित अग्नि में ही होम करना चाहिये ।

One should throw oblation in the burning flames.

सन्तोषः

१. आरोग्यं विद्वत्ता सज्जनमैत्री
महाकुले जन्म ।
स्वाधीनता च पुंसां
महदैश्वर्यं विनाऽप्यर्थैः ॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः श्लोकः ३१७)

आरोग्य, विद्वत्ता, सज्जनों के साथ विद्वत्ता, महान् कुल में जन्म, तथा स्वतन्त्रता; मनुष्यों के लिये यह सब धन के बिना ही महान् ऐश्वर्य है ।

Health, learning friendship with gentle persons, and freedom all these bring

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

glory to a man without depending on wealth.

सभा परिषद्

१. **मुनीनामात्मविद्यानां**
द्विजानां यज्ञयाजिनाम् ।
वेदव्रतेषु स्नाताना-
मेकोऽपि परिषद् भवेत् ॥ (पराशरस्मृतिः ८/२०)

मुनि, आत्मज्ञानी, यज्ञ करने वाले ब्राह्मण और वेदों के विद्वान्; इनमें से कोई एक भी उपस्थित हो तो वह अकेला भी सम्पूर्ण सभा कहलाता है ।

Sages, those who have acquired knowledge of the self, those who perform sacrifice, *Brāhmaṇas* (intellectuals) and the scholars of vedas, any of them if present, constitutes an assembly by himself.

स्त्री

१. **अनपत्या तु या नारी**
नाश्नीयात्तद्गृहेऽपि वा ।
(आंगिरसस्मृतिः, श्लोकः ६९)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निस्सन्तान स्त्री के घर में भी भोजन नहीं करना चाहिये।

One should not take food in the house of a barren woman.

२. **अनिन्दितैः स्त्रीविवाहै-**
रनिंद्या भवति प्रजा।
निन्दितैर्निन्दिता नृणां
तस्मान्निन्द्यान् विवर्जयेत्॥

(मनुस्मृतिः ३/४२)

अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठ स्त्रियों के साथ विवाह करने से सन्तान भी श्रेष्ठ उत्पन्न होती है और निन्दित विवाह से निन्दनीय सन्तान उत्पन्न होती है। इसलिये निन्दित विवाहों से बचना चाहिये।

Good offsprings are obtained from the marriage with an uncalumnised woman, and from the marriage with a calumnised woman the offspring also are defiled. Hence one should avoid marriage which does not enjoy social sanction.

३. **अपुत्रा योषितो नित्यं**
भर्तव्याः साधुवृत्तयः।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निर्वास्या व्यभिचारिण्यः
प्रतिकूलास्तथैव च ॥

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ७/२५८)

अच्छे आचरण वाली स्त्री चाहे पुत्रहीन भी हो तो भी उसका भरण-पोषण करणीय है, किन्तु जो व्यभिचारिणी है वह चाहे पुत्रवाली भी हो तो भी उसे घर से निकाल देना चाहिये ।

A woman of good character even if issuless, should be looked after but a slut, even if having a son, should exiled from home.

४. **अमीमांस्यानि शौचानि**
स्त्रीणां व्याधितस्य च ।

(अत्रिसंहिता, श्लोकः १९२)

स्त्रियों की और रोगी की पवित्रता की व्याख्या नहीं की जा सकती ।

The purity of the woman and the diseased cannot be explained.

५. **अरण्ये वसुधा मेध्या**
ग्रामे मेध्या क्वचित्क्वचित् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वत्र वसुधा मेध्या
यत्र लोको न दृश्यते ॥

(लघुहारीतस्मृतिः, श्लोकः ७१)

जंगल की धरती पवित्र होती है, गांव की भूमि कहीं-कहीं पवित्र होती है, किन्तु जहाँ लोग नहीं रहते, वहाँ की धरती सर्वत्र पवित्र होती है ।

The land of the forest is always pure. The land in the village is pure at some places, but the land, where the people are not seen is pure everywhere.

६. **अवाग्दुष्टाऽनुकूला स्त्री**
भवेद् वै पुंण्यकर्मणा ।

(व्यवहारनिर्णयः, पृ. ३९०)

वाणी दोष रहित तथा अनुकूल स्त्री बड़े पुण्यों से प्राप्त होती है ।

A sweet tongued and favourable wife is obtained by virtue of pious actions.

७. **अविद्वान्समलं लोके**
विद्वान्समपि वा पुनः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रमदा ह्युत्पथं नेतुं
कामक्रोधवशानुगम् ॥

(मनुस्मृतिः, २/१८९)

विद्वान् हो या मूर्ख, लोक में जो भी काम और क्रोध के वश में है, उसको स्त्रियाँ कुमार्ग पर ले जाने में पूर्ण समर्थ हैं।

Women are quite capable of driving a man to the path of evil who is under the influence of desire and anger, either he be an ignorant or a learned man.

८. **अवृत्ति कर्षिता हि स्त्री**
प्रदुष्येत् स्थितिमत्यपि ॥

(मनुस्मृतिः ९/७४)

जीविका के अभाव से पीडित होकर शुद्ध आचरण वाली स्त्री भी दूषित हो सकती है।

A woman, even of a good character, gets defiled in the absence of means of livelihood.

९. **अष्टवर्षा भवेद् गौरी**
नववर्षा च रोहिणी ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दशवर्षा भवेत्कन्या
अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥

(बृहद्यमस्मृतिः ३/२१)

आठ वर्ष की आयु की लड़की गौरी कहलाती है, नौ वर्ष की लड़की रोहिणी कहलाती है। दस वर्ष की आयु तक कन्या कहलाती है और इसके पश्चात् रजस्वला हो जाती है।

A girl of eight years is known as Gaurī, of nine years *Rohiṇī*, of ten years as Kanyā as and after ten years achieves puberty.

१०. अस्वतन्त्राः स्त्रियः कार्याः ।

(मनुस्मृतिः ९/२)

स्त्रियों को स्वतन्त्र नहीं करना चाहिये।

Women must never be left free.

११. उत्कर्षं योषितः प्राप्ताः
स्वैः स्वैर्भर्तृगुणैः शुभैः ।

(मनुस्मृतिः, ९/२४)

स्त्रियों ने सदैव अपने-अपने पति के शुभ गुणों के आधार पर ही उत्कर्ष प्राप्त किया है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Women have always achieved progress on account of the virtues of their husbands.

१२. उद्वाहमुदितं स्त्रीणां
यौनसम्बन्धकारणात् ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, १२/१४)

यौन सम्बन्धों के लिये ही स्त्रियों का विवाह बताया गया है ।

Marriage for women has been prescribed for the purpose of only sexual relations.

१३. कन्यादाने विवाहे च
प्रतिष्ठा यज्ञकर्मणि ।
सर्वेषु धर्मकार्येषु
पत्नी दक्षिणतः स्मृता ॥

(व्याघ्रपादस्मृतिः, श्लोकः ८४)

कन्यादान के समय, विवाह के समय, प्रतिष्ठा और यज्ञ के कार्य में तथा समस्त धार्मिक कृत्यों में पत्नी को दाहिनी ओर बैठना चाहिये ।

On the occasion of bestowing of the daughter in marriage, at the time of marriage, at the time of installation of

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

idols and *yajña*, and in all other religious rites the wife is advised to sit on the right side of her husband.

१४. कामं तु क्षपंयेद् देहं
पुष्पमूलफलैः शुभैः ।
न तु नामापि गृह्णीयात्
पत्यौ प्रेते परस्य तु ॥ (मनुस्मृतिः, ५/१५६)

स्त्री को भले ही फूल, कन्द तथा फलों से शरीर का गुजारा करना पड़े, किन्तु पति के मर जाने पर उसे पर पुरुष का नाम भी नहीं लेना चाहिये ।

She may have to lead her life living on flowers, roots and fruit but a woman should not even utter the name of an other person after her husband's death.

१५. कामनाम्ना किरातेन
विकीर्णा मुग्धचेतसः ।
नार्यो नरविहङ्गाना-
मङ्गबन्धनवागुराः ॥

(श्रुतिसिद्धान्तसारसंग्रहः, साधनप्रकरणं, श्लोकः ९६)

कामदेवरूपी भील ने स्त्रीरूपी जाल नररूपी पक्षियों को फँसाने के लिये फेंका हुआ है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Kāmadeva (the god of desire) in the form of a hunter has spread women in the form of a net to trap birds in the form of men.

१६. काममामरणात् तिष्ठेत्
गृहे कन्यर्तुमत्यपि ।
न चैवेनां प्रयच्छेत्तु
गुणहीनाय कर्हिचित् ॥

(मनुस्मृतिः, ९/८९)

भले ही कन्या ऋतुमती होकर भी पिता के घर में बिना विवाह के बैठी रहे, किन्तु उसे गुणहीन पति को नहीं देना चाहिये ।

It is better to keep the daughter, even if she has reached paberty, in her father's house without getting her married than to marry her off to a husband devoid of merit.

१७. कुलटां कामचारेण
गर्भघ्नीं भर्तृहिंसिकाम् ।
निकृत्तकर्णनासोष्ठीं
कृत्वा नारीं प्रवासयेत् ॥

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ७/१९२)

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुलटा, कामचारिणी, गर्भ को नष्ट करने वाली तथा पति को मारने वाली नारी को, उसके कान, नाक और होंठ काटकर देश से बाहर निकाल देना चाहिये।

A slut, a corrupt women, one who aborts and one who kills her husband should be exiled after cutting off her ears, nose and lips.

१८. कुविवाहैः क्रियालोपै-
र्वेदानध्ययनेन च।
कुलान्यकुलतां यान्ति
ब्राह्मणातिक्रमेण च॥

(मनुस्मृतिः, ३/६३)

दुष्ट विवाहों से, सत्क्रियाओं का लोप हो जाने से तथा वेद का अध्ययन न करने से और ब्राह्मणों का अपमान करने से उच्चकुल भी निम्न कुलत्व को प्राप्त हो जाते हैं।

By low marriages, by omitting the performance of sacred rites, by neglecting the study of the vedas and irreverence towards Brāhmaṇas, even great families sink low.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१९. किं निष्कामस्य नारीभिः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/२१७)

कामरहित पुरुष को भला स्त्रियों से क्या काम ?

Women are of no use to a man without passion or desire.

२०. केशकज्जलधारिण्यो
दुःस्पर्शा लोचनप्रियाः ।
दुष्कृताग्निशिखा नार्यो
दहन्ति तृणवन्नरम् ॥

(श्रुतिसिद्धान्तसारसंग्रहः, साधनप्रकरणं, श्लोकः ९५)

केशरूपी काजल को धारण करने वाली, स्पर्श करने में कठिन तथा आँखों को प्रिय लगने वाली स्त्रियाँ पापरूपी अग्नि की ज्वाला के समान मनुष्य को तिनके के समान जला डालती हैं ।

Women with hair as black as *kājal*, hard to touch and looking desirable to the eyes burn a man with sin as a fire burns a straw.

२१. क्रय क्रीता तु या कन्या
पत्नी सा न विधीयते ।

(अत्रिस्मृतिः, श्लोकः ३८७)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खरीदी हुई कन्या पंत्नी बनने योग्य नहीं होती ।

A purchased girl is not fit to be a wife.

२२. **क्षेत्रभूता स्मृता नारी**
बीजभूतः स्मृतः पुमान् ।

(मनुस्मृतिः, ९/३३)

स्त्री खेत के समान बतायी गयी है और पुरुष बीज बताया गया है ।

A woman is said to be like a field and the man, like a seed.

२३. **चेष्टाचरित्रचित्राणि**
देवा नैव विदुः स्त्रियाः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/५७)

स्त्रियों की चेष्टाओं को और विचित्र चरित्रों को देवता भी नहीं जानते ।

Even the gods do not understand the actions of women and their characters.

२४. **जामयो यानि गेहानि**
शपन्त्यप्रतिपूजिताः ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तानि कृत्याहतानीव
विनश्यन्ति समन्ततः ॥ (मनुस्मृतिः ३/५८

स्त्रियाँ अपमानित होकर जिन घरों को शाप दे देती हैं, वे घर कृत्या (दुष्ट देवी) के द्वारा विनष्ट हुए के समान विनष्ट हो जाते हैं ।

The houses on which women being humiliated, pronounce a curse, are ruined completely, as if destroyed by magic.

२५. **जीवन्वापि मृतो वापि**
पतिरेव प्रभुः स्त्रियाः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/५०)

पति जीवित हो या मर गया हो, स्त्री का प्रभु वही होता है ।

Whether dead or alive, only the husband is the lord of a woman.

२६. **ज्येष्ठता नास्ति हि स्त्रियः ।**

(व्यवहारनिर्णयः, पृ. ४३८)

पति से स्त्री की ज्येष्ठता स्वीकार नहीं की जाती ।

A woman is not recognised as senior to her husband.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२७. ज्वलना अति दूरेऽपि
सरसा अपि नीरसाः ।
स्त्रियो हि नरकाग्नीना-
मिन्धनं चारुदारुणम् ॥

(श्रुतिसिद्धान्तसंग्रहः साधनाप्रकरणं, श्लोकः ९४)

स्त्रियाँ दूर से भी मनुष्य को जलाने की शक्ति रखती हैं। ये सरस होकर भी रसहीन हैं। स्त्रियाँ नरक की अग्नि का सुन्दर और भयानक ईन्धन हैं।

Women have the power to burn a man even from a distance. Despite being interesting, they are infact dull. Women are the beautiful but dangerous fuel of the hell-fires.

२८. दक्षिणे वसति पत्नी
हवने देवतार्चने ।
शुश्रूषा रति काले च
वामभागे प्रशस्यते ॥

(व्याघ्रपादस्मृतिः श्लोकः ८५)

हवन और देवता की पूजा के समय पत्नी दाहिनी ओर बैठती है, किन्तु सेवाकाल में और रति क्रिया के समय वामभाग में श्रेष्ठ मानी गयी है।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

The wife remains at the right side of her husband at the time of sacrificial rites and worship of the gods, but her proper place is on the left side while serving and during sexual intercourse.

२९. दानात्प्रभृति या तु स्या-
द्यावदायुः पतिव्रता ।
सा भर्तृलोकमाप्नोति
यथैवारुन्धती तथा ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः २५१)

जो स्त्री विवाह से लेकर आयु पर्यन्त पतिव्रता रहती है, वह अपने पति के लोक को ही प्राप्त करती है, जैसे अरुन्धती ने पतिलोक प्राप्त किया ।

A wife who remains virtuous throughout from marriage to death, obtains the region of his husband just as *Arundhatī* did.

३०. दाराधीनाः क्रियाः सर्वा
दाराः स्वर्गस्य साधनम् ।

(काश्यपस्मृतिः श्लोकः ४)

समस्त शास्त्रीय क्रियाएँ पत्नी के द्वारा सम्पन्न होती हैं स्वर्ग का साधन भी पत्नी ही है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Performance of all the rites depend upon the wife. The wife is the only means of heavenly pleasure.

३१. दुःखश्रृंखलया नित्य-
मलमस्तु मम स्त्रिया ।

(श्रुतिसिद्धान्तसारसंग्रहः साधनप्रकरणं, श्लोकः ९८)

दुःख की श्रृंखलारूप स्त्री से मुझे अब कोई प्रयोजन नहीं ।

I have nothing to do with women who are a chain of afflictions.

३२. दुष्टस्त्री दर्शनेनैव
पितरो यान्त्यधोगतिम् ।

(बृहद्यमस्मृतिः, ४/३७)

व्यभिचारिणी स्त्री के देखने मात्र से ही पितर अधोगति को प्राप्त होते हैं ।

Only by the looking of a corrupt woman, ancestors go down to a lower state.

३३. दूरस्थानामविद्यानां
मोक्षधर्मानुयायिनाम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शूराणां निर्धनानां च
न देया कन्यका बुधैः ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/२६)

बहुत दूर पर स्थित, विद्याहीन्, मोक्षधर्म के अनुगामी, निर्धन तथा शूर, इन चार प्रकार के वरों को कन्या नहीं देनी चाहिये ।

A girl should not be married to a person living in a far off place, one devoid of learning, a fullower of the spiritual path poor and a hero.

३४. **धर्मानुचारिणी भार्या**
सवर्णा यत्र तिष्ठति ।
कुर्यात्तत्राग्निहोत्रादि-
प्रवदन्ति महर्षयः ॥

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः)

जहाँ धर्मानुचारिणी तथा समान वर्ण की पत्नी साथ रहती है, वहीं अग्निहोत्रादि कर्म किया जाता है, ऐसा महर्षिजन कहते हैं ।

Sages say that sacrifice etc. is performed only where a virtuous wife of the like caste lives.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३५. न कश्चिद्योषितः शक्तः
प्रसह्य परिरक्षितुम् । (मनुस्मृतिः, ९/१०)

कोई भी पुरुष बलपूर्वक स्त्री को अपने पास नहीं रख सकता ।

Nobody can keep a woman with him by force.

३६. न जातिं न च विद्यां च
वित्तं नाचरणं स्त्रियः ।
किन्तु ताः प्रीतिमिच्छन्ति
तस्मात् प्रीतिकरं भवेत् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२२)

स्त्रियाँ न जाति को चाहती हैं और न विद्या को । न वे धन चाहती हैं, न आचरण । वे तो केवल प्रेम चाहती हैं । इसलिये पति का व्यवहार प्रीतिकर होना चाहिये ।

Women neither want caste nor knowledge, nor wealth, nor conduct, They desire only affection. The behaviour of the husband towards his wife, therefore, should be loving and affectionate.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

३७. **न त्वेव स्त्रीवधं कुर्यात् ।**

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः २४९)

स्त्री का वध कभी नहीं करना चाहिये ।

One should never murder a woman.

३८. **न पूज्या न च सेव्यास्ता**
नाशमृत्युकराः स्त्रियः ।

(यमस्मृतिः स्मृतिचन्द्रिका प्रथमखण्डः पृ. २०१)

नाश और मृत्यु की हेतुभूत स्त्रियों की न तो पूजा करें और न सेवन करें ।

Women who are the cause of destruction and death are neither to be worshipped nor to be used.

३९. **न व्रतैर्नोपवासैश्च**
धर्मेण विविधेन च ।
नारी स्वर्गमवाप्नोति
प्राप्नोति पतिपूजनात् ॥

(शंखस्मृतिः, ५/८)

अनेक व्रतों से, उपवासों से तथा अनेक प्रकार के धर्मों से स्त्री स्वर्ग प्राप्त नहीं करती, अपितु पति की पूजा करने से ही स्वर्ग प्राप्त करती है ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

A woman does not obtain paradise through performance austerities, fasts and the pious rites of various kinds. She obtains that only by worshiping her husband.

४०. न स्त्रिया वपनं कार्यम् ।

(लघुयमस्मृतिः, श्लोकः ५५)

स्त्री को कभी भी अपने बाल नहीं काटने चाहिये ।

A woman should never get her hair cut.

४१. न स्त्रीषु वचनं कुर्यात् ।

(अंगिरसस्मृतिः, श्लोकः १६१)

स्त्रियों के साथ कोई वादा नहीं करना चाहिये ।

One should never give his word to a woman.

४२. न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति । (मनुस्मृतिः ९/३)

स्त्री स्वतन्त्रता के योग्य नहीं है ।

Women do not deserve independence.

४३. नातिदूरे न चासन्ने
अत्याढ्ये चातिदुर्बले ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वृत्तिहीने च मूर्खे च
षट्सु कन्या न दीयते ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/२७)

बहुत दूर पर और बहुत निकट स्थान पर, अत्यन्त धनवान् और अति निर्धन, आजीविका से रहित तथा मूर्ख, इन छः स्थानों पर कन्या का विवाह नहीं करना चाहिये ।

A girl should not be married off in six situations--at a far off place, at a very close by place, to an extremely richman, to an extremely poorman, to a man having no means of livelihood and to a fool.

४४. **नानावर्णासु भार्यासु**
सवर्णा सहचारिणी । (व्यासस्मृतिः, २/११)

अनेक वर्ण की स्त्रियों में जो सवर्णा होती है, वह साथ निभाती है ।

Of the women of various castes, only that who is of a high caste, can become a life-long partner.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४५. **नान्यस्मिन् विधवा नारी**
नियोक्तव्या द्विजातिभिः ॥

(मनुस्मृतिः, ९/६४)

विद्वानों के द्वारा विधवा स्त्री किसी पुरुष को नहीं दी जानी चाहिये ।

A widow should not be married off to another person by the learned.

४६. **नापमान्याः स्त्रियः सद्भिः ।**

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/४६)

सत्पुरुषों को कभी भी स्त्रियों का अपमान नहीं करना चाहिये ।

Good men should never humiliate women.

४७. **नारीणां च नदीनां च**
गतिर्न ज्ञायते बुधैः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/५६)

स्त्रियों की और नदियों की गति विद्वानों के द्वारा भी नहीं जानी जाती है ।

The course of women and rivers is not knows even to the learned.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

४८. **नारी तीर्थं पतिव्रता ।**

(वृद्धगौतमस्मृतिः, २०/९)

पतिव्रता स्त्री तीर्थ के समान पवित्र होती है।

A virtuous wife is just as holy as a place of pilgrimage place.

४९. **नाश्नन्ति पिशुने देवाः**
नाश्नन्त्यनृतवादिनः ।
भार्याजितस्य नाश्नन्ति
यस्य चोपपतिर्गृहे ॥

(अंगिरसस्मृतिः श्लोकः १३१)

विद्वान् पुरुष चुगलखोर तथा झूठ बोलने वाले मनुष्य के घर में भोजन नहीं करते। जो पुरुष अपनी पत्नी का दास है तथा जिसके घर में कोई उपपति (जार) रहता है, उसके घर में भी वे भोजन नहीं करते।

Wise men do not take meals in the house of a backbiter and of a liar. They also do not take meals in the house of a man who is dominated by his wife or in the home where lives a paramour.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

५०. नास्ति मातृसमं दैवं
नास्ति पित्रा समो गुरुः ।

(देवलस्मृतिः, प्रथमखण्डः, पृ. ९५)

माता के समान कोई देवता नहीं होता और पिता के समान कोई गुरु नहीं होता ।

There is no deity like the mother, and there is no teacher like the father.

५१. नास्ति स्त्रीणां पृथग्ज्ञानं
न व्रतं नाप्युपोषणम् ।
पतिशुश्रूषणे तासां
स्वर्गमेव विधीयते ॥ (वशिष्ठस्मृतिः ५/३)

स्त्रियों के लिये पति के अतिरिक्त कोई ज्ञान या व्रत नहीं । न ही कोई उपवास है । पति की सेवा में ही स्त्रियों का स्वर्ग बताया गया है ।

No knowledge, no vow and no fast is those for women except their respective husbands. If a wife obeys her husband, she will for that reason alone, be exalted to heavan.

५२. नोद्वहेत् कपिलां कन्याम् ।

(वैदिकमनुस्मृतिः ३/८)

Funding by IKS-MoE

पीले रंग वाली कन्या से विवाह नहीं करना चाहिये।

One should not marry a girl of yellow complexion.

५३. **पतिं या नाभिचरति**
मनो वाक्कायसंयता।
सा भर्तृलोकानाप्नोति
सद्भिः साध्वीति चोच्यते॥

(वशिष्ठस्मृतिः ५/६)

जो स्त्री मन-वचन और देह से संयम में रहकर पति के विपरीत आचरण नहीं करती, वह पतिलोक को प्राप्त करती है और लोक में सत्पुरुषों के समक्ष साध्वी कही जाती है।

A woman, who does not disobey her husband keeping her mind, speech and body in discipline, obtains the region of her husband and is called the virtuous by the good men.

५४. **पतिमुल्लंघ्य मोहात्स्त्री**
कं कं न नरकं व्रजेत्।

(गोभिलस्मृतिः प्रपाठकः २, श्लोकः १६६)

अज्ञानवश अपने पति का उल्लंघन करके स्त्री भला

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कौन-कौन से नरक को प्राप्त नहीं होती, अर्थात् प्रत्येक नरक को प्राप्त होती है ।

By overstepping her husband in ignorance, a woman goes to all kinds of hells.

५५. **पतिरेको गुरुः स्त्रीणाम् ।**

(औशनसस्मृतिः, श्लोकः ४८

पति ही एक मात्र स्त्रियों का गुरु होता है ।

The husband alone is the teacher of a women.

५६. **पतिर्हि दैवतं नार्याः**
पतिर्बन्धुः पतिर्गतिः ।
तस्याज्ञां लंघयित्वैव
नारी नरकमाप्नुयात् ॥

(वशिष्ठस्मृतिः, ५/२)

पति ही स्त्री का देवता है, पति ही बन्धु है और पति ही उसकी गति है । उसकी आज्ञा का उल्लंघन करके नारी नरक को प्राप्त करती है ।

The husband is deity for a woman, her relative and her final state. Having

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

overstepped his orders, the woman goes to hell.

५७. पतिशुश्रूषयैव स्त्री
सर्वाल्लोकान् समश्नुते ।

(गोभिलस्मृतिः प्रपाठकः २, श्लोकः १६७)

पति की सेवा से ही स्त्री समस्त लोकों को प्राप्त कर लेती है ।

Only by the service rendered to her husband a woman obtains all the good regions.

५८. पानं दुर्जनसंसर्गः
पत्या च विरहोऽटनम् ।
स्वप्नोऽन्यगेहवासश्च
नारी सन्दूषणानि षट् ॥

(व्यवहारनिर्णयः, पृ. ३८९)

मदिरापान, दुष्टों का सम्पर्क, पति से अलग रहना, व्यर्थ घूमना, दिन-रात सोना और दूसरे के घर में रहना, ये छः बाते स्त्रियों को दूषित करने वाली हैं ।

Drinking, being in contact with wicked persons, living separately from the husband aimless roaming, sleeping all the

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

time and residing in another person's house, these are the six faults which corrupt a woman.

५९. पुरुषास्तु जिताः स्त्रीभिः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः १/३४)

पुरुष सदा स्त्रियों के द्वारा जीते जाते हैं ।

men are always conquered by women.

६०. प्राणैरपि प्रियान् पुत्रान्
मन्यते सुवत्सला ।
कस्तस्या निष्कृतिं कर्तुं
शक्तो वर्षशतैरपि ॥

(व्यासस्मृतिः, प्रथमखण्डः, पृ. ९८)

पुत्रवत्सला माता अपने पुत्रों को प्राणों से भी प्रिय मानती है । सैकड़ों वर्षों में भी भला कौन उसका बदला उतार सकता है ?

An affectionate mother considers her offspring more valuable than her own life. Who can recompense her even in hundreds of years?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६१. बलात्काराद्धि दुष्टस्त्री-
निग्रहो विधिचोदितः ।

(स्मृतिचन्द्रिका प्रथमखण्डः पृ. ३१)

बलपूर्वक भी दुष्ट स्त्री को वश में रखना विधान-सम्मत है ।

To control a wicked woman by force is permissible under the law.

६२. बालया वा युवत्या वा
वृद्धया वापि योषिता ।
न स्वातन्त्र्येण कर्त्तव्यं
किंचित्कार्यं गृहेष्वपि ॥

(मनुस्मृतिः, ५/१४७)

स्त्री चाहे बालिका हो या युवती अथवा चाहे वृद्धा हो, उन्हें घर में भी कोई कार्य स्वतन्त्रता से बिना पूछे नहीं करना चाहिये ।

Be a woman either a child, a young woman or an old woman, she should not do any work even in the house independently without permission.

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

६३. बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्
पाणिग्राहस्य यौवने ।
पुत्राणां भर्तरि प्रेते
न भजेत् स्त्री स्वतन्त्रताम् ॥

(मनुस्मृतिः ५/१४८)

स्त्री बाल्यकाल में पिता के वश में रहे, युवावस्था में पति के वश में रहे और पति के मर जाने पर पुत्रों के वश में रहे । कभी भी स्त्री को स्वतन्त्र नहीं रहना चाहिये ।

A woman should remain in the childhood under the control of her father, in the youth under the control of her husband and in the old age, after the death of her husband under the control of her sons. A woman should never be left independent.

६४. बीजस्य चैव योन्याश्च
बीजमुत्कृष्टमुच्यते । (मनुस्मृतिः, ९/३५)

बीज और भूमि में बीज को ही उत्कृष्ट कहा जाता है ।

Between the seed and the land, the seed has been declared superior.

६५. बीजाद्योनिर्गरीयसी । (मनुस्मृतिः, ९/५२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बीज से भूमि श्रेष्ठ होती है ।

The land is superior to the seed.

६६. भर्तुः प्रिय हिते युक्ता
सदाचारा जितेन्द्रिया ।
इह कीर्तिमवाप्नोति
गतिं प्राप्नोत्यनुत्तमाम् ॥

(वशिष्ठस्मृतिः, ५/१६)

जो स्त्री पति का हि़त सम्पादन में लगी रहती है, सदाचारिणी और जितेन्द्रिया है, वह इस लोक में यश प्राप्त करती है और परलोक में उत्तम गति को प्राप्त करती है ।

A woman, who is engaged in promoting the interests walfare of her husband, who is of good conduct and who has conquered her senses, attains fame in this world and excellent state after death.

६७. भर्तुः शयनमुत्सृज्य
या चान्येषु प्रवर्तते ।
तस्या अन्नं न भोक्तव्यं
विज्ञेया कामचारिणी ॥

(अंगिरसस्मृतिः, श्लोकः ११३)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो स्त्री पति का संग छोड़कर अन्य पुरुषों में प्रवृत्त होती है, उसके घर पर अन्न नहीं खाना चाहिये। उसे स्वेच्छाचारिणी समझना चाहिये।

A woman, who, abandoning the company of her husband, gets inclined towards other men, should be considered a wanton woman. Her hospitality should not be accepted.

६८. भार्याधीनं सुखं पुंसां
भार्याधीनं गृहं धनम्।
भार्याधीना सुखोत्पत्ति-
र्भार्याधीनः शुभोदयः॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/७०)

पुरुषों का सुख पत्नियों के अधीन है। घर, धन, सुख और शुभोदय सब भार्या के हाथ में है।

The happiness of men depends upon their wives. Home, wealth, happiness and origin of pleasure and excellence, all depend upon the wife.

६९. मनसाऽपि हि दुष्टा स्त्री
याऽन्यभावा प्रियं पतिम्।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सा याति नरकं घोरं
तद्द्रोहादणुतोऽपि वा ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः, ६/५१)

जो दुष्ट स्त्री अपने प्रिय पति से भिन्न किसी पुरुष को मन से भी सोचती है, वह उस छोटे से भी द्रोह से घोर नरक को जाती है।

If a wicked woman even thinks of a man, other than her husband, she goes to the fearful hell even for this tiny infidelity.

७०. मृते जीवति वा पत्यौ
या नान्यमुपगच्छति ।
सेह कीर्तिमवाप्नोति
मोदते रमया सह ॥

(वृद्धहारीतस्मृतिः, ११/१९७)

जो स्त्री पति के मर जाने पर अथवा जीते हुये दूसरे पुरुष के पास नहीं जाती, वह इस लोक में यश को प्राप्त करती है और लक्ष्मी के साथ प्रसन्न होती है।

A woman, who after the death or during the life-time of her husband does not go to another man, obtains fame in this world and enjoys wealth and prosperity.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

७१. मृते भर्तरि या नारी
नीलीवस्त्रं प्रधारयेत् ।
भर्ता तु नरकं याति
सा नारी तदनन्तरम् ॥

(आंगिरसस्मृतिः, श्लोकः २१)

पति के मर जाने पर जो स्त्री नीला वस्त्र धारण करती है, उसका पति नरक को जाता है और उसके पश्चात् वह नारी नरक को जाती है।

If a woman, after the death of her husband, wears blue clothes, her husband goes to hell and after that she herself goes there.

७२. यतन्ते रक्षितुं भार्यां
भर्तारो दुर्बला अपि । (मनुस्मृतिः, ९/६)

कमजोर पति भी अपनी पत्नी की रक्षा करने का प्रयत्न करते हैं।

Even weak husbands try to protect their wives.

७३. यत्र तिष्ठति वै भार्या
तत्र होमो विधीयते ।

(लघ्वाश्वलायनस्मृतिः, श्लोकः ६९)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जहाँ पत्नी साथ रहती है, वहीं यज्ञ किया जाता है।
(अर्थात् पत्नी के बिना होम नहीं किया जाता।)

Where the wife is with her husband sacrifice is performed only there.

७४. यत्र भार्या गृहं तत्र
भार्याहीनं गृहं वनम्।

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/७१)

जहाँ पत्नी है वहीं घर है। पत्नी के बिना घर जंगल के समान है।

Home is where the wife is. Without wife, the home is like a jungle.

७५. यथा भर्ता प्रभुः स्त्रीणां
वर्णानां ब्राह्मणो यथा।
अतिथिस्तद्वदेवास्य
गृहस्थस्य प्रभुः स्मृतः॥

(शंखस्मृतिः, ५/७)

जैसे पति पत्नी का प्रभु है और जैसे ब्राह्मण समस्त वर्णों का स्वामी है, उसी प्रकार अतिथि भी गृहस्थ का स्वामी कहा गया है।

As the husband is the lord of his wife, as

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

a *Brāhmaṇa* is the lord of all the castes, like-wise a guest is said to be the lord of a family man.

७६. यथा शीला भवेन्माता
तथा शीला भवेत्सुता ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः, पृ. २०५)

माता का जैसा चरित्र होता है, उसकी बेटी का चरित्र भी वैसा ही होता है ।

In mother of character, a daughter follows in the foot-steps of her mother.

७७. यस्य स्त्री तस्य भोगेच्छा
निस्त्रीकस्य क्व भोगभूः ।
स्त्रियं त्यक्त्वा जगत्त्यक्तं
जगत्त्यक्त्वा सुखी भवेत् ॥

(श्रुतिसिद्धान्तसंग्रहः साधनप्रकरणं, श्लोकः ९९)

जिनके पास स्त्री है उसी की भोग की इच्छा होती है । स्त्रीविहीन की भला कैसी भोगेच्छा । स्त्री को छोड़कर मानो संसार को ही छोड़ दिया और जगत् को छोड़कर ही सुख प्राप्त होता है ।

A person has a desire of intercourse if he

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

has the wife with him. There is no sexual desire in the person without a wife. The avoidance of wife is the avoidance of the world, and only by avoiding the world, a man gets happiness.

७८. यादृग्गुणेन भर्त्रा स्त्री
संयुज्येत यथाविधि ।
तादृग्गुणा सा भवति
समुद्रेणेव निम्नगा ॥ (मनुस्मृतिः ९/२२)

स्त्री जिसप्रकार के गुण वाले पति से विधिपूर्वक संयुक्त होती है, वह उसी के समान गुण वाली हो जाती है । जैसे नदी समुद्र से मिलकर समुद्ररूप ही हो जाती है ।

A woman acquires the attributes of her husband on legally being united with him as a river turns into the ocean after uniting with it.

७९. यावन्न विन्दते जायां
तावदर्द्धो भवेत् पुमान् ।
(व्याससमृतिः २/१३)

जब तक पुरुष का विवाह नहीं होता है, तब तक वह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधूरा है ।

A man is incomplete till he gets married.

८०. येऽक्षेत्रिणो बीजवन्तः
परक्षेत्रप्रवापिणः ।
ते वै सस्य जातस्य
न लभन्ते फलं क्वचित् ॥

(मनुस्मृतिः ९/४९)

जिनके पास खेत नहीं है, किन्तु बीज हैं । वे यदि अपने बीज को दूसरे के खेत में बोते हैं तो वे उत्पन्न हुए धान का फल प्राप्त नहीं करते ।

Those, who, having no field, but possessing only seeds sow their in another's soil, do indeed not get the grains of the paddy grown there.

८१. रजसा शुध्यते नारी
न चेद् गच्छेद् विवर्णताम् ।
यथा ग्राममलग्राही
नदी वेगेन शुध्यति ॥

(अंगिरसस्मृतिः श्लोकः ५५))

यदि स्त्री किसी भिन्न वर्ण (जाति) को प्राप्त नहीं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करती तो वह प्रतिमास रजःस्राव के पश्चात् शुद्ध हो जाती है, जैसे गाँव के मल को धारण करने वाली नदी तीव्र प्रवाह से शुद्ध हो जाती है ।

A woman is purified after the menstrual secretion every month if she has not entered into any other caste, as a river, having the filth of village is made pure by current.

८२. रतिपुत्रफला नारी ।

(वृद्धगौतमस्मृतिः श्लोकः ७८)

नारी के दो लाभ हैं- रति और पुत्रोत्पत्ति ।

A woman has two advantages–sex and the birth of a son.

८३. रेतः क्षयकरी वन्ध्या ।

(अंगिरसस्मृतिः, श्लोकः १२४)

वन्ध्या स्त्री तो केवल वीर्य का नाश करने वाली होती है ।

A barren woman will only lay waste the semen.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८४. लालनीया सदा भार्या
ताडनीया तथैव च ।
लालिता ताडिता चैव
स्त्री श्रीर्भवति नान्यथा ॥

(शंखस्मृतिः ४/१६)

पत्नी सदा प्रेम करने योग्य है, किन्तु विपरीत आचरण करने पर ताडनीय भी है । इस प्रकार लालित और ताडित होकर ही स्त्री लक्ष्मी होती है अन्यथा नहीं ।

A woman deserves to be loved but, if indulging in misconduct, also deserves to be given corporal punishment. Only by being loved and punished a woman becomes Lakṣmī, otherwise not.

८५. विकुर्वाणाः स्त्रियो भर्तु-
रायुष्यधननाशकाः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/५५)

अपमानित की गयीं स्त्रियाँ पति की आयु और धन दोनों का नाश करती हैं ।

Women having been humilated destroy the lifespan and wealth of their husbands.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

८६. विधिवत्प्रतिगृह्यापि
त्यजेत्कन्यां विगर्हिताम् ।

(मनुस्मृतिः ९/७२)

विधिपूर्वक विवाह करके भी व्यभिचारिणी स्त्री को छोड़ देना चाहिये ।

A man should desert an adulterous woman, even having married her in the prescribed legal manner.

८७. शरीरार्धं स्मृता जाया
पुण्यापुण्यफले समा ।

(व्यवहारनिर्णयः पृ. ४४९))

पत्नी अपने पति का आधा अंग मानी गयी है, जो कि पुण्य और पाप में समान भागीदार है ।

A woman has been said to be the better half of her husband and is an equal partner both virtue and vice.

८८. शीलमेव तु नारीणां
प्रधानं धर्म उच्यते ।
शीलभंगेन नारीणां
यमलोकं सुदारुणम् ॥

(वशिष्ठस्मृतिः ५/१)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शील (चरित्र) ही स्त्रियों का मुख्य धर्म है । स्त्रियों का शीलभंग होने पर दारुण यमलोक भोगना पड़ता है ।

Purity of character alone is the chief virtue of women. On destruction of chastity, women attain the fearful region of the Lord of Death.

८९. **शुल्केन ये प्रयच्छन्ति**
स्वसुतां लोभमोहिताः ।
आत्मविक्रयिणः पापा
महाकिल्विषकारिणः ॥

(बोधायनस्मृतिः, १/११/२१)

जो लोग अपनी बेटी को शुल्क लेकर लोभवश किसी को दे देते हैं, वे पापी लोग अपनी आत्मा को ही बेच डालते हैं । वे सचमुच महापापी हैं ।

Those who, out of greed, sell off their daughter for a fee, in fact, sell off their own souls. They virtually are great sinners.

९०. **शोचन्ति जामयो यत्र**
विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

न शोचन्ति तु यत्रैता
वर्धते तद्धि सर्वदा ॥ (मनुस्मृतिः, ३/५७)

जिस कुल में स्त्रियाँ दुःखी रहती हैं, वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है । जहाँ ये शोक नहीं करतीं, वह कुल सदा सम्मृद्धि को प्राप्त करता है ।

The family in which the women remain alway mournful, gets destroyed very soon. The family, where they do not mourn always attains prosperity.

९१. **सकृत्कन्या प्रदीयते ।** (मनुस्मृतिः, ९/४७)

कन्या एक बार ही दी जाती है ।

A maiden gets married only once.

९२. **सर्वावस्थासु नारीणां**
न युक्तं स्यादरक्षणम् ।
(व्यासस्मृतिः, २/५३)

समस्त अवस्थाओं में स्त्रियों की रक्षा न करना अनुचित है । अर्थात् स्त्रियाँ सदा रक्षणीय हैं ।

This is improper, not to protect women under any circumstances.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१३. सर्वेषामेव वर्णानां
दारा रक्ष्यतमा धनात् ।

(बोधायनस्मृतिः २/२/६१)

सभी वर्णों की स्त्रियाँ धन की तुलना में अधिक रक्षणीय होनी चाहिये ।

Women irrespective of the caste they belong to, are entitled to greater protection than wealth.

१४. सा भार्या या गृहे दक्षा
सा भार्या या प्रजावती ।
सा भार्या या पतिप्राणा
सा भार्या या पतिव्रता ॥

(शंखस्मृतिः, ४/१५)

जो गृहकार्य में दक्ष हो वही सच्ची पत्नी है। जो सन्तान उत्पन्न करती है वही पत्नी कहलाने के योग्य है । सच्ची पत्नी वही है जो पति को प्रिय हो और पत्नी वही है जो पतिव्रता हो ।

She is a true wife who is skilled in the domestic chores. She is a true wife who produces offsprings. She is a true wife who is beloved of her husband. And she

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

is a true wife who is faithful to her husband.

९५. सा भार्या या पतिव्रता ।

(शंखस्मृतिः, ४/१५)

पत्नी वही है जो पतिव्रता है ।

A wife faithful to her husband, is the real wife.

९६. स्त्रियश्च यत्र पूज्यन्ते
सर्वदा भूषणादिभिः ।
देवाः पितृमनुष्याश्च
मोदन्ते तत्र वेश्मनि ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/४४)

जहाँ स्त्रियाँ आभूषणादि के द्वारा सदा पूजी जाती हैं, उस घर में देवता, पितर और मनुष्य सब आनन्दित होते हैं ।

Where women are honoured always by ornaments and the like, gods fore-fathers and people are all happy and joyful in that home.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

९७. स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु
न विशेषोऽस्ति कश्चन ।

(मनुस्मृतिः ९/२६)

घरों में स्त्रियाँ लक्ष्मीरूपिणी होती हैं । इनमें कोई भेद नहीं है ।

In house holds, women are virtually goddess *Lakṣmī*. There is no difference between the two.

९८. स्त्रियस्तुष्टाः श्रियः साक्षाद्
रुष्टा तु दुष्टदेवताः ।

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/४४)

स्त्रियाँ यदि प्रसन्न हैं तो साक्षात् लक्ष्मी हैं और यदि रुष्ट हो जाती हैं तो दुष्ट देवता के समान विनाशक बन जाती हैं ।

Women, if happy are virtually like goddess *Lakṣmī* and if they get annoyed, they are as destructive as wicked deities.

९९. स्त्रियां तु रोचमानायां
सर्वं तद्रोचते कुलम् ।

(मनुस्मृतिः, ३/६२)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्त्री के प्रसन्न रहने पर सम्पूर्ण कुल प्रसन्न रहता है।

If a woman is happy the whole family becomes happy.

१००. स्त्रिया भर्तुर्वचः कार्य-
मेष धर्मः सनातनः ।

(वशिष्ठस्मृतिः, ५/१७)

स्त्री को अपने पति का ही आदेश मानना चाहिये । यह सनातन धर्म है ।

A woman should always obey her husband. This is her eternal duty.

१०१. स्त्रियाश्च पुरुषस्यापि
यत्रोभयोर्भवेद् धृतिः ।
तत्र धर्मार्थकामा स्यु-
स्तदधीना यतस्त्वमी ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/४७)

जहाँ स्त्री और पुरुष दोनों में धैर्य होता है; वहाँ धर्म, अर्थ और काम की वृद्धि होती है क्योंकि ये धर्मादि उसी के अधीन हैं ।

Where both the woman and man keep patience, there would increase virtue,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

wealth and desire, because these things depend upon patience.

१०२. स्त्रीणां च शुद्धिर्विहिता सदैव ।

(बृहंत्पराशरस्मृतिः, ६/३४६)

स्त्रियों को सदैव शुद्ध बताया गया है ।

Women have always been declared to be pure.

१०३. स्त्रीणां सौभाग्यतो ज्यैष्ठ्यम् ।

(गोभिलस्मृतिः द्वितीयप्रपाठकः, श्लोकः १६१)

स्त्रियों की ज्येष्ठता उनके सौभाग्य से होती है ।

The superiority of women is due to their good fortune.

१०४. स्वगोत्राद् भ्रश्यते नारी विवाहात्सप्तमे पदे ।

(याज्ञवल्क्यस्मृतिः मिताक्षरा आचाराध्यायः, श्लोकः २५४)

विवाह के निमित्त से सप्तपदी हो जाने पर स्त्री अपने पिता के गोत्र से पृथक् हो जाती है ।

A women gets detached from her fathers family on the seventh step in the marriage rites.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१०५. स्वच्छन्दगा च या नारी
तस्यास्त्यागो विधीयते ।

(मनुस्मृतिपरिशिष्टम्, श्लोकः २४९)

जो स्त्री स्वेच्छाचारिणी है, उसका त्याग वेदविहित है।

The desertion of a wilful wife is prescribed by the vedas.

१०६. स्वभाव एष नारीणां
नराणामिह दूषणम् । (मनुस्मृतिः, २/१८८)

नारी और नर के परस्पर संग से दोष लगना स्वाभाविक ही है।

It is natural that blame is apportioned when a man and a woman are seen together.

१०७. स्वातन्त्र्येण विनश्यन्ति
कुलजा अपि योषितः ।
अस्वातन्त्र्यमतः स्त्रीणां
प्रजापतिरकल्पयत् ॥

(बृहत्पराशरस्मृतिः ६/६०)

अच्छे कुल की स्त्रियाँ भी स्वतन्त्रता देने पर बिगड़ जाती हैं। इसलिये परमात्मा ने स्त्रियों को परतन्त्र ही

Bharatiya Vidya Bhawan Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyala
४१२
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनाया है ।

Even the women, of good families get corrupted if given independence. God has therefoıe, made women dependent.

१०८. सूक्ष्मेभ्योऽपि प्रसंगेभ्यः
स्त्रियो रक्ष्या विशेषतः । (मनुस्मृतिः, ९/५)

छोटे-छोटे कुसंगों से भी स्त्रियों की विशेष रूप से रक्षा करनी चाहिये ।

Women should be particularly protected even from evil company, even though minor in nature.

...s Sri Sankaracharya's ... 452 ... Mahavidyalay ...

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE